

ANUBADH-CHANDRIKA





19

श्री:

Chandrar B. S. S. P. College
Roh No 27
S. P. College
B. A. B. S. P. College

साद-चद्रिन्का

OR

GUIDE TO

IN SCH

IRISHA
RY (REVISED)

SHASTRI, HINDI PRABHAKARA, SANSKRIT MEDALIST.
M. A., (History, Lucknow)
M. A., (All India)

Revised by

Pt. CHARUDEVA SHASTRI, M. A., M. O. L.,
Professor of Sanskrit
D. A. V. COLLEGE, LAHORE.

PUBLISHED BY

MOTILAL BANARSIDASS

Booksellers and Publishers,

P. B. 75, Chowk—BANARAS

7th Edition]

1949

[Price Rs. 2/4/-

प्रकाशक :

मोतीलाल बनारसीदास,
पुस्तक विक्रेता,
चौक बनारस ।

^{अधिकार}
(सर्व हक प्रकाशक के स्वाधीन हैं)

मुद्रक :

शान्ति लाल जैन,
नवभारत प्रेस,
भदौनी-बनारस ।

मोतीलाल बनारसीदास

प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता :—

बाँकीपुर, पटना

चौक, बनारस

किनारी बाजार, दिल्ली

श्रीः

पाठशाला-महाविद्यालयोपयोगिनी

अनुवाद-चन्द्रिका

गङ्गादेशवास्तव्य-हिन्दीप्रभाकर-श्रीचक्रधर 'हंस' नौटियाल-शास्त्रिणा

(संस्कृत-) एम. ए. (प्रयाग-विश्वविद्यालय (इतिहास-)

एम. ए. (लखनऊ-विश्वविद्यालय)

एल. टी. बिरुदभाजा

विरचिता

(संशोधिता सम्प्रविता च)

ST. RAMAKRISHNA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. ...
Date ... सा च

श्रीमद्द्यानन्द-ऐंग्लो-वैदिक-महाविद्यालय-संस्कृतप्रोफेसरेण

श्रीचारुदेवशास्त्रिणा एम. ए., एम. ओ. एल.

इत्याद्युपाधिविभूषितेन

संशोधिता

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास

हिन्दी-संस्कृत पुस्तक-विक्रेता,

चौक, बनारस

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्रारम्भिक कश्चन	१	वर्तमान कालिक कृदन्त	९२
व्दोच्चारण (अजन्त)	१०	भूतकालिक कृदन्त	९६
कर्तृ कारक	१९	भविष्यत्कालिक कृदन्त	९८
कर्म कारक	२२	पूर्वकालिक कृदन्त	९९
करण कारक	२५	तुम् प्रत्यय	१०१
सम्प्रदान कारक	२८	कृत्यप्रत्यय	१०३
प्रदादान कारक	३०	तद्धितप्रकरण	१०४
सम्बन्ध कारक	३२	स्त्रीप्रत्ययप्रकरण	१०६
अधिकरण कारक	३४	समासप्रकरण	१०९
सम्बोधन कारक	३६	संज्ञावाचक शब्दों पर विचार	
क्रिया प्रकरण	३८	लिङ्ग प्रकरण	११५
कारक और विभक्तियाँ	४३	लेखोपयोगी चिह्न	११८
प्रशुद्धि संशोधन ४६ और	१०८	अनुवादाथ संस्कृत वाक्य	१२०
त्र-लेखन प्रकार	४६	मुहावरेदार प्रयोग	१२३
सर्वनाम शब्दों के रूप	४७	लोकोक्ति संग्रह	१३६
सर्वनाम शब्दों पर विचार	५०	व्यावहारिक शब्द-संग्रह	१४३
गन्धि-प्रकरण	५२	अनुवादार्थ श्लोक	१५५
व्दोच्चारण (हलन्त)	५८	अनुवादार्थ गद्य संग्रह	१५७
संख्यावाचक विशेषण	६५	(पंजाब) ए० परीक्षा प्रश्नपत्र	१६४
गुणवाचक विशेषण	७२	,, प्राज्ञ परीक्षा प्रश्नपत्र	१६८
विशेषणों की तुलना	७३	(पटना) मै० परीक्षा प्रश्नपत्र	१८६
सन्नत धातुएँ	७५	(संस्कृत अनुवाद के लिए आदर्श वाक्य)	१७८
प्रकृत धातुएँ	७६	(काशी) प्र० परीक्षा प्रश्नपत्र	१९३
प्रेरणार्थक क्रियाएँ	७७	(यू. पी.) हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा	
कर्मवाच्य और भाववाच्य	७९	प्रश्नपत्र	१९८
वाच्य-परिवर्तन	८०	(बनारस) अडमिशन परीक्षा	
वाच्यान्तर रचना	८१	प्रश्नपत्र	२०३
सोपसर्ग धातु	८३	टिप्पणियाँ Glossary	२०६
कृदन्त प्रकरण	९०		

Sri Ramakrishna Mission
LIBRARY SRI GAN
NO. 1117

Opinions of the Eminent Sanskrit Scholars

Dr. P. K. Acharya, I. E. S., Ph. D., D. Litt. Dean Faculty of the Arts, Head of the Department of Sanskrit, University of Allahabad, writes :—

“The Anuvada-Chandrika by Pandit Chakra Dhara Hans in its enlarged form will be a suitable hand book for the students of both Matriculation and Intermediate classes. Pandit Hans is a practical student of Sanskrit and Hindi language and literature, having been trained under the old and modern lines, and he has passed the Shastr and Hindi Prabhakara Examinations of the Punjab University. Thus equipped he has taken all precautions to this little nice book helpful to those for whom it is meant. His depth of knowledge and skill is reflected in the selection of illustrative passages. Students will be able to learn both the necessary grammar and composition by carefully going through this book.

R. B. Dya Ram Sahni, M. A., Director General, Archaeological Survey India, writes :—

“I have looked through the Manuscript of Pandit Chakradhara's ‘Anuvada-Chandrika.’ The author has taken great pains over its preparations. I am sure the book will prove useful to students preparing their Sanskrit course for the Matriculation Examination.”

Prof. Gulbahar Singh, M.A., LL.B., Govt. College, Lahore, Fellow of the Punjab University, writes :—

“I have glanced through ‘Anuvada-Chandrika’ compiled by Pt. Chakra Dhara Shastri. His aim has been to try and help school students to learn how to translate from Hindi into Sanskrit, and I think the book is well suited to achieve that aim.”

Prof. Canpat Rai M. A. Central Training College Lahore, writes :—

“I have gone through the Anuvada-Chandrika” It supplies the long-felt want of students preparing for the Sanskrit Examination. The exercises given at the end of the book are useful. The author has taken pains to compile them methodically.”

Pandit Ganesh Datt Shastri Mahamahopadhyaya, Vidyalankar Vedantabhushan, Senior Prof. of Sanskrit and Theology. S. D. Collge., Lahore, writes :—

“I have carefully examined portions from Pandit Chakra Dhara Shastri's Anuvada-Chandrika and am of opinion that the edition can be a valuable addition to the Sanskrit texts for the secondary school with a view to increase the pupil's facility to get a clear insight into the fundamental rules of translating sentences into Sanskrit as it has been designed on a novel plan and gives a concise outline of the Sanskrit Grammar as well. The booklet leaves little to be desired in the matter of printing and binding.”

Pro. M. K. Sarkar, M. A., D. A. V. College, Lahore, writes :—

“ I have had a look at Anuvada Chandrika by Pt. Chakra Dhara Shastri and I am very pleased to say that it is a nice little book perfectly suited to the needs of those for whom it is meant. It covers pretty wide ground and the most distinctive features of the book are the well-arranged exercises for translation and correction, proverbs with their translation and a glossary at the end.

Grammar and translation being two of the side to the study of language, I am sure that the students will be immensely benefitted by this book which gives a lot of them.”

Dr. Lakshman Sarup, M.A., D.Phil, Oriental College, Lahore, writes :—

“ I have looked through a few pages of Pt. Chakra Dhara's Anuvada Chandrika. It is intended to help school students for Sanskrit translation. The zeal of Pt. Chakra Dhara Shastri is admirable.”

Pandit Gaurishankar M. A., B. T., Lecturer in Sanskrit, Govt. College, Lahore, writes :—

“ The Anuvada Chandrika by Pt. Chakradhar Shastri, a treatise on translation from Hindi into Sanskrit and vice versa, provides for the long felt need of a suitable book on the subject for the advanced classes in Sanskrit in the Punjab Schools. The book in the hands of capable and efficient teachers is sure to win its way among students. It is undoubtedly, a guide to Sanskrit translation.

To mention some of the features of the book, Sanskrit Grammar and translation are treated by the author as complementary, and they are really so. The writer has tried to teach Grammar the knowledge of which is to be put to practice in the translation exercises appended to every Grammar lesson. Selections of easy pieces from ancient Sanskrit writers and a collection of Sanskrit idioms and proverbs are also commendable.”

Pandit Vanshidhara Shastri, Professor of F. C. College, Lahore, writes :—

“ I have gone through the ‘ Anuvada Chandrika ’ by Pandit Chakradhara Shastri. He has taken great pains in the preparation of this book which is composed in a new style. The book is very useful to the students of the high classes, and specially to the students of the fifth high class. The Sanskrit proverbs, and corrections of the Sanskrit sentences are given in this book in new method. I am very glad to see this book, which I think, will be appreciated by the Sanskrit Scholars and the students.”

सरस्वती—दिसम्बर १९३५

अनुवादचन्द्रिका—लेखक—कविरत्न पं० चक्रधर नौटियाल एम. ए. एल. टी., शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर हैं। पता—मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।

यह पुस्तक हाई स्कूल तथा इंटरमीडियेट के परीक्षार्थियों को लक्ष्य में रख कर लिखी गई है। संस्कृत-अनुवाद पर अन्य भी अनेक लेखकों ने पुस्तकें लिखी हैं,

परन्तु जैसी सरल पद्धति तथा क्रम से अनुवाद के लिए आवश्यक विषयों का विवेचन इस पुस्तक में हुआ है, वैसा बहुत थोड़ी प्रचलित पुस्तकों में दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत-व्याकरण तथा अनुवाद दोनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस बात का विचार रख कर ही शास्त्रीजी ने इस पुस्तक को लिखा है। पुस्तक के अन्त में अशुद्धि-संशोधन, लोकोक्ति-संग्रह, पंजाब तथा संयुक्त-प्रान्त की प्राज्ञ तथा हाई स्कूल, परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र तथा शब्द-सूची नामक करणों से ग्रन्थ की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। पुस्तक परिश्रम से लिखी गई है और हाई स्कूल की श्रेणियों के लिए विशेष उपयोगी है।

“श्रीयुत चक्रधरशास्त्रिविनिमितामनुवादचन्द्रिकामहं साद्यन्तं पर्यालोचयम्
एतत्पुस्तकपर्यालोचनेन मम दृढा मतिरुदपद्यत यदनेन प्रवेशिका—(Matriculation)
प्राज्ञपरीक्षार्थिनां भूयान् उपकारो जनिष्यते। ग्रन्थकर्त्रा अनुवादप्रक्रियामधिजिगांसूनां
विद्यार्थिनां कृते प्रायः सर्वेऽप्युपयोगिनो व्याकरणांशास्तथा क्रमेण सन्निवेशिता यथा
कौमुद्याद्यध्ययनक्लेशमन्तुभूयापि छात्रास्तान् सुखमवगन्तुमीशिरन्। सरलसरससंस्कृत-
लेखपाठवमुत्पादयितुमत्र द्राणादिमहाकवीनां हृदयहारिणां गद्यानि पद्यानि च शास्त्रि-
महोदयेन निदर्शितानि। किं चाद्यत्वे पण्डितमूर्धन्या अपि भाषाप्रचरितलोकोक्तीनां
यथाहमनुवादं कर्तुं न क्रमन्त इति ग्रन्थकर्त्रा संस्कृतग्रन्थान्तरेभ्यः सायासमन्वेपमन्वेपं
भाषाप्रचरितलोकावित्समानाभिप्राया संस्कृतलोकोक्तयः सन्निवेशिताः। अनुवादा-
भ्यासार्थं हिन्दीवाक्यानि संस्कृतवाक्यानि च तारतम्येन प्रतिपाठं योजितानि।
पत्रलेखनशैलीशिक्षणार्थं पत्रादर्शा अपि दर्शिताः। अपि चान्तेऽभ्यासवाक्येष्वगतानां
हिन्दीशब्दानां समुचित—(appropriate) संस्कृतपर्याया अपि समावेशिताः। तद-
नया चन्द्रिकया संस्कृताङ्गलोभयभाषाध्येतॄणां मन्ये स्थेयान् लाभः समुत्पत्स्यत इति
सम्मानते—परमेश्वरानन्दशर्मा शास्त्री, विद्याभास्करः, साहित्योपाध्यायः, प्रधानाध्या-
पकः लवपुरीयश्रीसनातनधर्म संस्कृतकालेजस्थः।

गोर्वाणवाणीसंवतनवाक्यावलीप्रबन्धोपयिकाकाङ्क्षानान्तरीयकबोधोपयोगौपयिक-
पठनपाठनप्रक्रियाप्रकारानुपक्तपदसाधुताप्रदर्शनपुरःसरपदयोजनानुरोधिविषयस्थापना—
विशेषमार्ग—प्रदर्शनपरिचयमादधाना बालानुशासनशिक्षानुशीलितप्रकरणप्रकाशकारवि-
चारप्रचारा सहृदयहृदयमनांसि चन्द्रिकेव ह्लादयन्ती अनुवादचन्द्रिकेयं नितान्तं प्रशान्तं
विधान्तं संसेव्यतान्तरामिति परमादरयति—

साहित्यदर्शनाध्यापकः ओरियण्टलकालेजस्थः नृसिंहदेवशास्त्री।

मैंने पं० चक्रधरजी शास्त्री के पुस्तक ‘अनुवाद-चन्द्रिका’ को अनेक स्थलों से पढ़ कर देखा है। विद्यार्थियों को संस्कृत में अनुवाद करने का अभ्यास कराने के लिए यह पुस्तक बहुत उपादेय सिद्ध होगा। स्वयं भी इसको पढ़ कर छा अच्छी योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आशा है संस्कृत के प्रचार में यह ग्रन्थ सहायक होगा। शास्त्रीजी का परिश्रम मैं सफल समझता हूँ।

भगवद्दत्त बी. ए. रिसर्च स्कालर, डी. ए. बी. कालेज, लाहौर।

श्रोयुत पं० चक्रवर्ज्जी शास्त्री की 'अनुवाद-चन्द्रिका' को मैंने पढ़ा मेरी सम्मति में यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसमें लेखक ने अनुवाद का प्रचार और उसके लिए उपयोगी व्याकरण की प्रक्रिया ऐसी योग्यता से समझाई है कि विद्यार्थी थोड़े ही परिश्रम से संस्कृत में अनुवाद करने की अच्छी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। अनुवाद के अभ्यास के लिए हिन्दी और संस्कृत के वाक्य प्रत्येक पाठ के अन्त में लिखे गये हैं। हिन्दी शब्दों के समुचित संस्कृत पर्याय भी अलग अन्त में लिख दिये गये हैं। इस प्रकार पुस्तक को उपयोगी बनाने में कोई न्यूनता नहीं रखी गई है। आशा है गुणग्राही इसका आदर करेंगे।

रामचन्द्र कुशल शास्त्री.
ओरियण्टल कालेज, लाहौर।

FOREWORD

Translation of one language into another is no easy task. Indeed a correct and faithful reproduction of ideas couched in one language into another different from it in various respects, is a sure test of one's proficiency in linguistic studies. Provision is therefore made at schools to give to the students a grounding in translation at an early stage. For this purpose, a suitable little book written on most modern lines has long been a desideratum. This is now supplied by our learned pupil Pt. Chakradhar Shastri who has very capably written a work entitled the 'ANUVADA-CHANDRIKA' for the help and guidance of the students preparing for the Matriculation Examination. Herein the author has proceeded very methodically.

Beginning with simpler things he comes ultimately to treat those which set up a standard for the Matriculation. Of grammar only as much is given as is required by the students for purposes of translation. The author has used his best direction in the selection of the radical stem and the nominal bases. There are also ample exercises and copious vocabulary. There is one salient feature of the book which marks it out from those already written on the subject. It is a discussion of common errors. Almost all those errors which the beginner is liable to commit are here put together for the first time and corrected. This has exceedingly enhanced the value of the book. The author has also after an assiduous search, succeeded in finding out and inserting here the Sanskrit parallels of pretty large number of well known Hindi maxims and proverbs. This will elicit admiration from the learned.

The book is written in easy Hindi and is fully adapted to the needs of the students of our High Schools. I compliment the author on the splendid success he has achieved and the meritorious service he has done to the cause of Sanskrit literature. I firmly hope that this book will receive the warm welcome of the student community which it so well deserves.

D. A. V. College,

Lahore.
2nd April, 1927.

CHARUDEVA SHASTRI,
M. A., M. O. L.

किञ्चित्प्रास्ताविकम्

अथ कोऽयमनुवादो नाम । न तावत्पूर्वमुपात्तस्याभिधेयस्याभिधानस्य वा प्रयोजन-
वान्पुनरुपन्यासोऽत्र विवक्षितः । पश्चाद्वादोऽनुवादो द्वितीयकः प्रयोग इति सत्यपि
योगलभ्येऽर्थोऽस्ति ह्यस्य शब्दस्यार्थान्तरे रुढिः । रुढियोगमपहरतीति न्यायात् । किमि-
दमर्थान्तरमित्वाकाङ्क्षायामुच्यते । प्रकृतिभूतस्य कस्यचिद्वाग्विन्यासस्य परत्र बोध-
संक्रान्तये प्रवृत्ता भाषान्तरपदात्मिका, विम्बप्रतिविम्बभावमजहती व्यवहारमनुपतन्ती
तद्गतार्थसाकस्यं समर्पयन्त्यनुकृतिरनुवादः । तेन प्रकृतौ यावान् यादृशश्चार्थोऽभिधे-
यादिर्यादृग्भिः पदैः प्रत्याख्यतेऽनुकृतौ यदि तावांस्तादृशस्तादृग्भिरेव पदैः प्रत्याख्यते
तर्हि चारितार्थ्यमनुवादस्य नेतरर्थेति लक्षणागतेन विम्बप्रतिविम्बेत्यादिविशेषणेन
द्योत्यते । तेनैव च सन्दर्भविशेषस्य यद् भाषान्तरव्याख्यानमात्रं तद् व्यवच्छिद्यते ।
अनुवादे शिष्टव्यवहारोऽपि सम्यगवधेयः । स च व्यवहारो भाषासु नैकविधो यथायथ
वेदनीयः । व्यवहारातिक्रमो हि दूषयति वाचम् । अव्यवहृता च वाग् इदमप्रथमतया
प्रयुज्यमाना नाद्रियते लोक इत्यतोऽनीपत्करोऽनुवादो विशेषज्ञः किमुत साधारणः ।
'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' इति कविभणितिरवितथा स्यात् । प्रयोगचणानां भाषा-
मर्मज्ञानामनुवाद एव परा परोक्षेत्यविसंवादी वादः । गुरवोऽप्यत्र साशङ्कं प्रवर्तन्ते का
कथा श्रावकाणाम् ।

मन्ये काचिदजिह्वा राजपद्धतिरत्र प्रस्तवनीया यया निर्वाधं प्रवृत्ताश्छात्रा अचि-
रेणैव कालेनेप्सितं बोधमाप्नुयुरनुवादरहस्यञ्चाकलयेयुः इममेवार्थमनुसन्धाय कश्चि-
दनुवादप्रणाल्यादयः काश्चिददकृषतेति नाचिदितं विपश्चिताम् । परमेता विश्वस्तान्
मुग्धान् सुकुमारधियः कुमारान्सम्मोहयितुमेव प्रभवन्ति न प्रबोधयितुमिति प्रतीमः ।
दोषाढ्याः प्रमादप्रचुराश्चैताः कृतयो न कमप्युपयोगं व्रजन्ति । ये हि स्वयं चक्षुर्विकलाः
पथो भ्रष्टास्ते परेषां मार्गमादेष्टुमीशीरन्निति नावकल्पयामः । तदिदं सर्वं सम्यगवधार्य
श्रोतृचक्रवर्शस्त्रिणोऽस्मच्चिद्व्यवसायश्छात्रहितप्रयोजिता महतीमेतां कार्यधुरां वोढुमुद-
सहिषतेति तुष्यति नोऽन्तरङ्गम् । एभिरेद्यानुवादचन्द्रिकाभिधेयं पुस्तिका व्यरचि । अत्र
हि सर्वत्र सरला सरणिराश्रिता । विशिष्ट एव क्रमोपूर्वः कश्चिदास्थितः । यत्र तत्र
भाषावैशद्यं सन्दर्भशुद्धिश्च नितान्तमपेक्षिते । अभ्यासवाक्यानि च समीचीनतमानि
समाहृतानि । प्रतातान्येव नामानि धातवश्च प्रपञ्चितानि यानि च परिचीयमानानि
महदुपकरिण्यन्ति च्छात्रवृन्दस्य । अत्र शब्दसाधुत्वाविचारेऽनन्यसाधारणः प्रकर्षः
प्रदर्शितः । ये ये प्रायिका वाक्प्रमादानां गोचरास्ते तेऽत्र समनूक्रान्तव्याख्याताः किमपि
कामनीयकं पुञ्जन्ति पुस्तिकायास्तत्कर्तृणां च प्रख्यापयन्ति वदातं यशः । नूनमत्राश्च-
र्यकरी वैशारदी ग्रन्थकृद्भिः प्राकाशीति नन्दति नश्चेतः ।

अपेक्षिततमोऽप्येष विषयः सविस्तरं व्याकृतपूर्वो नास्माभिर्दृष्टचर इत्यभिनवत्व-
मर्थवत्त्वमपीनरुक्त्यं च चन्द्रिकायाः । सा चाध्यतृणामुपकुर्वाणा तत्कृतमपि महिमानं
प्रथयति । अपरोऽपोहत्यः कश्चिद्विशेषो हृदि पदं करोति । हिन्दीवाण्यां येषामाभाण-
कानामाबालं प्रात्यहिकः प्रयोगस्तेषां संस्कृतपर्याया अनल्पेन प्रयासेनान्विष्य तन्त्रान्त-
रेभ्यः समुद्धृत्य सन्दृष्टाः । किं बहुना । वैशिष्ट्यमत्र रचनारीतेः, वैशद्यं विषयस्य,

हृज्त्वं हारित्व च पद्धतेरिति चन्द्रिकेयमनुवादविषयानन्यान् ग्रन्थान् गुणैरतिरिच्यत
ति नात्र संदिह्यः । विद्यार्थिनां भूयिष्ठमुपकुर्वतीयं कौमुदीव विदुषां मन आवर्ज-
यिष्यतीति दृढो नः प्रत्ययः । एष खलु पूर्वा अपशब्दप्रायाः कृतिः प्रत्यादेक्ष्यति प्रचुरं
व प्रचरन्ती लोके समादरिष्यत इत्याशंसते ।

चान्देवः शास्त्री पाणिनीयः

—:०:—

Preface to the Second Edition

The first edition of this book was published in 1927 and exhausted in 1931. Since then the demand for the book has been constant and the book could not be published earlier due to many inevitable difficulties. The rapid sale of large edition in less than four years indicates that the book, in some measure, has met a felt need, and it is hoped that the students of Sanskrit will find this edition more useful and a better guide to Sanskrit translation than the first on account of the improvements effected now. The success achieved has probably been due chiefly to the fact that the book was written with thought, care and experience.

Some additions and alterations have been made both in matter and arrangement in this edition with a view to make an improvement. All the chapters have been revised in this edition. New topics have been added to some chapters on the Nouns, Verbs, idiomatic expressions and proverbs. U. P. High School Board Exam. Papers of Sanskrit translation from 1910 to 1934 have also been added to this edition at the end. These papers will serve the purpose of exercises suited to the requirements of the students of the Matriculation and the Intermediate classes. The effect of this and the like additions has been to increase a little the volume of the work which I hope will meet with approval from the student world. The new edition is thus not only mere revision but more complete than its predecessor.

I acknowledge sincerely and gratefully my indebtedness to those learned teachers and scholars whose encouragement and approval of my work is responsible for the success which I have achieved. Lastly I must thank the student community whose keenness and interest have provided a constant stimulus and have made every effort worth while.

akshmi Sadana, Lucknow

28th Dec., 1934.

C. D. Hans

॥ श्रीः ॥

अनुवादचन्द्रिका ।



शङ्करं शङ्करं ध्यात्वा नत्वा देवीं सरस्वतीम् । करोमि बालबोधार्थमनुवादस्य चन्द्रिकां
रसनेत्रप्रहेलाब्दे श्री चक्रधर-शास्त्रिणा । श्रियते चन्द्रिका ह्येषा गृहदेशनिवासिना ।

यच्चापि दृष्टमखिलं कठिनं तदस्ति, मन्ये प्रणीतमपि बुद्धिमतां वरिष्ठैः ।

दुःखं तथातिसुकुमारधियां विलोक्य, प्रारभ्यते किमपि, नव कदापि दर्पात् ॥

प्रारम्भिक कथन

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को ठीक-ठीक और सरलता से एक दूसरे पर प्रकट करता है । भाषा का उपयोग बोलने और लिखने में होता है । भाषाएँ कई प्रकार की हैं, जैसे—संस्कृत भाषा, हिन्दी भाषा, अँगरेजी भाषा आदि ।

भाषा वाक्यों के समूह से बनती है । वाक्य छोटे और बड़े दोनों ही तरह के होते हैं । वाक्य शब्दों के समूह बनता है, और शब्द ध्वनियों के समूह से । उदाहरण के लिए—‘अशोक एक बड़ा धर्मात्मा राजा था’ इस वाक्य में छः शब्द हैं, और हर एक शब्द में अलग-अलग ध्वनियाँ हैं, जैसे—‘अशोक’ में ‘अ + श् + ओ + क् + अ’ पाँच ध्वनियाँ हैं । ‘एक’ में ‘ए + क् + अ’ तीन ध्वनियाँ हैं । यह लिपि, जिसमें अक्षर यहाँ लिखे गये हैं ‘देवनागरी’ लिपि कहलाती है । संस्कृत और हिन्दी भाषा प्रायः इसी लिपि में लिखी जाती हैं ।

ध्वनियों के दो भेद हैं—स्वर और व्यञ्जन । स्वर तीन तरह के होते हैं—ह्रस्व दीर्घ और मीश्रित । स्वरों और व्यञ्जनों में ध्वनि का भेद है । स्वरों के बोलने मुख-द्वार कम या ज्यादा किया जाता है, पर बिल्कुल बंद या इतना सकरा नहीं किया जाता कि हवा रगड़ खाकर बाहर निकले । व्यञ्जन बोलने में मुख-द्वार य तो सहसा खुलता है या इतना सकरा हो जाता है कि हवा रगड़ खाकर बाहर

१ कल्याणकारकम् । २ शिवम् । ३ रसाः षट् (६), नेत्रे द्वे (२) ग्रहाः नव (९) इला पृथ्वी (१) । ‘अङ्कानां वामतो गतिः’ इति नियमात् ‘१९२६ ई०’ ।

४ ध्वनि मनुष्य की बोली के उस छोटे से छोटे अंश को कहते हैं, जिस टुकड़े न हो सकें । ध्वनि का जो रूप लिखा जाता है उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

निकलती है। इसी स्पर्श के कारण व्यञ्जन स्वरों से भिन्न हो जाते हैं। व्यञ्जन हल् अक्षर भी कहलाते हैं, जैसे क् च् ट् त् प् आदि। संस्कृत अथवा हिन्दी भाषाओं में जिन अक्षरों का उपयोग होता है वे ये हैं :—

स्वर	{	अ इ उ ऋ लृ	—	ह्रस्व	१
		आ ई ऊ ऋ	—	दीर्घ	१
		ए ऐ ओ औ	—	मिश्रित	४
व्यञ्जन	{	(कु)	क ख ग घ ङ	—	कवर्ग
		(चु)	च छ ज झ ञ	—	चवर्ग
		(टु)	ट ठ ड ढ ण	—	टवर्ग
		(तु)	त थ द ध न	—	तवर्ग
		(पु)	प फ ब भ म	—	पवर्ग
			य र ल व	—	अन्तःस्थ
			श ष स ह	—	ऊष्म
				—	अनुसार
		—	अनुनासिक		
		—	विसर्ग		

क से लेकर म तक के अक्षर 'स्पर्श' कहलाते हैं। य र ल व 'अन्तःस्थ' हैं, अर्थात्

१ व्यञ्जनों के बोलने में मुख के किसी न किसी हिस्से का दूसरे हिस्से से कुछ न कुछ स्पर्श अवश्य होता है, जैसे 'च्' के बोलने में जीभ का ताल से, 'त्' के बोलने में जीभ का दाँतों से स्पर्श होता है।

२ ह्रस्व स्वर के बोलने में बहुत थोड़ा समय लगता है।

३ दीर्घ स्वर के बोलने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगता है।

४ मिश्रित स्वर विकृत है और दीर्घ है। (जैसे अ + इ = ए)।

५ व्यञ्जनों के शुद्ध रूप 'क्' 'ख्' आदि हैं, इनमें 'अ' उच्चारण मात्र के लिए मिलाया गया है। शुद्ध व्यञ्जन सूचक चिह्न () है।

उच्चारण के विचार से वर्णों का स्थान—अ आः ह क् ख् ग् घ् ङ्—कण्ठ

इ ई य् श् च् छ् ज् झ् ञ्—तालु

ऋ ऋ र् ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्—मूर्धा

लृ ल् स् त् थ् द् ध् न्—दन्त

उ ऊ (प) (फ) फ् ब् भ् म्—ओष्ठ

ए ऐ—कण्ठ तालु; ओ औ—कण्ठ, ओष्ठ

व—दन्त ओष्ठ, अनुस्वार—नासिका

ङ् आदि का स्थान कण्ठ नासिका अर्द्ध

स्वर और व्यञ्जन के बीच के अक्षर हैं। श ष स ह ऊष्म हैं अर्थात् इनको बोलने के लिए भीतर से कुछ ज्यादा जोर से श्वास लाना पड़ती है। पाँचों वर्गों के पहले और दूसरे अक्षर (क ख च छ आदि) तथा ऊष्म अक्षरों को 'पुरुष व्यञ्जन' और बाकी अक्षरों को 'कोमल व्यञ्जन' भी कहते हैं। व्यञ्जनों के दो और भेद हैं—अल्पप्राण और महाप्राण। पाँचों वर्गों के पहले और तीसरे अक्षर (क् ग् आदि) अल्पप्राण हैं और दूसरे और चौथे (ख् घ् आदि) महाप्राण हैं। वर्गों के पाँचवें (ङ् ञ् ण् न् म्) अनुनासिक व्यञ्जन कहलाते हैं।

एक भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दों में बदलने को अनुवाद कहते हैं। इस पुस्तक में हिन्दी भाषा और संस्कृत भाषा का एक दूसरी में अनुवाद करने का ढंग बताया गया है, इसलिए इसमें दोनों का ही वर्णन है।

'राम पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य में पढ़ने वाला राम है। 'कृष्ण ने कंस को मारा' इस वाक्य में मारने वाला कृष्ण है। 'पढ़ना' और 'मारना' ये दो क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के करने वाले 'राम' और 'कृष्ण' हैं। क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते हैं, इसलिए इन दो वाक्यों में 'राम' और 'कृष्ण' कर्ता हैं।

पहले वाक्य में पढ़ने का विषय 'पुस्तक' है और दूसरे वाक्य में मारने का विषय 'कंस' है। पुस्तक और कंस के लिए ही कर्ताओं से क्रियाएँ हुईं, इसलिए खास तौर से जिस चीज के लिए कर्ता क्रिया को करता है उसको कर्म कहते हैं।

'अशोक ने अपने हाथ से निर्धनों को दान दिया' इस वाक्य में 'दान' क्रिया की पूर्ति हाथ से हुई, इसलिए 'हाथ' करण हुआ। इसी वाक्य में दान की क्रिया 'निर्धनों के लिए हुई', इसलिए 'निर्धन' सम्प्रदान हुआ।

'बाग के पेड़ों से जमीन पर फल गिरे' इस वाक्य में पेड़ों से फल अलग हुए, इसलिए 'पेड़' अपादान हुआ, फल जमीन पर गिरे, इसलिए जमीन अधिकरण हुई। बाग का सम्बन्ध पेड़ों से है, इसलिए 'बाग' सम्बन्ध हुआ।

ऊपर के चार वाक्यों में 'पढ़ना' 'मारना' 'देना' और 'गिरना' क्रियाओं को पूर्ण करने में जिन कर्ता, कर्म आदि शब्दों का उपयोग हुआ है उन्हें कारक कहते हैं। कारक वह वस्तु है जिसका क्रिया के सम्पादन में उपयोग हो। सम्बोधन भी कारक में गिना जाता है।

इन कारकों को जोड़ने लिए जो 'ने' 'को' आदि चिह्न काम में आते हैं उन्हें 'विभक्ति' (कारक-चिह्न) कहते हैं।

१ अनु=पीछे, वद्=वाद=कहना, एक बात को फिर से कहना अर्थात् एक बात को दूसरे शब्दों में बदल करके कहना। यद्यपि अनुवाद शब्द के इस यौगिक अर्थ के अनुसार एक भाषा का अनुवाद उसी भाषा में भी हो सकता है तथापि 'अनुवाद' शब्द का अर्थ 'दूसरी भाषा में बदलना' यही फोक व्यवहार में प्रसिद्ध है। इस लिए हम 'अनुवाद' शब्द को योगरूढ़ शब्द कह सकते हैं।

विभक्ति case-sign	कारक Cases	अर्थ
प्रथमा	कर्त्ता Nominative	(वह वस्तु), ने
द्वितीया	कर्म Accusative	को
तृतीया	करण Instrumental	ने, से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान Dative	को, के लिए
पञ्चमी	अपादान Ablative	से
षष्ठी	सम्बन्ध Genitive	का, के की
सप्तमी	अधिकरण Locative	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन Vocative	हे, अये, भोः, इत्यादि ।

ऊपर कहा जा चुका है कि वाक्य शब्दों का समूह है, जैसे—

(वाक्य)—बालः सदा पुस्तकं पठति (लड़का हमेशा पुस्तक पढ़ता है) इस वाक्य में पाँच शब्द हैं। इसी वाक्य को और ढंगों से भी कह सकते हैं :—

बालः सदा पुस्तकानि पठति (लड़का हमेशा पुस्तकें पढ़ता है)

बालाः सदा पुस्तकानि पठन्ति (लड़के हमेशा पुस्तकें पढ़ते हैं)

इन तीनों वाक्यों को देखने से मालूम हुआ कि शब्दों में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके रूप हमेशा एक से रहते हैं, जैसे 'सदा' (हमेशा)। कोई-कोई शब्द ऐसे हैं जिनमें वाक्य के और शब्दों के असर परिवर्तन हो जाता है, जैसे बालः (लड़का), पुस्तकं (पुस्तक), पठति (पढ़ता है) के रूप में परिवर्तन हो गया। जिन शब्दों के रूप में कभी परिवर्तन या विकार नहीं होता वे अव्यय कहलाते हैं, जैसे—सदा (हमेशा), और जिनमें परिवर्तन हो जाता है वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

विकारी शब्दों के कई भेद होते हैं, जैसे—गोविन्दः त्वत्तः शोभनां विद्याम् अपठत् (गोविन्द ने तुझ से अच्छी विद्या पढ़ी) इस वाक्य में गोविन्दः (गोविन्द) नाम या संज्ञा है, तः (ने, से) कारक-विज्ञ है, 'त्वत्' (तुझ) मनुष्य के स्थान पर आया है, इस लिए सर्वनाम है। विद्याम् (विद्या) की विशेषता बताता है, इसलिए विशेषण है, अपठत् (सीखी) एक काम है, इसलिए यह क्रिया है।

विकारी { १ संज्ञा—(वस्तु का नाम जैसे गोविन्द, नदी, सेना आदि)
 २ सर्वनाम—(जो संज्ञा के स्थान पर आवे जैसे, वह, तू, मैं इत्यादि)
 ३ विशेषण—(जो वस्तु की विशेषता बतावे, जैसे सुन्दर, अच्छा, तीन आदि)
 ४ क्रिया—(किसी काम का करना या होना जैसे, पढ़ता है, खाता है) आदि
 अविकारी ५ अव्यय—(जिसमें विकार न हो जैसे सदा, यद्यपि आदि)

ऊपर के वाक्य में 'गोविन्द' एक नाम आया है जिससे पुरुष जाति का ज्ञान होता है, इसलिए यह शब्द पुल्लिङ्ग में होता है।

१ जहाँ पर अलग होने, हटने आदि का बोध हो वहाँ पर अपादान (पंचमी) होती है। और जहाँ पर संज्ञा से क्रिया के साधन (जरिया) का बोध हो वहाँ पर करण (तृतीया) होती है।

‘विद्या’ शब्द से स्त्री—जाति का बोध होता है, इसलिए यह स्त्रीलिङ्ग में होता है। ‘पुस्तक’ शब्द से न तो पुरुष जाति का न स्त्री जाति का बोध होता है, इसलिए यह नपुंसक लिंग में होता है। हिन्दी भाषा में नपुंसक लिंग नहीं होता।

ऊपर के वाक्य में पुस्तकम् (पुस्तक) से एक संख्या का ज्ञान होता है, इसलिए यह एक वचन है, और ‘पुस्तकानि’ (पुस्तकें) से बहुत पुस्तकों का ज्ञान होता है, इसलिए यह बहुवचन है। हिन्दी में ये दो ही वचन होते हैं, परन्तु संस्कृत में द्विवचन भी होता है, जैसे—गोविन्दः पुस्तकौ अपठत (गोविन्द ने दो पुस्तकें पढ़ी) में ‘पुस्तकौ’ द्विवचन है।

जब बात चीत की जाती है, तो एक बोलने वाला होता है, दूसरा वह होता है जिसके बात-चीत की जाती है और तीसरा वह (जड़ अथवा चेतन) पदार्थ होता है जिसके विषय में बात-चीत की जाती है। बोलने वाले को उत्तम पुरुष (First Person), जिससे बात-चीत की जाती है, उसे मध्यम पुरुष (Second person), और जिसके विषय में बात-चीत की जाती है उसे अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष (Third person) कहते हैं।

जैसे—

	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)		आवाम् (हम दो)		वयम् (हम)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तू)		युवाम् (तुम दो)		यूयम् (तुम)
प्रथम पुरुष	सः (पुं०)		तौ		ते
	सा (स्त्री)	(वह)	ते	(वे दो)	ताः (वे)
	तत् (नपुं)		ते		तानि

बालकः क्रीडति (लड़का खेलता है) बालिका क्रीडति (लड़की खेलती है) इन दो वाक्यों को देखने से मालूम हुआ कि संस्कृत में तिङन्त क्रिया का लिङ्ग नहीं होता है अर्थात् कर्ता के पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होने पर भी क्रिया एक-सी रहती है, जैसे—रामः गच्छति सीता वा गच्छति। (राम अथवा सीता जाती है) रामोऽगच्छत्, सीता अगच्छत् (राम गया, सीता गई) पर हिन्दी में क्रियाओं के रूप कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार, और कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार पुल्लिङ्ग में और स्त्रीलिङ्ग में बदल जाते हैं।

शिशुः हसति (बच्चा हँसता है) बालिका पुष्पं पश्यति (लड़की फूल देखती है) इन दो वाक्यों में से पहले वाक्य की क्रिया (हसति) अकर्मक है क्योंकि उसे कर्म की जरूरत नहीं रहती और दूसरे वाक्य की क्रिया (पश्यति) सकर्मक है, क्योंकि उसे कर्म की जरूरत है।

ब्राह्मणः भोजनं पचते (ब्राह्मण भोजन पकाता है) सूदः भोजनं पचति (रसोइय

१ हिन्दी का यह नियम विधि क्रिया और संभावना क्रिया में लागू नहीं होता।

भोजन पकाता है) पहले वाक्य की क्रिया (पचते) आत्मनेपद में है क्योंकि आत्मनेपद का अर्थ है 'वह पद जो अपने लिए हो, ब्राह्मण अपने लिए भोजन पकाता है, क्रिया का फल उसे मिलता है। दूसरे वाक्य की क्रिया (पचति) परस्मैपद में है, परस्मैपद का अर्थ है 'वह पद जो दूसरे के लिए हो' रसोइया भोजन दूसरे के लिए बनाता है, इसलिए पकाने का फल कर्त्ता से भिन्न दूसरे को मिलता है। संस्कृत भाषा में धातुएँ या क्रियाएँ पदों के हिसाब से बँटी हैं, कुछ धातुएँ परस्मैपद में ही होती हैं, कुछ आत्मनेपद में और कुछ दोनों में। यह पद-विभाग का नियम केवल व्याकरणों में ही मिलता है, परन्तु संस्कृत के प्रायः सभी लेखकों ने इस नियम का उल्लंघन किया है।

अहं पुस्तकं पठामि (मैं पुस्तक पढ़ता हूँ) मया पुस्तकं पठ्यते (मुझ से पुस्तक पढ़ी जाती है) मया हस्यते (मुझ से हँसा जाता है) इन तीन वाक्यों में क्रियाएँ तीन वाच्यों में हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य में। पहले वाक्य की क्रिया (पठामि) कर्तृवाच्य में है, दूसरे वाक्य की क्रिया (पठ्यते) कर्मवाच्य में और तीसरे वाक्य की क्रिया (हस्यते) भाववाच्य में है। सकर्मक धातुओं की क्रियाएँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में होती हैं अकर्मक धातुओं की क्रियाएँ कर्तृवाच्य और भाववाच्य में।

संस्कृत में क्रिया के दस काल (वृत्तियाँ) होते हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(१)	वर्तमानकाल—	लट्	Present tense
(२)	{ अनद्यतनभूत—	लङ्	Past imperfect tense
(३)		लुङ्	Aorist
(४)		लिट्	Past perfect tense
(५)		लृट्	Simple Future
(६)	{ अनद्यतनभविष्य—	लुट्	Future
(७)		लोट्	Imperative mood
(८)	विधि—	विधिलिङ्ग	Potential mood
(९)	आशीः—	आशीलिङ्	Benedicative
(१०)	क्रियातिपत्ति—	लृङ्	Conditional

वर्तमानकाल की क्रिया का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाली चीज के विषय में किया जाता है, जैसे—गोपालः पाठशालां गच्छति (गोपाल स्कूल जाता है) अहं सत्यं वदामि (मैं सच बोलता हूँ)।

संस्कृत में भूतकाल की क्रिया के बताने के लिए तीन काल हैं—अनद्यतनभूत सामान्यभूत और परोक्षभूत। इसके प्रयोग में कुछ अन्तर है। अनद्यतनभूत का अर्थ है, वह भूतकाल जो आज न हुआ हो। इस काल का प्रयोग ऐसी दशा में होना चाहिए जब क्रिया आज खतम न हुई हो, कल या इसके पहले खतम हुई हो। 'राम अभी खेलने गया' इस वाक्य में 'गया' का अनुवाद अनद्यतनभूत की क्रिया (अगच्छत्) से न होगा बल्कि सामान्यभूत की क्रिया (अगमन्) से होगा। परोक्षभूत का अर्थ है

ऐसा भूतकाल जो आँखों के सामने न हुआ हो,^१ जैसे—रामो राजा बभूव (राम राजा था) । तीसरे भूतकाल—सामान्यभूत का प्रयोग सब जगह किया जा सकता है चाहे किया आज खतम हुई हो या कई बरस पहले । परोक्षभूत को छोड़कर सामान्य-भूत या अनद्यतनभूत के प्रयोग में आजकल विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, जैसे—
वालः सहसा अरुदत् (बालक अचानक रो पड़ा) ।

भविष्यकाल की क्रिया को बताने के लिए अनद्यतनभविष्य और सामान्यभविष्य प्रयुक्त होते हैं । आज ही होनेवाली क्रिया के लिए सामान्यभविष्य (लुट्) का प्रयोग होता है, जैसे:—अद्यैव प्रयागं गमिष्यामि (मैं आज ही इलाहाबाद जाऊँगा) । सामान्यभविष्य का सब कहीं प्रयोग हो सकता है, परन्तु अनद्यतनभविष्य (लुट्) आज होनेवाली क्रिया के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकता । यह दूरवर्ती भविष्य की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे:—परस्वोऽहं काशीं गन्तास्मि (परसों मैं बनारस जाऊँगा) ।

आज्ञा (लोट्) का प्रयोग किसी को कुछ करने की आज्ञा देने के लिए होता है, जैसे:—गच्छतु भवान् पुनर्दर्शनाय (आप जाएँ फिर दर्शन दीजिए) गच्छ मह्यं जल-मानय (जा मेरे लिए पानी ले आ) ।

विधिलिङ् का प्रयोग किसी को आदेश देने के लिए होता है । लोट् (आज्ञा) का प्रयोग नरमी प्रकट करता है और विधिलिङ् का प्रयोग कुछ सख्ती प्रकट करता है, जैसे—कः जानाति किं भवेत् (कौन जानता है क्या हो ?) छात्रः पाठशालां गच्छेत् (विद्यार्थी को स्कूल जाना चाहिए) ।

आशीर्वाद देने के लिए आशीर्लिङ् का प्रयोग होता है, जैसे—स्वं चिरायुः भूयाः (तुम्हारी बड़ी उम्र हो) जीवेम शरदां शतम् (हम सौ बरस जीवें) ईश्वरस्त्वां धनितं कुर्यात् (ईश्वर तुम्हें धनी बना दे) ।

क्रियातिपत्ति (लृङ्) का प्रयोग ऐसे समय पर होता है जब एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो । जैसे—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्ष्यमभविष्यत् (यदि अच्छी वर्षा होनी तो अच्छी फसल होती) यदि गोपालः परिश्रममकरिष्यत् तदा नूनमुत्तीर्णोऽभविष्यत् (यदि गोपाल मेहनत करता तो अवश्य पास हो जाता) ।

परस्मैपदी अस्—होना
वर्तमान काल (लट् लकार)

एकवचन

प्रथम पुरुष अस्ति (वह है)

मध्यम पुरुष अस्ति (तू है)

उत्तम पुरुष अस्मि (मैं है)

द्विवचन

स्तः (वे दो है)

स्थः (तुम दो हो)

स्वः (हम दो हैं)

बहुवचन

सन्ति (वे हैं)

स्थः (तुम हो)

स्मः (हम हैं)

१ परोक्षभूत का प्रयोग उत्तम पुरुष में नहीं होता क्योंकि स्वयं की हुई क्रिया परोक्ष (आँखों के सामने से दूर) नहीं हो सकती । किन्तु पागलपन की दशा में किया हुआ काम परोक्षभूत से भी बताया जा सकता है क्योंकि पागल मनुष्य के कामसमक्ष नहीं कहे जा सकते ।

प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	ति	(तौ) तः	(ते) अन्ति
म० पु० (त्वम्)	सि	(युवाम्) थः	(यूयम्) थ
उ० पु० (अहम्)	मि	(आवाम्) वः	(वयम्) सः

भूतकाल (लङ् लकार)

एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु० आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वे दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु० आसीः (तु था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु० आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	त	(तौ) ताम्	(ते) अन्
म० पु० (त्वम्)	:	(युवाम्) तम्	(यूयम्) त
उ० पु० (अहम्)	अम्	(आवाम्) व	(वयम्) स

परस्मैपदी (भू) भव—होना

वर्तमान—(लट् लकार)

प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

अनद्यतनभूत (लङ् लकार)

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

सामान्यभूत (लुङ् लकार)

प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

परोक्षभूत (लिट् लकार)

प्र० पु०	वभूव	वभूवतुः	वभूवुः
म० पु०	वभूविथ	वभूवथुः	वभूव
उ० पु०	वभूव	वभूविव	वभूविम

सामान्य भविष्य (लृट् लकार)

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

अनद्यतन भविष्य (लृट् लकार)

प्र० पु०	भविता	भवितारी	भवितारः
म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाम	भवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

क्रियातिपत्ति (लृङ् लकार)

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

आत्मनेपदी जन्—पैदा होना

वर्तमान काल (लट् लकार)

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

अनद्यतनभूत (लङ् लकार)

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

सामान्यभूत (लृङ् लकार)

प्र० पु०	अजनि, अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
म० पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्-ङ्
उ० पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

परोक्षभूत (लिट् लकार)

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
----------	-------	---------	---------

म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिष्वे-द्धे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
प्र० पु०	सामान्य भविष्य (लृट् लकार)		
म० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
उ० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे
प्र० पु०	अनद्यतनभविष्य (लृट् लकार)		
म० पु०	जनिता	जनितारौ	जनितारः
उ० पु०	जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे
	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे
प्र० पु०	आज्ञा (लोट् लकार)		
म० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
उ० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
	जायै	जायावहे	जायामहे
प्र० पु०	विधिलिङः		
म० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
उ० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
प्र० पु०	आशीलिङः		
म० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
उ० पु०	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम्
	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि
प्र० पु०	क्रियातिपत्ति (लृङ् लकार)		
म० पु०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
उ० पु०	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्
	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

शब्दोच्चारण

संस्कृत विभक्तियों के रूप

प्र०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वि०	[॥]	[औ]	[अः]
तृ०	[अम्]	[औ]	[अः] ^१
	[एन] ^२	[भ्याम्]	[भिः]

१ अ, इ, उ, और ऋकार अन्तवाले शब्दों को दीर्घ होकर अन्त में 'नृ' हो जाता है। २ इ, उ और ऋकार अन्त वाले शब्दों के अन्त में 'ना' होता है।

च०	[ए] ^१	[भ्याम्]	[भ्यः]
प०	[आत्] ^३	[भ्याम्]	[भ्यः]
ष०	[स्य]	[ओः]	[आम्]
स०	[इ] ^३	[ओः]	[सु]

जसा कि पहले कहा गया है, विभक्तियाँ सात हैं, और सम्बोधन को मिलाकर आठ हो जाती हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इन सात विभक्तियों से संख्या और कारकों का ज्ञान भी होता है। इन्हीं सात विभक्तियों को सुप् भी कहते हैं, सुप् का अर्थ है; औ, अः आदि सात विभक्तियाँ। ति, तः, अन्ति आदि को तिङ् कहते हैं। जिन शब्दों के अन्त में सुप् और तिङ् हों उन्हें पद कहते हैं, अर्थात् बालः, बाली, बालाः आदि और पठति, पठतः, पठन्ति आदि पद हैं। आगे लिखे शब्द खूब रट लेना चाहिए।

पुल्लिङ्ग Masculine Gender

१—बाल (लड़का) अकारान्त

एक व०	द्वि० व०	बहु व०
प्र० बालः (लड़का)	बाली (दो लड़के)	बालाः (लड़के)
द्वि० बालम् (लड़के को)	बालौ (दो लड़कों को)	बालान् (लड़कों को)
तृ० बालेन (लड़केसे)	बालाभ्याम् (दो लड़कों से)	बालैः (लड़कों से)
च० बालाय (लड़के के लिए)	बालाभ्याम् (दो लड़कों के लिए)	बालेभ्यः (लड़कों के लिए)
प० बालात् (लड़के से)	बालाभ्याम् (दो लड़कों से)	बालेभ्यः (लड़कों से)
ष० बालस्य (लड़के का, के, की)	बालयोः (दो लड़कों का)	बालानाम् (लड़कों, का)
स० बाले (लड़के पर, में)	बालयोः (दो लड़कों पर)	बालेषु (लड़कों पर)
सं० हे बाल (हे लड़के)	हे बालौ (हे दो लड़को)	हे बालाः (हे लड़कों)

इसी प्रकार

देवः—देवता	नटः—नट	पिकः—कोयल	नृपः—राजा
खगः—पक्षी	अनलः—आग	वंशः—कुल	सर्पः—साँप
शुकः—तोता	अनिलः—हवा	अंशः—हिस्सा	करः—हाथ
वक्रः—बगला	वानरः—बंदर	नरः—मनुष्य	मयूरः—मोर
खलः—दुष्टः	गजः—हाथी	नक्रः—नाका	वृषभः—बैल

जिन अकारान्त शब्दों में ऋ, ॠ, र्, प् में से कोई अक्षर हो उनको तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन के नकार का णकार हो जाता है, जैसे—नृपेण, नृपाणाम्, नरेण, नराणाम्।

१ अकारान्त शब्द के अन्त में 'आय' होता है। २ इ, उ और अकारान्त शब्दों के षष्ठिमी और षष्ठी के एकवचन में इ, उ, ऋ को गुण होकर स् का : होता है। ३ इकारान्त तथा, उकारान्त के अन्त में 'औ' और आकारान्त के 'याम' हो जाता है।

४ अकारान्त शब्द के सम्बोधन के एकवचन में विसर्ग नहीं होता।

२--कवि (कविता बनाने वाला) इकारान्त

प्र०	कविः	कवी	कवयः
द्वि०	कविम्	कवी	कवीन्
तृ०	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
च०	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पं०	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
ष०	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
स०	कवी	कव्योः	कविषु
सं०	हे कवे	हे कवी	हे कवयः

इसी प्रकारः—

विधिः—भाग्य	उदधिः—समुद्र	अरिः—दुश्मन	रविः—सूर्य
निधिः—खजाना	असिः—तलवार	नृपतिः, भूपति—राजा	कपिः—बन्दर
कलिः—झगडा	यतिः—योगी	अतिथिः—मेहमान	पाणिः—हाथ
ऋषिः, मुनिः, हरिः अग्निः, गिरिः, मणिः व्याधिः रश्मिः सारथिः, बलिः (बलि-दान), कृमिः (कीड़ा मकौड़ा) प्रभृतिः आदि ।			

जिन इकारान्त शब्दों में ऋ, ए, ष हों उनके तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन के न् का ण् हो जाता है, जैसे—ऋषिणा ऋषीणाम्; अरिणा, अरीणाम् ।

३—सुधी (विद्वान्) ईकारान्त

प्र०	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वि०	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृ०	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
च०	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पं०	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
ष०	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
स०	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सं०	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

इसी प्रकारः—

सुश्रीः	— दिव्य	अपत्नीः	— निर्लज्ज
मन्दधीः	— सूख	कुधीः	— दुष्ट

४—साधु (अच्छा आदमी) उकारान्त

प्र०	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	साधुम्	साधू	साधून्
तृ०	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः

पं०	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
ष०	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
स०	साधौ	साध्वांः	साधुषु
सं०	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

इसी प्रकार :—

विधुः	—	चन्द्रमा	वायुः	—	पवन	शिशुः	—	बालक
कृशानुः	—	अग्नि	गुरुः	—	आचार्य	मृत्युः	—	मौत
भानुः	—	सूर्य	शत्रुः	—	वैरी	प्रभुः	—	मालिक
इन्दुः	—	चन्द्रमा	बाहुः	—	भुजा	पाशुः	—	धूलि
तरुः	—	वृक्ष	बिन्दुः	—	बुंद	मृदुः	—	कमल
इषुः	—	बाण	शम्भुः	—	शिव			इत्यादि
पशुः	—	पशु	परशुः	—	कुल्हाड़ा			

५—श्रोतृ (सुनने वाला) ऋकारान्त

प्र०	श्रोतः	श्रोतारी	श्रोतारः
द्वि०	श्रोतारम्	श्रोतारी	श्रोतृन्
तृ०	श्रोत्रा	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभिः
च०	श्रोत्रे	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभ्यः
पं०	श्रोतुः	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभ्यः
ष०	श्रोतुः	श्रोत्रोः	श्रोतृणाम्
स०	श्रोतरि	श्रोत्रोः	श्रोतृषु
सं०	हे श्रोतः	हे श्रोतारी	हे श्रोतारः

इसी तरह :—

वक्तृ	—	बोलने वाला	सवितृ	—	सूर्य	होतृ	—	हवन करने वाला
कर्तृ	—	करने वाला	अध्येतृ	—	पढ़ने वाला	जेतृ	—	जीतने वाला
भृतृ	—	स्वामी	गन्तृ	—	जाने वाला	रक्षितृ	—	रक्षक
नप्तृ	—	पौत्र	द्रष्टृ	—	देखने वाला			इत्यादि

६—पितृ (पिता)

प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसी तरह :—

भ्रातृ — भाई
देव — देवर

नृ — आदमी
जामातृ — जवाई

स्त्रीलिङ्ग Feminine Gender

७—लता (बेल) आकारान्त

प्र०	लता	लते	लता:
द्वि०	लताम्	लते	लता:
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	लतयै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं०	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष०	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सं०	हे लते	हे लते	हे लताः

इसी तरह :—

कन्या — बालिका	निशा — रात्रि	व्यथा — कष्ट	शिला — पत्थर
कथा — कहानी	आज्ञा — हुक्म	जरा — बुढ़ापा	रथ्या — गली (सड़क)
प्रभा — रोशनी	कला — हुनर	भार्या — स्त्री	अजा — बकरी
क्रीडा — खेल	गङ्गा — गंगा नदी	ललना — स्त्री	
शाला — घर (स्थान)	चिन्ता — फिक्र	कान्ता — स्त्री	

क्षमा । माला । शोभा । लज्जा । प्रजा । छाया । विद्या । तृष्णा । इत्यादि

८—मति (बुद्धि) इकारान्त

प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मती	मत्योः	मतिषु
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः

इसी प्रकार :—

श्रुतिः=वेद; भूमिः, पंक्तिः, ओषधिः, व्रततिः=बेल; धूलिः, आलिः, बुद्धिः,
गतिः, श्रेणिः, अङ्गुलिः, अवनिः=पृथ्वी ।

९--नदी (वरया) ईकारान्त

प्र०	नदी	नद्यी	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यी	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि	हे नद्यी	हे नद्यः
जननी -- माता	मही, पृथ्वी--भूमि	इन्द्राणी--इन्द्र की स्त्री	गौरी -- पार्वती
महिषी--पटरानी	वापी -- बाउड़ी	कौमुदी--चाँदनी	रजनी -- रात्रि
दासी -- नौकरानी	नटी--नट की स्त्री	नारी -- स्त्री	इत्यादि
सखी -- सहेली	पुरी -- शहर	पत्नी -- भार्या	

१० धेनु (गाय) उकारान्त

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनुः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनी	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी प्रकार :--

रेणुः=धूलि, तनुः=शरीर, चञ्चुः=चोंच, उडुः=तारा आदि ।

१०--वधू (पत्नी या पुत्र की पत्नी) ऊकारान्त

प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सं०	हे वधू	हे वध्वौ	हे वध्वः

इसी प्रकार :—

चमूः=सेना, तनूः=शरीर, जम्बूः=जामुन का पेड़, श्वश्रूः=सास ।

११-मातृ (माँ) ऋकारान्त

प्र०	माता	मातरी	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातरी	मातृः

शेष विभक्तियाँ पितृ शब्द की तरह होती हैं ।

इसी तरह :—

ननान्दु=ननद, दुहितृ=लड़की ।

नपुंसकलिङ्ग Neuter Gender

१२-फल (अकारान्त)

प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम्	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पं०	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	फलयोः	फलेषु
सं०	हे फल	हे फले	हे फलानि

इसी प्रकार :—

रत्नम् — मणि	सुवर्णम् — सोना	जलम् — पानी	पुष्पम् — फूल
विषम् — जहर	मांसम् — माँस	नेत्रम् — आँख	उद्यानम् — बाग
वस्त्रम् — कपड़ा	नखम् — नाखून	मित्रम् — दोस्त	नयनम् — आँख
नगरम् — शहर	जलजम् — कमल	हृदयम् — दिल	
तत्त्वम् — सचाई	गृहम् — घर	कुसुमम् — फूल	

दुःखम्, सुखम्, मुखम्, पापम्, आकाशम्, भोजनम्, वचनम्, मौनम् (चुप) इत्यादि ।

१३-वारि (पानी) इकारान्त

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं०	हे वारि (वारे)	हे वारिणी	हे वारीणि

जन्यतनभूतकाल (लङ्)

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० अपठत् (वह पढ़ा)	अपठताम् (वे दो पढ़े)	अपठन् (वे पढ़े)
म० पु० अपठत् (तू पढ़ा)	अपठतम् (तुम दो पढ़े)	अपठत (तुम पढ़े)
उ० पु० अपठम् (मैं पढ़ा)	अपठाव (हम दो पढ़े)	अपठाम (हम पढ़े)

भूतकालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	त् (तौ)	ताम् (ते)	अन्
म० पु० (त्वम्)	स् (:) * (युवाम्)	तम् (यूयम्)	त
उ० पु० (अहम्)	म् (आवाम्)	व (वयम्)	म

भविष्यत् काल (लृट्)

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० पठिष्यति (वह पढ़ेगा)	पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे)	पठिष्यन्ति (वे पढ़ेंगे)
म० पु० पठिष्यसि (तू पढ़ेगा)	पठिष्यथः (तुम दो पढ़ांगे)	पठिष्यथ (तुम पढ़ांगे)
उ० पु० पठिष्यामि (मैं पढ़ूंगा)	पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे)	पठिष्यामः (हम पढ़ेंगे)

नियम—भविष्यत् काल (लृट्) बनाने का सुगम मार्ग यह है कि शुद्ध धातु पर (इ) लगा कर आगे 'ष्य' रखो। शेष 'ति' 'तः' 'अन्ति' आदि प्रत्यय वर्तमान की तरह होंगे।

कर्तृ-कारक (वह वस्तु, ने) प्रथमा

सर्वनाम शब्द

उत्तम पुरुष

पु० स्त्री० नपु०	एकव०	द्वि०	बहुव०
अस्मद्	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दो)	वयम् (हम)

मध्यम पुरुष

युष्मद्	त्वम् (तू)	युवाम् (तुम दो)	यूयम् (तुम)
---------	------------	-----------------	-------------

प्रथम पुरुष

तत् पु० सः	} (वह)	तौ	} (वे दो)	ते	} (वे)
स्त्री० सा		ते		ताः	
नपु० तत्		ते		तानि	
इदम् पु० अयम्	} (यह)	इमौ	} (ये दो)	इमे	} (ये)
स्त्री० इयम्		इमे		इमाः	
नपु० इदम्		इमे		इमानि	
किम् पु० कः	} (कौन)	कौ	} (कौन दो)	के	} (कौन सब)
स्त्री० का		के		काः	
नपु० किम्		के		कानि	

* भूतकाल में सिर्फ मध्यम पुरुष के एकवचन में विसर्ग (:) होता है, अ कहीं नहीं। अतः अन्यत्र कहीं विसर्ग मत रखो। और हल् अक्षरों का पाँच पर विशेष ध्यान रखो।

अनुवादचन्द्रिका

एकव०			द्विव०			बहुव०		
पुं०	यः	} (जो)	यौ	} (जो दो)	[ये	याः	} (जो सब)	
स्त्री०	या		ये			यानि		
नपुं०	यत्		ये					
भवत् पुं०	भवान्	} (आप)	भवन्तौ	} (आप दो)	भवन्तः	भवन्तः	} (आप सब)	
स्त्री०	भवती		भवत्यौ			भवत्यः		
नपुं०	भवत्		भवती			भवन्ति		

कर्तृवाच्य Active voice

कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके । द्वितीयान्तं भवेत् कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम् ॥
कर्ता कर्म च करणं संप्रदानं तथैव च । अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट् ॥

अनुवाद की प्रणाली

(हरिकारिका)

संस्कृत के अनुवाद में कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति, और क्रियापद कर्ता के अधीन होता है, अर्थात् यदि कर्ता प्रथम पुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथम पुरुष की, यदि कर्ता मध्यम पुरुष का हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष की, और यदि कर्ता उत्तम पुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की ही लगाई जाती है। कर्ता के एकवचन के साथ क्रिया भी एकवचन की, द्विवचन के साथ द्विवचन की, और बहुवचन के साथ क्रिया भी बहुवचन की ही लगाई जाती है।

जैसे—‘सः पुस्तकं पठति’ इस वाक्य में ‘सः’ कर्ता है जो कि प्रथमा विभक्ति में है। ‘पुस्तकं’ कर्म है, जो द्वितीया विभक्ति में है। और क्योंकि ‘सः’ तत् शब्द के प्रथम पुरुष का एकवचन है, इसलिए क्रिया ‘पठति’ भी प्रथम पुरुष के एकवचन में ही है। यदि कर्ता और क्रिया एक ही पुरुष के एक ही वचन में न रखी जाती तो वाक्य अशुद्ध हो जाता।

अंग्रेजी भाषा में पहिले कर्ता, फिर क्रिया और फिर कर्म लगाया जाता है क्योंकि उसमें विभक्तियों के चिह्न नहीं होते। परन्तु संस्कृत में विभक्तियों के चिह्न होने से कर्ता, कर्म और क्रिया आगे पीछे भी लग सकती हैं। यथा—‘स बालकं पृच्छति’ ‘बालकं पृच्छति सः’ ‘पृच्छति स बालकम्’ इत्यादि।

संस्कृत वनाश्रयो :—

(क) १—तू क्या पढ़ता है ? २—वे क्या पढ़ते हैं ? ३—राम अब नहीं पढ़ता है। ४—कला जरूर पढ़ती है। ५—दीवान जल्दी २ पढ़ता है। ६—मैं वैसे ही पढ़ता हूँ। ७—तुम कहाँ से पढ़ते हो। ८—वह हमेशा ऐसे ही पढ़ता है। ९—शान्ता क्यों नहीं पढ़ती है १०—हम दो जल्दी पढ़ते हैं। ११—आप दो हमेशा पढ़ते हो। १२—आप सब क्यों नहीं पढ़ते हो ? १३—क्या आप दो पढ़ती हो ? १४—आप हमेशा जल्दी पढ़ने हो। १५—आप दो क्या क्या पढ़ती हो ?

१ भवत् (आप) शब्द के साथ क्रिया प्रथम पुरुष की लगती है। जैसे—भवान् पठति (आप पढ़ते हो) भवन्तौ पठतः (आप दो पढ़ते हो) इत्यादि मध्यम पुरुष की क्रिया नहीं लगाई जाती, अतएव ‘भवान् पठसि’ यह वाक्य गलत है।

कर्तृ-कारक

(ख) १—लड़कियां कब पढ़ें ? २—तुम क्यों नहीं पढ़ें ? ३—आज मैंने पढ़ा । ४—वे यहाँ नहीं पढ़ें । ५—तुम जल्दी जल्दी पढ़ें । ६—राम ने* उस से नहीं पढ़ा । ७—तुम ने आज क्यों नहीं पढ़ा ? ८—गोविन्द ने दूसरे दिन क्या पढ़ा । ९—तुमने जो पढ़ा सो अच्छा पढ़ा । १०—मैंने कल सायंकाल नहीं पढ़ा ।

(ग) १—वह कब पढ़ेगा ? २—मैं यहाँ ही पढ़ूंगा । ३—राम कदापि पढ़ेगा । ४—विद्यार्थी कब पढ़ेंगे ? ५—बालिकाएँ जल्द पढ़ेंगी । ६—तुम कब पढ़ोगे ? ७—बालक आज ही पढ़ेंगे । ८—मैं अच्छी तरह पढ़ूंगा । ९—वे कब पढ़ेंगे । १०—कृष्ण दिन में पढ़ेगा । ११—हम अलग पढ़ेंगे । १२—तू क्या पढ़ेगी

आज्ञा (लोट्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु० पठतु (वह पढ़ें)	पठताम् (वे दो पढ़ें)	पठन्तु (वे पढ़ें)
म० पु० पठ (तू पढ़)	पठतम् (तुम दो पढ़ो)	पठत (तुम पढ़ो)
उ० पु० पठानि (मैं पढ़ूँ)	पठाव (हम दो पढ़ें)	पठाम (हम पढ़ें)

आज्ञार्थक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	तु	(तौ)	ताम्	(ते)	अन्तु
म० पु० (त्वम्)	अ	(युवाम्)	तम्	(यूयम्)	त
उ० पु० (अहम्)	आनि	(आवाम्)	आव	(वयम्)	आम

इसी प्रकार भ्वादिगणीय कुछ परस्मैपदी धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
गम्—जाना	गच्छति	अगच्छत्	गमिष्यति	गच्छतु
आगम्—आना	आगच्छति	आगच्छत्	आगमिष्यति	आगच्छतु
पा (पिब) —पीना	पिबति	अपिबत्	पास्यति	पिबतु
खाद्—खाना	खादति	अखादत्	खादिष्यति	खादतु
क्रीड्—खेलना	क्रीडति	अक्रीडत्	क्रीडिष्यति	क्रीडतु
वद्—बोलना	वदति	अवदत्	वदिष्यति	वदतु
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षति	अरक्षत्	रक्षिष्यति	रक्षतु
वस्—रहना	वसति	अवसत्	वत्स्यति	वसतु
स्था (तिष्ठ) ठहरना	तिष्ठति	अतिष्ठत्	स्थास्यति	तिष्ठतु
दृश् (पश्य) देखना	पश्यति	अपश्यत्	द्रक्ष्यति	पश्यतु
भू (भव) —होना	भवति	अभवत्	भविष्यति	भवतु
हस्—हँसना	हसति	अहसत्	हसिष्यति	हसतु
पत्—गिरना	पतति	अपतत्	पतिष्यति	पततु
त्यज्—छोड़ना	त्यजति	अत्यजत्	त्यक्ष्यति	त्यजतु
धाव—दौड़ना	धावति	अधावत्	धाविष्यति	धावतु

* कई विद्यार्थी “उसने पढ़ा” का अनुवाद “तेन अपठत्” कर देते हैं, यह सर्वथा अशुद्ध है। “उसने” का अनुवाद ‘सः’ होगा क्योंकि ‘ने’ प्रथमा का अर्थ भी है। इसलिए इसका अनुवाद “सः अपठत्” होगा।

अभ्यास २

१—लड़के खेलते हैं। २—राजा रक्षा करता है। ३—तुम क्यों हँसते हो ?
 ४—पत्ते गिरते हैं। ५—वहाँ लड़के क्यों खड़े हैं? ६—बंदर दौड़ते हैं। ७—यहाँ
 कीन रहते हैं? ८—विद्यार्थी पढ़ते हैं। ९—तुम रक्षा करते हो। १०—मूर्ख बूढ़ा
 हँसता है। ११—लड़का कब गया? १२—वह कल आया। १३—हमेशा न हँसी।
 १४—गोपाल कल यहाँ आया। १५—हम खावें? १६—विद्यार्थियों को खेलना भी
 चाहिये। १७—हमें झूठ न बोलना चाहिए। १८—मैं आज यहीं रहूँगा।
 १९—क्या देखते हो, पढ़ो। २०—लड़कियाँ यहाँ अभी आईं।

कर्मकारक (को) द्वितीया

सर्वनाम शब्द

	पुं०				स्त्री०	
शब्द	एकव०	द्वि०	बहुव०	एकव०	द्वि०	बहुव०
अस्मद्	माम्	आवाम्	अस्मान्	माम्	आवाम्	अस्मान्
युष्मद्	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तद्	तम्	तौ	तान्	ताम्	ते	ताः
इदम्	इमम्	इमी	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
किम्	कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
यद्	यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः
भवत्	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः

विशेष—(१) नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया विभक्तियाँ एक सी होती हैं। और तृतीया से सप्तमी तक सब विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं। (२) युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में एक ही समान होते हैं।

भ्वादिगण की आत्मनेपदी धातुएँ

सेव्—सेवा करता, वर्तमान काल (लट्)

	एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु०	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
	(वह सेवा करता है)	(वे दो सेवा करते हैं)	(वे सेवा करते हैं)
म० पु०	सेवसे	सेवथे	सेवध्वे
	(तु सेवा करता है)	(तुम दो सेवा करते हो)	(तुम सेवा करते हो)
उ० पु०	सेवे	सेवावहे	सेवाभवे
	(मैं सेवा करता हूँ)	(हम दो सेवा करते हैं)	(हम सेवा करते हैं)

वर्तमानकालिक तिङ् प्रत्यय

		ते	(तौ)	इते	(ते)	अन्ते
प्र० पु०	(तः)	ते	(तौ)	इते	(तौ)	अन्ते
म० पु०	(त्वम्)	से	(युवाम्)	इथे	(युयम्)	ध्वे
उ० पु०	(अहम्)	ई	(आवाम्)	वहे	(वयम्)	महे

अनद्यतनभूत (लङ्)

प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० पु०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

भूतकालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	त	(तौ)	इताम्	(ते)	अन्त
म० पु०	(त्वम्)	थाः	(युवाम्)	इथाम्	(यूयम्)	ध्वम्
उ० पु०	(अहम्)	इ	(आवाम्)	वहि	(वयम्)	महि

भविष्यत् काल (लृट्)

प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्यन्ते	सेविष्यन्ते
म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्यथे	सेविष्यध्वे
उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

भविष्यत्कालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	स्यते	(तौ)	स्येते	(ते)	स्यन्ते
म० पु०	(त्वम्)	स्यसे	(युवाम्)	स्यथे	(यूयम्)	स्यध्वे
उ० पु०	(अहम्)	स्ये	(आवाम्)	स्यावहे	(वयम्)	स्यामहे

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

आज्ञार्थक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	ताम्	(तौ)	इताम्	(ते)	अन्ताम्
म० पु०	(त्वम्)	स्व	(युवाम्)	इथाम्	(यूयम्)	ध्वम्
उ० पु०	(अहम्)	ऐ	(आवाम्)	आवहै	(वयम्)	आमहै

इसी तरह अन्य आत्मनेपदी भ्वादिगणीय धातुएँ—

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
लभ्—पाना	लभते	अलभत	लप्स्यते	लभताम्
रुच्—चमकना या अच्छा लगना	रोचते	अरोचत	रोचिष्यते	रोचताम्
लज्ज्—शर्माना	लज्जते	अलज्जत	लज्जिष्यते	लज्जताम्
भाष्—कहना	भाषते	अभाषत	भाषिष्यते	भाषताम्
मुद्—प्रसन्न होना	मोदते	अमोदत	मोदिष्यते	मोदताम्
शिक्ष्—शिक्षा देना	शिक्षते	अशिक्षत	शिक्षिष्यते	शिक्षताम्
वन्द्—नमस्कार करना	वन्दते	अवन्दत	वन्दिष्यते	वन्दताम्
यत्—कोशिश करना	यतते	अयतत	यतिष्यते	यतताम्
नी (नय्)—ले आना	नयते	अनयत	नेष्यते	नयताम्
	(नयति)	(अनयत्)	(नेष्यति)	(नयतु)
आ+नी (नय्)—लाना	आनयते	आनयत	आनेष्यते	आनयताम्

कर्म—जिसके ऊपर क्रिया का असर (फल) पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं।
कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, जैसे :—

अहं चन्द्रं पश्यामि (मैं चाँद को देखता हूँ) यहाँ पर 'देखने' का असर 'चाँद' के ऊपर पड़ रहा है, इस लिए 'चाँद' कर्म कारक हुआ। कर्म कारक होने से 'चाँद' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ। अत एव 'चाँद को' इसका अनुवाद 'चन्द्रम्' हुआ। इसी प्रकार :—

१—सः धर्मं वदति (वह धर्म की बात कहता है)

२—बालाः गृहम् अगच्छत् (लड़के घर गये)

३—अहम् पाठशालाम् गमिष्यामि (मैं स्कूल जाऊँगा)

४—सः मां रक्षति (वह मेरी रक्षा करता है)

५—गोपालः पारितोषिकम् अलभत (गोपाल ने इनाम पाया)

इसके अतिरिक्त विना, प्रति, अनु (पीछे) अन्तरा (बीच में) निकषा अथवा समया (समीप) अन्तरेण (विना) अभितः अथवा उभयतः (दोनों तरफ) परितः अथवा सर्वतः (चारों तरफ) धिक् (धक्कार) हा (अफ़सोस) के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे :—

† निम्न लिखित सोलह धातुएँ द्विकर्मक हैं :—

१—दुह् (दोहना) * गोपः गां पयः दोग्धि (गवाला गाय से दूध दुहता है)

२—पाव् (माँगना) दरिद्रः राजानं वस्त्रं याचते (दरिद्र राजा से कपड़ा माँगता है)

३—पच् (पकाना) सः तण्डुलान् ओदनं पचति (वह चावलों से भात पकाता है)

४—दण्ड् (सजा देना) राजा चोरं शतं दण्डयति (राजा चोर को सौ रुपये

जुर्माना करता है)

५—रुध् (घेरना) व्रजमवरुणद्वि गाम् (गाय को व्रज में घेरता है)

६—पृच्छ् (पूछना) ब्राह्मणं मार्गं पृच्छति (ब्राह्मण से रास्ता पूछता है)

७—चि (बटोरना) वृक्षमवचिनोति फलानि (पेड़ से फल बटोरता है)

८—ब्रू (बोलना) माणवकं धर्मं ब्रूते (लड़के को धर्म की बात कहता है)

९—शास् (शासन करना) गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति (गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है)

१०—जि (जीतना) शत्रुं शतं जयति (दुश्मन से सौ जीतता है)

११—मन्थ् (मथना) क्षीरसागरममृतं मन्थन्ति (क्षीरसागर से अमृत मथते हैं)

१२—मुष् (घोरना) चौरः राजानं सहस्रं मृष्णाति (चोर राजा के हजार रुपये चोराता है)

१३-१४—नी, वह् (ले जाना) सः ग्राममजां नयति वहति वा (वह गांव को बकरी ले जाता है)

१५—ह् (चोराना) चौरः कृपणं धनमहरत् (चोर कंजस का धन ले गया)

१६—कृष् (खोदना) नराः वसुधां रत्नानि कर्षन्ति (लोग जमीन से रत्न निकालते हैं)

* ऊपर के उदाहरण—'गोपः, गां पयः दोग्धि' (गवाला गौ से दूध दोहता है) में 'गौ से' का अनुवाद पञ्चमी (गोः) न होकर 'गाम्' द्वितीया हुई। इसी प्रकार अन्य याव्, पच् आदि धातुओं अथवा इन्हीं के अर्थ वाली धातुओं के दोनों कारकों में द्वितीया विभक्ति ही होती है।

(प्रति) दीनं प्रति दयां कुरु (दीन पर दया करो)

(विना, अन्तरेण) सत्यमन्तरेण विना वा नैव सुखम् (सत्य के विना सुख नहीं)

(अनु) स्वामिनमनुसेवकः गच्छति (मालिक के पीछे नौकर जाता है)

(अन्तरा) सुशीलां मालतीञ्चान्तरा सीताऽस्ति (सुशीला और मालती के बीच में सीता है)

(निकषा, समया) नगरं समया निकषा वा वाटिकास्ति (शहर के पास बाग है)

(अभितः, उभयतः) प्रयागमभितः उभयतः वा नद्यौ स्तः (प्रयाग के दोनों तरफ नदियाँ हैं)

(परितः, सर्वतः) ग्रामम् परितः सर्वतो वा वृक्षाः सन्ति (गाँव के चारों तरफ पेड़ हैं)

(धिक्) धिक् तं पापकारिणम् (उस पापी को धिक्कार)

(हा) हा नास्तिकं यः ईश्वरं न पश्यति (नास्तिक पर अफसोस ! जो ईश्वर को नहीं मानता) ।

संस्कृत बनाओ:—

१—गोपाल चिट्ठी (पत्र) लिखता है । २—रमा पुस्तक पढ़ती है । ३—बालक चन्द्रमा (चन्द्र) को देखता है । ४—हम गाँव (ग्राम) को जाते हैं । ५—तु आज स्कूल क्यों नहीं जाता ? ६—कजूस (कृपण) को धिक्कार है । ७—गांव के दोनों तरफ नदी बहती है (वह) । ८—परिश्रम के विना विद्या प्राप्त नहीं होती है । ९—ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती है । १०—विद्यार्थी (छात्र) काशी गया । ११—क्या तुमने हाथी (गज) नहीं देखे ? १२—तुम्हारे पिता प्रयाग कब गये ? १३—मैं कल दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) जाऊंगा । १४—क्या आज इन्स्पेक्टर साहब (निरीक्षक) यहां आये थे ? १५—मैं आज जरूर चिट्ठी लिखूंगा । १६—सूर्य अस्ताचल को जाएगा । १७—हमें सदा सत्य बोलना चाहिए । १८—हमें व्यर्थ (वृथा) नहीं हँसना चाहिए । १९—सदा सच बोलो, दीन की रक्षा करो और रोगी (रुग्ण) की सेवा करो । २०—निरक्षरों को पढ़ाओ, दीनों की रक्षा करो । २१—गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है । २२—नगर के पास एक बाग था । २३—छात्र गुरु के पीछे जाता है । २४—अधर्मी (धर्माभिमुख) पर अफसोस ।

करण कारक (ने, से, द्वारा) तृतीया

सर्वनाम शब्द

पुँल्लिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

एकव०

द्विव०

बहुव०

एकव०

द्विव०

बहुव०

मया

आवाभ्याम्

अस्माभिः

मया

आवाभ्याम्

अस्माभिः

त्वया

युवाभ्याम्

युष्माभिः

त्वया

युवाभ्याम्

युष्माभिः

तेन

ताभ्याम्

तैः

तया

ताभ्याम्

ताभिः

अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः

अदादिगणीय

परस्मैपदी अस् (होना)

वर्तमानकाल (लट्)

एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु० अस्ति (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे हैं)
म० पु० असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम हो)
उ० पु० अस्मि (मैं हूँ)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम हैं)

अनद्यतनभूत (लङ्)

प्र० पु० आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वह दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु० आसीः (तू था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु० आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

भविष्यत् काल—प्र० पु० भविष्यति, भविष्यतः इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)		
प्र० पु० अस्तु (वह हो)	स्ताम् (वे दो हैं)	सन्तु (वे हों)
म० पु० एधि (तू हो)	स्तम् (तुम दो होओ)	स्त (तुम होओ)
उ० पु० असानि (मैं होऊँ)	असाव (हम दो होवें)	असाम (हम होवें)
हन् (मारना)		

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्ति	हत्यः	हथ
उ० पु०	हन्ति	हन्वः	हन्मः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

भविष्यत् काल—प्र० पु० हन्तिष्यतः इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

अदादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ:—

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
अद--खाना	अति	आदत्	अत्स्यति	अत्तु
या--जाना	याति	अयात्	यास्यति	यातु
स्ना--न्हाना	स्नाति	अस्नात्	स्नास्यति	स्नातु
भा--चमकना	भाति	अभात्	भास्यति	भातु
रुद्--रोना	रोदिति	अरोदत्	रोदिष्यति	रोदितु
दुह्--दोहना	दोग्धि	अधोक्	दोक्ष्यति	दोग्धु
शीङ्--सोना	शेते	अशेत	शयिष्यते	शेताम्
अधि+इ-पढ़ना	अधीते	अध्येत	अध्येष्यते	अधीताम्

करण कारक—जिसकी मदद से कर्ता अपना काम पूरा करता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—सः कलमेन लिखति (वह कलम से लिखता है) यहाँ पर लिखने वाला कलम की मदद से लिखने का काम पूरा करता है, इसलिए 'कलम' करण कारक हुआ, और उसमें तृतीया विभक्ति 'कलमेन' हुई। इसी प्रकार

- १-(क) सः खड्गेन शत्रुं हन्ति (वह तलवार से दुश्मन को मारता है)
- (ख) भृत्यः हस्ताभ्यां जलं पिबति (नौकर हाथों से पानी पीता है)
- (ग) राजपुरुषः यष्टिकया चौरं ताडयति (सिपाही डंडे से चोर को पीटता है)
- (घ) बालकाः कन्दुकैः क्रीडन्ति (लड़के गेंदों से खेलते हैं)
- (ङ) सर्वसम्मत्या स्वीकृतः प्रस्तावः (सब की राय से प्रस्ताव पास हुआ)

(२) अगर शरीर का कोई अंग विकृत हो तो उस अंग के वाचक शब्द से तृतीया हो जाती है। यथा—

नेत्रेण काणः (आँख से अन्धा), कर्णम्यां बधिरः (कानों से बहिरा)

(३) किम्, कार्यम् अर्थः, प्रयोजनम् और अलम् के साथ प्रयुक्त शब्द में तृतीया और कर्तृवाचक शब्दों में पठ्ठी होती है। यथा—

तन्मे धनेन किं यो दानं न वसति। तृणेन अपि कार्यं भवति। कोऽयं मूर्खेण पुत्रेण। मूर्खाणां पुस्तकैः किं प्रयोजनम्। अलं हसितेन (मत हंसी)।

(४) जिस लक्षण (चिह्न) के द्वारा कोई व्यक्ति या वस्तु लक्षित (मात्र) हो उस लक्षण बोधक शब्द में तृतीया विभक्ति हो जाती है। यथा—जटाभि तापसः (जटा के द्वारा तपस्वी मालम होता है)।

(५) हेतु अर्थ में तृतीया विभक्ति हो जाती है। यथा—
विद्यया यशः भवति। सः अध्ययनेन वसति। इन वाक्यों में यश का हेतु विद्या, तथा वास का हेतु अध्ययन है।

(६) सह, साकम्, सार्धम् और समम् के मेल वाले शब्द में तृतीया हो जाती है। यथा—
अहं मूर्खेण सह न गच्छामि। तौ केन साकं क्रीडतः? त्वं बानरैः सार्धम् अवसि।
स मित्रैः समम् चलति।

संस्कृत वनाश्रो :--

१—मैं कलम से पत्र लिखता हूँ । २—तू साबुन (फेनिल) से नहाता है । ३—लड़कों के साथ गेंद (कन्दुक) खेलते हैं । ४—शिकारी (मृगयु) ने बन्दूक (नालीक) से चिड़ियाँ मारी । ५—वीर ने तलवार (खड्ग) से दुश्मन को मारा । ६—गोपाल ने लाठी (लगुड) से साँप को मार डाला । ७—हम मूर्खों के साथ नहीं खेलेंगे । ८—आज मैंने दोस्तों के साथ खाना खाया । ९—मैं आपके साथ प्रयाग न जाऊँगा । १०—छात्रों ने गुरुओं के साथ स्नान किया । ११—लड़कों ने लड़कियों के साथ पढ़ाई । १२—बहु अध्ययन के कारण यहाँ रहते हैं । १३—लड़कों को दुष्टों के साथ पढ़ना चाहिये और न खेलना चाहिये । १४—मनुष्य मुख से खाते हैं, पैरों से चलते हैं और आँखों से देखते हैं । १५—हँसी मत । १६—विद्या से हीन मनुष्य शोभ नहीं पाता ।

सम्प्रदान कारक (को, के लिए) चतुर्थी
सर्वनाम शब्द

पुं०

एकव०	द्वि०	बहुव०
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः

स्त्री०

एकव०	द्वि०	बहुव०
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
तस्यै	ताभ्याम्	तेभ्यः
अस्यै	आभ्याम्	एभ्यः
कस्यै	काभ्याम्	केभ्यः
यस्यै	याभ्याम्	येभ्यः
भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः

जुहोत्यादिगणीय

परस्मैपदो दा—देना

वर्तमान काल (लट्)

एकव०

द्वि०

बहुव०

प्र० पु०	ददाति
म० पु०	ददासि
उ० पु०	ददामि

दत्तः
दत्थः
दद्वः

ददति
दत्थ
दद्वः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अददात्
म० पु०	अददाः
उ० पु०	अददाम्

अदत्ताम्
अदत्तम्
अदद्व

अददुः
अदत्त
अदद्व

भविष्यत् काल (लृट्)

प्र० पु०	दास्यति
म० पु०	दास्यसि
उ० पु०	दास्यामि

दास्यतः
दास्यथः
दास्यावः

दास्यन्ति
दास्यथ
दास्यामः

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददातु	ददाव	ददाम

जुहोत्यादिगण की कुछ अन्य धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
धा-धारण करना	दधाति	अदधात्	धास्यति	दधातु
अभि-धा-कहना	अभिदधाति	अभ्यदधात्	अभिधास्यति	अभिदधातु
भी-डरना	बिभेति	अबिभेत्	भेष्यति	बिभेत्
वि+धा-करना	विदधाति	व्यदधात्	विधास्यति	विदधातु
हा-छोड़ना	जहाति	अजहात्	हास्यति	जहातु

सम्प्रदान कारक—जिसे कोई चीज दी जाय, अथवा जिसके लिए कोई काम किया जाय, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदानकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है, जैसे—सः ब्राह्मणाय दक्षिणां ददाति (वह ब्राह्मण को दक्षिणा देता है) यहां पर 'ब्राह्मण' सम्प्रदान कारक हुआ। इसलिए ब्राह्मण शब्द में चतुर्थी विभक्ति (ब्राह्मणाय) हुई। इसी प्रकार—

१—दरिद्राय धनं यच्छति (दरिद्र को धन देता है)।

२—गुरुः शिष्याय विद्यां वितरति (गुरु शिष्य को विद्या देता है)।

३—श्रेष्ठी निधनेभ्यः छात्रेभ्यः पुस्तकानि ददाति (सेठ गरीब विद्यार्थियों को पुस्तक देता है)।

४—भवतः दर्शनाय आगच्छम् (आपके दर्शन को आया हूँ)।

५—अहं पित्रे पत्रं प्रैषयम् (मैंने पिता को पत्र भेजा)।

(१) जिसके निमित्त कोई क्रिया की जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—सः अस्त्राय घासम् आनयति। साधुः मुक्तये हरिं भजति।

(२) हित और सुख शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—ब्राह्मणाय हितं सुखं वा भवेत् (ब्राह्मण का हित या सुख हो)।

(३) रोचते, कुप्यति, क्रुध्यति, नमः और स्वस्ति के योग में चतुर्थी हो जाती है। यथा—

१ मह्यं भक्तिः रोचते। २—शिक्षकः छात्राय कुप्यति। ३—सः कस्मै क्रुध्यति।

४—नमः परमात्मने। ५—नरपालाय स्वस्ति।

(४) धारयति, स्पृहयति और उपदिशति के योग में चतुर्थी हो जाती है। यथा—

१—त्वं मह्यं शतं धारयसि। २—वानराः फलेभ्यः स्पृहयन्ति। ३—शिक्षकः छात्रेभ्यः धर्ममुपदिशति।

१ चतुर्थी के अर्थ में "अर्थम्" या "कृते" भी प्रयुक्त होते हैं।

यथा—तदर्थम्, त्वदर्थम्, मदर्थम्, रामार्थम्, शिवार्थम्, तव कृते, रामस्य कृते, इत्यादि। (ये प्रयोग तीनों लिङ्गों में समान हैं)।

अभ्यासः Exercise.

१—बलि वामन को पृथ्वी देता है । २—ईश्वर निर्धनों को धन देता है ।
 ३—हम साधुओं को कपड़े देते हैं । ४—राजा ब्राह्मणों को गौएँ देता है । ५—बैद्य
 बीमार को (रोगिण) दवाई (अगद) देता है । ६—मैं राम को लड्डू (मोदक)
 देता हूँ । ७—तू मुझे मोती (मौजितक) देता है । ८—वह मुझ पर क्रुद्ध होता है ।
 ९—मुझे मिठाई (मिष्टान्न) अच्छी लगती है । १०—मेरा आपके लिए नमस्कार
 है । ११—मैं तुझे उपदेश देता हूँ ।

१—आचार्य ने शिष्य को उपदेश दिया । २—इन्स्पेक्टर (निरीक्षक) ने छात्र
 को इनाम (पारितोषिक) दिया । ३—मुझे उपदेश अच्छा लगा । ४—बालकों को
 भ्रमण अच्छा लगा । ५—अध्यापक ने तुम्हें क्या इनाम दिया ?

१—कल मैं दरिद्रों को भोजन दूंगा । २—ईश्वर गरीबों को कपड़े देगा ।
 ३—आचार्य मुझे उपदेश देंगे । ४—गुरुजी मुझ पर क्रोध करेंगे । ५—मैं धर्म पर
 अपना शरीर दे दूंगा । ६—वह बालक के लिये पुस्तक लावेगा ।

१—गरीबों को भोजन दो । २—किसी को गाली (गाली) न दो । ३—दीन
 को वस्त्र दो । ४—मेरे लिए पानी लाओ ।

अपादान कारक (से) पञ्चमी ।

सर्वनाम शब्द

एकव०	पुं०	बहुव०	एकव०	स्त्री०	बहुव०
मत्	द्वि०	अस्मत्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
त्वत्	आवाभ्याम्	युष्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
तस्मात्	युवाभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
अस्मात्	ताभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
कस्मात्	आभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
यस्मात्	काभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
भवतः	याभ्याम्	भवेभ्यः	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः

दिवादिगणीय

आत्मनेपदी जन्—पैदा होना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

१ पंचमी के अर्थ में 'तः' प्रत्यय भी लगाया जाता है । यथा—ततः, त्वत्तः, मत्तः,
 अतः, सर्वतः, कुतः, यतः भवत्तः, रामतः, इत्यादि । (ये प्रयोग तीनों लिङ्गों में समान हैं) ।

भतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

भविष्यत्काल (लट्)

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते इत्यादि ।
----------	----------	-----------	----------------------

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम् इत्यादि ।
----------	---------	----------	---------------------

द्विवादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्

लङ्

लृट्

लोट्

विद्—होना	विद्यते	अविद्यत	वैत्स्यते	विद्यताम्
युध्—लड़ना	युध्यते	अयुध्यत	योत्स्यते	युध्यताम्
सिब्—सीना	सीव्यति	असीव्यत्	सेविष्यति	सीव्यतु
नश्—नाश होना	नश्यति	अनश्यत्	नशिष्यति	नश्यतु
नृत्—नाचना	नृत्यति	अनृत्यत्	नर्तिष्यति	नृत्यतु

अपादान कारक—जिससे कोई चीज अलग हो उसे अपादान कारक कहते हैं । अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है, जैसे—वृक्षात् फलं पतति (पेड़ से फल गिरता है) यहां पर पेड़ से फल अलग हो रहा है इसलिए 'पेड़' अपादान कारक हुआ और उसमें पञ्चमी विभक्ति (वृक्षात्) हुई । इसी प्रकार—

१—शिशुः प्रासादात् अपतत् (बच्चा महल से गिर पड़ा) । २—मनुष्यः ग्रामात् आगच्छति (मनुष्य गांव से आता है) ३—गङ्गा हिमालयात् उदगच्छति (गंगा हिमालय से निकलती है) । ४—छात्रः गुरोः अधीते (शिष्य गुरु से पढ़ता है) । ५—त्वम् अश्वात् कथम् अपतः (तू घोड़े से कैसे गिरा ?) ।

(१) जायते, विभेति, वारयति, प्रतियच्छति के योग में पञ्चमी होती है । यथा—बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते । बालकः वानरान् विभेति । सः सस्येभ्यः गां वारयति । तण्डुलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् ।

(२) पृथक् और विना के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं । यथा—

धनम्, धनेन, धनात् वा विना नहि सुखम् ।

(३) दो या अधिक वस्तुओं में जहाँ एक का उल्कषं बताना हो वहाँ निष्कृष्ट वस्तु के आगे पञ्चमी विभक्ति हो जाती है । यथा—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी । (माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक मान्य हैं) ।

(४) बहिः, आरात् प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा—ग्रामात् बहिः (गांव से बाहर), आरात् वनात् (वन के पास या दूर) शशवात् प्रभृति (बचपन से लेकर) ।

(५) ऋते के योग में पञ्चमी या द्वितीया विभक्तियाँ होती हैं ।

यथा—

—ऋते परिश्रमात्, परिश्रमं वा विद्या लभ्या न भवति । (बिना परिश्रम

के विद्या प्राप्त नहीं होती) ।

(६) अतिरिक्त, भिन्न आदि शब्दों के योग में भी पञ्चमी होती है ।

यथा—बलवन्तात् अतिरिक्तः (भिन्नः, इतरः, अन्यः) कः दुष्टः (बलवन्त के

सिवा कौन दुष्ट हो सकता है ?) ।

संस्कृत बनाओ—

१—पेड़ से पत्ते गिरे । २—राजकुमार महल से गिरा । ३—वृक्ष पहाड़ से

गिरते हैं । ४—फूल लताओं से गिरते हैं । ५—पुत्र से आनन्द होता है । ६—अधर्म

से पाप होता है । ७—वनिया चावलों को (तण्डुलान्) गेहूँ से (गोधूमभ्यः) बदलता

है । ८—लोभ क्रोध से होता है । ९—मेरा गाँव से अभी आया हूँ । १०—शेर से

मृग को बचाओ । ११—पाप से बच । १२—बालक बानर से डरता है । १३—मौत

न डरो । १४—श्याम से राम सुखी है (सुखितरः) । १५—गोविन्द श्याम से

अधिक बुद्धिमान् (बुद्धिमत्तरः) है । १६—सब छात्र गुरु से पढ़ते हैं । १७—गोबर

(गोमय) से विच्छू (वृश्चिक) पैदा होता है । १८—बहु ससुर (श्वसुर) से लज्जा

करती है । १९—सत्सङ्गति पाप से हटाती है । २०—लड़कियाँ महल से बानरों

को देखती हैं ।

सम्बन्ध (का, के, की) षष्ठी

सर्वनाम

पुं०

एकव० द्विव० बहु०

मम आवयोः अस्माकम्

तव युवयोः युष्माकम्

तस्य तयोः तेषाम्

अस्य अनयोः एषाम्

कस्य कयोः केषाम्

यस्य ययोः येषाम्

भवतः भवतोः भवताम्

परस्मैपदी श्रु—सुनना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु० शृणोति शृणुतः शृण्वन्ति

म० पु० शृणोषि शृणुथः शृणुथ

उ० पु० शृणोमि शृणुवः, शृण्वः शृणुमः, शृण्वः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु० अशृणोत् अशृणुताम् अशृण्वन्

१ यद्यपि श्रु धातु भ्वादिगणीय है, तथापि यह स्वादिगणीय धातुओं के साथ

लिखा गया है क्योंकि इसके रूप स्वादिगणीय धातुओं के तुल्य हैं । लट् लोट्, लङ्

और विधिलिङ् में श्रु के स्थान में 'शृ' हो जाता है ।

म० पु०	अश्रुणोः	अश्रुणुतम्	अश्रुणुत
उ० पु०	अश्रुण्वम्	अश्रुण्व, अश्रुण्व	अश्रुणुम, अश्रुण्म
	भविष्यत्काल (लृट्)		
प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
	आज्ञा (लोट्)		
प्र० पु०	श्रुणोतु	श्रुणुताम्	श्रुण्वन्तु
म० पु०	श्रुणु	श्रुणुतम्	श्रुणुत
उ० पु०	श्रुण्वानि	श्रुण्वाव	श्रुण्वाम

स्वादिगण्य कुछ धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
शक्—सकना	शक्नोति	शक्यति	शक्नोतु
चिञ्—चुनना	चिनोति	चेष्यति	चिनोतु
आप्—पाना	आप्नोति	आप्स्यति	आप्नोतु
धृञ्—काँपना	धृनोति	धृविष्यति	धृनोतु
क्षि—कम होना	क्षिणोति	क्षेप्यति	क्षिणोतु

सम्बन्ध कारक*—दो या दो से अधिक संज्ञा शब्दों को मिलाने के लिए जो सम्बन्ध होता है, उसको दिखलाने के लिए पठ्ठी विभक्ति काम में लाई जाती है। जैसे—
गङ्गायाः जलं पवित्रम् अस्ति (गंगा जल पवित्र है) यहाँ पर 'गंगा' और 'जल' में सम्बन्ध है, इसलिए पठ्ठी विभक्ति (गङ्गायाः) हुई। इसी प्रकार—
१—इदं कस्य पुस्तकम् अस्ति (यह किसकी पुस्तक है ?)
२—छात्राणां मनः क्रीडायाम् अधिकं रमते (छात्रों का दिल खेलने में ज्यादा लगता है)

३—उद्यानस्य शोभां प्रेक्षध्वम् (बाग की शोभा देखो)

४—वाराणस्याः मधुराणि आम्नाणि भवन्ति (वाराणस के आम मीठे होते हैं)

५—वयं रामायणस्य कथां श्रोष्यामः (हम रामायण की कथा सुनेंगे)

(२) कृत् प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में पठ्ठी विभक्ति होती है। यथा—
(कर्ता में)—शिशोः शयनम् (बच्चे का सोना)

अश्वस्य गतिः (घोड़े की चाल)

(कर्म में)—अन्नस्य पाकः (अन्न का पकना)

सुखस्य भोगः (सुख का भोग)

(३) हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्तबोधक शब्द में पठ्ठी होती है। यथा—

अन्नस्य हेतोर्वसति (भोजन मिलन के कारण रहता है)

* अनेक संस्कृत के आचार्यों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना, क्योंकि यह सम्बन्ध का साथ होता है, क्रिया के साथ नहीं।

संस्कृत बनाओ :—

१—तुम्हारा भाई प्रयाग कब जायगा ? २—यह उसकी पुस्तक है । ३—आपका घर कहां है ? ४—आज मैंने देव के घर खाना खाया । ५—तुम्हारा विवाह कब होगा ? ६—गोपाल का भाई बीमार (रुग्ण) है । ७—परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा (मेलिष्यति) । ८—आज मेरा दोस्त (मित्रम्) मेरे घर आयगा । ९—गुरु की निन्दा पाप है । १०—तुम्हारा विवाह कब होगा । ११—लड़के के हाथ में (हस्ते) लड्डू (मोदक) है । १२—अभ्यागतों की सेवा करना हमारा धर्म है । १३—अध्यापक को आज्ञा माना । १४—दशहरे का उत्सव कब होगा ? १५—अध्यापक ने मुझ से गणित का सवाल (प्रश्न) पूछा ।

अधिकरणकारक (में, पर) सप्तमी

सर्वनाम शब्द

पु०			स्त्री०		
एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
मयि	आवयोः	अस्मासु	मयि	आवयोः	अस्मासु
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु
तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्याम्	तयोः	तासु
अस्मिन्	अनयोः	एषु	अस्याम्	अनयोः	आसु
कस्मिन्	कयोः	केषु	कस्याम्	कयोः	कासु
यस्मिन्	ययोः	येषु	यस्याम्	ययोः	यासु
भवति	भवतोः	भवत्सु	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु

तुदादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्	लिट्	लृट्	लोट्
मिल्—मिलना	मिलति	अमिलत्	मेलिष्यति
मुञ्च्—छोड़ना	मुञ्चति	अमुञ्चत्	मोक्ष्यति
सिञ्च्—सींचना	सिञ्चति	असिञ्चत्	सेक्ष्यति
तृप्—तृप्त होना	तृपति	अतृपत्	तृपिष्यति
विश्—प्रवेश करना	विशति	अविशत्	वेक्ष्यति
प्रच्छ्—पूछना	पृच्छति	अपृच्छत्	प्रक्ष्यति

रुधादिगणीय धातुएँ

आत्मनेपदी भुज्—भोजन करना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्क्ष्वे
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्जहे	भुञ्जमहे

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अभुङ्कत	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
----------	---------	-------------	---------

म० पु०	अभुङ्क्षाः	अभुञ्जाम्	अभुङ्ध्वम्
उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्जमहि

भविष्यत्काल (लृट्)

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्यथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जताम्	भुञ्जताम्
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाम्	भुङ्ध्वम्
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहे	भुनजामहे

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
कम्—रोकना	रुणद्धि	अरुणत्	रोत्स्यति	रुणद्धु
भिद्—फाड़ना	भिनत्ति	अभिनत्	भेत्स्यति	भिनत्तु
छिद्—काटना	छिनत्ति	अच्छिनत्	छेत्स्यति	छिनत्तु

क अधिकरणकारक—जिस स्थान पर कोई काम होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं, अधिकरण कारक बताने के लिए सप्तमी विभक्ति काम में लाई जाती है, जैसे—छात्रः पाठशालायाम् पुस्तकं पठति (विद्यार्थी स्कूल में पुस्तक पढ़ता है) यहाँ पर पढ़ने का काम 'पाठशाला' में हो रहा है, इसलिए 'पाठशाला' अधिकरण कारक हुआ और उसके लिए सप्तमी विभक्ति (पाठशालायाम्) काम में लाई गई। इसी प्रकार—

१—बालाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति (लड़के मैदान में खेलते हैं)

२—रविवारः पाठशालायाम् अवकाशः भवति (रविवार को स्कूल में छुट्टी रहती है)

३—शरदि मयूराः वने नृत्यन्ति (शरद् ऋतु में वन में मोर नाचते हैं)

४—राजमार्गे अश्वाः धावन्ति (सड़क पर घोड़े दौड़ रहे हैं)

५—नगरे बहवः मनुष्याः वसन्ति (शहर में बहुत से आदमी रहते हैं)

संस्कृत बनाओ :—

१—स्कूल में छात्र पढ़ रहे हैं। २—सिंह पहाड़ की गुफा में रहता है। ३—पेड़ों पर चारों तरफ फल लगे हैं। ४—उसके गले (कण्ठ) में माला है। ५—तुज पर मेरा विश्वास है। ६—वह मुझे रास्ते में मिला। ७—मेरा घर सड़क पर है। ८—हमारी कोठी (भवनम्) गोमती के तट पर है। ९—सिपाही (रक्षापुरुष) फाटक (गोपुर) पर रहता है। १०—नजदीक उस गाँव में कुएँ (कुप) हैं। ११—हम चारपाई (खट्वा) पर सोते हैं। १२—आप आसन पर बैठिए। १३—मैं काम में लगा हूँ (लग्नः)। १४—वाग शहर से एक कोस (कोश) पर है। १५—घड़े (घट) में जल है।

सम्बोधन कारक हे, अयि, माः प्रथमा
सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता ।

तनादिगणीय परस्मैपदो कृ--करना
वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

भविष्यत्काल (लृट्)

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

कचादिगणीय ग्रह--ग्रहण करना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

भविष्यत्काल--ग्रहीष्यति

ग्रहीष्यतः

इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णीव	गृह्णीम

क्यादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
क्री-खरीदना	क्रीणाति-णीते	अक्रीणात्-णीत	क्रीणातु-णीताम्
प्री-खुश करना	प्रीणाति-णीते	अप्रीणात्-णीत	प्रीणातु-णीताम्
पू-पवित्र करना	पुनाति-नीते	अपुनात्-नीत	पुनातु-नीताम्
वृ-वर छांटना	वृणाति-णीते	अवृणात्-णीत	वृणातु-णीताम्
धू-काँपना	धुनाति-नीते	अधुनात्-नीत	धुनातु-नीताम्
अश्-खाना	अश्नाति	अश्नात्	अश्नातु
मुष्-चोराना	मुष्णाति	अमुष्णात्	मुष्णातु
वध्-बांधना	वध्नाति	अवध्नात्	वध्नातु
ज्ञा-जानना	जानाति	अजानात्	जानातु

चुरादिगणीय कुछ धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
चुर-चोराना	चोरयति-ते	अचोरयत्-त	चोरयतु-ताम्
गण-गिनना	गणयति	अगणयत्	गणयतु
कथ्-कहना	कथयति	अकथयत्	कथयतु
भक्ष्-खाना	भक्षयति	अभक्षयत्	भक्षयतु
तड्-पीटना	ताडयति	अताडयत्	ताडयतु
रच्-बनाना	रचयति	अरचयत्	रचयतु
तुल्-तौलना	तौलयति	अतौलयत्	तौलयतु
पूज-पूजा करना	पूजयति	अपूजयत्	पूजयतु
अर्च-पूजा करना	अर्चयति	आर्चयत्	अर्चयतु
आह्लाद्-खुश करना	आह्लादयति	आह्लादयत्	आह्लादयतु
चिन्त्-सोचना	चिन्तयति	अचिन्तयत्	चिन्तयतु
क्षल्-घोना	क्षालयति	अक्षालयत्	क्षालयतु
वण्ट्-बांटना	वण्टयति	अवण्टयत्	वण्टयतु
घष्-ढिँढीरा पीटना	घोषयति	अघोषयत्	घोषयतु
प्री-खुश करना	प्रीणयति	अप्रीणयत्	प्रीणयतु
स्पृह्-इच्छा करना	स्पृहयति	अस्पृहयत्	स्पृहयतु
मृग्-ढूँढ़ना	मार्गयति	अमार्गयत्	मार्गयतु
भूष्-सजाना	भूषयति	अभूषयत्	भूषयतु
वर्ण्-वर्णन करना	वर्णयति	अवर्णयत्	वर्णयतु
लोकृ-देखना	लोकयति	अलोकयत्	लोकयतु
सान्त्व्-शान्त करना	सान्त्वयति	असान्त्वयत्	सान्त्वयतु
वृक्क-कुत्ते का भौकना	वृक्कयति	अवृक्कयत्	वृक्कयतु

१क्यादिगणीय धातुओं से परे लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में श्ना (ना) का आगम हो जाता है और धातु के इ, उ, ऋ, को गुण नहीं होता ।

सम्बोधन—किसी को पुकार कर अपनी तरफ आकृष्ट (मुखातिव) करने का सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। तथा सम्बोधन वाचक शब्द के पूर्व है, भो, अयि, रे आदि चिह्नों लगते हैं। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता और अकारान्त शब्दों के एकवचन में विसर्ग नहीं होता। यथा—

१—हे जगदीश! देहि में मुक्तिम् । २—भो: सखे! क्व गच्छसि इदानीम् ? ३—अयि सत्य ! सदा सत्य वद, धर्म चर । ४—हे महात्मन् ! किं वाञ्छसि ? ५—रे चञ्चललोचन ! किं विलोकयसि ?

संस्कृत वनाश्रो :—

१—गुरुजी ! मैं अपना पाठ ध्यान से पढ़ रहा हूँ । २—हे मित्र ! इस वक्त क्या काम करते हो ? ३—हे महाराज ! आपके राज्य में अत्यन्त सुख है । ४—हे बालक ! तेरा घर कहाँ है ? ५—लड़को ! तुम आज स्कूल क्यों नहीं गये ? ६—हे ईश्वर ! केवल आप ही हमारे रक्षक हैं । ७—महाशय ! क्या आप कल मुझे दर्शन देंगे ? ८—अरे चोर ! चोरी करने का (चौर्यस्य) यही फल है । ९—मित्र ! आपके पितृ सकुशल तो हैं (अपि कुशला) । १०—बालका ! गुरु की सेवा करो, जरूर फल मिलेगा । ११—छात्रो ! साधुओं का उपदेश ग्रहण करो और उस पर चलो । १२—चिन्ता छोड़ो, परिश्रम करो तुम जरूर सफल होगे । १३—प्रातः उठो, हाथ पैर धोओ और पढ़ो । १४—बड़ों की (वृद्धानाम्) आज्ञा मानो, चीजें आपस में (मित्रः) बांटो और खाओ । १५—राजा (नृपति) ढिंढोरा पिटवाया है कि शहर में जो चोरों को ढूँढेगा उसे इनाम मिलेगा ।

क्रियापुकरण

भूतकाल—लिट्, लुङ् तथा लङ्

‘वह गया’ ‘वह जा रहा था’ इत्यादि का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में लिट्, लुङ् और लङ् लकार काम में लाये जाते हैं। लङ् लकार का प्रयोग पिछले पाठों में दिखाया जा चुका है। लिट् लकार का ‘परोक्ष’ अर्थ में प्रयोग होता है, अर्थात् जो आँख के सामने न हुआ हो, जैसे, ‘रामः वनं जगाम’ (राम वन गया) यहाँ पर राम को वन को जाना आँख के सामने नहीं हुआ। साधारण भूत अर्थ में ‘लुङ्’ लकार का प्रयोग होता है, जैसे—‘गोपालः अद्यैव प्रयागमगमत्’ (गोपाल आज ही इलाहाबाद गया) यहाँ पर जाना आज ही हुआ। अनद्यतन (आज से पहले) अर्थ में लङ् का प्रयोग होता है, जैसे ‘आसीद् राजा नलो नाम’ (नल नामक एक राजा हुआ) साधारण भूत के अर्थ में भी लङ् का प्रयोग होता है।

परस्मैपदी गम्—जाना

लिट्

प्र० पु०	(सः)	जगाम	(तौ)	जग्मतुः	(ते)	जग्मुः
म० पु०	(त्वं)	जगमिथ, जगन्थ	(युवां)	जग्मथुः	(यूयं)	जग्म
उ० पु०	(अहं)	जगाम, जगम	(आवां)	जग्मिथ	(वयं)	जग्मिथ

और धातु के ह्रस्व इकार उकार के स्थानों में गुण हो जाता है। चुरादिगणीय धातु

आत्मनेपदी शुभ्—चमकना

लिट्

प्र० पु०	(सः)	शुशुभे	(तौ)	शुशुभाते	(ते)	शुशुभिर
म० पु०	(त्वं)	शुशुभिषे	(युवां)	शुशुभाथे	(यूयं)	शुशुभिध्वे
उ० पु०	(अहं)	शुशुभे	(आवां)	शुशुभिबहे	(वयं)	शुशुभिमहे

परस्मैपदी गम्—जाना

लुङ्

प्र० पु०	(सः)	अगमत्	(तौ)	अगमताम्	(ते)	अगमन्
म० पु०	(त्वं)	अगमः	(युवां)	अगमतम्	(यूयम्)	अगमत
उ० पु०	(अहम्)	अगमम्	(आवां)	अगमाव	(वयम्)	अगमाम

आत्मनेपदी शुभ्—चमकना

लुङ्

प्र० पु०	(सः)	अशोभिष्ट	(तौ)	अशोभिषाताम्	(ते)	अशोभिषत
म० पु०	(त्वं)	अशोभिष्ठाः	(युवां)	अशोभिषाथाम्	(यूयं)	अशोभिध्वम्
उ० पु०	(अहं)	अशोभिषि	(आवां)	अशोभिष्वहि	(वयं)	अशोभिष्महि

इसी प्रकार :—

	लिट्	लुङ्	लङ्
पठ्—पढ़ना	पपाठ	अपाठीत्	अपठत्
भू—होना	वभूव	अभूत्	अभवत्
कृ—करना	चकार	अकाशीत्	अकरोत्
हन्—मारना	जघान	अवधीत्	अहन्
खाद्—खाना	चखाद	अखादीत्	अखादत्
हृ—हरण करना	जहार	अहारीत्	अहरत्
ग्रह्—लेना	जग्राह	अग्रहीत्	अगृह्णात्
दृश्—देखना	ददर्श	अद्राक्षीत्	अपश्यत्
(नी) नय्—ले जाना	निनाय	अनैपीत्	अनयत्
स्था—ठहरना	तस्थौ	अस्थात्	अतिष्ठत्
पत्—गिरना	पपात	अपातीत्	अपतत्
त्यज्—छोड़ना	तत्याज	अत्याक्षीत्	अत्यजत्
वस्—रहना	उवास	अवासीत्	अवसत्
हस्—हँसना	जहास	अहासीत्	अहसत्

संस्कृत वनाश्रयो :—

१—राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वन को गया । २—रावण ने पञ्चवत से सीता को चुराया । ३—लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा । ४—राम ने चौदह व (चतुर्दशवर्षाणि) वन में वास किया । ५—प्राचीन भारत में अशोक एक राज हुआ । ६—द्रौपदी दुर्योधन को मूर्खता पर हँसी । ७—राजा नल ने दमयन्ती को व

में छोड़ा । ८—सब राजपुत्र एक साथ द्रोणाचार्य से युद्धविद्या सीखते थे । ९—राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ गये । १०—उस वन में मुनि रहते थे ।

भविष्यत्काल (लृट् और लुट् लकार) गा, भे, गी

भविष्यत्काल का बोध कराने के लिए संस्कृत में लृट् और लुट् लकारों का प्रयोग होता है । दोनों लकारों में भेद यह है कि दूरवर्ती भविष्यत् के लिए लुट् का प्रयोग होता है और समीपवर्ती भविष्यत् के लिए लृट् का । यथा—‘मम भ्राता पञ्चवैरहोभिः प्रयागं गन्ता’ (मेश भाई पांच छः दिन में प्रयाग जायगा) परन्तु आज के या समीप ही के भविष्यत् के लिए लृट् का प्रयोग होता है, जैसे—‘न जाने कुद्धः गुरुः किं बिधास्यति’ (न मालुम कौधो गुरु क्या करेंगे) लृट् लकार के प्रयोग हम पिछले पाठों में दे चुके हैं ।

परस्मैपदी गम्—जाना

लुट्

प्र० पु०	(सः)	गन्ता	(तौ)	गन्तारौ	(ते)	गन्तारः
म० पु०	(त्वं)	गन्तासि	(युवां)	गन्तास्थः	(यूयं)	गन्तास्थः
उ० पु०	(अहं)	गन्तास्मि	(आवां)	गन्तास्वः	(वयं)	गन्तास्मः

आत्मनेपदी शुभ—चमकना

लुट्

प्र० पु०	(सः)	शोभिता	(तौ)	शोभितारौ	(ते)	शोभितारः
म० पु०	(त्वं)	शोभितासे	(युवां)	शोभितासाधे	(यूयं)	शोभिताध्वे
उ० पु०	(अहं)	शोभिताहे	(आवां)	शोभितास्वहे	(वयं)	शोभितास्महे

क्रियातिपत्ति (लृङ्)

‘यदि ऐसा होता तो ऐसा होता’ इस प्रकार के शर्त वाले वाक्यों के अनुवाद के लिए संस्कृत में लृङ् लकार का प्रयोग होता है । जैसे—‘यदि वायुः अचलिष्यत् तदा तापः न्यूनताम् अगमिष्यत्’ (अगर हवा चलती तो गर्मी कम हो जाती) ‘यदि रोगिणः सेवा अभविष्यत् तदा सः नामरिष्यत्’ (यदि रोगी की सेवा होती तो वह न भरता) ।

परस्मैपदी गम्—जाना

लृङ्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० पु०	अगमिष्यः	अगमिष्यताम्	अगमिष्यत
उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

आत्मनेपदी शुभ—चमकना

लृङ्

प्र० पु०	अशोभिष्यत्	अशोभिष्यताम्	अशोभिष्यन्त
म० पु०	अशोभिष्यथाः	अशोभिष्येथाम्	अशोभिष्यध्वम्
उ० पु०	अशोभिष्ये	अशोभिष्यावहि	अशोभिष्यामहि

इसी प्रकार :—

लुङ्

लृट्

लृङ्

पठ—पठना
भू—होना
कृ—करना
हन्—मारना
खाद्—खाना
हृ—चुराना
ग्रह्—ग्रहण करना
दृश्—देखना
(नी) नय्—लेजाना
स्था—ठहरना
पत्—गिरना
त्यज्—छोड़ना
वस्—रहना
हस्—हंसना

पठिष्या
भविष्या
कर्ता
हन्ता
खादिष्या
हर्ता
ग्रहीता
द्रष्टा
नेता
स्थाता
पतिता
त्यक्ता
उषिता
हसिता

पठिष्यति
भविष्यति
करिष्यति
हनिष्यति
खादिष्यति
हरिष्यति
ग्रहीष्यति
द्रक्ष्यति
नेष्यति
स्थास्यति
पतिष्यति
त्यक्ष्यति
वत्स्यति
हसिष्यति

अपठिष्यत्
अभविष्यत्
अकरिष्यत्
अहनिष्यत्
अखादिष्यत्
अहरिष्यत्
अग्रहीष्यत्
अद्रक्ष्यत्
अनेष्यत्
अस्थास्यत्
अपतिष्यत्
अत्यक्ष्यत्
अवत्स्यत्
अहसिष्यत्

संस्कृत बनाओ :—

लृट्—१—क्या आप परसों (परश्वः) काशी जायेंगे ? २—मैं पांच छः दिन में प्रयाग जाऊंगा । ३—मेरे पिता कल अयोध्या से आयेंगे । ४—कलिक अवतार न जाने कब होगा । ५—क्या तुम इस पुस्तक को कल पढ़ोगे ?

लृट्—१—वृष्टि कब होगी, आज या कल ? २—आज मेरी बहिन (भगिनी) समुराल (श्वसुष्म) जायगी । ३—कहिए, आज आप क्या करेंगे ? ४—यदि तुम कहोगे तो वह जायगा । ५—यदि मेहनत (परिश्रम) न करोगे तो फेल (अनुत्तीर्ण) हो जाओगे ।

लृङ्—१—यदि रामदेव मेहनत करता तो फेल न होता ।

२—अगर तू घी (घृत) खाता तो बीमार न होता । ३—अगर रावण सीता को न चुराता तो न मारा जाता । ४—यदि वह गुरु की सेवा करता तो विद्वान् हो जाता । ५—अगर मैं व्यायाम करता तो बलवान् हो जाता ।

संभाव्यभविष्यत् और प्रवर्तना (लिङ्, लोट्)

संभाव्यभविष्यत् अर्थात् संभावना, प्रश्न, औचित्य, स्वप्न और इच्छा आदि अर्थों में विधिलिङ् और लोट् का प्रयोग होता है, और प्रवर्तना अर्थात् प्रत्यक्ष विधान, उपदेश, प्रार्थना, अनुमति, अनुरोध और आज्ञा आदि अर्थों में विधिलिङ् और लोट् का प्रयोग होता है और आशीर्वाद के लिए आशीर्लिङ् और लोट् का प्रयोग होता है ।

१ लृङ् लकार क्रिया की अनिष्पत्ति अर्थात् घटित न होने पर ही होता है । जैसे—‘सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्ष्यमभविष्यत्’ (यदि अच्छी वर्षा होती तो सुकाल होता) यहाँ पर वर्षा के न हाने पर ही ‘लृङ्’ लकार का प्रयोग हुआ ।

जैसे—संभावना—संभाव्यते अद्य गुरुः आगच्छेत् (शायद आज गुरुजी आजायें)
कदाचिन्मम भ्राता इवः प्रयागं गच्छेत् (शायद मेरे भाई कल इलाहाबाद जायें)

प्रश्न—किमहं वेदमधीयीय उत स्मृतिम् (क्या मैं वेद पढ़ूं या स्मृति) ?

औचित्य—तथा कुरु यथा निन्दा न भवेत् (ऐसा करो जिसमें निन्दा न हो) त्वं साधूनां

सेवां कुर्वीतः इत्येवोचितम् (तुम साधुओं की सेवा करो यही उचित है)

शपथ—यः मां पिशाच इति कथयति तस्य पुत्राः म्रियेरन् (अन्यन्ताम्) (जो मुझे

पिशाच कहता है उसके पुत्र मर जायें)

इच्छा—इच्छामि भवान् शीघ्रं नीरोगः भवेत् (भवतु)

(मैं चाहता हूँ आप जल्दी आराम हो जायें)

विधान—सन्ध्यां मनसा ध्यायेत् (सन्ध्या का मन से ध्यान करे)

नान्यस्यापराधेन अन्यस्य दण्डमाचरेत्

(दूसरे के कसूर से दूसरे को सजा न दे) ।

उपदेश—सहसा कार्यं न कुर्यात् (बिना विचारे काम न करे)

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् (सच बोले मोठा बोले)

प्रार्थना—भवन्तः अद्य इह भुञ्जोरन् (भुञ्जताम्) (आज आप यहीं भोजन करे)

दीने मयि दयां कुरु (मुझ दीन पर दया कीजिए)

अनुमति—छात्राः गृहं गच्छन्तुः (गच्छन्तु) किम् (क्या विद्यार्थी घर जायें) उपदिशतु

भवान् कथं तं प्रसादयेयम् (आप ही बताएँ उसे कैसे खुश करूँ)

अनुरोध—इह आसीत (आस्ताम्) तावत् भवान् (आप तब तक यहां बैठिए)

आज्ञा—छात्राः आगच्छतः स्वपाठं पठत । (विद्यार्थियो! यहाँ आओ, अपना सबक पढ़ो)

भूय, गच्छ मह्यं जलमानय (नीकर जाओ मेरे लिये पानी लाओ)

आशीर्वाद—वत्स, दीर्घायुः भूयाः (भव) (बेटा तेरी बड़ी उम्र हो)

आत्मानुरूपं पुत्रं लभस्व (अपने ही जैसा पुत्र पाओ)

ईश्वरः भद्रं क्रियात् (करोतु) (ईश्वर कल्याण करे)

परस्मैपदी भू—(होना) आशीर्लिङ्

प्र० पु०	एकव०	द्विव०	बहुव०
म० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
उ० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
	भूयासम	भूयास्व	भूयास्म

परस्मैपदी लिख्—लिखना विधिलिङ्

प्र० पु०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
म० पु०	लिखेः	लिखेताम्	लिखेत
उ० पु०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

परस्मैपदी कृ—(करना)

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्याताम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम	कुर्याव	कुर्याम

आत्मनेपदी मन्—(मानना)

प्र० पु०	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्		
म० पु०	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्		
उ० पु०	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि		
परस्मैपदी धातुएं		अत्मनेपदी धातुएं			
भू	(होना)	भवेत्	शिक्ष्	(सीखना)	सीखना
गम्	(जाना)	गच्छेत्	युध्	(लड़ना)	युध्येत
जि	(जीतना)	जयेत्	ईक्ष्	(देखना)	ईक्षेत
कथ्	(कहना)	कथयेत्	मृ	(मरना)	म्रियेत
दृश्	(देखना)	पश्येत्	वन्द्	(नमस्कार करना)	वन्देत
श्रु	(सुनना)	शृणुयात्	सह्	(सहन करना)	सहेत्
पा	(पीना)	पिबेत्	रुच्	(अच्छा लगना)	रोचेत्
नी (नय)	(ले जाना)	नयेत्	मुद्	(हर्षित होना)	मोदेत्
स्मृ	(याद करना)	स्मरेत्	यत्	(यत्न करना)	यतेत्
धाव्	(दौड़ना)	धावेत्	शक्	(शंका करना)	शकेत्
ज्ञा	(जानना)	जानीयात्	श्लाघ्	(प्रशंसा करना)	श्लाघेत्
स्था	(ठहरना)	तिष्ठेत्	द्युत्	(शोभित होना)	द्योतेत्
पच्	(पकाना)	पचेत्	कम्प्	(कांपना)	कम्पेत्
रच्	(बनाना)	रचयेत्	शुभ्	(शोभित होना)	शोभेत्
क्रीड्	(खेलना)	क्रीडेत्	सेव्	(सेवा करना)	सेवेत्
त्यज्	(छोड़ना)	त्यजेत्	लभ्	(प्राप्त करना)	लभेत्

संस्कृत वनाश्रो :—

आशीलिङ्—१—बालक चिरंजीवी होवे । २—तुम इम्तिहान में सफल होओ । ३—तुम्हारी कामनाएँ पूर्ण हों । ४—हमारे महाराज दीर्घायु हों ।
 विधिलिङ् (लोट्) १—कभी झूठ न बोले और चोरी न करे । २—छात्र को हमेशा गुरु से सविनय प्रश्न पूछना चाहिये । ३—छात्र को हमेशा समय पर पहुँचना चाहिए, और समय पर खेलना चाहिए । ४—सब कामों में गुरु का अनुसरण करे । ५—कृत्संग को कभी मत छोड़ो । ६—आचार्य से धर्म का उपदेश सुने । ७—पराये धन का लोभ कभी न करे । ८—गरीब के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए । ९—शायद आज हमारे स्कूल में राष्ट्रपति आवें । १०—बिना विचारे कभी काम न करे । ११—मेरी इच्छा है कि आप शीघ्र आराम हो जायें । १२—ऐसा काम कभी न करना चाहिए जिससे निन्दा हो ।

कारक और विभक्तियाँ

प्रथमा—१—कर्ता में—बालः पाठशालां गच्छति ।

२—कर्मवाच्य के कर्म में—वटुभिः पठ्यते वेदः, पशुभिः पीयते जलम् ।

३—संबोधन में—हे जगदीश, क्षमस्व ।

४—अव्यय के साथ—अज्ञोऽक इति विश्वातः राजा सर्वजनप्रियः

५—नाम मात्र में—असीद् राजा नलो नाम ।

तीया-१—कर्म—प्रजां संरक्षति नृपः स वर्द्धयति पार्थिवम् ।

२—ऋते, अन्तरेण, विना के साथ—धनमन्तरेण, विना, ऋते वा नैव सुखम् ।

३—एनप् के साथ—तत्रागारं धनपतिगृहानुत्तरेणास्मदीयम् ।

४—अभितः, —अभितो भुवनं वाटिका ।

५—परितः, सर्वतः, के साथ—सन्ति परितः (सर्वतः) ग्रामं वृक्षाः ।

६—उभयतः सर्वतः के साथ—यमुनामुभयतस्तारवः सन्ति ।

७—अन्तरा (बीच में) रामं कृष्णं चान्तरा गोपालः ।

८—समया, निकषा (समीप) के साथ—ग्रामं समया निकषा वानदी ।

९—व्याप्ति के अर्थ में—मासद्वयमधीते, स चत्वारि वर्षाणि न्यायमध्यैष्ट ।

१०—अनु के साथ—आचार्यमनु शिष्यो गच्छेत् ।

११—प्रति, —दीनं प्रति दयां कुरु ।

१२—धिक, —धिकं त्वां पापितम् (पिशुनं वा) ।

१३—अधि शीङ् के साथ—चन्द्रापीडः मुक्ताशिलापट्टमधिशिष्ये ।

१४—अधिस्था, —श्यामः गृहमधितिष्ठति (अथवा श्यामः गृहे-तिष्ठति) ।

१५—अधि आस् के साथ—नृपः सिंहासनमध्यास्ते (नृपः सिंहासने आस्ते) ।

१६—अनु, उप पूर्वक वस् के साथ—हरिः वैकुण्ठमुपवसति, अनुवसति वा ।

१७—आवस्, अधिवस् के साथ—अधिवसतु काशीं विश्वनाथः ।—भक्तः देवमन्दिरम् आवसति ।

१८—क्रिया विशेषण में—सत्वरं वावति मृगः ।

तीया-१—करण में—सः जलेन मुखं प्रक्षालयति ।

२—कर्मवाच्य कर्ता में—कृष्णेन कंसः हतः ।

३—स्वभाव आदि अर्थों में—रामः प्रकृत्या साधुः नाम्ना गोपालोऽयम् ।

४—सह के साथ—शशिना सह याति कौमुदी ।

५—सदृश के अर्थ में—धर्मेण सदृशो नास्ति बन्धुरन्यो महीतले ।

६—हेतु, —विद्यया वर्धते बुद्धिः, श्रमेण प्राप्यते धनम् ।

७—हीन, —विद्यया हि विहीनस्य किं वृथा जीवितेन ते ।

८—विना, —श्रमेण हि विना विद्या लभ्यते न कथंचन ।

९—अलं, —अलं महीपाल तव श्रमेण ।

१०—प्रयोजन के अर्थ में—धनेन किं यो न ददाति नाश्रुते ।

११—लक्षण बोध में—जटाभिः लक्ष्यमाणाभिस्तापसोऽयं प्रतीयते ।

१२—फल प्राप्ति के अर्थ में—मासेन व्याकरणमधीतम्, पञ्चभिर्दिनैः नीरोगः जातः ।

१३—खराबी वाले अङ्ग में—मानवश्चक्षुषा काणः कर्णभ्यां वधिरश्च सः ।
पादेन खञ्जः वृद्धोऽसौ कुब्जा पृष्ठेन मन्थरा ।

तुर्थी-१—निमित्त के अर्थ में—धनं सुखाय, विद्या ज्ञानाय भवति ।

- २--रुचि ,, --शिशवे क्रीडनकः रोचते ।
 ३--सम्प्रदान में--नृपः दरिद्राय वस्त्रं ददाति ।
 ४--नमः, स्वस्ति के योग में--गुरुवे नमः, नृपाय स्वस्ति भवतु ।
 ५--अलं के योग में--मल्लोऽलं मल्लाय ।
 ६--तुम् के अर्थ में--ब्राह्मणः स्नानाय (स्नातुं) याति ।
 ७--कृध् अर्थ वाले धातु के प्रयोग में--गुरुः शिष्याय कृध्यति ।
 ८--द्रुह ,, ,, --मूर्खः पण्डिताय द्रुह्यति ।
 ९--असूया (निन्दा) ,, ,, --दुर्जनः सज्जनाय असूयति ।

पञ्चमी--

- १--अलग होने पर--वृक्षात् फलानि पतन्ति, स ग्रामाद् आगच्छति ।
 २--भय ,, --असज्जनात् कस्य भयं न जायते ।
 ३--ग्रहण अर्थ में--कूपात् जलं गुह्णाति ।
 ४--पूर्वादि के योग में--स्नानात् पूर्वं न खादेत्, न धावेत् भोजनात् परम् ।
 ५--अन्यार्थ के योग में--ईश्वरादन्धः कः रक्षितुं समर्थः ।
 ६--उत्कर्ष में--जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
 ७--विना, ऋते के योग में--परिश्रमाद् विना (ऋते) विद्या न भवेति ।
 ८--आरात् (दूर या समीप) के योग में--ग्रामाद् आरात् सुन्दरमुपवचम् ।
 ९--प्रभृति के योग में--शैशवात् प्रभृति सोऽतीव चतुरः ।
 १०--आङ् के ,, --आमूलात् रहस्यमिदं श्रोतुमिच्छामि ।
 ११--विरामार्थक शब्दों के साथ--न नवः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्म
 विरराम कर्मणः ।

- १२--काल की अवधि में--विवाहात् नवमे दिने ।
 १३--मार्ग की ,, --वाराणस्याः पञ्चाशत् कोशाः ।
 १४--जायते आदि के अर्थ में--बीजेभ्यः अङ्कुरा जायन्ते ।
 १५--जिससे कोई हटाया जाय--मित्रं पापात् निवारयति ।
 १६--जिससे कोई विद्या सीखी जाय--छात्रोऽध्यायकात् अधीते ।

षष्ठी--

- १--संबन्ध में--मूर्खस्य बहवो दोषाः, सतां च बहवो गुणाः ।
 २--कृदन्त कर्ता में--शिशोः शयनम्, फलस्य पतनम् ।
 ३--कृदन्त कर्म में--अन्नस्य पाकः, धनस्य दानम् ।
 ४--अनादर में--रुदतः शिशोः सा ययी ।
 ५--हेतु शब्द के प्रयोग में--अन्नस्य हेतोर्वसति ।
 ६--निर्धारण में--कवीनां (कविषु वा) कालीदासः श्रेष्ठः ।

सप्तमी--

- १--अधिकरण में--गृहे तिष्ठति बालः, आसने शोभते गुरुः ।
 २--भाव में--यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः ।
 ३--अनादर में--रुदति शिशो गता माता ।
 ४--निर्धारण में--जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः मानवेषु च पण्डिताः ।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो :—

- १—रामस्य विना अयोध्या शून्या जाता । २—स नगरे गच्छति । ३—रामः
मह्यम् अभिक्रुध्यति । ४—गोपालः गोः पयो दोन्धि । ५—तव साकं नाहं गच्छामि ।
६—विद्यायाः हीनस्य नरस्य किं प्रयोजनम् जीवनस्य । ७—अहं लेखन्याः लिखामि ।
८—स रजकाय वस्त्रं ददाति ९—मोदकः बालकं रोचते । १०—स माम् कुप्यति ।
११—अहं तव शतं धारयामि । १२—स यवानां गां निवारयति । १३—विद्याया
बुद्धिरुत्तमा । १४—नगरस्य बहिः शिवालयो वर्तते । १५—स जलस्य पातुम् इच्छति ।
१६—स मित्राय स्मरति । १७—शिवं दर्शनं पुण्यम् अस्ति । १८—देवस्य नमः ।
१९—स वनस्य प्रति धावति । २०—पर्वतेभ्यः हिमालयः अत्युच्चः अस्ति ।
२१—श्रियं लोका अनुरज्यन्ति । २२—सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशं नियते सति ।
२३—ते कन्याः तानि बालकाश्च कस्य सह क्रीडन्ति ? २४—इयं मम पुस्तकम् अस्ति ।
२५—देवो विजयति ताराम् ।

पत्रलेखनप्रकारः

१—पित्रे स्ववृत्तान्तस्य प्रेषणम्—

लवपुस्तः,

१२, प्रविष्टे, '८४

श्रीमत्सु माननीयेषु पितृपादेषु प्रणतयः सन्तुतराम् ।

भगवन् ! बहुदिनादारभ्य नाद्यावधि भवान् पत्रमलिखत्, इति मे चेतश्चिन्ता-
कुलं वर्तते । इदानीमस्माकं परीक्षा नातिदूरं विद्यते । अध्ययने च नितरां परिश्रमं
करोमि । केवलं गणितविषये वृष्टिरस्ति । मन्ये तामपि शीघ्रमपनेष्यामि । झटिति
गृहस्य वृत्तं लेख्यम् । मातरं प्रति मे प्रणामः । अनुजानाञ्च कृते प्रेमाञ्जलयः सन्तु ।

भावत्कः प्रियसुतः,

प्यारेलालः पञ्चमकक्षास्थः ।

२—प्रधानाध्यापकाय अवकाशविषयकं पत्रम्—

श्रीमत्परममाननीयेषु पूज्यपादेषु प्रधानाध्यापकेषु— मे नमस्काराञ्जलयः सन्तु ।

भगवन् ! सेवायां सविनयमिदमावेद्यते—यस्मिन् ज्येष्ठभ्रातुः जगदीशस्य नवमकक्षा-
स्थस्य वैशाखमासे शुक्लाष्टम्यां तिथौ विवाहः निश्चितोऽस्ति । वरयात्रा च देवप्रयागं

१ शुद्धप्रयोग—१—रामं विना । २—नगरम् । ३—माम् । ४—गाम् । ५—त्वया
साकम् । ६—विद्याया हीनस्य नरस्य किं प्रयोजनं जीवनेन । ७—लेखन्या ।
८—रजकस्य । ९—बालकाय । १०—मह्यम् । ११—तुभ्यम् । १२—यवेभ्यः ।
१३—विद्याया बुद्धिरुत्तमा । १४—नगरात् बहिः । १५—जलं पातुम् । १६—स
मित्रस्य, मित्रं वा स्मरति । १७—शिवस्य । १८—देवाय । १९—वनं प्रति ।
२०—पर्वतेषु । २१—श्रियाम् । २२—विनाशे । २३—ताः कन्याः, ते बालकाश्च केन
सह क्रीडन्ति ? २४—इदम् । २५—देवो विजयते ताराम् ।

गमिष्यति । ततो ममापि तत्र गमनमावश्यकम् । अतोऽहमष्टानां दिवसानामवकाशं
याचे । आशासे, अवश्यमेव मम निवेदनं स्वीकृतं भविष्यतीति— प्रार्थयते,
१५ प्रविष्टे, ८४] विद्यादत्तः सप्तमकक्षास्थः ।

३—मित्राय भ्रमणविषयकं पत्रम्—

श्रीनगरतः

२० तारके नवाम्बरे, २६ ।

प्रियवर ! नमस्तेऽस्तु !

अहं जगदीशस्य कृपया सकुशलोऽस्मि । तत्रापि कुशलं वाञ्छामि । अस्माकं त्रैमा-
सिकी परीक्षाऽभवत्, पत्राणि चाहं सुन्दरमलिखम् । अधुना उष्णकालावकाशेषु भवान्
क्व गन्तुमिच्छति ? रोचते भवते काश्मीरगमनम् ? तत्र खलु गिरिभ्यो जलप्रवाहाः,
निर्झराश्च निस्सरन्ति । एलाजम्बीर-सेव-द्राक्षा-नारङ्ग-अक्षोटकलानाञ्च तत्र बाहुल्यं
वर्तते । तस्योदीच्यां दिशि पर्वतराजः हिमालयः तिष्ठति, यस्य शिखराणि हिमाच्छादि-
तानि विद्यन्ते । शैलोऽयम् उत्तरप्रदेशालङ्कारभूतः सन् भारतवर्षस्य मेखलेख पूर्वापर-
जलनिध्योबलापर्यन्तं विस्तीर्णः तिष्ठति । तत्रोपधयः, प्रस्तराः, उत्तमकाष्ठादीनि च
बहून्युपयोगीनि वस्तून्मुपलभ्यन्ते । किं बहुना । ततोऽस्माकं महौल्लासो भविष्यति ।
स्वास्थ्यं च तत्रोषित्वा शोभनं भविष्यति । स्वपरीक्षाविषये तथा भ्रमणविषये च
त्वरितमुत्तरं देयम् ।

अभिन्नहृदयः,

रामप्रसादः दशमकक्षास्थः ।

सर्वनाम शब्दों के रूप

अस्मद्

अहम्	(मैं)	आवाम्	(हम दो)	वयम्	(हम सब)
माम्	(मझको)	आवाम्	(हम दो को)	अस्मान्	(हम को)
मया	(मैंने)	आवाभ्याम्	(हम दो ने)	अस्माभिः	(हम ने)
मह्यम्	(मेरे लिए)	आवाभ्याम्	(हम दो के लिए)	अस्मभ्यम्	(हमारे लिए)
मत्	(मझसे)	आवाभ्याम्	(हम दो से)	अस्मत्	(हम से)
मम	(मेरा)	आवयोः	(हम दो का)	अस्माकम्	(हमारा)
मयि	(मझ पर)	आवयोः	(हम दो पर)	अस्मासु	(हम पर)

युष्मद्

वम्	(तू)	युवाम्	(तुम दो)	यूयम्	(तुम सब)
त्वाम्	(तुझको)	युवाम्	(तुम दो को)	युष्मान्	(तुम को)
त्वया	(तू ने)	युवाभ्याम्	(तुम दो ने)	युष्माभिः	(तुम ने)
तुभ्यम्	(तेरे लिए)	युवाभ्याम्	(तुम दो के लिए)	युष्मभ्यम्	(तुम्हारे लिए)
त्वं	(तुझसे)	युवाभ्याम्	(तुम दो से)	युष्मत्	(तुम से)
तव	(तेरा)	युवयोः	(तुम दो का)	युष्माकम्	(तुम्हारा)
त्वयि	(तुझ पर)	युवयोः	(तुम दो पर)	युष्मासु	(तुम पर)

१ अस्मद् और युष्मद् के रूप पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में एक ही तरह के होते हैं ।

तत् (वह) पुल्लिङ्ग			
सः	(वह)	तौ	(वे दो)
तम्	(उसको)	तौ	(उन दो को)
तेन	(उसने)	ताभ्याम्	(उन दो ने)
तस्मै	(उसके लिए)	ताभ्याम्	(उन दो के लिए)
तस्मात्	(उससे)	ताभ्याम्	(उन दो से)
तस्य	(उसका)	तयोः	(उन दो का)
तस्मिन्	(उस पर)	तयोः	(उन दो पर)

तत् (वह)

नपुंसकलिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
तत्	ते	तानि	सा	ते	ताः
तत्	ते	तानि	ताम्	ते	ताः
तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्याः	तयोः	तासाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु	तस्याम्	तयोः	तासु

इदम् (यह)

पुं०			स्त्री०		
एकव०	द्वि०	बहु०	एकव०	द्वि०	बहु०
अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
इमम्	इमी	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्याः	अनयोः	आसाम्
अस्मिन्	अनयोः	एषु	अस्याम्	अनयोः	आसु

एतत् (यह)

पुल्लिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
एषः	एतौ	एते	एषा	एते	एताः
एतम्	एतौ	एतान्	एताम्	एते	एताः

१ नपुंसकलिङ्ग में प्र०, द्वि०--इदम्, इमे, इमानि (शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं) ।

२ नपुंसकलिङ्ग में एतत् शब्द की प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एतत्, एते, एतानि, और शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।

एतेन	एताभ्याम्	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

अदस् (वह)

असौ	अम्	अमी	असौ	अम्	अमूः
अमुम्	अम्	अमून्	अमुम्	अम्	अमूः
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

यत् (जो)

यः	यौ	ये	या	ये	याः
यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः
येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्याः	ययोः	यासाम्
यस्मिन्	ययोः	येषु	यस्याम्	ययोः	यासु

स्त्री०

किम् (कौन)

कः	कौः	के	का	के	काः
कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
कस्य	कयोः	केषाम्	कस्याः	कयोः	कासाम्
कस्मिन्	कयोः	केषु	कस्याम्	कयोः	कासु

स्त्री०

१ नपुंसकलिङ्ग में अदस् शब्द की प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में अदः, अम्, अमून्, शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।

२ नपुंसकलिङ्ग में यत् शब्द की प्र० द्वि० विभक्तियों में यत्, ये, यानि शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।

३ नपुंसकलिङ्ग प्र०, द्वि०-किम्, के, कानि और शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।

सर्वनाम शब्दों पर विचार

इदमादि में इदम् (यह) अदस् (वह) युष्मद् (तु, तुम) अस्मद् (मैं, हम) और भवान् (आप) इन सभी के रूप निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।

इदमस्तु सन्निकृष्टे समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्

अदसस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥

१—पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए इदम् शब्द, अधिक पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए एतद् शब्द, सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के सम्बन्ध में अदस् और परोक्ष (जो वक्ता के सामने न हो) पदार्थ या व्यक्ति के बताने के लिए तद् शब्द को व्यवहार में लाया जाता है।

२—पुनरुक्तिबोध होने से अर्थात् जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में एक बार कुछ कह कर फिर उसके विषय में कुछ कहना हो तो द्वितीया विभक्ति में तृतीया विभक्ति के एकवचन में, और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियों के द्विवचन में इदम् शब्द के स्थान में 'एन' आदेश होता है। जैसे—अनेन व्याकरणमधीतम्, एनं छन्दो-ध्यापय (इसने व्याकरण पढ़ लिया है अब इसे छन्द पढ़ाइए)। अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं स्वम् (इनका पवित्र कुल है, इनके पास बहुत धन है)।

३—युष्मद् और अस्मद् शब्दों के द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी के एकवचन में क्रमशः 'त्वा, ते, ते, मा, मे, मे' द्विवचन में क्रमशः 'वाम्, नौ' और बहुवचन में क्रमशः 'वः, नः, आदेश होते हैं। इनको प्रयोग में लाने के नियम ये हैं:—

ये सब आदेश वाक्य या श्लोक के चरण के आरम्भ में 'च, वा, हा, अह, एव' इन पांच अव्ययों के योग में और सम्बोधन के परे नहीं होते। जैसे, वाक्यारम्भ में—मम गृहं गच्छ (मेरे घर जाओ) इसमें 'मम' का 'मे' नहीं हुआ। पांच अव्ययों के योग स त्वा मां च जानाति (वह तुझे और मुझे जानता है)। इदं पुस्तकं तवैवास्ति (यह पुस्तक तेरी ही है)। हा मम मन्दभाग्यम् (हाय मेरा दौभाग्य)। इनमें क्रमशः त्वा, मा, ते, मे आदेश नहीं हुए। सम्बोधन के ठीक परे—बन्धो, मम ग्राममागच्छ (भाई मेरे गांव को चलो) यहां 'मम' के स्थान पर 'मे' नहीं हुआ।

४—यदि 'च' आदि अव्ययों का युष्मद्, अस्मद् के 'त्वा, ते, मा, मे' आदि संक्षिप्त रूप से कोई सम्बन्ध न हो तो ये आदेश हो सकते हैं। जैसे—शिवः, रामश्च मे इष्टदेवौ (शिव और राम मेरे इष्टदेव हैं)। यहां 'मे' का सम्बन्ध इष्टदेव से है और 'च' शिव और राम को एक वाक्य के साथ मिलाता है।

५—यदि सम्बोधन के साथ कोई विशेषण हो तो युष्मद् और अस्मद् को आदेश हो सकते हैं। जैसे—हरे दयालो नः पाहि (हे दयालु हरि, हमारी रक्षा करो)।

६—सम्मान के अर्थ में युष्मद् के स्थान में भवता शब्द का प्रयोग होता है जैसे, रक्तमुखेन स प्रोक्तः—भो भवान् अभ्यागत अतिथिः तद् भक्षयतु (भवान्) मया दत्तानि जम्बूकलानि (रक्तमुख ने उससे कहा—सुनिए, आप अभ्यागत और अतिथि हैं, इसलिए आप मेरे दिए हुए जामुन के फल खाइये)।

† भवत् शब्द यद्यपि मध्यम पुरुष के स्थान में प्रयुक्त होता है तथापि यह सदा प्रथम पुरुष ही रहता है।

७—सम्मान न भी बोध हो तो युष्मद् के स्थान में भवत् शब्द का प्रयोग होता है। जैसे—अहमपि भवन्तं किमपि पृच्छामि (मैं भी आपसे कुछ पछता हूँ)

८—सम्मान बोध होने से कभी कभी 'भवत्' शब्द के पहले 'अत्र' और 'तत्र' का प्रयोग किया जाता है। सम्मान का पात्र यदि उपस्थित हो तो 'अत्रभवत्' और उपस्थित न हो तो 'तत्रभवत्' का प्रयोग किया जाता है। जैसे—अत्रभवन्तः विदाङ्-कुर्वन्तु, अस्ति तत्रभवान् भवभूतिः नाम काश्यपः (आप लोग यह जाने कि श्रीपूज्य-पाद काश्यप गोत्र में भवभूति हैं)। अत्रभवान् वसिष्ठ आज्ञापयति (पूज्यपाद वसिष्ठ जी आज्ञा देते हैं) अपि कुशली तत्रभवान् कण्वः—(पूजनीय कण्व जी कुशल से तो हैं?) अत्र भवान् प्रयागीयविश्वविद्यालयकुलपतिः (आप इलाहाबाद यूनी-वर्सिटी के वाइसचांसलर हैं)।

९—भवत् शब्द के पूर्व 'एषः' और 'सः' का भी प्रयोग होता है। जैसे—एषभवान् अत्र वर्तते (आप यहीं हैं) स भवान् मामेतदुक्तवान् (श्रीमान् ने मुझे ऐसा कहा है)।

इन सर्वनामों के अतिरिक्त त्वत्, त्व, त्यद् आदि कई और सर्वनाम हैं जो कम प्रयुक्त होते हैं।

युष्मद्, अस्मद् और भवत् शब्दों को छोड़ कर सब सर्वनाम विशेष्य और विशेषण दोनों हो सकते हैं। जैसे—सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः (सब के स्वभाव ही की परीक्षा होती है अन्य गुणों की नहीं)। अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते (क्योंकि सब गुणों के ऊपर स्वभाव ही रहता है)। इसमें 'सर्वस्य' विशेष्य और 'सर्वान्' विशेषण है।

सर्वनाम शब्दों के आगे सम्बन्धार्थ में 'ईय' आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे मदीय, मामक, मामकीन (मेरे) आस्माकीन, अस्मदीय (हमारा) त्वदीय, तावक, तावकीन (तेरा) यौष्माक, यौष्माकीण, भवदीय (तुम्हारा) स्वीय, स्वकीय (अपना) परकीय (दूसरे का) तदीय (उसका)।

कुछ और सादृश्यवाचक विशेषण—मादृशः, गत्समः (मुझसा) अस्मादृशः अस्म-त्समः (हम सा) त्वादृशः, त्वत्समः, (तुझ सा) युष्मादृशः युष्मत्समः (तुम सा) भवादृशः, भवत्समः (आप सा) ईदृशः (ऐसा) कीदृशः (कैसा)।

१०—प्रश्नार्थक और आश्चर्यार्थक 'क्या' का अनुवाद 'किम्' 'अपि' और 'ननु' से किया जाता है। जैसे—

किमिदमापतितम्=अरे ! यह क्या आ पड़ा ?

किं गतः अध्यापकः=क्या प्रोफेसर साहब चले गये।

ननु जलध्यानं गतम्=क्या जहाज चला गया ?

११—'यत्' शब्द के साथ 'तत्' शब्द का सम्बन्ध होता है। 'यत्तदोर्नित्यसम्बन्धः' किन्तु जहाँ 'यत्' शब्द उत्तर के वाक्य में आता है वहाँ पूर्व के वाक्य में 'तत्' शब्द रखना जरूरी नहीं। जैसे—

यत् वदसि तत् शृणोमि=जो कहते हो सो सुनता हूँ।

किन्तु-शृणोमि यत् वदसि=सुनता हूँ जो कहते हो।

१२—संस्कृत भाषा में 'यह' ऐसा का अनुवाद 'यत्' शब्द से होता है किन्तु कहीं पर 'इति' शब्द से भी होता है।

ममेति निश्चयो यदहं पठिष्यामि=मेरा यह निश्चय है कि मैं पढ़ूंगा।

जर्मन-सम्राजः कैसरस्यैषा दशा भविष्यति इति को जानाति स्म=यह कौन जानता था कि जर्मन सम्राट् कैसर की यह दशा होगी।

संस्कृत वनाश्रोः—

१—तुम कहां गये थे ? २—यह मेरी साइकिल (द्विचक्रिका) है। ३—हम लोग इतना तो अवश्य समझते हैं। ४—गुरु जी, मेरा अपराध क्षमा कीजिए। ५—महाराज क्या तुझे बुला रहे हैं ? ६—कहिए, यह दास क्या करे ? ७—गोपाल, तुम किस जगह से आ रहे हो। ८—बेटा, कहो, तुम क्या चाहते हो ? ९—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप हमारे रिश्तेदार (सम्बन्धी) हैं। १०—आप दोनों की मित्रता कब से (कदा प्रभूति) है ? ११—नहीं, मैंने आपको नहीं बुलाया। १२—कहिए क्या यह आप का कसूर नहीं है ? १३—तुम स्वयं यहां चले आना। १४—हे परमेश्वर, आप हमारी रक्षा करें। १५—क्या गाड़ी (वापयानम्) चली गई ? १६—लड़कों, तुम क्या पूछना चाहते हो ? १७—वे तुम्हारे कौन होते हैं ? १८—यह हाथी किसका है ? १९—लीजिए, यह आपकी चिट्ठी है। २०—उस सभा में कौन कौन आये थे ?

सन्धिप्रकरण

पीछे कहा गया है कि वाक्य में कई शब्द रहते हैं। संस्कृत के हर एक शब्द के अन्त में कोई स्वर, व्यञ्जन, अनुस्वार, अथवा विसर्ग अवश्य होता है। दो शब्दों के समीप होने से उनमें मेल होकर जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। इस परिवर्तन से कहीं पर (१) दो अक्षरों के स्थान पर एक नया अक्षर हो जाता है जैसे—उमा + ईशः = उमेशः (२) कहीं पर एक अक्षर का लोप हो जाता है, जैसे—गच्छन्ति = वाला गच्छन्ति, (३) कहीं पर दो के बीच में एक नया अक्षर आ जाता है जैसे—धावन् + अश्वः = धावन्श्वः। सन्धि तीन प्रकार की है—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि।

स्वरसन्धि

एक स्वर के साथ दूसरे स्वर के मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहते हैं।

१—दीर्घसन्धि

(अकः सवर्णो दीर्घः) जब ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर के बाद ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर आवे तो दोनों के स्थान में दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे—रत्न + आकरः = रत्नाकरः।

यहां पर 'त्न' में जो ह्रस्व अकार है उसके बाद 'आकार' का दीर्घ 'आ' आता है, इसलिए ऊपर के नियम के अनुसार दोनों के (ह्रस्व 'अ' और दीर्घ 'आ' के) स्थान में दीर्घ 'आ' हो गया। इसी प्रकार—

शश + अङ्क = शशाङ्कः
अद्य + आगतः = अद्यागतः
दया + अर्णवः = दयार्णवः
विद्या + आलयः = विद्यालयः
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
लघु + उभिः = लघूभिः

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः
क्षिति + ईशः = क्षितीशः
सुधी + इन्द्रः = सुधीन्द्रः
श्री + ईशः = श्रीशः
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
पितृ + ऋणम् = पितृणम् इत्यादि

२—गुणसन्धि

(अदेङ्गुणः, आद्गुणः) यदि अ अथवा आ के बाद ह्रस्व इ या दीर्घ ई आवे तो दोनों के स्थान में 'ए' हो जाता है, यदि ह्रस्व उ या दीर्घ ऊ आवे तो दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाता है, यदि ह्रस्व ऋ या दीर्घ ॠ आवे तो दोनों के स्थान में 'अर्' हो जाता है, और यदि लृ आवे तो दोनों के स्थान में 'अल्' गुण हो जाता है। जैसे—

सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

यहाँ पर सुर के 'र' में जो 'अ' है उसके बाद इन्द्र की 'इ' आती है, इसलिए ऊपर के नियम के अनुसार दोनों (सुर के अ और 'इन्द्र' की 'इ') के स्थान में 'ए' हो गया। इसी प्रकार—

गण + ईशः = गणेशः
तथा + इति = तथेति
उमा + ईशः = उमेशः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्
पीन + उरुः = पीनोरुः
देव + ऋषिः = देवर्षिः
महा + ऋषिः = महर्षिः इत्यादि

३—वृद्धिसन्धि

(वृद्धिरादेच, —वृद्धिरेचि) जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आवे तो दोनों के स्थान में 'ऐ', और जब 'ओ' या 'औ' आवे तो दोनों के स्थान में 'औ' वृद्धि हो जाती है। जैसे—

अद्य + एव = अद्यैव
तथा + एव = तथैव
जल + ओषः = जलौषः

महा + ओषधिः = महौषधिः
महा + औषधम् = महौषधम्

इत्यादि।

४—यणसन्धि

(इको यणचि) १—जब ह्रस्व इ या दीर्घ ई के बाद इ ई को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो 'इ' के स्थान में 'य्' हो जाता है।

२—जब उ या ऊ के बाद उ ऊ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो 'उ' के स्थान में 'व्' हो जाता है।

३—जब ऋ या ॠ के बाद ऋ ॠ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो ऋ के स्थान में 'र' हो जाता है। जैसे—

१—यदि + अपि = यद्यपि
नदी + उदकम् = नद्युदकम्
इति + आह = इत्याह

२—अन + अपः = अन्वयः
गुरु + आदेशः = गुरुदेशः
वधू + आदेशः = वधूदेशः

प्रति+एकम्=प्रत्येकम्
प्रति+उपकारः=प्रत्युपकारः

३—पितृ+उपदेशः=पित्रुपदेशः
मातृ+अनुमतिः=मात्रनुमतिः
इत्यादि ।

५—अयादि चतुष्टय

(एचोयवायावः) ए, ऐ, ओ, औ के बाद जब कोई स्वर आता है तो 'ए' के स्थान में 'अय्' 'ओ' के 'अव्' 'ऐ' के 'आय्' और 'औ' के स्थान में 'आव्' हो जाता है, जैसे—

{ शे+अनम्=शयनम्
ने+अनम्=नयनम्
नै+अकः=नायकः

भो+अति=भवति
वटो+ऋक्षः=वटवृक्षः
पो+अकः=पावकः इत्यादि ।

६—पूर्वरूप

(एङः पदान्तादति) जब किसी पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' आवे और उसके बाद ह्रस्व 'अ' आवे तो 'अ' का पूर्वः हो जाता है, और केवल पूर्वरूपसूचक चिह्न (ऽ) लगाया जाता है, जैसे—

गजे+अस्मिन्=गजेऽस्मिन्
बालो+अत्र=बालोऽत्र

गुरो+अव=गुरोऽव

इत्यादि ।

७—प्रकृतिभाव

ई, ऊ, ए से अन्त होने वाले द्विवचन के बाद जब कोई स्वर आता है तो ई, ऊ, ए ज्यों के त्यों रहते हैं, जैसे—

मुनी+इति=मुनी इति ।

साधू+आगच्छतः=साधू आगच्छतः,

लते+अत्र=लते अत्र
(लतेऽत्र नहीं होता)

हल्सन्धि

(सलां जशोऽन्ते) जब कोई स्वर, या वर्ग के तीसरे चौथे अक्षर अथवा य् र ल् व् आगे आवे तो पद के अन्त वाले क् च् ट् प् के स्थान में क्रमशः ग् ज् ङ् द् ब् हो जाते हैं । जैसे—

{ वाक्+दानम्=वाग्दानम्
दिक्+अम्बरः=दिगम्बरः
अच्+अन्तः=अजन्तः
पट्+दर्शनम्=पङ्दर्शनम्
अप्+जम्=अवजम्

{ जगत्+ईशः=जगदीशः
सत्+आचारः=सदाचारः
तत्+धनम्=तद्धनम्
जगत्+बन्धुः=जगद्वन्धुः

इत्यादि ।

(झयो होऽन्यतरस्याम्) यदि अनुनासिक अक्षरों को छोड़कर वर्ग के किसी अक्षर के आगे ह् आवे तो उस अक्षर के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा अक्षर (ग् ज् ङ् द् ब्) और ह् के स्थान में क्रमशः उसी वर्ग का चौथा अक्षर (घ् ङ् ध् भ्) हो जाते हैं । जैसे—

वाक्+हरिः=वाग्हरिः
अच्+ह्रस्वः=अङ्गह्रस्वः
पट्+ह्लासि=पङ्हुल्लासि

तत्+हितः=तद्धितः
अप्+हरणम्=अवभरणम्
इत्यादि ।

(स्तोः ष्चुना ष्चुः) जब स् या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के आगे या पीछे श् या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) आते हैं तो स् के स्थान में श् और तवर्ग के स्थान में क्रमशः चवर्ग हो जाता है। जैसे—

बालस् + शते = बालश्शते
कस् + चित् = कश्चित्
सत् + चरितम् = सच्चरितम्
शत्रून् + जयति = शत्रूञ्जयति

तत् + छविः = तच्छविः
एतत् + जलम् = एतज्जलम्
वृहत् + झरः = वृहज्झरः
याच् + ना = याच्ना इत्यादि।

(स्तोः ष्टुना ष्टुः) जब स् या तवर्ग के आगे या पीछे ष् या टवर्ग आते हैं तो स् के स्थान में ष् और तवर्ग के स्थान में टवर्ग हो जाता है। जैसे—

देवस् + षष्ठः = देवष्षष्ठः
तत् + टीका = तट्टीका
उत् + ड्यनम् = उड्ड्यनम्

इष् + तः = इष्टः
आकृप् + तः = आकृष्टः

इत्यादि।

(तोः लिलः) जब त् द् और न् के बाद 'ल्' आवे तो उनके स्थान में ल् हो जाता है न् के स्थान में अनुनासिक (ं) भी हो जाता है। जैसे—

उत् + लेखः = उल्लेखः
कश्चित् + लभते = कश्चिल्लभते

महान् + लाभः = महाल्लाभः

इत्यादि।

(यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) यदि पद के अन्त में वर्गों के प्रथम वर्ण (क् च् ट् त् थ् प्) के आगे न् या म् आवे तो वर्ग के पहले अक्षर के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा या पाँचवाँ अक्षर हो जाता है, यदि प्रत्यय आगे हो तो पाँचवाँ ही अक्षर होता है। जैसे—

दिक् + नागः = दिन्नागः, दिङ्नागः

जगत् + नाथः = जगद्नाथ, जगन्नाथः

वेगात् + नयति = वेगाद् नयति, वेगान्नयति

(प्रत्यय) वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

(मोऽनुस्वारः) यदि पद के अन्त में 'म्' रहे और उसके बाद व्यञ्जन आवे तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार करना या न करना अपनी इच्छा पर निर्भर है। जैसे—

गृहम् + चलति = गृहं चलति, गृहञ्चलति

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

मृत्युम् + जयः = मृत्युं जयः, मृत्युञ्जयः

मधुरम् + हसति = मधुरं हसति

सम् + गमः = संगमः, सङ्गमः

स्वर परे रहने पर म् स्वर के साथ मिल जाता है, जैसे—

सम् + आचारः = समाचारः।

(नश्चव्यप्रशान्) जब पद के अन्त में 'न्' आवे और उसके बाद च् छ् ट् ठ् त् थ् आवें तो 'न्' के स्थान में अनुस्वार और च् छ् ट् ठ् त् थ् के स्थान में क्रमशः ष् च् ष् ष्ट् ष्ट् स्त् स्थ हो जाते हैं। जैसे—

कस्मिन् + चित् = कस्मिश्चित्

महान् + ठक्कुरः = महांठक्कुरः

महान् + छेदः = महाश्छेदः

पतन् + तरुः = पतन्तरुः

चलन् + टिट्ठिमः = चलंष्टिट्ठिमः

क्षिपन् + धूत्कारः = क्षिपंस्थूत्कारः

(शश्छाटि) जब पद के अन्तवाले 'त्' 'न्' के बाद 'श्' आवे तो 'त्' के स्थान में 'च्' 'न्' के स्थान में 'ञ्' और श् के स्थान में छ् हो जाता है। जैसे—

तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा, तच् श्रुत्वा

धावन् + शशः = धावञ्छशः, धावञ् शशः इत्यादि।

(इमोह्रस्वादचिङ्मुण् नित्यम्) यदि ह्रस्व स्वर के बाद ङ ण् न आवें और उनके बाद कोई स्वर हो तो एक-एक ङ ण् न के स्थान में दो-दो ङ् ण् न् हो जाते हैं । जैसे—

प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा

सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः

धावन्×अश्वः=धावन्नश्वः

इत्यादि ।

(छेच, पदान्ताद्वा) यदि ह्रस्व स्वर के बाद छ् आवे तो छ् के साथ एक च् अधिक मिल जाता है और दीर्घ स्वर के बाद च् मिलता भी है और नहीं भी मिलता । जैसे—

वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया । लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया

विसर्गसन्धि

(विसर्जनीयस्य सः) यदि विसर्ग के बाद च् छ् आवें तो विसर्ग के स्थान में श्, यदि उसके बाद त् थ् और स् आवे तो विसर्ग के स्थान में स्, और यदि विसर्ग के बाद ट् ठ् आवें तो विसर्ग के स्थान में प् हो जाता है । जैसे

बालः+चलति=बालश्चलति

निः+छलः=निश्छलः

देवः+तिष्ठति=देवस्तिष्ठति

धनुः+टंकारः=धनुष्टंकारः

निः+सारः=निस्सारः

इत्यादि ।

(अतोऽति हशि च विसर्गस्य सः) विसर्ग के पूर्व यदि ह्रस्व अ आवे और बाद को ह्रस्व अ या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है । (पद के अन्त में) ओ के बाद अ का लोप और लोप-सूचक चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है । जैसे—

यशः+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी

देवः+अपि=देवोऽपि

कः+अवदत्=कोऽवदत्

मनः+गतः=मनोगतः

यशः+दा=यशोदा

मनः+भावः=मनोभावः

बालः+वदति=बालो वदति

मनः+हरम्=मनोहरम्

(अतोऽन्त्यचि विसर्गस्य लोपः) अ के बाद विसर्ग का लोप हो जाता है । यदि विसर्ग के बाद अ के अलावा कोई और स्वर आवे तो उसके साथ कोई दूसरी सन्धि नहीं होती । जैसे—

बालः+आगच्छति=बाल आगच्छति

यशः+इच्छा=यश इच्छा

अतः+एव=अत एव

पुष्पेभ्यः+उद्यानम्=पुष्पेभ्य उद्यानम्

(आतोऽशि विसर्गस्य लोपः) यदि आ के बाद विसर्ग आवे और उस के बाद कोई स्वर अथवा वर्ग के प्रथम, द्वितीय अक्षरों को छोड़कर कोई अक्षर या य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग का लोप हो जाता है :—

बालाः+अपि=बाला अपि

निराः+इच्छन्ति=नरा इच्छन्ति

गुणाः+एव=गुणा एव

गजाः+गच्छन्ति=गजा गच्छन्ति

नराः+हसन्ति=नरा हसन्ति

इत्यादि ।

(इचोऽशि विसर्गस्य रः) यदि विसर्ग के पहले अ आ को छोड़ कर कोई दूसरा

स्वर हो और विसर्ग के बाद स्वर अक्षर, या वर्ग के तीसरे चौथे, पाँचवें अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है । जैसे—

निः+धनः=निर्धनः

निः+आधारः=निराधारः

बहिः+देशः=बहिर्देशः

भानुः+उदेति=भानुरुदेति

मानोः+मयूखाः=भानोर्मयूखाः

इत्यादि ।

अ के बाद विसर्ग यदि र् से बना हो तो र् हो जाता है । जैसे—

पुनः+अपि=पुनरपि

भ्रातः+आगच्छ=भ्रातरागच्छ

प्रातः+एव=प्रातरेव

मातः+देहि=मातर्देहि

स्वः+गतः=स्वर्गतः

इत्यादि ।

(रोरि लोपः पूर्वस्याणो दीर्घश्च) यदि र् के बाद र आवे तो एर् का लोप हो जाता है और उसके पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है । जैसे

पुनर्+रचना=पुनारचना

भानुर्+राजते=भानूराजते

निर्+रोगः=नीरोगः

साधोर्+रुचिः=साधोरुचिः

निर्+रसः=नीरसः

इत्यादि ।

(एतत्तद्धोः प्रथमाविसर्गस्य लोपोऽन्त्यलि) 'सः' और 'एषः' के विसर्ग का लोप हो जाता है यदि उसके बाद अ के अलावा कोई अक्षर आवे । जैसे—

सः+गच्छति=स गच्छति

एषः+आगच्छति=एष आगच्छति

सः+उवाच=स उवाच

एषः+कथयति=एष कथयति

णत्वविधान (न् का ण् में बदलना)

ऋ ऋ र् और मूर्धन्य ष् इन चार वर्णों से परे दन्त्य न् का ण् होता है । जैसे—

नृणाम्, नृणाम्, चतसृणाम्, भ्रानृणाम्, चतुर्णाम्, विस्तीर्णम्, दोष्णाम्, पुष्णाति आदि । यदि स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य्, व्, ह् और अनुस्वार से व्यवधान अर्थात् ये सब बीच में भी पड़ जायं तो भी न् का ण् होता है । जैसे कराणाम्, करिणा, गुरुणा, मृगेण, मूर्खेण, दपेण, रयेण, गर्वेण, ग्रहाणाम् इत्यादि ।

पद के अन्तवाले न् का मूर्धन्य ण् नहीं होता । जैसे—रामान्, हरीन्, गुरुन्, वृक्षान्, भ्रातृन् इत्यादि ।

षत्वविधान (स् का ष् में बदलना)

अ, आ भिन्न स्वर से अथवा र् से परे आदेश और प्रत्यय के स् का ष् होता है । जैसे मृनिष्, वधष्, भ्रातृष्, देवेषु, अनृषीत, दिक्षु, चतुर्षु, हल्षु इत्यादि ।

अनुस्वार, विसर्ग, श्, ष्, स, का व्यवधान होने पर अर्थात् इनके बीच में रहने पर भी स् का ष् होता है । जैसे हवीषि, धनूषि, आशीःषु, आयुःषु, चक्षुःषु आदि, किन्तु पुंसु में नहीं होता ।

१ इनके अतिरिक्त अक्षरों के मध्यस्थित होने पर ण् नहीं होता । जैसे—अर्चना, किरीटेन, अर्धन, स्पर्शन, रसेन, दृढानाम्, अर्जनम् इत्यादि ।

२ सात् प्रत्यय के स् का ष् नहीं होता । जैसे नदीसात्, वायुसात्, भ्रातृसात्, वल्लिंसात् इत्यादि ।

निम्नलिखित संस्कृत वाक्यों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करो और सन्धि तोड़ कर सन्धि नियम भी बताओ :—

१—उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये । २—तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् सम्पूर्णमण्डलः । ३—प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणोत्सवः ।

४—अहं स ते परं मित्रमुपकारवशीकृतः ।

५—यद्भवान्मधुरं वक्ति तन्मह्यं नाद्य रोचते । ६—हरितं नाम सोऽपश्यन्तकुललोहिताननम् । ७—मुखाच्च यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ।

८—को नाम लोके स्वयमात्मदोषमुद्धाटयेन्नष्टवृणः सभासु । ९—को मूको, यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति । १०—यास्यत्यद्य शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुजायताम् ।

संस्कृत वनाश्रो :—

१—आज मेरे भाई का विवाह होगा । २—उस गांव के पास ऋषि का आश्रम था । ३—मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ । ४—नदी के किनारे पर वृक्ष की छाया में एक मृग पड़ा था । ५—साधु ने जब यह सुना तो वह चल पड़ा । ६—बालको ! बाग में जाओ, और वहाँ खेलो । ७—शिकारी ने एक ही वाण से उस मृग को मार डाला । ८—वे दोनों भक्त दर्शन के लिए मन्दिर में गये । ९—भगीरथ तपस्या के बल से गङ्गा को पृथ्वी पर ले आया । १०—पिता के घर में वह सुलक्षण बालक दिन-दिन बढ़ने लगा ।

—: ० :—

द्वितीयोऽध्यायः

शब्दोच्चारण (हलन्त) पुल्लिङ्ग

राजन् (राजा)

एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० राजा	राजानौ	राजानः
द्वि० राजानम्	राजानौ	राजः
तृ० राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च० राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं० राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष० राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
स० राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सं० हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः
	महत् (बड़ा)	
प्र० महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि० महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ० महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च० महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः

प० महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
प० महतः	महतां	महताम्
स० महति	महतोः	महतसु
सं० हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

स्त्रीलिङ्ग में महती, महत्यौ, महत्यः इत्यादि रूप नदी शब्द की तरह होते हैं और नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया में महत्, महती, महान्ति रूप होते हैं और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं ।

भवत् (आप)

प्र० भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वि० भवन्तम्	भवन्ती	भवतः
तृ० भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च० भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
प० भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
प० भवतः	भवतोः	भवताम्
स० भवति	भवतोः	भवत्सु
सं० हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः

इसी प्रकार भगवत्, श्रीमत्, बुद्धिमत्, बलवत्, विद्यावत्, धनुष्मत्, सानुमत् (पहाड़), भास्वत् (सूर्य), मधवत् (इन्द्र), सरस्वत् (समुद्र), ज्ञानवत्, गतवत् आदि ।

स्त्रीलिङ्ग में भवती, भवत्यौ, भवत्यः इत्यादि रूप नदी शब्द की तरह और नपुं० लिङ्ग में प्र० द्वि० में भवत्, भवती, भवन्ति और शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं ।

पठत् (पढ़ता हुआ)

प्र० पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
द्वि० पठन्तम्	पठन्ती	पठतः
तृ० पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
च० पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
प० पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
प० पठतः	पठतोः	पठताम्
स० पठति	पठतोः	पठत्सु
सं० हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः

स्त्रीलिङ्ग में पठन्ती, पठन्त्यौ, पठन्त्यः इत्यादि रूप नदी की तरह और नपुं० लिङ्ग की प्र० द्वि० में पठत्, पठती, पठन्ति और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं । इसी तरह—पश्यत् (देखता हुआ) गच्छत् (जाता हुआ) वसत् (वास करता हुआ) पिवत् (पीता हुआ) पृच्छत् (पूछता हुआ) खादत् (खाता हुआ) चोरयत् (चोरी करता हुआ) आदि अतृप्रत्ययान्त शब्द ।

पुं० धीमत् (अवलमंद)

प्र० धीमान्	धीमन्तो	धीमन्तः
द्वि० धीमन्तम्	धीमन्तो	धीमतः
तृ० धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः

शेष विभक्तियाँ महत् शब्द की तरह ।

इसी तरह—मतिमत्—बुद्धिमान्, धनवत्—धनवान्, भगवत्—विष्णु इत्यादि ।

पुं० आत्मन् (आत्मा)

प्र० आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि० आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृ० आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च० आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पं० आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
ष० आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स० आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सि० हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

पुं० युवन् (जवान आदमी)

प्र० युवा	युवानौ	युवानः
द्वि० युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ० यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च० यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पं० यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
ष० यूनः	यूनोः	यूनाम्
स० यूनि	यूनोः	युवसु
सि० हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

पुं० पथिन् (रास्ता)

प्र० पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि० पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृ० पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च० पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पं० पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
ष० पथः	पथोः	पथाम्
स० पथि	पथोः	पथिषु
सि० हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः

पुं० विद्वस् (विद्वान्)

प्र० विद्वान्	विद्वान्सौ	विद्वान्सः
द्वि० विद्वान्सम्	विद्वान्सौ	विदुषः

श्वन् (कुत्ता) और मध्वन् (इन्द्र) की विभक्तियाँ युवन् की तरह होती हैं ।

तृ० विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च० विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं० विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष० विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स० विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सं० हे विद्वन्	हे विद्वांसी	हे विद्वांसः
इसी तरह—श्रेयस् (अच्छा) । कनीयस् (छोटा) ज्यायस् (बड़ा) ।		
प्रेयस् (प्यारा) ।		

पुं० चन्द्रम् (चन्द्रमा)

प्र० चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि० चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृ० चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च० चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पं० चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
ष० चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स० चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु-मःसु
सं० हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः
इसी तरह—वनौकस्—वनवासी । वेधस्—ब्रह्मा । दिवौकस्—देवता । दुर्वासस्—		
दुर्वासा नामक ऋषि ।		

पुं०-गुणिन् (गुणवाला पुरुष)

प्र० गुणी	गुणिनौ	गुणितः
द्वि० गुणिनम्	गुणिनौ	गुणितः
तृ० गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
च० गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पं० गुणितः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
ष० गुणितः	गुणिनोः	गुणिनाम्
स० गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सं० हे गुणिन्	हे गुणिनौ	हे गुणितः
इसी प्रकार—शशिन्—चन्द्रमा । दण्डिन्—दण्डधारी । कुशलिन्—सुखी ।		
पक्षिन्—पक्षी । स्वामिन्—मालिक । शिखरिन्—पर्वत । करिन्—हाथी । मन्त्रिन्—		
मन्त्री (वजीर) ।		

पुं० तादृक् (उसके जैसा)

प्र० तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वि० तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृ० तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च० तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः

प० तादृशः	तादृश्याम्	तादृश्यः
ष० तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स० तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सं० हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः
इसी प्रकार—ईदृश् (ऐसा) कीदृश् (कैसा) यादृश् (जैसा) त्वादृश् (तुझ जैसा) भवादृश् (आप जैसा) मादृश् (मुझ जैसा) इत्यादि ।		

पुं० पुंस् (पुरुष)

प्र० पुमान्	पुमांसी	पुमांसः
द्वि० पुमांसम्	पुमांसी	पुंसः
तृ० पुसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
च० पुसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पं० पुसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
ष० पुसः	पुंसोः	पुंसाम्
स० पुसि	पुंसोः	पुंसु
सं० हे पुमन्	हे पुमांसी	हे पुमांसः

स्त्रीलिङ्ग शब्द

वाक् (वाणी)

प्र० वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि० वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ० वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च० वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं० वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष० वाचः	वाचोः	वाचाम्
स० वाचि	वाचोः	वाक्षु
सं० हे वाक्	हे वाचौ	हे वाचः

इसी प्रकार शुच (शोक) त्वच् (छाल) रुच् (कान्ति) इत्यादि ।

सरित् (नदी)

प्र० सरित्	सरितौ	सरितः
द्वि० सरितम्	सरितौ	सरितः
तृ० सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
च० सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पं० सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
ष० सरितः	सरिताः	सरिताम्
स० सरिति	सरितोः	सरित्सु
सं० हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

इसी प्रकार—हरित् (दिशा) योषित् (स्त्री) तडित् (बिजली) ।

स्त्रीलिङ्ग—विपद् (विपत्ति)

प्र० विपत्	विपदौ	विपदः
द्वि० विपदम्	विपदौ	विपदः
तृ० विपदा	विपद्भ्याम्	विपद्भिः
च० विपदे	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
पं० विपदः	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
ष० विपदः	विपदोः	विपदाम्
स० विपदि	विपदोः	विपत्सु
सं० हे विपत्	हे विपदौ	हे विपदः

इसी प्रकार—संपत् शब्द (ऋतु, वर्ष) परिषत् (सभा) इत्यादि ।

स्त्रीलिङ्ग—गिर (वाणी)

प्र० गीः	गिरौ	गिरः
द्वि० गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ० गिरा	गीर्भ्याम्	गीभिः
च० गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं० गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
ष० गिरः	गीरोः	गिराम्
स० गिरि	गीरोः	गीर्षु
सं० हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः

इसी प्रकार—पुर—(नगर) । धुर—(धुरा) । द्वार—(द्वार) ।

दिश (दिशा)

प्र० दिक्	दिशौ	दिशः
द्वि० दिशम्	दिशौ	दिशः
तृ० दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
च० दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पं० दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
ष० दिशः	दिशोः	दिशाम्
स० दिशि	दिशोः	दिक्षु
सं० हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः

पुर (नगर)

प्र० पूः	पुरौ	पुरः
द्वि० पुरम्	पुरौ	पुरः
तृ० पुरा	पूर्य्याम्	पूर्य्यभिः
च० पुरे	पूर्य्याम्	पूर्य्यः
पं० पुरः	पूर्य्याम्	पूर्य्यः
ष० पुरः	पुरोः	पुराम्
स० पुरि	पुरोः	पूर्यु
सं० हे पू	हे पुरौ	हे पुरः

अप् (जल) केवल बहुवचन में

प्र०	आपः	पं०	अद्भ्यः
द्वि०	अपः	प०	अपाम्
तृ०	अद्भिः	स०	अप्सु
च०	अद्भ्यः	सं०	हे आपः

नपुंसकलिङ्ग

वर्म (कवच)

प्र०	वर्म	वर्मणी	वर्माणि
द्वि०	वर्म	वर्मणी	वर्माणि
तृ०	वर्मणा	वर्मभ्याम्	वर्मभिः
च०	वर्मणे	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
पं०	वर्मणः	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
प०	वर्मणः	वर्मणोः	वर्मणाम्
स०	वर्मणि	वर्मणोः	वर्मसु
सं०	हे वमन्, हे वर्म	हे वर्मणी	हे वर्माणि

इसी प्रकार—कर्मन् (काम) शर्मन् (कल्याण) भर्मन् (पालन) ।

(नपुंसकलिङ्ग) नामन् (नाम)

प्र०	नाम	नामनी-नाम्नी	नामानि
द्वि०	नाम	नामनी-नाम्नी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
प०	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नामनि, नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
सं०	हे नाम	हे नामनी, नाम्नी	हे नामानि

इसी प्रकार—हेमन्—सुवर्ण (सोना) । दामन्—रस्ती । प्रेमन्—प्यार ।
लोमन्—रोम । धामन्—घर, तेज इत्यादि ।

नपुंसकलिङ्ग—मनस् (मन)

प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पं०	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
प०	मनसः	मनसोः	मनसाम्
स०	मनसि	मनसोः	मनस्सु-नःसु
सं०	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

इसी प्रकार—पयस्—पानी या दूध । धनुष्—धनुष् । तमस्—अन्धकार ।
तेजस्—दीप्ति । चक्षुष्—नेत्र । तपस्—तप । रजस्—धूलि । वचस्—वचन ।
वयस्—उम्र । शिरस्—तिर । वासस्—कपड़ा । सरस्—तालाब । नभस्—
आसमान । यशस्—कीर्ति । रक्षस्—राक्षस । इत्यादि ।

हविस्—(हवन करने की सामग्री विशेष)

प्र०	हविः	हविषी	हवीषि
द्वि०	हविः	हविषी	हवीषि
तृ०	हविषा	हविभ्याम्	हविभिः
च०	हविषे	हविभ्याम्	हविभ्यः
पं०	हविषः	हविभ्याम्	हविभ्यः
ष०	हविषः	हविषोः	हविषाम्
स०	हविषि	हविषोः	हविषुः
सं०	हे हविः	हे हविषी	हे हवीषि

इसी प्रकार—सपिस्—घी । ज्यातिष्—रोशनो । रोचिस्—रोशनो ।

तादृश्—(उसके जैसा)

प्र०	तादृक्	तादृशी	तादृशि
द्वि०	तादृक्	तादृशी	तादृशि, शेष पुल्लिङ्ग की तरह ।
			महत् (बड़ा)

प्र०	महत्	महती	महान्ति
द्वि०	महत्	महती	महान्ति, शेष पुल्लिङ्ग की तरह ।

मनोहारिन् (सुंदर)

प्र०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि
द्वि०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि, शेष पुल्लिङ्ग की तरह ।

संख्यावाचकविशेषण

१—निदिचित संख्यावाचक

एक (एक)

द्वि (दो)

	पुं०	स्त्री०	न०	पुं०	स्त्री०	न०
प्र०	एकः	एका	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	एकम्	एकाम्	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	एकेन	एकया	एकेन	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पं०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
ष०	एकस्य	एकस्याः	एकस्य	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (तीन)

चतुर (चार)

पुं०	स्त्री०	न०	पुं०	स्त्री०	न०
प्र० त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि० त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ० त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च० त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं० त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष० त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स० त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नोट—एक शब्द का उच्चारण केवल एकवचन में, द्वि शब्द का केवल द्विवचन में, और त्रि और चतुर शब्दों का उच्चारण केवल बहुवचन में ही होता है ।

पञ्चन (पांच)	षष् (छः)	सप्तन (सात)	अष्टन (आठ)	नवन् (नौ)	दशन् (दस)
प्र० पञ्च	षट्-ङ्	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश
द्वि० पञ्च	षट्-ङ्	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश
तृ० पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टाभिः-अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
च० पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं० पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
ष० पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स० पञ्चसु	षट्सु-रसु	सप्तसु	अष्टासु-अष्टसु	नवसु	दशसु

११ एकादश	२७ सप्तविंशतिः	४२ द्विचत्वारिंशत्
१२ द्वादश	२८ अष्टाविंशतिः	द्वाचत्वारिंशत्
१३ त्रयोदश	२९ नवविंशतिः	त्रिचत्वारिंशत्
१४ चतुर्दश	एकादविंशत्	त्रयश्चत्वारिंशत्
१५ पञ्चदश	३० त्रिंशत्	४४ चतुश्चत्वारिंशत्
१६ षोडश	३१ एकत्रिंशत्	४५ पञ्चचत्वारिंशत्
१७ सप्तदश	३२ द्वात्रिंशत्	४६ षट्चत्वारिंशत्
१८ अष्टादश	३३ त्रयस्त्रिंशत्	४७ सप्तचत्वारिंशत्
१९ नवदश	३४ चतुस्त्रिंशत्	४८ अष्टचत्वारिंशत्
एकादविंशतिः	३५ पञ्चत्रिंशत्	अष्टाचत्वारिंशत्
२० विंशतिः	३६ षट्त्रिंशत्	
२१ एकत्रिंशतिः	३७ सप्तत्रिंशत्	४९ नवचत्वारिंशत्
२२ द्वाविंशतिः	३८ अष्टात्रिंशत्	एकादपञ्चाशत्
२३ त्रयोविंशतिः	३९ नवत्रिंशत्	५० पञ्चाशत्
२४ चतुर्विंशतिः	एकादचत्वारिंशत्	५१ एकपञ्चाशत्
२५ पञ्चविंशतिः	४० चत्वारिंशत्	५२ द्विपञ्चाशत्
२६ षड्विंशतिः	४१ एकचत्वारिंशत्	द्वापञ्चाशत्

५३ त्रिपञ्चाशत्
त्रयःपञ्चाशत्
५४ चतुःपञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्
अष्टपञ्चाशत्

५९ नवपञ्चाशत्
एकोनषष्टिः

६० षष्टिः
६१ एकषष्टिः
६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः

६३ त्रिषष्टिः
त्रयःषष्टिः

६४ चतुःषष्टिः
६५ पञ्चषष्टिः

६६ षट्षष्टिः
६७ सप्तषष्टिः

६८ अष्टषष्टिः
अष्टापष्टिः

६९ नवषष्टिः
एकोनसप्ततिः

७० सप्ततिः

७१ एकसप्ततिः

७२ द्विसप्ततिः

द्वासप्ततिः

७३ त्रिसप्ततिः

त्रयःसप्ततिः

७४ चतुःसप्ततिः

७५ पञ्चसप्ततिः

७६ षट्सप्ततिः

७७ सप्तसप्ततिः

७८ अष्टसप्ततिः

अष्टासप्ततिः

७९ नवसप्ततिः

एकोनाशीतिः

८० अशीतिः

८१ एकाशीतिः

८२ द्व्यशीतिः

८३ त्र्यशीतिः

८४ चतुरशीतिः

८५ पञ्चाशीतिः

८६ षडशीतिः

८७ सप्ताशीतिः

८८ अष्टाशीतिः

८९ नवाशीतिः

एकोननवतिः

९० नवतिः

९१ एकनवतिः

९२ द्विनवतिः, द्वानवतिः

९३ त्रिनवतिः

त्रयानवतिः

९४ चतुर्नवतिः

९५ पञ्चनवतिः

९६ षण्णवतिः

९७ सप्तनवतिः

९८ अष्टनवतिः

अष्टानवतिः

९९ नवनवतिः

एकोनशतम्

१०० शतम् (एकं शतम्)

१०१ एकशतम्

१०२ द्विशतम्

११२ द्वादशशतम्

१४० चत्वारिंशच्छतम्

१९९ नवनवतिशतम्

२००=शते (द्विशती, शतद्वयम् शतद्वयी) । ३००=त्रिशती (शतत्रयम् शतत्रयी) ।

४००=चतुःशती (शतचतुष्टयम् शतचतुष्टयी) । ५००=पञ्चशती (शतपञ्चकम्) ।

६००=षट्शती (शतषट्कम्) । ७००=सप्तशती (शतसप्तकम्) । ८००=अष्टशती

(शताष्टकम्) । ९००=नवशती (शतनवकम्) । १०००=सहस्रम् । १००००=

अयुतम् । १०००००=लक्षम् । १००००००=नियुतम् । १०००००००=कोटिः ।

अरब=अर्बम्, खरब=खर्वम् ।

एकोनविंशति से लेकर नवनवति तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं । शत,

सहस्रम्, अयुतं, लक्षं, नियुतम् आदि शब्द नित्य एकवचनान्त नपुंसक ह ।

२—क्रमवाचकविशेषण

संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी
पुं० स्त्री० न०	पुं० न० स्त्री०	पुं० स्त्री० न०	पुं० न० स्त्री०
प्रथमः—मा—मम् (आद्यः, आदिमः)	पहला—ली	सप्तदशः—शी—शम्	सत्तरहवाँ—वी
द्वितीयः—या—यम्	दूसरा—री	अष्टादशः—शी—शम्	अठारहवाँ—वी
तृतीयः—या—यम्	तीसरा—री	एकोनविंशतितमः—मी—मम्	उन्नीसवाँ—वी
चतुर्थः—थी—थम्—(तुर्यः, तुरीयः)	चौथा—थी	विंशतितमः—मी—मम् (विंशः)	बीसवाँ—वी
पञ्चमः—मी—मम्	पाँचवाँ—वी	एकविंशतितमः—मी—मम्	(एकविंशः)
षष्ठः—ठी—ठम्	छठा—ठी		इक्कीसवाँ—वी
सप्तमः—मी—मम्	सातवाँ—वी	द्वाविंशतितमः—मी—मम्	बाईसवाँ—वी
अष्टमः—मी—मम्	आठवाँ—वी	त्रयोविंशतितमः—मी—मम्	तेईसवाँ—वी
नवमः—मी—मम्	नौवाँ—वी	चतुर्विंशतितमः—मी—मम्	चौबीसवाँ—वी
दशमः—मी—मम्	दसवाँ—वी	पञ्चविंशतितमः—मी—मम्	पच्चीसवाँ—वी
एकादशः—शी—शम्	ग्यारहवाँ—वी	षड्विंशतितमः—मी—मम्	छवीसवाँ—वी
द्वादशः—शी—शम्	बारहवाँ—वी	सप्तविंशतितमः—मी—मम्	सत्ताईसवाँ—वी
त्रयोदशः—शी—शम्	तेरहवाँ—वी	अष्टाविंशतितमः—मी—मम्	अठाईसवाँ—वी
चतुर्दशः—शी—शम्	चौदहवाँ—वी	नवविंशतितमः—मी—मम्	उनतीसवाँ—वी
पञ्चदशः—शी—शम्	पन्द्रहवाँ—वी	एकोनविंशतितमः—मी—मम्	„ „
षोडशः—शी—शम्	सोलहवाँ—वी	त्रिंशत्तमः—मी—मम्	तीसवाँ—वी

चत्वारिंशः, चत्वारिंशत्तमः (४० वाँ) पञ्चाशत्तमः (५० वाँ) षष्टितमः (६० वाँ)
 सप्ततितमः (७० वाँ) अशीतितमः (८० वाँ) नवतितमः (९० वाँ) शततमः (१०० वाँ)
 सहस्रतमः (१००० वाँ) ।

हिन्दी में अनुवाद करोः—

१—अस्माकं पाठशालायां त्रयः अध्यापकाः अध्यापयन्ति । २—इदानीं मम पाश्चे
 त्रिंशत् रूप्यकाणि सन्ति ? ३—कति पुरुषाः स्नानार्थं नदीं गमिष्यन्ति ? ४—एकादश्यां
 तृतीयं लोकाः उपवासं कुर्वन्ति । ५—अस्यां रथ्यायां मम गृहं त्रयोविंशतितममस्ति ।
 ६—अधुना त्रिंशत्तमः छात्रः अत्रागच्छतु । ७—अस्यां नामावल्यां सुशीला एकोनविं
 शतितमा । ८—अस्माकं पाठशालायाः अयं द्वितीयः वाषिकोत्सवः ।

संस्कृत में अनुवाद करोः—

१—कल मेरे डाक द्वारा ५० रुपये आवेंगे । २—लाहौर में दिवानचन्द को २०
 रुपये इनाम मिले । ३—हमारे स्कूल में ८५ विद्यार्थी पढ़ते हैं । ४—मित्र, क्या
 आपके पाँच सहोदर भाई हैं ? ५—इस कक्षा में प्रथम छात्र कौन है ? ६—शायद
 वह यहाँ पाँचवें दिन आयगा । ७—प्यारेलाल अपनी जमात में दूसरा रहा है । ८—
 मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण का आठवें, क्षत्रिय का ग्यारहवें, और वैश्य का बारहवें
 वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार होना चाहिए ।

३—आवृत्तिवाचकविशेषण

‘द्विगुना’ ‘त्रिगुना’ आदि आवृत्तिसूचक शब्दों के अनुवाद के लिए संस्कृत में संख्या शब्दों के आगे ‘गुण’ या ‘गुणित’ शब्दों को जोड़कर अनुवाद किया जाता है। परन्तु आवृत्ति वाचक शब्दों पर ‘आवृत्त’ या ‘आवर्तित’ भी जोड़ दिया जाता है। जैसे—

(१) सः व्यापारे द्विगुणं धनं लेभे (उसे व्यापार में दूता धन मिला)
(२) अस्थ भवनस्थ उच्चता तस्मात् त्रिगुणा (इस भवन की ऊँचाई उससे त्रिगुनी है)।

(३) चत्वारिंशद्गुणाः अधिकाः बालकाः जाताः (चालीसगुने ज्यादा लड़के होगए)

(४) अस्थ मार्गस्य दीर्घता शतगुणा (इस रास्ते की लम्बाई सौगुनी है)

(५) सः धनं तावत् त्वत् सहस्रगुणं, लक्षगुणं कोटिगुणं वा अधिकम् अर्जयत् परं न कीर्तिम् (वह तुझ से हजारगुना, लाखगुना या करोड़गुना धन कमा ले पर यश नहीं कमा सकता)।

(६) ब्रह्मचारिणः त्रिगुणां मौञ्जीं मेखलां धारयन्ति (ब्रह्मचारी तिहरी मौं की तड़ागी बांधते हैं)।

(७) इयम् अजा द्विगुणया (द्विरावृत्तया) रज्ज्वा बद्धा (यह बकरी बुहरी रस्से से बंधी है)।

(८) सा बाला त्रिरावृत्तं (त्रिरावर्तितं, त्रिगुणं, त्रिगुणितं वा) दामं धारयति (वह लड़की तिहरी माला पहने है)।

४—समुदायबोधक विशेषण

जहाँ पर ‘दोनों’, ‘तीनों’, ‘चारों’, ‘तीसों’, ‘पचासों’ आदि समुदायकवाचक शब्द हों उनका अनुवाद संस्कृत में संख्यावाचक शब्द के आगे ‘अपि’ जोड़ने से किया जाता है। जैसे—

(१) किं द्वावपि बालौ गतौ (क्या दोनों लड़के गए ?)

(२) अस्मिन् प्रकोष्ठे पञ्चत्रिंशदपि बालकाः पठनाय शक्तुवन्ति (इस कमरे में पैंतीस बालक पढ़ सकते हैं)।

(३) पञ्चाशदपि सैनिकाः युद्धे हताः (पचासों सिपाही युद्ध में मारे गए)।

(४) किं त्वया षोडशापि आणकाः व्ययिताः (क्या तूने सोलहों आने खर्च कर दिए)।

(५) अष्टावपि चोराः पलायिताः (आठों चोर भाग गये)।

५—विभागबोधकविशेषण

‘हर एक’ ‘सब’ आदि शब्दों का अनुवाद संस्कृत में ‘सर्व’ या ‘सकल’ आदि शब्दों द्वारा किया जाता है। जैसे—

अस्याः कक्षायाः सर्वे बालाः पटवः सन्ति (इस दर्जे के सब लड़के होशियार हैं)

(२) अस्याः वाटिकायाः सर्वाणि आम्राणि मिष्टानि सन्ति (इस बाग के सब आम मीठे हैं) ।

(३) सर्वे ब्राह्मणाः आहूयन्ताम् (हर एक ब्राह्मण को बुलाओ) ।

(४) प्रतिवालकं (सर्वेभ्यः बालेभ्यः) पारितोषिकं देहि (हर लड़के को इनाम दो) ।

(५) प्रतिदिनं (दिने दिने) पठितुं पाठशालामगच्छ (हर रोज पढ़ने के लिए स्कूल आया करो) ।

(६) प्रतिब्राह्मणं पञ्चरूप्यकाणि देहि }
सर्वेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः पञ्चरूप्यकाणि देहि } (हर एक ब्राह्मण को पांच रुपये दो)

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

एक शब्द द्वारा—एकः संन्यासी न्यवसत् ।

एका नदी आसीत् ।

एकस्मिन् वने एकः सिंहः न्यवसत् ।

किम् चित् शब्दों द्वारा—कश्चिन् संन्यासी न्यवसत् ।

काचित् नदी आसीत् ।

कस्मिंश्चिद् वने एकः सिंहः न्यवसत् ।

एक और अपर शब्दों द्वारा—एकः उत्तीर्णः अपरोऽनुत्तीर्णः ।

एके मृताः अपरे पलायिताः ।

एक और अन्य शब्दों द्वारा—एकः हसति अन्यो रोदिति ।

परस्पर, अन्योन्य शब्दों द्वारा—

दुष्टाः बालाः परस्परं (अन्योन्यं) कलहायन्ते ।

असज्जनाः परस्परं (अन्योन्यम्, इतरेतरम्) गालीः ददति ।

सर्व, समस्त आदि शब्दों के द्वारा—सर्वे बालाः अस्यां श्रेण्यामुत्तीर्णाः ।

सर्वाणि पुष्पाणि व्यकसन् ।

सर्वः स्वार्थ समीहते ।

बहु, प्रभूत आदि शब्दों के द्वारा—

बहवः (बह्वचः) बालिकाः सीवनं शिक्षन्ते ।

एतत्कार्यसाधनाय बहवः उपायाः सन्ति ॥

देशे अनेकशः रोगाः विद्यन्ते ।

कतिपय या किम् चित् (चन) शब्दों द्वारा—

कतिपयाः (कतिचित्) छात्राः उत्तीर्णाः ।

कतिपयानि (कानिचित्) पुष्पाणि विकसितानि ।

कतिपयाः (काश्चन) स्त्रियः विदुष्यः ।

परिमाणवाचक विशेषण

तौल (तुलामान) के शब्द—

रक्तिका, गुञ्जा = रत्न

मापकः = माशा

तौलकः = तौला

पट्टङ्कः = छटांक

पादः = पाव

मूल्यवाचक शब्द

वराटकः, वराटिका = कौडी

पादिका = पाई

पणः (पणकः) = पैसा

आणः (आणकः) = आना

द्वयाणी (द्वयाणकी) = दुअनी

चतुराणी (चतुराणकी) = चअनी

अष्टाणी (अष्टाणकी) = अठनी

रूप्यकम् (रूपकम्) = रुपया

निष्कः (दीनारः) = सोन की मोहर

सेर, मन (मण), गज, मील आदि के लिए संस्कृत में शब्द नहीं मिलते, इसलिए अनुवाद में इन्हीं का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

१—चतुर्मणपरिमिताः ब्रीहयः।

२—वार्जरस्य ब्रीन् सेरान् आनय।

३—सप्तगजपरिमितं वस्त्रं दीनाय देहि।

४—शतमीलपरिमितोऽयं पन्थाः।

५—सुवर्णस्य चत्वारः तौलकाः अलं भूषणाय

६—सरः तण्डुलः (तण्डुलाः)।

७—चत्वारः मापकाः सुवर्णम्।

८—रूपकस्य चतुरिंश पट्टङ्काः घृतम्।

९—त्रीणि औंसानि टिंवर-आयांडानम्।

संस्कृत वनाओ :—

१—उस मकान की ऊंचाई उस मकान से चौगुनी है। २—यह रास्ता उस रास्ते से दोगुना है। ३—रोहरी रस्मी से पुलिस के सिपाहियों (राजपुर्खों) ने चोर को बाँधा है। ४—आठवें दर्जे में इस वर्ष कौन लड़ना पहला रत्ना? ५—मैंने गणित के पन्ने में सी में से साठ नस्वर पाये। ६—इजारों में गेहूँ भारत से विदेश को जाना है। ७—ताजमहल के बनाने में करोड़ों रुपए खर्च हुए। ८—वह तो उसका सौदा हीस्ता भी नहीं है। ९—कुछ लोग स्वभाव से आलसी होते

माप—

अङ्गुलम् = अंगुल

वितस्तिः = बालित

पादः = फुट

हस्तः = हाथ

समयबोधक—

पलम् = पल

क्षणः = छिन

प्रहरः (यामः) = पहर

विकला = सेकण्ड

कल = मिनट

घण्टा (होरा) = घंटा

अहोरात्रः = दिन रात

सप्ताहः = हफ्ता

पक्षः = पाल

मासः = महीना

वर्षम् (वत्सरः, शब्दः, शरत्) = बरस

हैं। १०—विद्यालय यहां से पाँच मील है। ११—बीमार के लिए तीन औंस दवाई मोल लो। १२—मैं रात को दस बजे सोऊँगा। १३—इस वर्तन में पाँच सेर घी आ सकता है। १४—निरीक्षक ने हुक्म दिया कि एक एक दर्जे में ३५ से ज्यादा लड़के न बैठें। १५—आजकल रुपए के कितने सेर चावल मिलते हैं?

गुणवाचकविशेषण

गुण के वाचक शब्द को विशेषण कहते हैं। गुण शब्द से शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के गुणों का ग्रहण है। हिन्दी भाषा में विशेषण का लिङ्ग कहीं बदलता है और कहीं नहीं बदलता, यथा—सीता बुद्धिमती है। यह सरला बालिका है। बन्दर की प्रकृति चञ्चल है। तेरी बुद्धि प्रखर है। किन्तु संस्कृत में यह नियम है—

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिविशेषस्य ।

तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिविशेषणस्यापि ॥

जो लिङ्ग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है, वही लिङ्ग, वही वचन और वही विभक्ति विशेषण की भी होती है।

शब्द	अर्थ	पुं०	स्त्री०	न०
रक्त	(लाल)	रक्तः	रक्ता	रक्तम्
पीत	(पीला)	पीतः	पीता	पीतम्
हरित	(हरा)	हरितः	हरिता	हरितम्
श्वेत	(सफेद)	श्वेतः	श्वेता	श्वेतम्
कृष्ण	(काला)	कृष्णः	कृष्णा	कृष्णम्
मधुर	(मीठा)	मधुरः	मधुरा	मधुरम्
कटु	(कड़वा)	कटुः	कट्वी	कटुम्
अम्ल	(खट्टा)	अम्लः	अम्ला	अम्लम्
शीतल	(ठंडा)	शीतलः	शीतला	शीतलम्
उष्ण	(गर्म)	उष्णः	उष्णा	उष्णम्
विशाल	(बड़ा)	विशालः	विशाला	विशालम्
शोभन	(सुन्दर)	शोभनः	शोभना	शोभनम्
स्थूल	(मोटा)	स्थूलः	स्थूला	स्थूलम्
कृश	(दुबला)	कृशः	कृशा	कृशम्
कामल	(कोमल)	कामलः	कामला	कामलम्
मनोहर	(सुन्दर)	मनोहरः	मनोहरा	मनोहरम्
बुद्धिमत्	(होशियार)	बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
लघु	(छोटा)	लघुः	लघ्वी	लघुम्
साधु	(अच्छा)	साधुः	साध्वी	साधुम्

(दोष में) प्रथमा

पुं० काश्चिद् दुष्टः नरः, कौचिद् दुष्टो नरो, केचिद् दुष्टाः नराः।

स्त्री० काश्चिद् दुष्टा, केचिद् दुष्टे स्त्रियी, काश्चिद् दुष्टाः स्त्रियः।

न० किञ्चिद् दुष्टं जलम्, केचिद् दुष्टे जले, कानिचिद् दुष्टानि जलानि।

(गुण में) प्रथमा

पुं० अयं शोभनः नरः । इमी शोभनौ नरौ । इमे शोभनाः नराः ।
स्त्री० इयं शोभना स्त्री । इमे शोभने स्त्रियौ । इमाः शोभनाः स्त्रियः ।
न० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभने पुष्पे, इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

द्वितीया

पुं० इमं शोभनं नरम् । इमी शोभनी नरौ । इमान् शोभनान् नरान् ।
स्त्री० इमां शोभनां स्त्रियम् । इमे शोभने स्त्रियौ । इमाः शोभनाः स्त्रीः ।
न० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभने पुष्पे । इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

तृतीया

पुं० अनेन शोभनेन नरेण । आभ्यां शोभनाभ्यां नराभ्याम् । एभिः शोभनैः नरैः ।
स्त्री० अनया शोभनया स्त्रिया । आभ्यां शोभनाभ्यां स्त्रीभ्याम् । आभिः शोभनाभिः
स्त्रीभिः ।
न० अनेन शोभनेन पुष्पे । आभ्यां शोभनाभ्यां पुष्पाभ्याम् । एभिः शोभनैः पुष्पैः ।
इसी प्रकार शेष विभक्तियाँ समझनी चाहिएँ ।

संस्कृत वनाश्रयोः—

१—हमारे बगीचे के मीठे फल हैं । २—अच्छे बालक परिश्रम करते हैं । ३—
ईश्वर की कुदरत क्या ही विचित्र है । ४—किसी निर्धन जन को वस्त्र दा । ५—
खट्टी छाल छोड़ कर गर्म हथ पोओ । ६—प्यारेलाल की साइकिल अच्छी है ।
७—इस वृक्ष के खट्टे और मीठे फल हैं । ८—लाल घोड़े दौड़ रहे हैं । ९—यह चंचल
नयन बालिका है । १०—तेरा हृदय कोमल नहीं है । ११—यह तालाब अतिमुन्दर
है । १२—तपस्वी ब्राह्मणों के लिए ऐसा न कहो । १३—किसी पेड़ पर एक बानर
और एक कबूतर रहते थे । १४—किसी जंगल की एक कन्दरा में एक सिंह रहता
था । १५—नौले जलवाली यमुना के किनारे श्रीकृष्ण ने विहार किया ।

विशेषणों की तुलना

वाक्य में विशेषणों का प्रयोग तीन प्रकार से होता है या तो विशेषण सामान्य
होता है, या तुलनात्मक या अतिशयवाचक । जब विशेषण साधारण रीति से उत्कर्ष
या अपकर्ष का बोधक हो तो वह सामान्य विशेषण कहलाता है । १ सामान्य विशेषण
जैसे—

१—अयं बालकः पटुः (उत्कर्ष)

२—अयं नरः दुष्टः (अपकर्ष)

२—तुलनात्मक विशेषण—जब दो की तुलना करके उनमें से एक की अधिकता
या न्यूनता, दिखाई जाती है तो विशेषण 'तुलनात्मक' कहलाता है और विशेषण के
आगे 'तर' या 'इयम्' प्रत्यय लगाया जाता है । जैसे—

१ माया २ तक्रम् ३ द्विचक्रिका ।

४ तड़ागः ५ कपोतः ।

१—गोपालः श्यामात् पटुतरः (उत्कर्ष)

२—नरः देवात् निकृष्टतरः (अपकर्ष)

३—आचार्यः पितुः महीयान् (महतरः) (उत्कर्ष)

३—अतिशयवाचक विशेषण—जब शी से अधिक पदार्थों की तुलना करके उन सबसे

एक को अधिक या न्यून बताया जाता है तो विशेषण 'अतिशयवाचक' कहलाता है और विशेषण के आगे 'तम' या 'इष्ट' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—

१—हिमालयः सर्वेषां पर्वतानां (सर्वेषु पर्वतेषु) उन्नततमः (उत्कर्ष)

२—वदरोक्तं सर्वेषां फलानां (सर्वेषु फलेषु) निकृष्टतमम् (अपकर्ष)

३—श्यामः सर्वेषां भ्रातॄणां (सर्वेषु भ्रातॄषु) कनिष्ठः (अपकर्ष)

सामान्य विशेषण

तुलनात्मक

अतिशयवाचक

महान्

महत्तरः

महत्तमः

शुक्लः

शुक्लतरः

शुक्लतमः

साधुः

साधुतरः

साधुतमः

धीरः

धीरतरः

धीरतमः

पटुः

पटुतरः पटुयान्

पटुतमः, पटुिष्ठः

प्रियः

प्रियतरः, प्रेयान्

प्रियतमः, प्रेष्ठः

गुरुः

गुरुतरः, गरीयान्

गुरुतमः, गरिष्ठः

लघुः

लघुतरः, लघीयान्

लघुतमः, लघिष्ठः

दीर्घः

दीर्घतरः, द्राघीयान्

दीर्घतमः, द्राघिष्ठः

वृद्धः

वर्षीयान्, ज्यायान्

वर्षिष्ठः, ज्येष्ठः

अल्पः

अल्पीयान्, कनीयान्

अलिष्ठः, कनिष्ठः

बहुः

बहुतरः, भूयान्

बहुतमः, भूयिष्ठः

दृढः

दृढतरः, द्रढीयान्

दृढतमः, द्रढिष्ठः

मृदुः

मृदुतरः, मरीयान्

मृदुतमः, मरिष्ठः

कृशः

कृशतरः, कशीयान्

कृशतमः, कशिष्ठः

प्रशस्यः

श्रेयान्, ज्यायान्

श्रेष्ठः, ज्येष्ठः

युवा

कनीयान् ; यवीयान्

कनिष्ठः, यविष्ठः

उरुः

उरुतरः, वरीयान्

उरुतमः, वरिष्ठः

स्थूलः

स्थूलतरः, स्थवीयान्

स्थूलतमः, स्थविष्ठः

दूरः

दूरतरः, दवीयान्

दूरतमः, दविष्ठः

क्षुद्रः

क्षुद्रतरः, क्षोरीयान्

क्षुद्रतमः, क्षोदिष्ठः

क्षीनः

क्षपीयान्

क्षेपिष्ठः

बहुलः

बंहीयान्

बंहिष्ठः

स्थिरः

स्थेयान्

स्थेष्ठः

पृथुः

प्रथीयान्

प्रथिष्ठः

पापी

पापीयान्

पापिष्ठः

ह्रस्वः

ह्रपीयान्

ह्रसिष्ठः

ब्राह्मः

साधीयान्

साधिष्ठः

बलवान्

बलीयान्

बलिष्ठः

अन्तिकः

नेदीयान्

नेदिष्ठः

अतिशय के अर्थ में क्रियाओं और अव्ययों के आगे भी 'तर' और 'तन' आम् के साथ (तराम्, तनम्) लगाये जाते हैं। जैसे—

क्रिया से—सुशीला हसति तराम् (सुशीला जोर से हँसती है)।

रमेशः हसति तनम् (रमेश अत्यन्त हँसता है)।

अव्यय से—रमा उच्चैस्तरां हसति (रमा अधिक हँसती है)।

गोपालः उच्चैस्तमां हसति (गोपाल बहुत ऊँचे हँसता है)।

रमेशः उच्चैस्तमाम् आकाशति परं न कोऽपि शृणोति

(रमेश ऊँचे चिल्ला रहा है पर कोई नहीं सुनता)।

अभ्यास

१—राम और गोपाल में गोपाल लम्बा है। २—कालिदास भारत में अन्य कवियों में श्रेष्ठ है और शेक्सपीयर इंग्लिश साहित्य में सर्वोत्तम नाटककार और कवि है। ३—तुम दोनों में कौन बड़ा है? ४—बहुत ऊँचे मत हँसो। ५—मोहन और गोपाल में कौन अधिक होशियार है? ६—दिल्ली से आगरा की अपेक्षा इलाहाबाद दूर है। ७—हिमालय विन्ध्याचल से ऊँचा है। ८—संसार भर में कौन पहाड़ सब पहाड़ों में ऊँचा है? ९—मेरी पुस्तक सब पुस्तकों से अच्छा है। १०—गंगा नदी संसार भर की नदियों में पवित्र है। ११—वेद की पुस्तकें अन्य पुस्तकों में पवित्र हैं। १२—मनोरमा सब लकड़ियों में सुन्दर है। १३—राम अपने अन्य सब भाईयों में बड़े थे। १४—सहदेव सब पांडवों में छोटा भाई था। १५—बुद्ध भारी से भारी बोझ उठा सकता है। १६—मैं बहुत ऊँचे चिल्ला रहा हूँ पर कोई नहीं सुनता। १७—पचास मीठे मीठे आम मेरे लिए भेज देना। १८—हाथी सब जानवरों में मोटा है। १९—अशोक अन्य सब आर्य राजाओं में बड़ा था। २०—इन्दुमती का शरीर फूल से भी कोमल था।

सन्नन्त धातुएं

इच्छा के अर्थ में धातु के आगे 'सन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—पठितुम् इच्छति—पिपठिषति। यह 'सन्' प्रत्यय अपनी इच्छा पर ही होता है, दूसरे की इच्छा पर नहीं। जैसे—गोपालः रामस्य पठनम् इच्छति। यहाँ पर सन् प्रत्यय नहीं होता। सन्नन्त धातु के आगे 'आ' प्रत्यय लगाने से विशेष्य बन जाता है। जैसे—शास्त्रस्य जिज्ञासा, जलस्य पिपासा; 'उ' प्रत्यय लगाने से विशेषण बन जाता है। जैसे—शास्त्रं जिज्ञासुः, जलं पिपासुः। सन्नन्त धातु के लट्, लोट् आदि परस्मैपद लकारों में पठति ही तरह और आत्मनेपद में जायते की तरह रूपा होते हैं।

(श्रु) श्रुष्यते=सुनने की इच्छा करता है | (वि+जि) विजिगीषते=जागने की इच्छा करना है

(श्रु) श्रुष्यति=, , ,

(ज्ञा) जिज्ञासते=जाने की , ,

(ग्रह्) जिघृक्षति=ग्रहण करने की , ,

(दा) दित्सति=देने की , ,

(लभ्) लिप्सते=पाने की , ,

(ब्रू, वच्) ब्रिवक्षति=बोलने की , ,

(हर्) हर्षिषति=रोने की इच्छा करता है

(गम्) जिगीषति=जाने की , ,

(प्रच्छ्) पिपृच्छति=पूछने की , ,

(पच्) पिपत्ति=पकाने की , ,

(कृ) विहीरति=हरने की , ,

(हन्) जिघांसति=मारने की इच्छा करता है	(वि+धा) विधित्सति=करने की इच्छा करता है
(दृश्) दिदृक्षते=देखने की	(दह्) दिधक्षति=जलाने की
(क्री) विक्रीषति=खरीदने की	(स्था) तिष्ठसति=ठहरने की
(बुध्) बुभुत्सते=जानने की	(भृज्) बृभुक्षते=खाने की
(लिख्) लिलेखिषति=लिखने की इच्छा करता है	(जीव्) जिजिषिषति=जीने की
(अधि+इ) अधिजिगांसते=अध्ययन की इच्छा करता है	(शी) शिशयिषते=सोने की
	(स्वप्) सुषुप्सति=सोने की
	(मृ) मुमूर्षति=मरने की

संस्कृत बनाओ:—

१—कौन मनुष्य मरने की इच्छा करता है । २—में पत्र लिखने की इच्छा करता हूँ । ३—वह पढ़ने की इच्छा नहीं रखता है, उसके पिता ने उसे व्यर्थ ही स्कूल भेजा है । ४—सभी प्राणी जीने की इच्छा रखते हैं, मरने की इच्छा कौन रखता है ? ५—अपराधी न्यायालय में ठहरने की इच्छा कैसे रख सकता है ? ६—कृष्ण कंस को मारने की इच्छा रखता है । ७—बालिकाएँ नाचने की इच्छा रखती हैं । ८—भक्त कथा सुनने की इच्छा रखता है । ९—जर्मन नेता हिटलर विश्व को जीतने की इच्छा रखता था । १०—में वेदों को सुनने की इच्छा रखता हूँ ।

यङन्त धातुएँ

फिर-फिर या अतिशय अर्थ को लिखने के लिए धातु के आगे 'यङ्' प्रत्यय लगाया जाता है । यथा—पुनः पुनः पिबति पेपीयते । यङन्त धातुओं के लट्, लोट् आदि लकारों में 'जायते' की भांति रूप होते हैं ।

(तप्) तातप्यते=अत्यन्त तपता है	(जि) जेजीयते=बार बार जीतता है
(घ्रा) जेघ्रीयते=बार बार सूँघता है	(दश्) दन्दश्यते=अत्यन्त दंशता है
(दह्) दन्दह्यते=अत्यन्त जलाता है	(गै) जेगीयते=बार बार गाता है
(पच्) पापच्यते=बार बार पकाता है	(स्म) सास्मर्यते= „ याद करता है
(नी) नेनीयते=बार बार ले जाता है	(शी) शाशयते= „ सोता है
(कृ) चेक्रीयते=बार बार करता है	(चल्) चञ्चल्यते=इधर उधर चलता है
(हृद्) राह्यते=बार बार रोता है	(कृष्) चरोकृष्यते=बार बार खेती करता है
(नृत्) नरोनृत्यते=बार बार नाचता है	(वृध्) वरीवृध्यते=बार बार बढ़ता है
(दृश्) दरीदृश्यते=बार बार देखता है	(हन्) जङ्घन्यते=फिर फिर मारता है
(दा) देदीयते=बार बार देता है	(जप्) जञ्जयते=बार बार जपता है
(सिच्) सेसिच्यते=बार बार सींचता है	(गम्) जङ्गम्यते=टेढ़ा मेढ़ा चलता है

अभ्यास

१—वह हरिश्चन्द्र की तरह बार-बार दान देता है । २—बन जाते समय सीता बार-बार रोती है । ३—कृष्ण बार बार हल जीतता है । ४—वह सुन्दरी बार-

बार नाचती है और लोग बार-बार उसे देखते हैं। ५—मुझे अपने घर की बार बार याद आती है। ६—बिच्छू (बूझिक) अत्यन्त काटता है। ७—शोकानल उसे बार-बार जलाती है। ८—मन्दिर में भक्त बार-बार ईश्वर गान गाता है और मौनी बार-बार माला जपता है। ९—फूल को तू बार-बार बयो सूँघता है। १०—उस बीर राजा ने शत्रु को बार-बार जीता और क्षमा कर दिया।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ

जब किसी धातु में प्रेरणा का अर्थ लाना होता है तो धातु के साथ 'णिच्' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। जिस प्रकार हिन्दी भाषा में 'पढ़ना' से 'पढ़ाना', 'करना' से 'कराना', 'सोना' से 'सुलाना' प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं उसी प्रकार संस्कृत भाषा में भी 'णिच्' प्रत्यय जोड़कर 'पठति' से 'पाठयति', 'करोति' से 'कारयति', 'शेते' से 'शाययति' आदि प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं। मूल धातु में जो कर्ता रहता है वह प्रेरणार्थक धातु में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है। और 'णिच्' प्रत्यय जोड़ने से कभी कभी अकर्मक धातुएँ भी सकर्मक हो जाती हैं। जैसे—(अणिजन्त) बालः शेते, (णिजन्त) माता बालं शाययति।

णिजन्त धातुओं के रूप चुरादिगणीय धातुओं के समान होते हैं। धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में 'अय्' जोड़ दिया जाता है। णिजन्त धातुएँ प्रायः उभयपदी होती हैं। यथा—लट्—पाठयति, पाठयते, लङ्—अपाठयत्—त, लृट्—पाठयिष्यति—ते, लोट्—पाठयतु—ताम्।

अणिजन्त क्रिया का कर्ता णिजन्त क्रिया के साथ प्रायः तृतीया विभक्ति में होता है। यथा—

- १—देवदत्तः दोषं त्यजति, गुरुः देवदत्तेन दोषं त्याजयति।
- २—रामः मारीचं हन्ति, सीता रामेण मारीचं घातयति।
- ३—नृपः धनं ददाति, मन्त्री नृपेण धनं दापयति।
- ४—पिता क्रीडनकं क्रीणाति, बालः पित्रा क्रीडनकं क्रापयति।
- ५—सुमन्त्रः रामं वनं नयति, राजा सुमन्त्रेण रामं वनं नाययति।

निम्नलिखित १२ धातुओं के प्रयोग में अणिजन्त क्रिया के कर्ता में द्वितीया विभक्ति ही होती है और हू तथा कृ के साथ तृतीया अथवा द्वित या विभक्ति होती है। यथा—

- (१) गमन—पाण्डवाः वनं गच्छन्ति—कौरवाः पाण्डवान् वनं गमयन्ति।
- (२) दर्शन—बालः चन्द्रं पश्यति—माता बालं चन्द्रं दर्शयति।
- (३) श्रवण—नृपः गानं शृणोति—सा नृपं गानं श्रावयति।
- (४) प्रवेश—ब्रह्मचारी गृहं प्रविशति—आचार्यः ब्रह्मचारिणं गृहं प्रवेशयति।
- (५) आरोहण—सः वृक्षम् आरोहति—कृष्णः तं वृक्षम् आरोहयति।
- (६) तरण—नाविकः गङ्गामुत्तरति—सः नाविकं गङ्गामुत्तारयति।
- (७) ग्रहण—निर्धनः भोजनं गृह्णाति—भवतः निर्धनं भोजनं ग्रहयति।
- (८) प्राप्ति—बालः नगरं प्राप्नोति—पिता बालं नगरं प्रापयति।
- (९) ज्ञान—सः शास्त्रं जानाति—गुरुः तं शास्त्रं ज्ञापयति।

- (१०) पठ आदि अर्थों वाली—छात्रः शास्त्रम् अधीते—गुरुः छात्रं शास्त्रमध्यापयति ।
 (११) पान—शिशुः दुग्धं पिबति—माता शिशुं दुग्धं पाययति ।
 (१२) भोजन—(अद् खाद् भक्ष् को छोड़ कर) कृष्णः अन्नं भुङ्क्ते—यशोदा कृष्णमन्नं भोजयति ।

हृ—भृत्यः भारं ग्रामं हरति—सः भृत्यं (भृत्येन) भारं ग्रामं हारयति ।
 कृ—सेवकः कार्यं करोति—स्वामी सेवकेन (सेवक) कार्यं कारयति ।

विभिन्न अर्थों में—

- { सिंहः शिशुं भोषयते (शेर बच्चे को डरता है) ।
 { यदुः दण्डेन शिशुं भाययति (यदु दण्ड से बच्चे को डराता है) ।
 { विष्णुः वागेन मधुं विस्माययति (विष्णु तीर से मधु को विस्मित करता है) ।
 { सीता जनान् विस्मापयते स्म (सीता लोगों को विस्मित करती थी) ।
 { व्याधः मृगान् रजयति (शिकारी मृगों को मारता है) ।
 { तपस्वी तूष्णेन मृगान् रञ्जयति (तपस्वी तूष्ण से मृगों को तृप्त करता है) ।
 { यदुः खग रञ्जयति (यदु चिड़ियों को मारता है) ।

स्था—स्थापयति
 स्मृ—स्मारयति
 घ्रा—घ्राणयति
 जन्—जनयति
 पच्—पाचयति
 पाल—पालयति

बुध्—बाधयति
 ब्रू—वाचयति
 भा—भाषयति
 रम्—रमयति
 रुह्—रोहयति
 स्ना—स्नापयति

ह्री—हृषयति
 ह्व—ह्वययति
 हा—हापयति
 भू—भावयति

संस्कृत वनाश्रयो :—

- १—मन्त्री राजा से प्रजा का शासन करवाता है । २—सेठजी ने आज लड़कों को मिठाई खिलाई । ३—तुमने कल राम को कहाँ भेजा था ? ४—उसने मुझ से गुरु जी को प्रणाम करवाया । ५—माँ ने अपने लड़के को चित्र दिखलाया । ६—नारथी घोड़ों से रख चलवाता है । ७—आचार्य अपने विद्यार्थियों को वेद पढ़ाता है । ८—रामचन्द्र जी ने हनुमान् से राक्षसों को मरवाया । ९—सिंह की गर्जना ने मेरे हृदय को कंपा दिया । १०—गुरुजी ने आज हम से ईश्वर की पूजा करवाई । ११—कल धर्मात्मा हमें रामायण की कथा सुनायेंगे । १२—माता पुत्र को अपने हाथ से पानी पिलाती है । १३—तुम मेरे लिए भोजन व व पकवाओगे ? १४—उम धर्मात्मा ने गरीबों को वस्त्र दिलाये । १५—भगवन् ! क्या आप मेरे

१ जल्प् भाव, शिल्प्, आलप् और दूश् के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया होती है ।
 यथा—‘देवो रामं सत्यं जल्पयति’ ।

२ ‘अद्’ और ‘खाद्’ के प्रयोज्य कर्ता में भी तृतीया ही होती है । यथा—
 माता शिशुना शिष्टान्नं खादयति, आदयति वा ।

३ ‘नी’ और ‘बह्’ धातु के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया ही होती है । यथा—भृत्यो भारं नयति, वहति वा, (स भृत्येन भारं नाययति वाहयति वा) ।

लिए अपने पिता जी से प्रशंसापत्र लिखवा देंगे ? १६—मैंने पंडित से पूजा करवाई । १७—भवत ग्रामवासियों का कथा सुनाता है । १८—दुष्ट स्वयं दुःख भोगता है और दूसरों को भा भोगाता है । १९—राजा सिपाहियों से (घोषः) दुश्मन का मरवाता है । २०—वे फूल लेकर अपने दोस्तों को सुँघाते हैं ।

कर्मवाच्य और भाववाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य । धातुओं के कर्तृवाच्य के रूप दसों गणों के लट् आदि लकारों में पीछे दिखाये जा चुके हैं, सकर्मक धातुओं के रूप कर्मवाच्य में और अकर्मक धातुओं के रूप भाववाच्य में होते हैं । धातु चाहे जिस पद की हो, इन दो वाच्यों के रूप केवल आत्मनेपद में होते हैं । और लट्, लोट्, लुङ् और विधिलिङ् में 'य' का आगम होता है ।

कर्मवाच्य की क्रिया के रूप पुरुष और वचन में कर्म के अनुसार होते हैं । भाववाच्य से क्रिया का केवल होना मात्र दिखाया जाता है । अतएव भाववाच्य सदा प्रथमपुरुष एकवचन में होता है । कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है ।

जैसे—भाववाच्य में—तेन भूयते, ताभ्यां भूयते, तैः भूयते । त्वया भूयते, युवाभ्यां भूयते, युष्माभिः भूयते । मया भूयते, आवाभ्यां भूयते, अस्माभिः भूयते ।

कर्मवाच्य में—तेन बालः दृश्यते, तेन बालौ दृश्येते, तेन बालाः दृश्यन्ते । तैः बालः दृश्यते, अस्माभिः बालौ दृश्येते ।

कर्मवाच्य गम् (लट्)

प्रथमपुरुष	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
मध्यम पुरुष	गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
उत्तम पुरुष	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे
लङ्			
प्र० पु०	अगम्यत	अगम्येताम्	अगम्यन्त
म० पु०	अगम्यथाः	अगम्येश्वाम्	अगम्यध्वम्
उ० पु०	अगम्ये	अगम्यावहि	अगम्यामहि
लृट्			
प्र० पु०	गमिष्यते	गमिष्येने	गमिष्यन्ते
म० पु०	गमिष्यसे	गमिष्येथे	गमिष्यध्वे
उ० पु०	गमिष्ये	गमिष्यावहे	गमिष्यामहे
लोट्			
प्र० पु०	गम्यताम्	गम्येताम्	गम्यन्ताम्
म० पु०	गम्यस्व	गम्येश्वाम्	गम्यध्वम्
उ० पु०	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

क्रिया दो प्रकार की होती है, एक सकर्मक और दूसरी अकर्मक । जिन क्रियाओं के कर्म हों उन्हें सकर्मक और जिन के कर्म न हों उन्हें अकर्मक कहते हैं । जिन क्रियाओं में व्यापार और फल अलग अलग रहें उन्हें सकर्मक और जिन में व्यापार और फल एक ही में रहें उन्हें अकर्मक कहते हैं । जैसे सकर्मक, 'बालः चन्द्रं पश्यति' इस वाक्य में 'पश्यति' क्रिया का व्यापार 'बाल' में है और 'पश्यति', क्रिया का फल 'चन्द्र' में । अकर्मक—'शिशुः सोते' । इस वाक्य में सोने का काम और सोना दोनों 'शिशु' में है ।

निम्नलिखित दो पद्यों में सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ दी गई हैं:—

दर्शन, पठन, भोजन, गमन भव बन्धनों से मुक्त हो,
चिन्तन विमोचन के अनन्तर ब्रह्म पूजन युक्त हो,
इस भाँति ज्ञान-प्राप्ति से जिनके सकर्मक योग है,
'हंस' में वे लीन जग आदर्श योगी लोग हैं ॥
संसार में होना तथा मरना उसी का धन्य है,
जागते, सोते तथा जीते जिसे प्रिय अन्य है,
स्थिति, वृद्धि, क्षय, भय, दीप्ति, लज्जा है किसे रुचिकर नहीं,
पर 'हंस' की क्रीड़ा अकर्मक वक दिखा सकता कहीं ?

कर्मवाच्य की कुछ क्रियाएँ

ग्रह—(लेना)—गृह्यते
प्रच्छ—(पूछना)—पृच्छयते
वच्—(कहना)—उच्यते
पु—(भरना)—पूर्यते
पठ्—(पढ़ना)—पठ्यते
श्रु—(सुनना)—श्रूयते
कथ्—(कहना)—कथ्यते
पा—(पीना)—पीयते
नी—(लेजाना)—नीयते

भाववाच्य की कुछ क्रियाएँ

अस्—(होना)—भूयते
जागृ—(उठना)—जागर्थ्यते
शी—(सोना)—शय्यते
वस्—(रहना)—उष्यते
मस्ज्—(डूबना)—मज्ज्यते
स्मृ—(याद करना)—स्मर्यते
हस्—(हँसना)—हस्यते
स्था—(ठहरना)—स्थीयते
भी—(डरना)—भीयते

संस्कृत बनाओ (भाव तथा कर्मवाच्य)

१—तू उससे देखा गया । २—ईश्वर से संसार बनाया गया । ३—तुझ से क्यों हँसा जाता है ? ४—मेरी बात मान ली गई । ५—बिल्ली चूहे का पीछा करती है । ६—पण्डित सब से आदर पाते हैं । ७—काम किस से किया जाता है ? ८—मुझ से नहीं ठहरा जाता ९—तुम क्यों हँसते हो ? १०—वह क्या जानता है ? ११—ऐसा सुना जाता है । १२—लोभ से क्रोध पैदा होता है । १३—उससे पुस्तकें क्यों नहीं पढ़ी जाती ? १४—तुमने क्या सुना ? १५—साधु अपने से बड़ों की सेवा करते हैं ।

वाच्यपरिवर्तन

कर्तृवाच्य क्रिया यदि सकर्मक हो तो कर्मवाच्य में, और यदि अकर्मक हो तो भाववाच्य में बदल दी जाती है, तथा कर्म अथवा भाववाच्य की क्रियाएँ कर्तृवाच्य में

बदली जा सकती हैं। जैसे—स ग्रामं गच्छति (कर्तृ०) तेन ग्रामः गम्यते (कर्म०)। स रोदिति (कर्तृ०) तेन रुद्यते (भाव०) इसी प्रकार कर्म या भाववाच्य के वाच्य उलटने से कर्तृवाच्य में हो जायेंगे।

वाच्यपरिवर्तन करते समय क्रिया, उसका कर्ता, कर्ता के विशेषण कर्म और कर्म के विशेषण, इन सभी में परिवर्तन होता है। जैसे—मुशीलः बालः स्वकीयं पाठं पठति (कर्तृ०) मुशीलेन बालेन स्वकीयः पाठः पठ्यते (कर्म०)—(मुशील बालक अपना पाठ पढ़ता है।) इस वाक्य में कर्ता, कर्म, उनके विशेषण और क्रिया में परिवर्तन हुआ है।

वाच्यपरिवर्तन करते समय इन बातों पर ध्यान देना चाहिए—

१—पहले कर्ता, कर्म और क्रिया ढूँढो।

२—फिर कर्ता और कर्म के विशेषणों को देखो।

३—फिर देखो कि क्रिया किस वाच्य की है।

४—क्रिया देख कर वाच्य स्थिर करो।

यथा—कृत्य प्रत्ययान्त (तच्च, अनीय, यत्) की क्रिया कर्तृवाच्य में कभी नहीं होती।

नोट—जहाँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में क्रिया का एक ही प्रकार का रूप होता है—जैसे, 'स ग्रामं गतः' (कर्तृ०) 'तेन ग्रामः गतः' (कर्म०) इत्यादि, वहाँ कर्ता और कर्म को देख कर वाच्य स्थिर करना चाहिए।

५—यदि कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा हो तो समझो कि क्रिया कर्मवाच्य या भाववाच्य की है और यदि कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया देखो तो समझो कि क्रिया कर्तृवाच्य की है।

६—क्रिया जिस काल या जिस लकार की होगी वाच्यान्तर में भी वह उसी काल और उसी लकार की होगी। जैसे—स उक्तवान् (कर्तृ०) तेन उक्तम् (कर्म०)। स गच्छति (कर्तृ०) तेन गम्यते (कर्म०)।

७—कर्ता या कर्म का जो विशेषण होगा उसमें वही विभक्ति और वचन होंगे जो कर्ता और कर्म में होंगे। जैसे—शयानाः भुञ्जते मूर्खाः (कर्तृ०) शयानैः मूर्खैः भुज्यते (मूर्ख सोये सोये खाते हैं) इत्यादि।

वाच्यान्तररचना

कर्मवाच्य बनाने में प्रथमान्त कर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देना पड़ता है। और कर्तृवाच्य में जो क्रिया कर्ता के अनुसार होती है वह कर्म के अनुसार बना देना पड़ती है। जैसे, अहं सूर्यं पश्यामि (कर्तृ०) मया सूर्यः दृश्यते (कर्म०)—मैं सूर्य को देखता हूँ।

कभी कभी कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य क्त प्रत्यय द्वारा भी बनाते हैं। जैसे—स चन्द्रम् अपश्यत् (कर्तृ०) तेन चन्द्रः दृष्टः (कर्म०)।

कृत प्रत्ययान्त क्रियापद विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। उनसे कर्ता और कर्म में जो लिङ्ग, वचन और कारक होते हैं वे ही उन में भी होते हैं। जैसे—सा उवाचती, तेन ग्रन्थः पठितः, मया ग्रामो गन्तव्यः, इत्यादि।

कर्तृवाच्य क्तवतु प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य में क्त प्रत्ययान्त कर देते हैं। जैसे—रामो वनं गतवान् (कर्तृ०) रामेण वनं गतम् (कर्म०)—राम वन गये। अहं प्रस्थितवान् (कर्तृ०) मया प्रस्थितम् (कर्म०) मैंने यात्रा की।

कर्तृवाच्य क्त प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य, या भाववाच्य बनाने में केवल विभक्ति बदलनी पड़ती है अर्थात् कर्ता में प्रथमा के स्थान पर तृतीया और कर्म में द्वितीया के स्थान पर कर्म के अनुसार प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार होती है। जैसे—अहं काशीं गतः (कर्तृ०)। मया काशी गता (कर्म०)

द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

गौणे कर्मणि दुह्यादेः—द्विकर्मक धातु से कर्मवाच्य बनाने में दुह, याच्, पच्, दण्ड, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ्, मुष्, धातुओं के गौण कर्म (Indirect object) में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया उसी कर्म के अनुसार होती है; मुख्य कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे—गोपः गां दुग्धं दोग्धि (कर्तृ०) गोपेन गौः दुग्धं दुह्यते (कर्म०)। छात्रः गुरुं धर्मं पृच्छति (कर्तृ०) छात्रेण गुरुः धर्मं पृच्छ्यते (कर्म०)।

प्रधाने नोहकृष्वहाम्—द्विकर्मक नी, ह, कृष् और वह धातुओं के मुख्य कर्म (Direct object) में प्रथमा विभक्ति होती है, गौण कर्म ज्यों का त्यों रहता है। जैसे, भृत्यः भारान् गृहं वक्ष्यति। (कर्तृ०) भृत्येन भाराः गृहं वक्ष्यन्ते (कर्म०)—नौकर बोझ घर ले जायगा।

णिजन्त द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया—बुद्ध्यर्थक, भक्षार्थक और शब्दकर्मक धातुओं के दोनों कर्मों में से जिस में इच्छा हो उस में प्रथमा विभक्ति होती है, जैसे—गुरुः छात्रं धर्मं बोधयति (कर्तृ०) गुरुणा छात्रः धर्मं (छात्रं धर्मः) बोध्यते (कर्म०)।

अन्य णिजन्त द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य बनाने में प्रयोज्य कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—श्यामः रामं ग्रामं गमयति (कर्तृ०) श्यामेन रामः ग्रामं गम्यते (कर्म०) (श्याम राम को गांव में भेज रहा है)।

कर्तृवाच्य में जिन धातुओं के प्रयोज्य कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। कर्मवाच्य में उनके अणिजन्त अवस्था के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—सुग्रीवः रामेण वालिनं धातयति—सुग्रीव वालि को राम से मरवाता है (कर्तृ०) सुग्रीवेण रामेण वाली धातयते (कर्म०) सुग्रीव द्वारा राम से वालि मरवाया जाता है।

नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद और वाच्य परिवर्तन करो—

- (१) सिंहो वनं गाहते। २ जलानि सा तीरनिखातयूषा वहत्ययोध्यामनु-राजधानीम्। (३) भास्वन्ति रत्नानि महोपधीश्च। (४) भ्राता ब्रूते स्म विह्वलः। (५) शोकं चित्तमवारुहत्। (६) तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामासु वशी वसिष्ठः। (७) किं तथा क्रियते चेन्वा या न सूते न दुग्धदा। (८) न पाव-

पोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्छति मारुतस्य । (१) भूषणाद्युपचारेण प्रभुर्भवति न प्रभुः । (१०) स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजः । (११) प्रजां संरक्षति नृपः सा वद्व्यति पार्थिवम् । (१२) पूर्वस्मादन्यवद्भ्राति भावाद्वाशरथि स्तुवन् । (१३) स साधुः सद्भिर्हच्यते (१४) सा सीतामङ्कमारोप्य भर्तृप्रणिहितेक्षणाम् । मामेति व्याहरत्येव तस्मिन्पातालमभ्यगात् (१५) वयांसि किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ।

उपसर्गों के योग से धातुओं के अनेक अर्थ

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥

उपसर्ग से धातु का अर्थ बलपूर्वक दूसरे अर्थ की ओर खींचा जाता है । विचार कीजिए कि 'हृ' धातु का अर्थ 'चुराना' है कन्तु उपसर्गों के योग से उसके कितने अर्थ हो गये हैं । प्र-हृ प्रहार=मारना, आ-हृ-आहार=भोजन करना, सम्-हृ-संहार=नाश करना, वि-हृ-विहार=घूमना, परि-हृ-परिहार=छोड़ देना इत्यादि ।

उपसर्गों के लगाने से धातुओं के अर्थों में एक और विलक्षणता यह आ जाती है कि कहीं कहीं अकर्मक धातु भी सकर्मक हो जाते हैं । यथा—अकर्मक 'भू' का अर्थ (होना) है मगर 'अनु' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ 'अनुभव करना' सकर्मक हो जाता है । जैसे—पापी दुःखमनुभवति (पापी दुःख भोगता है ।)

अय् (जाना) परा+अय् (भागना) चौरः पलायते ।

अर्थ (मांगना) प्र+अर्थ (प्रार्थना करना) स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते (भ० गीतायाम्)

अभि+अर्थ (इच्छा करना) यदि सा तापसकन्यका अभ्यर्थनीया (शकुन्तलायाम्)

अभि+अर्थ (प्रार्थना करना) माम् अनभ्यर्थनीयमभ्यर्थयते (मालविकाग्निमित्रे)

अस (फेंकना)—अभि+अस् (रटना) छात्रः पाठमभ्यस्यति ।

निर्+अस् (हटाना) सः धूर्त निरस्यति ।

आप् (पाना)—

वि+आप् (फँलना) रजः आकाशं व्याप्नोति ।

सम्+आप् (पूरा होना) यावत्तेषां समाप्येरन् यज्ञाः पर्याप्तदक्षिणाः (रघुवंशे) ।

आस् (बैठना)—

अधि+आस् (अधिकार करना) स राजसिंहासनमध्यास्ते ।

उप+आस् (पूजा करना) भक्ताः शिवमुपास्ते ।

अनु+आस् (सेवा करना) सखीभ्यामन्वास्यते (शकुन्तलायाम्) ।

इ (जाना)—

अव । इ (जानना) अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः (रघुवंशे) ।

प्रति+इ (विश्वास करना) सः मयि न प्रवेति ।

उत्+इ (उगना) उदेति सविता ताम्रः ताम्र एवास्तमेति च ।

उप+इ (प्राप्त करना) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः (पञ्चतन्त्रे) ।

अभि+इ (सामने आना) सः स्वामिनमभ्येति ।

अनु+इ (पीछे आना) सः शब्दार्थ इव तमन्वेति ।

अप+इ (दूर होना) सूर्योदये अन्धकारः अपेति ।

ईक्ष (देखना) —
अ + ईक्ष (प्रतीक्षा करना) किमपेक्ष्य फलं पयोधरान्धवनतः
प्रार्थयते मृगाधिपः (किराताजुनीये) ।

उप + ईक्ष (खाल न करना) अलसः कर्तव्यमुपेक्षते ।
परि + ईक्ष (इम्तिहान लेना) अग्नौ परीक्ष्यते स्वर्णं काव्यं सदसि तद्विदाम् ।
प्रति + ईक्ष (इन्तजार करना) क्षणं प्रतीक्षस्व ।
निः + ईक्ष (देखना) सः साग्रहं त्वां निरैक्षत ।
अव + ईक्ष (रक्षा करना) इलाध्यां दुहितरमवेक्षस्वजानकीम् (उत्तररामच०) ।
अव + ईक्ष (आदर करना) त्रिदिवोत्सुकयाप्यवेक्ष्य माम् (रघुवंशे) ।
अव + ईक्ष (जांच करना) स कदाचिदवेक्षितप्रजः (रघुवंशे)

कृ (करना) —

अनु + कृ (नकल करना) काकः कोकिलमनुकरोति ।
अधि + कृ (अधिकार करना) अचिरात् शत्रुः राजधानीमधिकरोति ।
अप + कृ (बुराई करना) अथवा सैनिकाः केचिदपकुर्युर्धिष्ठिरम् (महाभारते) ।
तिरस् + कृ (अनादर करना) किमर्थं तिरस्करोषि माम् ?
नमस् + कृ (नमस्कार करना) देवदेवं नमस्कुह ।
प्रति + कृ (इलाज करना) आगतं तु भयं वीक्ष्य प्रतिकुर्यात् यथोचितम् ।
उप + कृ (उपकार करना) किते भूयः प्रियमुपकरोतु पाकशासनः ?
(विक्रमोर्वशीये) ।

परि + कृ (सजाना) रथो हेमपरिष्कृतः (महाभारते) ।
अलम् + कृ (शोभा बढ़ाना) रामचन्द्रः वनमिदं पुनरलङ्कुरिष्यति ?
आविः + कृ (ढूँढ़ना) वायुयानमिदं केन धीमताऽऽविष्कृतं भुवि !
निर + आ + कृ (हटाना) सः निराकरोति दोषान् ।

चिप्रत्ययान्त कृ —

१—अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।
२—वीरवरः देव्यं स्वपुत्रं उपहारीकरोति ।
३—सफलीकृतं त्वया मम जीवनं शुभागमनेन ।
४—स्थिरीकरोमि ते वासस्थानम् ।
५—कदा रामचन्द्रः वनमिदं सनाथीकरिष्यति ?
६—विरहकथा आकुलीकरोति मे हृदयम् ।

गम् (जाना) —

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् (हितोपदेशे) ।

अनु + गम् (पीछा करना) वत्स मामनुगच्छ ।

अव + गम् (जानना) नावगच्छामि ते मतिम् ।

अधि + गम् (प्राप्त करना) अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि निशापरिगृहीतः

(मालविकाग्निमित्रे) ।

आ + गम् (जाना) स्नानार्थं सः नदीमागच्छत् ।

प्रति+गम् (लौटना) कदा सा प्रतिगमिष्यति ?

प्रति+आ+गम् (लौटना) माणवकः कुटीरं प्रत्यागच्छति ।

निर्+गम् (बाहर जाना) सः गृहान्निर्गतः ।

सम्+गम् (मिलना) मित्रेण संगच्छते साधुः ।

उत्+गम् (उड़ना) पक्षी आकाशमुदगच्छत् ।

ग्रह् (लेना) --

अनु+ग्रह् (कृपा करना) गुरो मामनुगृहाण ।

नि+ग्रह् (बँड देना) शीघ्रमयं दुष्टवणिकं निगृह्यताम् ।

वि+ग्रह् (लड़ाई करना) विगृह्य चक्रे नमुचिद्रिषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं
दिवः (शिशुपालवधे) ।

चर् (चलना) --

आ+चर् (व्यवहार करना) प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत् ।

अनु+चर् (पीछा करना) सत्यमागमनुचरेत् ।

उत्+चर् (कहना) सः धर्मोपदेशं नोच्चरते ।

परि+चर् (सेवा करना) भृत्याः स्वामिनं परिचरन्ति ।

सम्+चर् (घूमना) वने व्याधाः सञ्चरन्ति ।

चि (चुनना) --

उप+चि (बढ़ाना) अधोऽधः पश्यतः कस्यमहिमा नोपचीयते (हितोपदेशे) ।

अप+चि (घटना) राजहंस एव सैव शुभ्रताचीयते न च नचापचीयते
(काव्यप्रकाशे) ।

सम्+चि (इकट्ठा करना) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति
(शकुन्तलायाम्) ।

ज्ञा (जानना) --

अनु+ज्ञा (आज्ञा देना) तत् अनुजानीहि मां गमनाय । (उत्तररामचरिते)

प्रति+ज्ञा (प्रतिज्ञा करना) कथं वृथा प्रतिजानीषे ।

अव+ज्ञा (अनादर करना) दरिद्रं नावजानीयात् ।

अप+ज्ञा (झुठाना) शतमपजानीते ।

तृ (तैरना) --

अव+तृ (उतरना) अवतरति आकाशात् वायुयानम् ।

उत्+तृ (तैरना) सः अनायासं गङ्गामुदतरत् ।

वि+तृ (देना) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्याम् (उत्तररामच०) ।

सम्+तृ (तैरना) स हि घटिकाप्रायं नद्यां सत्तरेत् ।

दिश् (देना) --

आ+दिश् (आज्ञा देना) गुरुः शिष्यान् आदिशति ।

उप+दिश् (उपदेश देना) उपदिशतु मां धर्मशास्त्रम् ।

सम्+दिश् (संदेश देना) किं संदिशतु स्वामी ।

निर्+दिश् (बताना) यथाभिलषितं स्थानं निर्दिशेत् ।

धा (धारण करना) —

अभि+धा (कहना) सत्यमभिधेहि ।

अपि+धा (ढकना) कर्णो अपिदधाति ।

अव+धा (ध्यान देना) गोपालः पठने नावधत्ते ।

सम्+धा (मेल करना) शत्रुणा न हि संदध्यात् ।

वि+धा (करना) सहसा विदधीत न क्रियाम् (किराते) ।

परि+धा (पहनना) उत्सवे नरः नवं वस्त्रं परिदधाति ।

नि+धा (विश्वास से रखना) निदधे विजयाशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे (रघुवंशे)

नि+धा (नीचे बठाना) सलिलैर्निहितं रजःक्षितौ (घटकारिकाव्ये) ।

नि+धा (रखना) कृपणः भूमौ मुद्राः निदधाति ।

नी (ले जाना) —

अनु+नी (मनाना) अनुनय मित्रं कुपितम् ।

आभि+नी (अभिनय करना) गोपालः सीतायाः पाठमभिनयेत् ।

आ+नी (लाना) आनय जलं पूजार्थम् ।

उप+नी (लाना) उपनयति मुनिकुमारकेभ्यः फलानि (कादम्बर्याम्) ।

उप+नी (यज्ञोपवीत देना) गुरुः शिष्यमुपनयत् ।

परि+नी (व्याह करना) नलः दमयन्तीं परिणयति स्म ।

प्र+नी (बनाना) वाल्मीकिः रामायणं प्रणिनाय ।

अप+नी (हटाना) अपनंष्यामि ते दपम् ।

निर्+नी (निर्णय करना) कलहस्य मूलं निर्णयति ।

पत् (गिरना) —

आ+पत् (आपड़ना) अहो, कण्टमापतितम् ।

उत्+पत् (उड़ना) प्रभाते पक्षिणः उत्पतन्ति ।

प्र+नि+पत् (प्रणाम करना) प्रणिपतामि गुरुम् ।

नि+पत् (गिरना) फलानि भूमौ निपतन्ति ।

पद् (जाना) —

प्र+पद् (भजना) ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् (गीतायाम्) ।

उत्+पद् (उत्पन्न होना) दुग्धात् नवनीतम् उत्पद्यते ।

वि+पद् (विपद् में पड़ना) सः विद्यते (विपन्नो भवति) ।

उप+पद् (योग्य होना) नैतत् त्वय्युपपद्यते (गीतायाम्) ।

भू (होना) —

अनु+भू (अनुभव करना) तन्तः सुखम् अनुभवन्ति ।

आविर्+भू (पैदा होना) आविर्भूते शशिनि तमो विलीयते ।

अभि+भू (तिरस्कार करना) कस्त्वामभिभवितुमिच्छति ब्रह्मात् ।

परा+भू (हराना) बलवान् दुर्बलान् पराभवति ।

प्रादुर्+भू (पैदा होना) प्रादुर्भवति भगवान् विपदि ।

परि+भू (तिरस्कार करना) रावणः बिभीषणं परिबभूव ।

प्र+भू (समर्थ होना) प्रभवति शुक्तिविम्बोद्ग्राहे मणिः ।

कुसुमान्यपि गात्रसंगमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।

न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः ॥ (कुमारसंभवे) ।

सम्+भू (पैदा होना) सम्भवामि युगे युगे (गीतायाम्) ।

अनु+भू (मालूम करना) अनुभवामि एतत् ।

चिप्रत्ययान्त भू के प्रयोग :—

१—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ।

२—दृढीभवति शरीरं व्यायामेन ।

३—भवतां शुभागमनेन पवित्रीभूतं मे गृहम् ।

४—तपसा भगवान् प्रत्यक्षीभवति ।

विश् (प्रवेश करना) —

अभि+नि+विश् (शामिल होना) छात्रः पाठम् अभिनिविशते ।

उप+विश् (बैठना) आसने उपविशतु भवान् ।

प्र+विश् (प्रवेश करना) संन्यासी वनान्तरं प्राविशत् ।

मन् (सोचना) —

अव+मन् (अनादर करना) नावमन्येत निर्धनम् ।

अनु+मन् (आज्ञा या सलाह देना) राजन्यान्स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने (रघुवंशे) ।

सम्+मन् (आदर करना) कच्चिदग्निमिवानाद्यं काले समन्यसेऽतिथिम् ।
(भट्टिकाव्ये) ।

मन्त्र् (सलाह करना) —

अभि+मन्त्र् (संस्कार करना) जलम् अभिमन्त्र्य ददौ ।

आ+मन्त्र् (विदा होना) तात, लताभिगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रये ।
(शकुन्तलायाम्) ।

आ+मन्त्र् (बुलाना) आमन्त्रयध्वं राष्ट्रेषु ब्राह्मणान् (महाभारते) ।

नि+मन्त्र् (न्योता देना) ब्राह्मणान् निमन्त्रयस्व ।

रम् (क्रीड़ा करना) —

वि+रम् (हटाना) विरम विरम पापात् ।

उप+रम् (मरना) सः शोकेन उपरतः ।

उप+रम् (लगना) यत्रोपरमते चित्तम् (भगवद्गीतायाम्) ।

वद् (कहना) —

अप+वद् (बुरे वचन कहना) दुर्जितः सज्जनमपवदति ।

वि+वद् (झगड़ा करना) कृषकाः क्षेत्रे विवदन्ते ।

अनु+वद् (अनुवाद करना) सः विद्वान् वेदमनुवदति ।

प्रति+वद् (जवाब देना) तान् प्रत्यवादीदथ राघवोऽपि ।

लप् (बोलना) —

अप+लप् (छिपाना) दुष्टः सत्यमपलपति ।

आ+लप् (घातचीत करना) साधुः साधूना महु आल्लपत् ।

प्र+लप् (वक्ताव करना) उन्मत्ताः सदा प्रलपन्ति ।

वि+लप् (रोना) विललाप स बाष्पगद्गदम् सहजामप्यपहाय धीरताम् (रघुवंशे) ।

सम्+लप् (बातचीत करना) संलापितानां मधुरैः वचोभिः ।

वह् (ले जाना) —

उद्+वह् (व्याह करना) रामः सीताम् उदवहत् ।

अति+वह् (बिताना) किं वा मयापि न दिनान्यतिहितानि (मालती माधवे) ।

आ+वह् (पैदा करना) महदपि राज्यं सुखं नावहति ।

आ+वह्=(पहनना) मण्डनमावहन्तीम् (चौरपञ्चासिकायाम्) ।

आ+वह्=(धारण करना) मा रोदीर्घ्यमा वह (मार्कण्डेयपुराणे) ।

निः+वह् (चलाना) सः कार्यमेतत् निर्वहति ।

प्र+वह् (वहना) अनेन मार्गेण गङ्गा प्रावहत् ।

वृत् (होना) —

अनु+वृत् (अनुसरण करना) साधवः साधुमनुवर्तन्ते ।

नि+वृत् (रुकना) प्रसमीक्ष्य निवर्तते सर्वमांसस्य भक्षणात् (मनुस्मृतौ) ।

नि+वृत् (लौटना) न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम् (शकुन्तलायाम्) ।

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम (गीतायाम्) ।

प्रति+आ+वृत् (लौटना) अचिरं सः प्रत्यावर्तिष्यते ।

प्र+वृत् (लगाना) प्रवर्तनां प्रकृतिहिताय पार्थिवः ।

अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे (कुमारसंभवे) ।

प्र+वृत् (शुरू होना) ततः प्रवृत्ते युद्धम् ।

परि+वृत् (घूमना) चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।

वस् (रहना) —

अधि+वस् (रहना) रामः अयोध्यामध्यवसत् ।

उप+वस् (उपवास करना) स एकादश्यामुपवसति ।

” ” (समीप रहना) ब्राह्मणः ग्रामम् उपवसति ।

नि+वस् (रहना) सः कुत्र निवसति ?

प्र+वस् (परदेश में रहना) प्रवसति मे पतिः ।

सद् (जाना) —

अव+सद् (थकना) श्रमेण अवसीदति मे चेतः ।

उत्+सद् (नाश होना) गृहं तस्य उत्सीदति स्म ।

आ+सद् (पाना) पान्थः कूपमेकमाससाद ।

प्र+सद् प्रसन्नहोना) प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम् (सप्तशत्याम्) ।

वि+सद् (दुःखी होना) यूय मा विपीदत ।

नि+सद् (बैठना) इतो निपीद ।

सृ (जाना) —

अप+सृ (हटाना) इतो दूरमपसर ।

निः+सृ (निकलना) क्षतात् रक्तं निःसरति ।
 अनु+सृ (पीछा करना) वनं यावदनुसरति ।
 प्र+सृ (फैलना) प्रसार यशस्तव ।
 अभि+सृ (पति के पास जाना) सा अभिसरति ।

स्था (ठहरना) —

अधि+स्था (रहना) साधवः साधुतामधितिष्ठन्ति ।
 अनु+स्था (करना) मनसापि पापकार्यं नानुतिष्ठेत् ।
 अव+स्था (ठहरना) भगवन् ! नावतिष्ठतामत्र ।
 उत्+स्था (उठना) उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते ।
 प्र+स्था (रवाना होना) प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय ।
 उप+स्था (पूजा करना) द्विजां देवमुपतिष्ठते ।

ह (चुराना ले, जाना) —

अप+ह (चुराना) चौरः धनमपहरति ।
 अप्+ह = (दूर करना) अपह्रिये खलु परिश्रमजनितया निद्रया (उत्तररामचरिते)
 आ+ह (इकट्ठा करना) निर्धनो धनमाहरति ।
 उत्+ह (उद्धार करना) मां तावदुद्धर शुचो दयिताप्रवृत्त्या (विक्रमोर्वशीये) ।
 उदा+ह = (उदाहरण देना) त्वां कामिनां मदनदूतिमुदाहरन्ति (विक्रमो०) ।
 अभ्यव+ह = (खाना) सवतन् पिव धानाः खादेत्यभ्यवहरति (पा० अष्टाध्यायी) ।
 परि+ह (उपेक्षा करना) स्त्रीसन्निकर्षं परिहर्तुमिच्छन्नन्तर्दधे भूतपतिः स भूतः
 (कुमारसम्भवे) ।

उप+ह (भेट देना) देवेभ्यः बलिमुपहरेत् ।
 प्र+ह (मारना) कृष्णः कंसं शिरसि प्राहरत् ।
 वि+ह (विहार करना) विहरति हरिरिह सरसवसन्ते ।
 सम्+ह = (पीछे हटाना) न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेदमनि
 (हितोपदेशे) ।

सं+ह (रोकना) क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मस्तां चरन्ति ।
 तावत्स बह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार । (कुमारसंभवे)

कम् (चलना) —

अति+कम् (गुजरना) यथा यथा यौवनमतिचक्राम (कादम्बर्याम्) ।
 (उल्लंघन करना) कथमतिक्रान्तमगस्त्याश्रमपदम् (महावीरचरिते) ।
 अप+कम् (दूर हटाना) नगरादपक्रान्तः (मुद्राराक्षसे) ।
 आ+कम् (आक्रमण करना) पौरस्त्यानेवमाक्रमस्तांस्तान्जनपदाञ्जयी (रघुवंशे)
 निस्+कम् (निकलना) इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।
 उप+कम् (आरंभ करना) राजस्तस्याज्ञया देवी वसिष्ठमुपचक्रमे (भट्टिकाव्ये)
 परा+कम् (पराक्रम दिखाना) स पराक्रमते ।
 परि+कम् (परिक्रमा करना) स परिक्रामति ।
 वि+कम् (विक्रम दिखाना) विष्णुस्त्रेधा विचक्रमे ।

सम्+कम् (संकमण करना) कालो ह्ययं संक्रमितुं द्वितीयं सर्वोपकारक्षममाश्रमं
ते (रघुवंशे) ।

द्रु (पिघलना) —

द्रवति च हिमरश्नावुदगते चन्द्रकान्तः (मालतीमाधवे) ।

उप+द्रु (आक्रमण करना) प्राग्ज्योतिषमुपाद्रवत् (महाभारते) ।

वि+द्रु (भागना) जलसंघात इवासि विद्रुतः (कुमार सम्भवे) ।

क्षिप् (फेंकना) —

किं कूर्मस्य भारव्यथान वपुषि क्षमां न क्षिपत्येपयत् (मुद्राराक्षसे) ।

अव+क्षिप् (निन्दा करना) मदलेखामवक्षिण (कादम्बर्याम्) ।

आ+क्षिप् (अपमान करना) अरेरे राधागर्भभारभूतं किमेवमाक्षिपसि
(वैष्णोसंहारे) ।

उन्+क्षिप् (ऊपर फेंकना) वलिमाकाश उत्क्षिपेत् (मनुस्मृतौ) ।

सम्+क्षिप् (संक्षिप्त करना) संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घयामा त्रियामा
(मेघदूते) ।

बन्ध् (बांधना, पहनना) —

न हि चूडामणिः पादे प्रभवार्माति बन्ध्यते (पञ्चतन्त्रे) ।

उत्+बन्ध् (बांधना) पादपे आत्मानमुद्बध्य व्यापादयामि (रत्नावल्याम्) ।

निर्+बन्ध् (जोरदार मांग करना) निर्वन्धपृष्ठः सजगाद सर्वम् (रघुवंशे) ।

सम्+बन्ध् (मेल होना) सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः (रघुवंशे) ।

रुधिर (ढांकना) —

अनु+रुध् (आज्ञा मानना) अनुरुध्यस्व भगवतो वसिष्ठस्यादेशम् (उत्तररामचरिते)

वि+रुध् (विरोध करना) विपरीतार्थधीर्यस्मात् विरुद्धमतिकृन्मतम् ।

संस्कृत वनाग्रो :—

१—बालक स्कूल से घर आया । २—माली बाग से फल लाया । ३—धर्म-
शास्त्रों को देख कर पण्डितों ने प्रायश्चित्त का निर्णय किया । ४—दुष्यन्त ने
देखा कि शकुन्तला अपनी सखियों के साथ विहार कर रही है । ५—श्रीरामचन्द्र
जी ने पापी रावण का संहार किया । ६—आचार्य शिष्य को यज्ञोपवीत देता है ।
७—लुटेरे (दस्यु) मार्ग में मुसाफिरों से धन छीनते हैं । ८—मोहन ने भरी सभा
में रुक्मिणी का अभिनय किया । ९—सज्जन अपकार करने पर भी उपकार करते
हैं । १०—उत्सव के अवसर पर स्त्रियाँ वस्त्र तथा गहनों से अपने शरीर को सजाती
हैं । ११—दूसरे की निन्दा न करो । १२—चौदह वर्ष के बाद राम अयोध्या को
वापस लौटे । १३—गंगा प्रयाग में यमुना से मिली है । १४—छात्रों को आपस में
झगड़ा न करना चाहिए । १५—राजकर्मचारी अपने अपने मातहतों (अधीन) को
जांच पड़ताल करते हैं ।

कृदन्तप्रकरण

कर्तृवाचक और भाववाचक कृदन्त

‘करने वाला’, ‘जाने वाला’ आदि कर्तृवाचक कृदन्त शब्दों के लिए ‘वच्’ (व्)

आदि निम्नलिखित प्रत्ययों से बने हुए शब्द प्रयोग में लाने चाहिए। इन कर्तृवाचक कृदन्तों के कर्म का इनके साथ समास भी हो जाता है। जैसे—

(असमस्त) शास्त्राणां ज्ञातारः क्व निवसन्ति (शास्त्रों के जाननेवाले कहाँ रहते हैं ?)

अथवा—

(समस्त) शास्त्रज्ञातारः क्व निवसन्ति (शास्त्रों के जानने वाले कहाँ रहते हैं ?)

(फुल और तृच्) कर्तृवाच्य में धातुओं से तृच् (तृ) और फुल् (अर्क) ये दो प्रत्यय होते हैं। जैसे—कृ=कर्ता, युध्=योद्धा, भू=भविता, नी=नेता, विद्=वेत्ता, सेव्=सेविता, गम्=गन्ता इत्यादि। फुल् (अक) पच्=पाचकः, पाठकः, नायकः, गायकः, पालकः, दायकः, सेवकः, जनकः, रोषकः, इत्यादि। फुल् (अक) और 'तृच्' (तृ) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं।

(अण्) कर्मवाचक पद के उत्तरवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अण् होता है। जैसे—कुम्भं करोति इति कुम्भकारः, सूत्रधारः, तन्तुवायः, वारिवाहः, भाष्यकारः इत्यादि।

(क) कर्तृवाच्य में धातुओं से 'क' प्रत्यय भी होता है। जैसे—फलं प्रददाति इति=फलप्रदः, अभिजानाति इति=अभिज्ञः। 'अ' प्रत्यय—पच्=पचः, दिव्=देवः, चल्=चलः, धृ=धरः।

सुबन्त पद के परवर्ती भिन्न भिन्न धातुओं के उत्तर भिन्न भिन्न अर्थों में भी 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—शोकहरः, पूजार्हः, धनदः, सर्वज्ञः, मधुपः, प्रकृतिस्थः, पङ्कजम्, पारगः, पतङ्गः, शोकापहः, प्रभाकरः हितकरः, अग्रसरः, रात्रिचरः, मित्रघ्नः इत्यादि।

(णिन्) कर्तृवाच्य में णिन् (इन्) प्रत्यय भी होता है। जैसे—प्रवसति इति=प्रवासी, विद्रोही, अधिकारी, अभिलाषी, स्थायी द्वेषी, सञ्चारी इत्यादि। सुबन्तपद के उत्तरवर्ती धातुओं से भिन्न-भिन्न अर्थों में भी 'इन्' प्रत्यय होता है। जैसे—उष्णं भोक्तुं शीलं यस्य सः=उष्णभोजी (गरम खाने की इच्छा वाला) मनोहारी, अग्र-यायी, मिथ्यावादी, मित्रघाती इत्यादि।

(स्त्रियां क्तिन्) भाववाच्य में धातुओं से क्ति प्रत्यय होता है। 'क्ति' का केवल 'ति' शेष रहता है। जैसे—मतिः, बुद्धिः, नीतिः, दृष्टिः, शान्तिः, गतिः, प्रीतिः इत्यादि। क्ति प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

(अकर्तरि च कारके धञ्) भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाच्य में धञ् प्रत्यय होता है। जैसे—पाकः, भागः, त्यागः, नाशः, इत्यादि। धञ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग ही होते हैं।

भाववाच्य में धातुओं से 'अ' प्रत्यय भी होता है। जैसे—भवः, कोपः, तोषः, हर्षः, जपः, भदः, इत्यादि।

भावकरणाधिकरणेषु ल्युट्—भाववाच्य में धातुओं से ल्युट् (अन्) होता है। जैसे—गमनम्, शयनम्, भोजनम् इत्यादि। करण और अधिकरण अर्थ में भी 'अन्' होता है। जैसे—करणम् (जिस से किया जाय) शयनम् (जिस पर सोया जाय)। अन प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

सु, दुर् और ईषत् परवर्ती धातुओं से कर्म और भाववाच्य में खल् प्रत्यय होता है। जैसे—सुकरः, दुष्करः, ईषत्करः, सुवहः, दुर्लभः, दुःशासनः इत्यादि।

सन्नन्त, आशंसु और भिक्षु धातु से 'उ' होता है। जैसे—लिप्सुः, पिपासुः, आशंसुः, भिक्षुः इत्यादि।

उपमानवाचक तद्, यद्, एतद्, भवत्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस्, किम्, अन्य और समान शब्दों के आगे दृश् धातु से विवप् और पङ् प्रत्यय होते हैं। इनके निम्न-लिखित रूप होते हैं। जैसे—तादृक्, तादृशः—(उनके ऐसा) त्वादृशः—(तुम्हारे ऐसा) सदृक्; सदृशः—(तुल्य दिखाई पड़ने वाला) तादृक्, तादृशः। यादृक्, यादृशः। भवादृक्, भवादृशः। युष्मादृक्, युष्मादृशः। अस्मादृक्, अस्मादृशः। कीदृक्, कीदृशः। ईदृक्, ईदृशः। एतादृक्, एतादृशः।

संस्कृत वनाग्नौ :—

१—पढ़ना आसान नहीं। २—गोपाल बड़ा तैराक (तैरने वाला) है। ३—यह बड़ी आनन्द देने वाली गाथा है। ४—मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। ५—काम करने वाला मनुष्य हं, पर कर्म का फल देने वाला ईश्वर है। ६—यह उपदेश शोक को नाश करने वाला है। ७—झूठ बोलने वाले का कोई विश्वास नहीं करता। ८—इस गांव के कुम्हार बड़े चतुर हैं। ९—नाश होने वाला शरीर का क्या विश्वास! १०—क्या इस घर में सभी खाने वाले हैं, कमाने वाला कोई नहीं? ११—यह पकाने वाला बड़ा चतुर है। १२—क्या इस शहर में कोई बड़ा गवैया नहीं? १३—वेद का पढ़ना पापों का नाश करने वाला है। १४—इस शहर के प्रायः सभी बनिये बड़े लुटेरे हैं। १५—कल मैंने मन को हरने वाला एक राग सुना।

वर्तमान-कालिक कृदन्त

पढ़ता हुआ (पढ़ती हुई) लिखता हुआ (लिखती हुई) आदि वर्तमान-कालिक कृदन्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद शतृ और शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अत्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्-मान्) प्रत्यय आते हैं और शतृ, शानच् प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं। जैसे—

१—कदापि नरः खादन् न पठेत् (मनुष्य खाता हुआ कभी न पढ़े)।

२—सः हसन् अवदत्।

३—रुदन्ती वाला प्राह।

४—लज्जमाना वधूः आगच्छति।

५—जलं पिबन् न हसेत्।

६—शयानं शिशुं मा प्रबोधय।

७—घिलपन्तीं सीतां दृष्ट्वा लक्ष्मणः विषण्णः सञ्जातः।

परस्मैपदी धातुओं से शतृप्रत्ययान्त शब्द

धातु	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भू (होना)	भवत्	भवन्	भवन्ती
अद् (खाना)	अदत्	अदन्	अदती
दे (देना)	ददत्	ददन्	ददती
दीव्य् (खेलना)	दीव्यत्	दीव्यन्	दीव्यन्ती
शृ (सुनना)	शृण्वत्	शृण्वन्	शृण्वती
तुद् (कष्ट देना)	तुदत्	तुदन्	तुदन्ती, तुदती
छिन्द् (काटना)	छिन्दत्	छिन्दन्	छिन्दन्ती
कु (करना)	कुर्वत्	कुर्वन्	कुर्वती
क्री (खरीदना)	क्रीणत्	क्रीणन्	क्रीणती
चिन्त् (सोचना)	चिन्तयत्	चिन्तयन्	चिन्तयती
अस् (होना)	सत्	सन्	सती
आप् (प्राप्त करना)	आप्नुवत्	आप्नुवन्	आप्नुवती
इप् (इच्छा करना)	इच्छत्	इच्छन्	इच्छती, इच्छन्ती
अनु + इप् (ढूँढना)	अन्विष्यत्	अन्विष्यन्	अन्विष्यन्ती
कथ् (कहना)	कथयत्	कथयन्	कथयन्ती
कुप् (नाराज होना)	कुप्यत्	कुप्यन्	कुप्यन्ती
कूज् (कूजना)	कूजत्	कूजन्	कूजन्ती
कृत् (काटना)	कृन्तत्	कृन्तन्	कृन्तन्ती-ती
क्रुध् (नाराज होना)	क्रुध्यत्	क्रुध्यन्	क्रुध्यन्ती
क्रीड् (खेलना)	क्रीडत्	क्रीडन्	क्रीडन्ती
गण् (गिनना)	गणयत्	गणयन्	गणयन्ती
गर्ज् (गर्जना)	गर्जत्	गर्जन्	गर्जन्ती
गुञ्ज् (गूँजना)	गुञ्जत्	गुञ्जन्	गुञ्जन्ती
गं (गाना)	गायत्	गायन्	गायन्ती

१ शतृ (अत्) प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग के रूप बनाने के लिए 'अन्ति' प्रत्ययान्त पद के आगे 'ई' जोड़ देते हैं। जैसे—'गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति' इत्यादि रूपों में गच्छन्ति + ई = गच्छन्ती। इसी प्रकार—कूजन्ति + ई = कूजन्ती, पूजयन्ति + ई = पूजयन्ती, जिगमिषन्ति + ई = जिगमिषन्ती, हसन्ति + ई = हसन्ती, वदन्ति + ई = वदन्ती।

अदादिगणीय (अदती, रुदती आदि) स्वादिगणीय (चिन्वती, शृण्वती आदि) कृधादिगणीय (क्रीणती, प्रीणती आदि), तनादिगणीय (कुर्वती, तन्वती आदि) और जुहोत्यादिगणीय (ददती, जहती आदि) धातुओं में 'ई' जोड़कर 'न' हटाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं।

अदादिगणीय (भान्ती, भाती आदि) और तुदादिगणीय (तुदती, तुदन्ती आदि) में विकल्प से न का लोप होता है। ये स्त्रीलिङ्ग शब्द नदी की भाँति होते हैं।

धातु

नपुंसकलिङ्ग

पुल्लिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

ग्रन्थ्	(गृथेना)	ग्रथन्त्	ग्रथन्त्	ग्रथन्ती
घ्रा	(संधेना)	जिघ्रत्	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती
चल्	(चलना)	चलत्	चलन्	चलन्ती
चर्	(चलना)	चरत्	चरन्	चरन्ती
जागृ	(उठना)	जाग्रत्	जाग्रन्	जाग्रती
जीव्	(जीना)	जीवत्	जीवन्	जीवन्ती
तुष्	(खुश होना)	तुष्यत्	तुष्यन्	तुष्यन्ती
तृ	(तैरना)	तरत्	तरन्	तरन्ती
दश्	(दशना)	दशत्	दशन्	दशन्ती
दह्	(जलाना)	दहत्	दहन्	दहन्ती
दृश्	(देखना)	पश्यत्	पश्यन्	पश्यन्ती
निन्द्	(निंदा करना)	निन्दत्	निन्दन्	निन्दन्ती
नृत्	(नाचना)	नृत्यत्	नृत्यन्	नृत्यन्ती
पठ्	(पढ़ना)	पठत्	पठन्	पठन्ती
पत्	(गिरना)	पतत्	पतन्	पतन्ती
पा	(पीना)	पिबत्	पिबन्	पिबन्ती
पूज	(पूजा करना)	पूजयत्	पूजयन्	पूजयन्ती
प्रच्छ्	(पूछना)	पृच्छत्	पृच्छन्	पृच्छती-न्ती
बन्ध्	(बांधना)	बध्न्त्	बध्न्न्	बध्न्ती
मथ्	(मथन करना)	मन्थत्	मन्थन्	मन्थती
मस्ज्	(डूबना)	मज्जत्	मज्जन्	मज्जती-न्ती
रच्	(बनाना)	रचयत्	रचयन्	रचयन्ती
आ+रह्	(चढ़ना)	आरोहत्	आरोहन्	आरोहन्ती
लप्	(कहना)	लपत्	लपन्	लपन्ती
लिख्	(लिखना)	लिखत्	लिखन्	लिखती-न्ती
वस्	(रहना)	वसत्	वसन्	वसन्ती
शक्	(सकना)	शक्नुवत्	शक्नुवन्	शक्नुवती
शास्	(सिखाना)	शासत्	शासन्	शासती
सृज्	(पैदा करना)	सृजत्	सृजन्	सृजती-न्ती
स्था	(ठहरना)	तिष्ठत्	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती
स्पृश्	(छूना)	स्पृशत्	स्पृशन्	स्पृशती-न्ती
स्वप्	(सोना)	स्वपत्	स्वपन्	स्वपती
स्मर्	(याद करना)	स्मरत्	स्मरन्	स्मरन्ती
हृ	(ले जाना)	हरत्	हरन्	हरन्ती
आ+ह्वे	(बुलाना)	आह्वयत्	आह्वयन्	आह्वयन्ती

आत्मनेपदी धातुओं से शानच् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
ईक्ष् (देखना)	ईक्षमाणम्	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा
कम्प् (कांपना)	कम्पमानम्	कम्पमानः	कम्पमाना
जन् (पैदा होना)	जायमानम्	जायमानः	जायमाना
त्वर (जल्दी करना)	त्वरमाणम्	त्वरमाणः	त्वरमाणा
त्रै (रक्षा करना)	त्रायमाणम्	त्रायमाणः	त्रायमाणा
दय् (दया करना)	दयमानम्	दयमानः	दयमाना
दीप् (चमकना)	दीप्यमानम्	दीप्यमानः	दीप्यमाना
वन्द (प्रशंसा करना)	वन्दमानम्	वन्दमानः	वन्दमाना
वृत् (होना)	वर्तमानम्	वर्तमानः	वर्तमाना
वृध् (बढ़ना)	वर्धमानम्	वर्धमानः	वर्धमाना
व्यथ (दुखित होना)	व्यथमानम्	व्यथमानः	व्यथमाना
मन् (मानना)	मन्यमानम्	मन्यमानः	मन्यमाना
यत् (यत्न करना)	यतमानम्	यतमानः	यतमाना
युध् (लड़ाई करना)	युध्यमानम्	युध्यमानः	युध्यमाना
लभ् (पाना)	लभमानम्	लभमानः	लभमाना
सेव् (सेवाकरना)	सेवमानम्	सेवमानः	सेवमाना
सह् (सहना)	सहमानम्	सहमानः	सहमाना

उभयपदी धातुओं से शतृ और शानच्

	(करना)	कुर्वत्	(कुर्वाणः)	कुर्वन्	कुर्वती
छिद्	(काटना)	छिन्दत्	(छिन्दानः)	छिन्दन्	छिन्दती
ज्ञा	(जानना)	जानत्	(जानानः)	जानन्	जानती
धाव्	(दौड़ना)	धावत्	(धावमानः)	धावन्	धावन्ती
नी	(ले जाना)	नयत्	(नयमानः)	नयन्	नयन्ती
पच्	(पकाना)	पचत्	(पचमानः)	पचन्	पचन्ती
ब्रू	(कहना)	ब्रुवत्	(ब्रूवाणः)	ब्रुवन्	ब्रुवती
लिह्	(चाटना)	लिहत्	(लिहानः)	लिहन्	लिहती
यह्	(ले जाना)	वहत्	(वहमानः)	वहन्	वहन्ती
डुह्	(दोहना)	डुहत्	(डुहानः)	डुहन्	डुहती
तन्	(फैलना)	तन्वत्	(तन्वानः)	तन्वन्	तन्वती
धा	(रखना)	दधत्	(दधानः)	दधन्	दधती

संस्कृत बनाओ :—

- १—वह दौड़ता आता है । २—यह कहते कहते सीता का गला भर गया ।
- ३—वह बहादुरी से लड़ता हुआ क्षेत्र में गिर पड़ा । ४—दयालु राजा ने एक कांपती हुई रमणी को देखा । ५—कुत्ते को भौंकते सुनकर चोर भाग गये । ६—

परस्पर झगड़ते हुए वे राजा के पास गये। ७—वह लोगों को देखता हुआ लिख रहा है। ८—जल पीते हुए बँल को गोविन्द ने लाठी से पीटा। ९—राम भागता हुआ मेरी ओर आ रहा है। १०—वह बालक रात में सोता हुआ भयभीत हो गया। ११—वह हंसता हुआ काम करता है। १२—वे बालक पढ़ते हुए कहीं जा रहे हैं। १३—सत्य जानता हुआ भी असत्य बोलता है। १४—चोर अन्धरे को देखता हुआ चोरी करता है। १५—पापी धर्म को देखते हुए भी पाप करते हैं। १६—रावण ने रामचन्द्रजी को ईश्वर जानते हुए भी सीता नहीं दी। १७—नरेन्द्र हंसता हुआ आचार्य से क्या पूछता है? १८—गांव को जाते हुए मैंने एक साँप को मार डाला।

भूतकालिककृदन्त

गया (गई) पढ़ा (पढ़ी) आदि भूतकालिक कृदन्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययान्त कृदन्त शब्दों से किया जाता है। जैसे—
(क्त) तेन जलं पीतम् (उसने जल पिया)

(क्तवतु) सः जलं पीतवान् (उसने जल पिया)

भक्त (त) प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में होता है। इसमें कर्ता तृतीया विभक्ति में रक्खा जाता है और कर्म प्रथमा विभक्ति में। 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं। जैसे—मया फलं भुक्तम्, मया द्वे फले भुक्ते इत्यादि। अकर्मक धातुओं से 'क्त' प्रत्यय कर्ता और भाव दोनों में होता है। जब 'क्त' प्रत्यय कर्ता में होता है तो क्तान्त शब्द कर्ता के अनुसार प्रथमा विभक्ति में होता है। जैसे—गोपालः गतः और क्त प्रत्यय जब भाव में होता है तो कर्ता में तृतीया विभक्ति और 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में आता है। जैसे—गोपालेन गतम्, इसी प्रकार—रामः हसितः, रामेण हसितम्।

क्तवतु (तवत्) प्रत्यय सकर्मक और अकर्मक सब धातुओं से 'कर्ता' में ही होता है। इसमें कर्ता और उसके अनुसार क्तवत्त्वन्त शब्द 'प्रथमा' विभक्ति में और कर्म द्वितीया विभक्ति में आता है। जैसे—

सः जलं पीतवान् (उसने पानी पीया)।

रामलक्ष्मणौ राक्षसान् हतवन्तौ (राम और लक्ष्मण ने राक्षस मारे)।

गोपालः गतवान्। (गोपाल गया)।

श्यामः हसितवान् (श्याम हँसा) इत्यादि।

इच्छार्थक, पूजार्थक, वृद्धार्थक धातुओं से वर्तमान अर्थ में भी 'क्त' प्रत्यय होता है, उसमें कर्ता षष्ठी विभक्ति में और कर्म प्रथमा में होता है। जैसे—प्रजानां रामः इष्टः, मतः, पूजितः (प्रजा के लोग राम को चाहते हैं, मानते हैं, पूजते हैं)।

द्विकर्मक धातुओं से क्त प्रत्यय गौण कर्म में, नी, हु, कृष् और वह से मुख्य कर्म में और निजन्त धातुओं से क्त प्रत्यय प्रयोज्य कर्ता के अनुसार होता है। यथा—

शिष्यैः गुरुः शब्दार्थः पूष्टः (शिष्यों ने गुरु से शब्द का अर्थ पूछा)। देवेन छात्रः ग्रामं नातः (देव बकरे को गांव ले गया)। अध्यापकेन छात्रः शास्त्रम् बोधितः—(गुरु ने छात्र को शास्त्र समझाया) अकर्मक या सकर्मक धातुओं से कर्म

को विवक्षा न रहने पर 'क्त' प्रत्यय भाव में होता है। यथा—मया शयितम् (मैं सोया) त्वया कथितम्—(तूने कहा) ।

धातु	क्त	क्तवतु	धातु	क्त	क्तवतु
अचि	अचितः	अचितवान्	त्यज्	त्यक्तः	त्यक्तवान्
अधि + इ	अधीतः	अधीतवान्	व्रै	व्रान्तः	व्रान्तवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्	दंश्	दष्टः	दष्टवान्
जन्	जातः	जातवान्	दा	दत्तः	दत्तवान्
इप्	इष्टः	इष्टवान्	धा	हितः	हितवान्
कथ्	कथितः	कथितवान्	ह्वे	हृतः	हृतवान्
कृ	कृतः	कृतवान्	लिह्	लीढः	लीढवान्
कृ	कीर्णः	कीर्णवान्	शम्	शान्तः	शान्तवान्
क्षि	क्षीणः	क्षीणवान्	निन्द्	निन्दितः	निन्दितवान्
क्षिप्	क्षिप्तः	क्षिप्तवान्	नी	नीतः	नीतवान्
क्रम्	क्रान्तः	क्रान्तवान्	पत्	पतितः	पतितवान्
की	कीतः	कीतवान्	पी	पीतः	पीतवान्
खन्	खातः	खातवान्	शास्	शिष्टः	शिष्टवान्
गम्	गतः	गतवान्	चेष्ट्	चेष्टितः	चेष्टितवान्
गृ	गीर्णः	गीर्णवान्	श्रु	श्रुतः	श्रुतवान्
गृ	गीतः	गीतवान्	सह्	सोढः	सोढवान्
ग्रह्	गृहीतः	गृहीतवान्	स्पृश्	स्पृष्टः	स्पृष्टवान्
घ्रा	घ्राणः, घ्रातः	घ्रातवान्	सृज्	सृष्टः	सृष्टवान्
चि	चितः	चितवान्	स्मि	स्मितः	स्मितवान्
पूज्	पूजितः	पूजितवान्	स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्	मन्	मतः	मतवान्
बन्ध्	बद्धः	बद्धवान्	रम्	रब्धः	रब्धवान्
बुध्	बुद्धः	बुद्धवान्	वस्	उषितः	उषितवान्
वद्	उदितः	उदितवान्	लभ्	लब्धः	लब्धवान्
वन्	उक्तः	उक्तवान्	शी	शयितः	शयितवान्
विद्	विदितः	विदितवान्	हन्	हतः	हतवान्
भिद्	भिन्नः	भिन्नवान्	हा	हीनः	हीनवान्
जि	जितः	जितवान्	हृ	हृतः	हृतवान्
जू	जीर्णः	जीर्णवान्	वह्	ऊढः	ऊढवान्
तृ	तीर्णः	तीर्णवान्	कम्	कान्तः	कान्तवान्

संस्कृत वनाश्रो—

१—अर्जुन ने जयद्रथ को मारा । २—राजा ने अपराधियों को दण्ड दिया ।
३—राम ने रावण को बाण से मारा । ४—गधा जङ्गल में छोड़ा गया । ५—बिल्ली
ने चूहे को पकड़ा । ६—कल रात मैं जल्दी सो गया । ७—अङ्गद और बाली का

युद्ध हुआ। ८—मैंने जङ्गल में एक सिंह देखा। ९—आज प्यारे लाल वाटिका में नहीं आया। १०—उस साधु को देखकर बालक बहुत डरा। ११—बालक बिस्तरे पर सो गया। १२—बाल्मीकि जी ने बड़े मधुर छन्दों में रामायण लिखी। १३—सब ने दिल से दीवानचन्द की प्रशंसा की। १४—ईश्वर ने जगत् बनाया। १५—रामचन्द्र जी ने लंका का राज्य विभीषण को दिया। १६—आज उस बालक ने क्या ही सुन्दर गाया? १७—हवा ने पत्तों को कँपा दिया। १८—मृग पानी पीने के लिए तालाब में गया। १९—रात पड़ते ही चोर घर में घुसा और बहुत-सा धन चुरा ले गया। २०—छात्र ने गुरु की सेवा की। २१—सूर्य के उदय होने पर गोविन्द ने प्रयाग को प्रस्थान किया।

भविष्यत्कालिककृदन्त

‘करने वाला’ ‘लिखने वाला’ ‘सुनने वाला’ आदि शब्दों का संस्कृत में अनुवाद भविष्यत्कालवाचक ‘शत्, शानच्’ प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। भविष्यत्कालवाचक शत् शानच् प्रत्ययों के रूप क्रम से ‘स्यत् और ‘स्यमान’ होते हैं। जैसे—

१—हिमालयशिखरमारोक्ष्यन्तः साहसिनो वीराः पार्श्वत्यदेशीयाः।

(हिमालय की चोटी पर चढ़ने वाले साहसी वीर पार्श्वतीय देशीय हैं।)

२—मासिकवेतनं प्राप्स्यन् किङ्करः अतीव प्रसन्नः दृश्यते।

(मासिक तनखाह पाने वाला नौकर बहुत खुश दीखता है।)

३—विदेशं गमिष्यन् मुतः पितरौ प्रणमेत्।

(विदेश जाने वाला पुत्र अपने माता पिता को प्रणाम करे।)

४—पादकन्दुकेन क्रीडिष्यन्तः बालाः क्रीडाक्षेत्रं गच्छन्ति।

(फुटबॉल खेलने वाले लड़के खेल के मैदान में जा रहे हैं।)

५—परश्वः योत्स्यमानाः सैनिकाः सम्बन्धिनः आपृच्छन्ति।

(परसों लड़ने वाले सिपाही अपने सम्बन्धियों से विदा ले रहे हैं।)

परस्मैपदी (स्यत्)

आत्मनेपदी (स्यमान)

भू—भविष्यत्

जन्—जनिष्यमाण

गम्—गमिष्यत्

सह—सहिष्यमाण

स्था—स्थास्यत्

व्यथ—व्यथयिष्यमाण

दर्शि—दर्शिष्यत्

प्र+स्था—प्रस्थास्यमान

मृ—मरिष्यत्

युष्—योत्स्यमान

हन्—हनिष्यत्

लभ—लप्स्यमान

उभयपदी (स्यत्, स्यमान)

कृ—करिष्यत्—करिष्यमाण

ग्रह्—ग्रहीष्यत्—ग्रहीष्यमाण

दा—दास्यत्—दास्यमान इत्यादि।

कर्मवाच्य में भविष्यत् अर्थ में धातुओं से ‘स्यमान’ प्रत्यय होता है और ‘स्यमान’ प्रत्ययान्त पद कर्म के विशेषण हो जाते हैं। जैसे—

रामेण सेविष्यमाणः विश्वामित्रः ।

सीतया सेविष्यमाणा अरुन्धती ।

अस्माभिः भोक्ष्यमाणानि फलानि ।

‘स्यन्’ और ‘स्यमान’ प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, इसलिए विशेष्य के अनुसार उनमें लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं। यथा—वक्ष्यमाणं वचनम्, वक्ष्यमाणेन वचनेन, वक्ष्यमाणे वचने । इत्यादि ।

पूर्वकालिककृदन्त

क्त्वा और ल्यप्

पढ़कर ‘लिखकर’ ‘खाकर’ ‘पीकर’ आदि पूर्वकालिक कृदन्तों का अनुवाद संस्कृत में ‘क्त्वा’ (त्वा) प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है । यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो ‘क्त्वा’ के स्थान में ‘ल्यप्’ (य) प्रत्यय होता है । यदि यह ‘य’ ह्रस्व स्वर के बाद आता है तो इसके पूर्व ‘त्’ लगकर इसका रूप ‘त्य’ हो जाता है (सं+चि+य=संचित्य) यथा—

१—वशम्पायनो मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरमब्रवीत् (कादम्बर्याम्)

(वशम्पायन ने क्षण भर सोचकर विनयपूर्वक कहा)

२—इत्युक्त्वा सोऽस्तीव चीत्कारं कृतवान् ।

(यह कहकर वह बड़े जोर से चिल्लाया)

३—यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम । (गीतायाम्)

(जहाँ से लौटते नहीं वही मेरा उत्तम स्थान है)

४—प्रातः आरभ्य सायं यावत् त्वमत्रैव तिष्ठ ।

(सुबह से लेकर शाम तक तुम यहीं ठहरो)

५—उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः ।

(निर्धनों की इच्छाएँ चित्त में उठकर लीन हो जाती हैं)

६—स वेदानधीत्य विद्वान् अभवत् ।

(वेदों को पढ़कर वह विद्वान् हो गया)

उपसर्ग और चि्व प्रत्यय युक्त धातु से पूर्वकालिक कृदन्त के ‘त्वा’ के स्थान पर ल्यप् (य) होता है पर नञ् समास में नहीं । ल्यप् प्रत्यय होने पर नीचे लिखे बदलाव होते हैं ।

अ, ई, ऊ=ल्यप्+य । इ, उ, ऋ+ल्यप्=त्य । ॠ=ल्यप्=इय ।

जैसे—आकारान्त—उत्—स्था+यप्=उत्थाय, आ—दा+यप्=आदाय; ईका-रान्त—आ—नी+यप्=आनीय, वि—क्री+यप्=विक्रीय । ऊकारान्त—अनु—भू+यप्=अनुभूय; प्र—सृ+यप्=प्रसृय । चि्वप्रत्ययान्त—मलिनी+भू+यप्=मलिनीभूय । स्थिरी+भू+यप्=स्थिरीभूय । इकारान्त—वि—जि+यप्=विजित्य; अधि—इ+यप्=अधीत्य । उकारान्त—प्र—स्तु+यप्=प्रस्तुत्य । प्रति—श्रु+यप्=प्रतिश्रुत्य । ऋकारान्त—अधि—कृ+यप्=अधिकृत्य; अनु—सृ+यप्=अनुसृत्य । ॠकारान्त—अव—तृ+यप्=अवतीर्य । वि—कृ+यप्=विकीर्य इत्यादि ।

वच्, वद्, वस्, वह्, स्वप्, धातुओं के 'व' के स्थान में 'उ' हो जाता है।

शी के स्थान में शय्, ह्वे=हृ, ग्रह=गृह्, प्रच्छ=पृच्छ। जैसे—प्र—वच्+यप्=प्रोच्य; अनु—वद्+यप्=अनूय; अवि—वस्+यप्=अव्युष्य; सम्—ग्रह+यप्=संगृह्य; आ—ह्वे+यप्=आहूय; सम्—शी+यप्=संशय्य। णिजन्त धातुओं के इकार का साधारणतया लोप हो जाता है और रच् प्रभृति धातुओं के इकार के स्थान में 'अय' हो जाता है। सम्+चिन्ति=सञ्चिन्त्य; —प्र+दशि=प्रदश्य; सम्+स्थापि=संस्थाप्य। वि+रचि=विरच्य। इत्यादि।

धातु	क्त्वा	ल्यप्	धातु	क्त्वा	ल्यप्
आप्	आप्त्वा	(प्राप्य। समाप्य।	पा	पीत्वा	निपीय।
इ	इत्वा	अधीत्य।	पूज्	पूजयित्वा	प्रपूज्य।
ईक्ष्	ईक्षित्वा	(निरीक्ष्य। परीक्ष्य।	प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य।
कृ	कृत्वा	अनुकृत्य।	वद्	उदित्वा	अनूद्य
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय।	वन्ध्	बद्ध्वा	उद्वध्य
क्षिप्	क्षिप्त्वा	निक्षिप्य।	बुध्	बुद्ध्वा	प्रबुद्ध्य
गण्	गणयित्वा	विगणय्य।	भञ्ज्	भङ्कत्वा	विभञ्ज्य
कृ	कोर्त्वा	विकीर्य	भिद्	भित्त्वा	विभिद्य
दह्	दग्ध्वा	संदह्य।	हा	हित्वा	विहाय
दा	दत्त्वा	आदाय।	ह्वे	हूत्वा	आहूय
दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य।	चिन्ति	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य
धा	हित्वा	विधाय	छिद्	छित्त्वा	विच्छिद्य
धृ	धृत्वा	विधृत्य	जि	जित्वा	निजित्य
नम्	नेत्वा	(प्रणत्य। प्रणम्य।	जा	जात्वा	(विज्ञाय प्रतिज्ञाय
नी	नीत्वा	आनीय।	तृ	तीर्त्वा	संतीर्य
पच्	पक्त्वा	विपच्य।	त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
गम्	गत्वा	(आगत्य। आगम्य।	दंश्	दष्ट्वा	संदश्य
गै	गीत्वा	निगाय।	रुह्	रुद्ध्वा	आरुह्य
ग्रन्थ्	ग्रन्थित्वा	संग्रथ्य	भुज्	भुक्त्वा	संभुज्य
ग्रह्	गृहीत्वा	(संगृह्य। अनुगृह्य।	भू	भूत्वा	संभूय
घ्रा	घ्रात्वा	समाघ्राय।	भ्रम्	भ्रमित्वा	विभ्रम्य
चि	चित्वा	संचित्य।	मन्	मत्वा	अवमत्य
चिन्त	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य।	मन्थ्	मथित्वा	संमथ्य
पत्	पतित्वा	निपत्य।	मुच्	मुक्त्वा	प्रमुच्य
			याच्	याचित्वा	प्रयच्य
			रुद्	रुदित्वा	प्ररुद्य।
			रुध्	रुद्ध्वा	अवरुध्य

धातु	वत्वा	ल्यप्	धातु	क्त्वा	ल्यप्
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य ।	सिच्	सिक्त्वा	निषिच्य
लिख्	लिखित्वा	विलिख्य ।	सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य
वस्	उषित्वा	अध्युष्य ।	स्था	स्थित्वा	उत्थाय
शम्	शमित्वा	निशम्य	स्पृश्	स्पृष्ट्वा	उपस्पृश्य
श्वस्	श्वसित्वा	विश्वस्य ।	स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
शास्	शासित्वा	अनुशिष्य	हन्	हत्वा	निहत्य
शी	शयित्वा	अधिशय्य	हस्	हसित्वा	विहस्य
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य ।	हृ	हृत्वा	संहृत्य
लप्	लप्त्वा	विलप्य ।	विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
सह्	सहित्वा	संसह्य			इत्यादि

संस्कृत वनाओ :--

१—व्याध तरकस से बाण को लेकर मृग को मारता है । २—हे बालक ! तू सिंह को देखकर क्यों रोता है । ३—माता पिता को प्रणाम कर पुत्र चला गया । ४—पहाड़ पर चढ़कर हम बहुत सुन्दर दृश्य देखते हैं । ५—मैं कपड़े पहन कर अभी आपके साथ चलूंगा । ६—व्याध चावलों को बिखेर कर कबूतरों को मारेगा । ७—मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि सत्य बोलूंगा । ८—महाराज दशरथ राम के लिए विलाप करके मर गये । ९—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पढ़ कर इन्स्पेक्टर हो गये । १०—उस ब्रह्मचारी ने अपने अध्ययन को समाप्त कर व्याह किया । ११—रावण को मार कर श्रीराम ने लङ्का का राज्य विभीषण को दिया । १२—चोर घर में घुस कर माल के साथ भाग गये । १३—दानी दरिद्रों को धन देकर अक्षय यश कमा कर स्वर्ग को जाते हैं । १४—श्रीराम लङ्का को जीत कर सीता के साथ घर लौटे । १५—वह धन इकट्ठा करके उसे दूसरों के लिए छोड़कर संन्यासी हुआ । १६—मैं पुस्तक लेकर आपके सामने पहुँगा ।

तुम् प्रत्यय

‘खाने को’ ‘खाने के लिए’ ‘पीने को’ ‘पीने के लिए’ आदि निमित्त अर्थ को प्रकट करने के लिए ‘तुमुन्’ (तुम्) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे—

१. स्वेदसलिलस्नाताऽपि पुनः स्नातुम् (स्नानाय) अवातरत् । (कादम्बर्याम्)

(पसीने से न्हाई हुई भी न्हाने के लिए उतरी ।)

२. इच्छार्थक क्रिया के निमित्त में—

पिताकपाणि पतिमाप्नुमिच्छति (शिवजी को वरना चाहती है) ।

३—समय शब्द के योग से—

समयः खलु स्नानभोजनं सेवितुम् (स्नान और भोजन का यह वक्त है)

४—शक्, ज्ञा, त्राम् आदि धातुओं के साथ—

न शक्नोति शिरोधरां धारयितुम् (कादम्बर्याम्)

(यह आदमी गरदन को नहीं उठा सकता) ।

१—समर्थद्योतक 'अलं' के योग में—

प्रासादास्त्वां तुल्यितुमलम् (सेवद्भूते)

(महल तुम्हारा मुकाबिला करने को समर्थ है) ।

२—काम और मनस् के साथ तुम् (म् का लोप) ।

द्रष्टुमनाः जननी मेऽत्र समागता ।

(मेरी माता भुझे देखने यहाँ आई) ।

पुनरपि वक्तुकाम इव आर्यो लक्ष्यते (शकुन्तलायाम्) ।

(आप और कुछ कहने की इच्छा रखते हैं) ।

धातु

तुम्

अर्च (पूजा करना) अर्चितुम्

अर्ज (कमाना) अर्जितुम्

अधि + इ (पढ़ना) अधीतुम्

ईक्ष् (देखना) ईक्षितुम् ।

कथ् (कहना) कथयितुम् ।

कृ (करना) कर्तुम् ।

क्री (खरीदना) क्रीतुम्

गै (गाना) गातुम्

त्यज् (छोड़ना) त्यक्तुम् ।

त्र (रक्षा करना) त्रितुम्

दंश (दगना) दंशितुम् ।

दृश् (देखना) द्रष्टुम् ।

धाव् (दौड़ना) धावितुम् ।

प्र-णम् (झरना) प्रणतुम् ।

नी (लेजाना) नेतुम् ।

नृत् (नाचना) नातितुम् ।

पक् (पकाना) पकितुम् ।

पा (पीना) पातुम् ।

प्रच्छ् (पूछना) प्रच्छतुम् ।

पूजि (पूजा करना) पूजयितुम्

वक् (कहना) वक्तुम्

भक्षि (खाना) भक्षयितुम् ।

भिद् (तोड़ना) भित्तुम्

भुज् (खाना) भोजितुम् ।

भ्रस्ज् (भूतना) भ्रष्टुम्

भू (होना) भवितुम् ।

मुच् (छोड़ना) मोक्तुम् ।

धातु

तुम्

मृ (मरना) मर्तुम् ।

यज् (यज्ञ करना) यष्टुम्

या (जाना) यातुम् ।

रम् (रमना) रंतुम्

ग्रह् (पकड़ना) ग्रहीतुम् ।

चि (चुनना) चेतुम् ।

चिन्ति (सोचना) चिन्तयितुम् ।

छिद् (काटना) छेतुम् ।

जि (जोतना) जेतुम् ।

ज्ञा (जानना) ज्ञातुम् ।

ज्ञापि (सूचित करना) ज्ञापयितुम्

तृ (तैरना) तरितुम्, तरीतुम्

रुद् (रोना) रोदितुम् ।

आ-रुह् (चढ़ना) आरोढुम् ।

रूपि (स्थिर करना) रूपयितुम्

लभ् (पाना) लब्धुम् ।

लिह् (चाटना) लेढुम्

वह (लेजाना) वोढुम् ।

वप् (वोना) वप्नुम्

शम् (शान्त करना) शमितुम्

शो (सीना) शयितुम् ।

शुच् (पछताना) शोचितुम् ।

श्रु (सुनना) श्रोतुम् ।

सह् (सहना) सहितुम्, सोढुम्

सृज् (पैदा करना) स्रष्टुम् ।

स्वप् (सोना) स्वप्नुम् ।

सेव् (सेवा करना) सेवितुम् ।

धातु तुम्
स्तु (स्तुतिकरना) स्तोतुम् ।
स्था (हरना) स्थातुम् ।
स्ना (स्नाना) स्नातुम् ।
स्पृश् (छना) स्पृष्टुम्

धातु तुम्
स्मृ (याद करना) स्मर्तुम् ।
हृन् (मारना) हन्तुम् ।
हृस् (हसना) हसितुम् ।
हृ (चुराना) हर्तुम् ।

संस्कृत वनाओ

१—माली फूल लेने के लिए बगीचे में जाता है । २—क्या तुम नई पुस्तक को पढ़ना चाहते हो ? ३—स्नान का यह समय है । ४—वह अपने शत्रुओं को मारना चाहता है । ५—मैं आज काशी जाना चाहता हूँ । ६—भरत श्रीरामजी को देखने लिए चित्रकूट गये थे । ७—वीर अभिमन्यु शत्रुओं से लड़ने को उद्यत हुआ । ८—कल तुम्हारा नौकर काम करने नहीं आया । ९—श्रीराम रावण को दण्ड देने के लिए लंका गये थे । १०—तुम गाने के लिए कहाँ जाओगे ? ११—इस भार को उठाने के लिए कौन आवेगा ? १२—आज मैं पुस्तकें खरीदने को जाऊंगा । १३—गोपाल ने हमें यहाँ पर भोजन खाने के लिए निमन्त्रण दिया । १४—उपदेश देने में सभी समर्थ हैं किन्तु उपदेश ग्रहण करने के लिये सभी विमुख हैं । १५—अध्यापक छात्रों को उपदेश देना चाहते हैं । १६—उसका तप समग्र लोकों को भस्म करने के लिए समर्थ था ।

कृत्यप्रत्यय

‘जाना चाहिए’ ‘खाना चाहिए’ ‘पढ़ना चाहिए’ आदि अर्थ को बोध करने के लिए ‘संस्कृत में ‘तव्य’ ‘अनीय’ और ‘य’ प्रत्यय प्रयोग में आते हैं । ये प्रत्यय धातुओं से कर्म और भाववाच्य में होते हैं और कृत्य प्रत्यय कहलाते हैं । यथा—

(भाव में) मया अवश्यमेव गन्तव्यम् (मुझे अवश्य जाना चाहिए)
(कर्म में) आश्रममगोष्ठ्यं न हन्तव्यो न हन्तव्यः (शकुन्तलायाम्)
(यह आश्रम का मृग है इसे नहीं मारना चाहिए नहीं मारना चाहिए)

धातुम् उचितम्—धातव्यम्—धानीयम्—देयम्
श्रोतुं योग्यम्—श्रोतव्यम्—श्रवणीयम्—श्रव्यम्
स्थातुमर्चितम्—स्थातव्यम्—स्थानीयम्—स्थेयम्

धातु	तव्य	अनीय	धातु	तव्य	अनीय
आप्	आप्तव्य	आपनीय	गम्	गन्तव्य	गमनीय
इ	एतव्य	अयनीय	ग्रह	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
अधि+इ	अध्येतव्य	अध्ययनीय	जि	जितव्य	जयनीय
ईक्ष्	ईक्षितव्य	ईक्षणीय	जि	चेतव्य	चयनीय
वन्द्	वन्दितव्य	वन्दनीय	जीव्	जीवितव्य	जीवनीय
कृ	कर्तव्य	करणीय	त्यज्	त्यक्तव्य	त्यजनीय
क्री	क्रीतव्य	क्रीणीय	दा	दातव्य	दानीय
क्षम्	क्षन्तव्य	क्षमणीय	पा	पातव्य	पानीय

धातु	तव्य	अनीय	धातु	तव्य	अनीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय	बह्	बोद्धव्य	बहनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय	शी	शयितव्य	शयनीय
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञाननीय	सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय	सिब्	सेवितव्य	सेवनीय
वन्द्	वन्दितव्य	वन्दनीय	स्था	स्थातव्य	स्थानीय
भिद्	भेत्तव्य	भेदनीय	स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय
भृ	भर्तव्य	भरणीय	हन्	हन्तव्य	हननीय
याच्	याचितव्य	याचनीय	श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय

संस्कृत वनाओ :-

१--प्रातःकाल उठकर ईश्वर की वन्दना करनी चाहिए । २--स्वच्छ भोजन और साफ पानी पीना चाहिए । ३--हमको अपना इतिहास और भूगोल जानना चाहिए । ४--सब को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए । ५--योग्य पुरुष को ही उपदेश देना चाहिए । ६--दुर्जन के साथ न ठहरना और न जाना ही चाहिए । ७--विद्याधियों को अपने अपने गुरुओं से सन्देह निवृत्त करना चाहिए । ८--सदा बही काम करना चाहिए जो कि करने के योग्य हो । ९--नीच पुरुष से भी उपदेश ग्रहण करना चाहिए । १०--मेरी बात पर आप को थोड़ा भी सन्देह नहीं करना चाहिए । ११--निर्वन मनुष्यों को देखकर नहीं हँसना चाहिए । १२--मृत्यु को देखकर हमें जरा भी नहीं डरना चाहिए । १३--हमें अब जल्दी अपना अध्ययन समाप्त करना चाहिए । १४--सदैव हमें दुष्टों का संग छोड़ना चाहिए । १५--सब को अपने माता पिता की सेवा करनी चाहिए ।

तद्धितप्रकरण

शब्दों के परे जिन प्रत्ययों के लगाने से फिर शब्द बनते हैं उनको तद्धित कहते हैं और जो शब्द बनते हैं वे तद्धितान्त शब्द कहलाते हैं । तद्धित प्रत्यय बहुत हैं । उनमें से हम उन प्रत्ययों को लिखते हैं जो अधिकतर प्रयुक्त होते हैं ।

षण्-पृथायाः अपत्यं पार्थः, शिव-शैवः, पुत्र-पौत्रः-पाण्डुः, पाण्डवः रन्-राघव इत्यादि ।

व्यण्-गर्गस्यापत्यं गार्ग्यः, चाणक्यः, दिति-दैत्यः, अदिति-आदित्यः, माधवः-माधव्यः ।

षायनन्-वदरस्यापत्यं वादरायणः, नर-नारायणः, दक्षः-दाक्षायणः, अश्वल-आश्वलायनः ।

विण्-रशरथस्यापत्यं दाशरथिः, सुमित्रा-सौमित्रिः, द्रोण-द्रोणिः, शूर-शौरिः ।

षेयण्-गंगायाः अपत्यं गाङ्गेयः, विनता-वैनतेयः, राधा राधेयः, भगिनी भागिनेयः ।

तदधीते तद्वेद--(उसको पढ़ता है या जानता है) तर्कमधीते वेत्ति वा तार्किकः, ऐतिहासिकः, पीराणिकः, नैयायिकः, वैदिकः, (षिण्) वैयाकरणः (षण्) ।
तेन प्रोक्तम्--(उसने कहा है) ऋषिणा प्रोक्तम्-आर्ष, मानवं (षण्) मानवीयं, पाणिनीयं, वाल्मीकीयं (षीयण्) ।

तत्र साधुः—(उस में अच्छा है) सभायां साधुः सभ्यः, ब्रह्मण्यः (व्यण्) सामाजिकः, संग्रह—सांग्राहिकः (विकण्) आतियेयः (षेयण्) ।

स्वार्थे—(अपने अर्थ में) बन्धुरेव बान्धवः, रक्ष एव राक्षसः, प्रज्ञ एव प्राज्ञः (षण्) कष्टाणा एव कारुण्यं, सैन्यं, सौख्यं, सामीप्यम् (व्यण्) ।

तस्य भावस्त्वतलो—भावार्थ में त्व और तल् प्रत्यय होते हैं । जैसे—प्रभोर्भावः प्रभुत्वं, प्रभुता; गुरुत्वं गुरुता; लघुत्वं, लघुता ।

अस्त्यर्थे मतुप्—अस्ति (है) अर्थ में शब्दों के परे मतुप् (मत् या वत्) प्रत्यय होता है—जैसे मतिरस्यास्तीति मतिमान्, श्रीमान्, बुद्धिमान्, अंशुमान् इत्यादि ।

धाच् संख्यायां विधार्थे—विधार्थ (प्रकार) बोध होने से शब्द के उत्तर में धाच् प्रत्यय होता है । जैसे—एका विधा एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षड्धा और षोढा ।

थाल् प्रकारे तृतीयायाः—प्रकार अर्थ में सर्वनाम के परे तृतीया विभक्ति में थाल् प्रत्यय होता है । जैसे—सर्वे प्रकारैः सर्वथा, येन प्रकारेण यथा तथा, उभयथा, अन्यथा इत्यादि ।

पञ्चमीसप्तम्योः तसिल् वा—पञ्चमी और सप्तमी विभक्ति के स्थान में तसिल् प्रत्यय होता है । यथा—गृहात् वा गृहे—गृहतः । तस्मात् वा तस्मिन्—ततः यतः, अतः, कुतः, इतः, अस्मत्तः, सर्वतः, अग्रतः, पूर्वतः इत्यादि ।

सप्तम्यास्त्रल् वा सर्वनाम्नः—युष्मदस्मद् शब्द भिन्न सर्वनाम और बहुशब्द की सप्तमी विभक्ति में त्रल् प्रत्यय होता है । जैसे—सर्वस्मिन् सर्वत्र, कुत्र, अत्र, यत्र, बहुत्र इत्यादि । अन्यत्र पञ्चमी विभक्ति होती है, जैसे—इदम्—इतः, (पंचमी) इह (सप्तमी)

सर्वैकान्याकियत्तदां काले दा—काल बोध होने से सर्व, एक, अन्य, किम्, यद् और तद् शब्द की सप्तमी विभक्ति में विकल्प से दा प्रत्यय होता है । जैसे—एकदा, सर्वदा (सदा) अन्यदा, किम् आदि के परे 'हि' भी होता है । कदा (कहि) यदा (यहि) तदा (तहि, तदानीम्) । इदम् से 'इदानीम्' होता है ।

किमः चिच्चनौ विभक्त्यन्तात्—अनिश्चय अर्थ बोध होने से विभक्तियुक्त किम् शब्द से परे चित् और चन प्रत्यय होते हैं । जैसे—कश्चित्, कञ्चित्, केनचित्, किञ्चित्, केचन, कस्मैचित्, कुत्रचित्, कुतश्चन, कदाचित् इत्यादि ।

भवे कालाव्ययेभ्यः तनष्—उत्पत्ति अर्थ बोध होने से कालवाचक अव्यय के परे तनष् (तन) प्रत्यय होता है । जैसे, अद्यभवम्—अद्यतनं, प्रातस्तनं, सायन्तनं, चिरन्तनं, पुरातनं, इदानींतनम् इत्यादि ।

नोट—उत्पन्न अर्थ में त्रल् आदि प्रत्ययान्त शब्दों के परे त्व प्रत्यय होता है । जैसे—कुत्र भवः कुत्रत्यः, तत्रत्यः, अत्रत्यः ।

एद्युस् पूर्वदिशहनि—दिन बोध होने से पूर्व आदि शब्दों के उत्तर एद्युस् प्रत्यय होता है । जैसे—पूर्वस्मिन्नहनि पूर्वद्युः, परेद्युः, अन्येद्युः, अपरेद्युः, उभयेद्युः ।

प्रमाणे मात्रच्—परिमाण अर्थ में शब्द के उत्तर में मात्रच् प्रत्यय होता है । जैसे—हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रं, तालमात्रं, जानुमात्रम् आदि ।

संस्कृत बनाओ :—

१—पृथा के पुत्र ने जयद्रथको मारने के लिए भीषण प्रतिज्ञा की। २—लव और कुश दशरथ जी के पुत्र के पुत्र थे। ३—दिति और अदिति के पुत्रों में घोर संग्राम हुआ। ४—जब दशरथ के पुत्र राम बन जाने लगे तो सुमित्रा के पुत्र बड़े व्याकुल हुए कि कहीं राम मुझे घर ही न छोड़ जायें। ५—समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। ६—तुम कहीं से आ रहे हो और कहीं जा रहे हो? ७—मैं इस कार्य को उस समय न कर सका पर इस समय कर दूंगा। ८—जहाँ भी देखिए सब जगह आनन्द छाया है। ९—उसने पाँच वर्ष तक पाणिनीय के व्याकरण को पढ़ा और अब स्वयं भी व्याकरण को जानने वाला है। १०—पुराने जमाने में लोग बड़े सत्यवादी होते थे।

स्त्रीप्रत्ययप्रकरण

पुल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं। जैसे—टाप् (आ) डीप् (ई)। इस प्रकरण के सभी कार्य स्त्रीलिङ्ग में समझने चाहिए।

१—अकारान्त शब्दों के आगे स्त्रीलिङ्ग में टाप् (आ) होता है। जैसे, अचल—अचला, कृपण—कृपणा, सरल—सरला, प्रथम—प्रथमा, अनुकूल—अनुकूला, पूर्व—पूर्वा, निपुण—निपुणा, अज—अजा (बकरी), कोकिला, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, ज्येष्ठा, पुत्रिका, वैश्या, क्षत्रिया, बूढ़ा इत्यादि।

२—अक भागान्त शब्दों के उत्तर 'आ' प्रत्यय होने से ककार के पूर्व अकार का इकार होता है। जैसे, पात्रक—पात्रिका, साधक—साधिका, गायक—गायिका, बोधक—बोधिका इत्यादि।

३—गौर प्रभृति शब्दों के परे स्त्रीलिङ्ग में ईप् प्रत्यय होता है।

ईप् प्रत्यय होने से पूर्व के आकार का लोप हो जाता है। जैसे, गौर-गौरी, किशोरी, कुमारी, तरुणी, सुन्दरी, पितामही, मातामही, नदी, नटी, स्थली, तटी, कदली, इत्यादि।

४—जाति बोध होने से जातिवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे, सिंह—सिंही, मृगी, व्याघ्री, भल्लुकी, हरिणी, मानुषी, ब्राह्मणी, गोपी, महिषी, शूकरी, गदंभी, शृगाली, बिडाली, घोटकी, हंसी, सारसी इत्यादि।

५—ऋकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् प्रत्यय होता है। जैसे, कर्तृ-कर्त्री, दात्री, जनयित्री, शिक्षयित्री इत्यादि।

नोट—स्वस आदि शब्दों के उत्तर 'ईप्' प्रत्यय नहीं होता है। जैसे—स्वसा, माता, दुहिता, ननान्दा, तिस्रः चतस्रः।

६—नकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में ईप् प्रत्यय होता है। जैसे, मालिन्—मालिनी, मानिनी, कामिनी, गुणिनी, मनोहारिणी, तपस्विनी, अधिकारिणी इत्यादि।

नोट—स्त्रीलिङ्ग में संख्यावाचक नान्त शब्दों और भन् भागान्त शब्दों के उत्तर ईप् प्रत्यय नहीं होता। जैसे—पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश, तथा सोमा, पामा, सुदामा, अतिहिमा इत्यादि।

७—जिन में से उकार और ऋकार का लोप होता है उन प्रत्ययों (मतुप्, वतुप्, इयुप्, तवतु, शतृ) से बने हुए शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में ईकार होता है। जैसे उकार लोप—भवत्—भवती, श्रीमत्—श्रीमती, बुद्धिमत्—बुद्धिमती, लज्जावत्—लज्जावती। ऋकार लोप—रुदत्—रुदती, जानत्—जानती, गृह्णत्—गृह्णती इत्यादि।

८—भ्वादि, दिवादि, और चुरादिगणीय धातुओं से तथा णिजन्त से शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं उन शब्दों से 'ई' प्रत्यय करने पर 'त्' के पूर्व न् लग जाता है। जैसे—गच्छत्—गच्छन्ती, वदत्—वदन्ती, दीव्यत्—दीव्यन्ती, नृत्यत्—नृत्यन्ती, चिन्तयत्—चिन्तयन्ती, भक्षयत्—भक्षयन्ती, दर्शयत्—दर्शयन्ती, कारयत्—कारयन्ती इत्यादि।

९—तुदादिगणीय धातुओं से और अदादिगणीय आकारान्त धातुओं से शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं उनके आगे स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय करने से विकल्प से त् के पूर्व न् लगता है। जैसे—इच्छत्—इच्छन्ती, इच्छती। पृच्छत्—पृच्छन्ती, पृच्छती। स्पृशत्—स्पृशन्ती, स्पृशती। यात्—यान्ती, याती। भात्—भान्ती, भाती।

१०—ट्कारेत् और ष्कारेत् प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के परे स्त्रीलिङ्ग में 'ई' होता है। जैसे—टित्—गान—गानी (ल्युट्) कर्मकर—कर्मकरी, अर्थकरी, निशाचरी, भयङ्करी (अट्) द्वयी, त्रयी, चतुष्टयी, दधामयी (तयट् आदि) षित्—वार्षिक—वार्षिकी, लौकिक—लौकिकी (षिकृष्) मानवी, मैथिली, पार्वती, पोथी (षण्) कीदृशी, एतादृशी, तादृशी (षड्) भागनेयी (षियण्) इत्यादि।

११—बहुव्रीहि समास में अवयवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से 'ई' होता है। जैसे—चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। सुकेशी, सुकेशा। कृशाङ्गी, कृशाङ्गा। विम्बोष्ठी, विम्बोष्ठा इत्यादि।

१२—जाया (स्त्री) अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों के आगे 'ई' होता है। जैसे—ब्राह्मणस्य जाया ब्राह्मणी, शूद्री, गोपी इत्यादि। पालक शब्द आगे होने से नहीं होता। जैसे—गोपालिका, पशुपालिका इत्यादि।

१३—जाया अर्थ में इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड और ब्राह्मन् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में आनीप् प्रत्यय आता है। जैसे—इन्द्रस्य जाया इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी और ब्राह्मणी। (ब्रह्मन्—शब्द के 'न्' का लोप हो जाता है)।

१४—कृत् के ह्रस्व इकारान्त शब्द से परे विकल्प से 'ई' प्रत्यय होता है जैसे—रात्रिः, रात्री। श्रेणिः, श्रेणी। राजिः, राजी। भूमिः, भूमी, इत्यादि किन् प्रत्ययान्त में नहीं होता। जैसे—मतिः, गतिः, स्थितिः इत्यादि।

१५—गुणवाचक उदन्त शब्द से परे विकल्प से 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—मृही, मृदुः। पट्वी, पटुः। साध्वी, साधुः। गुर्वी, गुरुः इत्यादि।

कुछ जानने योग्य स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गवय	गवयी		
हय	हयी	मातुल	मातुलानी
मत्स्य	मत्सी		मातुली

मनुष्य	मनुषी		
शूद्र (जाति)	शूद्रा	क्षत्रिय (जाति)	{ क्षत्रिया
„ (पत्नी)	शूद्री		{ क्षत्रियाणी
राजन्	राज्ञी	„ (पत्नी)	क्षत्रियी
		उपाध्याय (पत्नी)	उपाध्यायानी
युवन्	{ युवती		{ उपाध्यायी
„	{ युवतिः	„ (अध्यापिका)	{ उपाध्याया
„	{ यूनी	आचार्य (पाठिका)	{ आचार्या
श्वन्	{ शुनी	आचार्य (पत्नी)	{ आचार्यानी
		हिमम्	हिमानी
मधवन्	{ मधोनी	अरण्यम्	अरण्यानी
	{ मधवती	सखि	सखी
प्राच (पूर्व)	प्राची	कुरुः	कुरूः
प्रत्यच् (पच्छिम)	प्रतीची	श्वशुर	श्वशूः
अवाच् (दक्खिन)	अवाची	अर्य (वैश्य)	{ अर्याणी
तस्थवस्	तस्थुषी	„ (जाति)	{ अर्या
विद्वस्	विदुषी	अर्य (पत्नी)	{ अर्या
सूर्य	सूरी	पतिः	पत्नी
चातुर्यं	चातुरी		

संस्कृत वनाओः—

१—उस आदमी की स्त्री अच्छे लक्षणों वाली है। २—धनवाली बानिये की स्त्री गरीबों को कपड़े दे रही है। ३—उस नाचने वाली स्त्री ने अपने चातुर्य से जनता को प्रसन्न कर दिया। ४—उस बकरी को देख कर शेर उस पर झपटा। ५—उस पकाने वाली स्त्री ने अच्छा खाना बनाया। ६—आचार्य की स्त्री छात्राओं को पढ़ा रही है। ७—उपाध्याय की स्त्री माता के सदृश होती है। ८—क्षत्रिय की स्त्री वीर पति को ही चाहती है। ९—वह कुम्हार की स्त्री घड़े बेच रही है। १०—रामचन्द्र जी का विवाह चन्द्र के सदृश मुख वाली सीता के साथ हुआ। ११—यूग की आंख ऐसी आंख वाली स्त्री अपने पति के वियोग के कारण निरन्तर रो रही है। १२—निशाचर की स्त्री छोटे बच्चों को खा डालती है। १३—महाराज को स्त्री रथ में बैठ कर घूमने जा रही है। १४—ऐसी पतली कमरवाली स्त्री मैंने पहले कभी नहीं देखी। १५—कम उम्र वाली लड़की खेल रही है। १६—उस तप करने वाली पार्वती ने ऐसा वीर तप किया कि शिवजी की समाधि भंग हो गई। १७—उस बुद्धि वाली, लज्जाशील लड़की ने दो पारितोषिक पाये। १८—मेरी बहिन की लड़की की उम्र अब सात साल की है। १९—उस ग्वाले की स्त्री ने पाँच गायें दुर्हीं। २०—उस वन में पति के वियोग से विलाप करती हुई दमयन्ती ने एक अजगर देखा।

समासप्रकरण

कारक प्रकरण में विभक्तियों का प्रयोग बताया गया है, पर कभी कभी शब्दों की विभक्तियों को हटा करके शब्द छोटे कर दिये जाते हैं और एक या दो से अधिक विभक्ति रहित शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं। इस एक साथ जोड़ने को ही समास कहते हैं।

समास का अर्थ है 'संक्षेप' या 'घटाना' अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कुछ कमी भी हो जाय और अर्थ पूरा पूरा निकल जाय। जैसे—

नराणां पतिः नरपतिः

यहाँ नरपति का वही अर्थ जो 'नराणां पतिः' का, परन्तु दोनों शब्दों को साथ कर देने से 'नराणाम्' शब्द के विभक्तिसूचक प्रत्यय (आणाम्) का लोप हो गया और 'नरपतिः' शब्द 'नराणां पतिः' से छोटा हो गया।

जब समास वाले शब्द को तोड़ कर पहले का रूप दिया जाता है तो उसे विग्रह कहते हैं। विग्रह का अर्थ है 'टुकड़े टुकड़े करना', जैसे—'सभापतिः' का विग्रह है 'सभायाः पतिः'।

समास के लिए संस्कृत के वैयाकरणों ने नियम बना दिए हैं। ऐसा नहीं कि जिस शब्द को चाहा दूसरे शब्द के साथ जोड़ दिया।

समास के छः भेद हैं:—

- १—अव्ययीभाव
- २—तत्पुरुष
- ३—कर्मधारय (तत्पुरुष का भेद)
- ४—द्विगु (तत्पुरुष का भेद)
- ५—बहुव्रीहि
- ६—द्वन्द्व

अव्ययीभावसमास

अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा, दोनों मिलाकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास वाले शब्द के रूप नहीं चलते। अव्ययीभाव समास के अन्तिम शब्द का वही रूप होता है जो नपुंसक-लिङ्ग के एक वचन में। इस समास में प्रायः पूर्व पदार्थ प्रधान रहता है।

शक्तिमन्तत्क्रम्य = यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), कृष्णस्य समीपे = उपकृष्णम् (कृष्ण के पास), निर्विघ्नम् (विघ्न का अभाव), अनुरथम् (रथ के पीछे), सहारि (हरि की तरह), आसमुद्रम् (समुद्र तक), अधिगृहम् (घर में), परोक्षम् (आंख से परे), ग्रामाद् बहिः = बहिर्ग्रामम् (गांव से बाहर), उपशरदम् (शरद् ऋतु के पास), उपगिरम् (बाणी के पास) इत्यादि।

तत्पुरुषसमास

जिन दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं उनमें तत्पुरुष समास होता है।

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा:—'राजः पुरुषः'—'राजपुरुषः' इस में पुरुष पद प्रधान है।

द्वितीया—यथा, दुःखं-श्रितः=दुःखश्रितः। विस्मयम्-आपन्नः=विस्मयापन्नः। शिवम्-आश्रितः=शिवाश्रितः। शरणं-प्राप्तः=शरणप्राप्तः इत्यादि।

तृतीया—सुखेन-युक्तः=सुखयुक्तः। खड्गेन-हतः=खड्गहतः। अग्निना-दग्धः=अग्निदग्धः। मदेन-शून्यः=मदशून्यः। विद्याया-हीनः=विद्याहीनः इत्यादि।

चतुर्थी—धनाय-लोभः=धनलोभः। भूताय-बलिः=भूतबलिः। गवे-हितम्=गोहितम् इत्यादि।

पंचमी—चौरात्-भयम्=चौरभयम्। वृक्षात्-पतितः=वृक्षपतितः। रोगात्-मुक्तः=रोगमुक्तः इत्यादि।

षष्ठी—राज्ञः-पुरुषः=राजपुरुषः। रजतस्य-पत्रम्=रजतपत्रम्। देवस्य-पूजा=देवपूजा। सुखस्य-भोगः=सुखभोगः। देवस्य-मन्दिरम्=देवमन्दिरम् इत्यादि।

सप्तमी—युद्धे-निपुणः=युद्धनिपुणः। जले-मग्नः=जलमग्नः। आतपे-शुष्कः=आतपशुष्कः। कार्ये-दक्षः=कार्यदक्षः इत्यादि।

कर्मधारयसमास

विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं, किन्तु विशेषण पूर्व में रहता है। यथा—कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः (बुरा आदमी) कुत्सितः छात्रः=कुछात्रः (बुरा विद्यार्थी) दीर्घ-नयनम्=दीर्घनयनम्। नीलम्-उत्पलम्=नीलोत्पलम्। सुन्दरः-पुरुषः=सुन्दरपुरुषः। भूषितः-बालकः=भूषितबालकः। सुन्दरी-नारी=सुन्दरनारी। महान्-वायु देवः=महादेवः। महत्-फलम्=महाफलम्। दुःखमेव-समुद्रः=दुःखसमुद्रः। कमलमेव मुखम्=कमलमुखम्। घन इव श्यामः=घनश्यामः। नवनीतमिव कोमलम्=नवनीतकोमलम्। पुरुषः व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः, नरशार्दूलः अधरपल्लवः, नृसिंहः। चन्द्रसदृशं मुखम्=चन्द्रमुखम्। कमलचरणम् इत्यादि।

द्विगुसमास

यदि कर्मधारय समास के पूर्व कोई संख्यावाचक शब्द हो तो उसे द्विगुसमास कहते हैं। यथा—समाहार में—पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्। पञ्चपात्रम्। त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः=त्रिभुवनम्। गतानाम् अब्दानां समाहारः=शताब्दी। तद्धितार्थ में—पञ्चभिः गोभिः कीतः=पञ्चगुः। पञ्चमु कपालेषु संस्कृतः=पञ्चकपालः। उत्तरपद में—पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य=पञ्चहस्तप्रमाणः। द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः=द्विमासजातः इत्यादि।

बहुव्रीहिसमास

जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो अर्थात् जो-जो पद समस्त हों उनका स्वतन्त्र अर्थ बोध न होकर अन्य किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध करके वे शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण की तरह काम करते हों उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि के चार भेद हैं:—(१) समानाधिकरण (२) तुल्ययोग (३) व्यधिकरण और (४) व्यतिहार।

१-समानाधिकरण—जहाँ दोनों पदों में समान विभक्ति हो। यथा—निर्गतं भयं यस्मात् सः=निर्गतभयः (पुरुषः)। दत्तं धनं यस्मै सः=दत्तधनः (भिक्षुः)। आरूढः कपिः यं सः=आरूढकपिः (वृक्षः)। पराजिताः रिपवो येन सः=पराजितरिपुः (राजा)। महान् आशयो यस्य सः=महाशयः (सत्पुरुषः)। निर्मलाः आपो यस्मिन् तत्=निर्मलापं (सरः)।

२-तुल्ययोग—इसमें सह शब्द का तृतीयान्त पद से समास होता है। यथा—वान्धवैः सहितः=सवान्धवः या सहवान्धवः। अनुजेन सहितः=सानुजः या सहानुजः। विनयेन सह विद्यमानम्=सविनयम्।

३-व्यधिकरण—जिसमें भिन्न-भिन्न विभक्तिवाले पदों का समास हो। यथा—पुण्ये मतिः यस्य सः=पुण्यमतिः। धनुः पाणी यस्य सः=धनुष्पाणिः। कुम्भात् जन्म यस्य सः=कुम्भजन्मा।

४-व्यतिहार—यह समास तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पदों के साथ होता है और युद्ध का बोधक है। यथा—केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं=केशाकेशि। दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्येदं युद्धं प्रवृत्तं=दण्डादण्डि। मुष्टामुष्टि इत्यादि।

द्वन्द्वसमास

जब दो या अधिक संज्ञाएँ इस तरह जुड़ी रहती हैं कि उनके बीच में 'च' (और) छिपा रहे तो उनमें 'द्वन्द्वसमास' होता है। द्वन्द्वसमास तीन प्रकार का है—(१) इतरेतर (२) समाहार और (३) एकशेष।

१-इतरेतर—जिसमें प्रत्येक पद के वचनानुसार समस्त पद के वचन हों। यथा—दिनञ्च यामिनी च=दिनयामिन्यौ। कन्दश्च मूलं च फलं च=कन्दमूलफलानि। माता च पिता च=मातापितरौ। सूर्यश्च चन्द्रमाश्च=सूर्याचन्द्रमसौ।

२-समाहार—जहाँ अनेक पदों का समाहार (एक जगह ठहरना) बोध हो। समाहार द्वन्द्व समास में समस्त पद में नुंसकलिङ्ग का एक वचन होता है। यथा—हस्तौ च पादौ च=हस्तपादम्। भेरी च पटहश्च अनयोः समाहारः=भेरीपटहम्। हस्तिनश्च अश्वाश्च एतेषां समाहारः=हस्त्यश्वम्। मथुरा च पाटलीपुत्रश्च=मथुरा-पाटलीपुत्रम्। दधिवृतम्। गोमहिषम्। अहश्च दिवा च=अहदिवम्। किन्तु, कुशश्च लवश्च=कुशलवौ। अहश्च रात्रिश्च=अहोरात्रः।

३-एकशेष—एक विभक्ति वाले समस्त अनेक समानाकार पदों में जहाँ एक ही पद शेष रह जाय। यथा—स च स च=तौ। वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च=ब्राह्मणौ। हंसी च हंसश्च=हंसौ। पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ। माता च पिता च=पितरौ। श्वश्रूश्च श्वशुरश्च=श्वशुरौ इत्यादि।

अन्यसमास

नञ्-सुबन्त पद के साथ होता है। व्यञ्जन परे रहने पर 'अ' और स्वर परे होने पर 'अन्' हो जाता है। यथा—न प्रिय=अप्रियः। न सुखम्=असुखम्। न उपकारः=अनुपकारः इत्यादि।

मध्यमपदलोपी—यह वर्गधारय या बहुव्रीहि में होता है। यथा—कर्मधारय-सिंह-

चिह्नितम् आसनम्=सिंहासनम् । देवपूजको ब्राह्मणः=देवब्राह्मणः । बहुव्रीहि—चन्द्र
इव आननं यस्याः सा=चन्द्रानना । कण्ठ स्थितः कालो यस्य सः=कण्ठकालः ।

अलुक् समास—जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का लोप न हो । यथा—मनसाकृतम् ।
परस्मैपदम् । दूरादागतः । वाचोयुक्तिः । अन्तेवासी, पङ्केरुहम् इत्यादि ।

संस्कृत बनाओ :—

(१) देवप्रयाग के पास गंगा और अलकनन्दा का संगम है । (२) कंजूस का धन तीन प्रकार से नष्ट होता है । (३) धार्मिक मरते-मरते भी धर्म की रक्षा करते हैं । (४) मैं हर रोज स्कूल जाता हूँ । (५) संसार के सच्चे मार्ग पर चलने वाला मनुष्य साधु कहलाता है । (६) महात्मा पुरुष सुख से युक्त जीवन को नहीं चाहते । (७) शरण में आये हुए को नहीं मारना चाहिए । (८) व्याध के तीर से विधा हुआ मृग मर गया । (९) जो तुम्हारे घर से आदमी आया है उसको खाना खिलाओ । (१०) तुम्हें भूतों के लिए बलियों क्यों नहीं रखीं । (११) तुम्हारे जैसा मनुष्य तीनों लोकों में नहीं है । (१२) ईश्वर की भक्ति मनुष्य के जीवन को सफल कर देती है । (१३) क्षण क्षण जीवन का काल घटता जाता है । (१४) उस के पिता माता बड़े धर्मिन्ना हैं । (१५) महाराज अशोक का राज्य हिमालय तक विस्तृत था । (१६) संसार के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर हैं । (१७) जो सभा में पण्डित हो वही असली पण्डित है । (१८) मैंने गुब जी के कमल समान चरणों को नमस्कार किया ।

संज्ञावाचक शब्दों पर विचार

१ साधारण तौर पर संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं—

१ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ :—कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ ऐसी हैं जो हिन्दी और संस्कृत में एक समान रहती हैं, उन्हें तत्सम कहते हैं । जैसे—

(१) काश्मीर देशो भूस्वर्गः=काश्मीर देश संसार में स्वर्ग है ।

(२) प्रयागस्य आम्रलानि प्रसिद्धानि=इलाहाबाद के अमरूद मशहूर हैं ।

(३) चुनारस्य मृत्पात्राणि भारते विख्यातानि सन्ति=चुनार के मिट्टी के बर्तन हिन्दुस्तान में मशहूर हैं ।

(४) काश्याः कोशयशाटिका जगद्विख्याताः=काशी की रेशमी साड़ियाँ संसार में मशहूर हैं ।

(५) यूरोपीयप्रदेशात् वायुयानेन समाचारपत्राणि भारतमायान्ति=यूरोप से हवाई जहाज में समाचारपत्र हिन्दुस्तान को आते हैं ।

(६) हिमालयाद् गङ्गा निर्गच्छति=हिमालय से गंगा निकलती है ।

(७) महेञ्जोदारो प्राचीनतमानि वस्तूनि भूम्या तिर्गतानि=महेञ्जोदार में जमीन के नीचे से बहुत पुरानी चीजें निकली हैं ।

(८) शान्तिनिकेतनं बोलपुरविश्रामस्थानस्य समीपम्=शान्तिनिकेतन बोलपुर स्टेशन के नजदीक है ।

कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हिन्दी में ऐसी हैं जिनका संस्कृत में अनुवाद थोड़ा सा परिवर्तन करने पर होता है । जैसे—

(१) पुरा मौर्यवंशोद्भवानां राज्ञां राजधानी पाटलीपुत्रमासीत्=प्राचीनकाल में पटना नगर मौर्य राजाओं की राजधानी था।

(२) वङ्गदेशीयास्तण्डुलप्रिया भवन्ति=बंगाली चावल बहुत पसन्द करते हैं।

(३) जयपुरे सङ्गमरमरस्य चित्रकर्म प्रसिद्धम्=जयपुर में संगमरमर की चित्रकारी मशहूर है।

(४) आगरानगरे यमुनातटे ताजमहलं जगद्विख्यातम्=आगरा में यमुना के तट पर ताजमहल संसार में मशहूर है।

(५) सिन्धोरत्यधिकं जलम्=सिन्धु नदी में बहुत ज्यादा पानी है।

(६) रणजीतसिंहः पञ्चनदस्य शासक आसत्=रणजीतसिंह पञ्जाब का शासक था।

(७) गङ्गदेशे श्रीवदरीशस्य मन्दिरमस्ति=गङ्गवाल में श्रीवद्रीनाथजी का मन्दिर है।

(८) पुरा तक्षशिलास्थाने जगद्विख्यातो विश्वविद्यालय आसीत्=पुराने जमाने में तक्षशिला में अतिविख्यात यूनिवर्सिटी थी।

(९) शतद्रुः, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता, सिन्धुञ्च पञ्चनदे विद्यन्ते=सतलुज, व्यास, रावी, चनाव जेहलम और सिन्धु नदी पञ्जाब में हैं।

हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो उसमें दूसरी भाषाओं से आये हैं और कुछ ऐसे हैं जो संस्कृत से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते उनका संस्कृत-अनुवाद ज्यों का त्यों करना चाहिए। किन्तु कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो विदेशी भाषा और संस्कृत से कोई सम्बन्ध न रखते हुए भी संस्कृत लेखकों में प्रचलित हो गये हैं उनको बदलने में कोई क्षति नहीं। जैसे—

(१) कलकत्ता नामकं भारतविख्यातं नगरम्=कलकत्ता भारत में मशहूर है।

(२) भोन्दूमलः प्रयागे प्रसिद्धः वणिक्=भोन्दूमल इलाहाबाद में प्रसिद्ध सौदागर है।

(३) एस० एम० रज्जिकस्य कानपुरे चर्मव्यापारोऽस्ति=एस० एम० रज्जिक का कानपुर में चमड़े का व्यापार है।

(४) जापानस्य व्यापारविषये महती उन्नतिरस्ति=जापान ने व्यापार में बड़ी उन्नति की है।

(५) यवनदेशीयः सम्राट् अलक्षेन्द्रो भारतमाजगाम=ग्रीक सम्राट् अलेग्जेंडर भारत में आया था।

(६) मानचैस्टरात् भारतमायातिस्म वस्त्रम्=मानचैस्टर से कपड़ा भारत को आता था।

(७) जविस्कोनाम्नः गामानाम्नश्च मल्लयोर्मल्लयुद्धमभवत्=जविस्को और गामा ने कुश्ती लड़ी।

(८) कुछ संज्ञाएं जातिवाचक हैं। जैसे—मनुष्य, राजा, प्रजा, पशु, पक्षी, पुरुष, स्त्री इत्यादि। इनके पर्याय शब्द भी इसके स्थान पर रखे जा सकते हैं।

जैसे—स एव राजा (नृपतिः, भूपतिः) यस्य प्रजायाः सुखम्=राजा वही है जिसकी प्रजा सुखी है।

परन्तु बिडला, मालवीय, सैय्यद आदि शब्द संस्कृत-अनुवाद में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की तरह रखे जाते हैं।

जैसे—बिडलोपाह्वः घनश्यामदासः=घनश्यामदास बिडला।

कुछ शब्द देशी या विदेशी आजकल संस्कृत में कल्पित रूप से प्रचलित हो गए हैं, उनका अनुवाद प्रचलित शब्दों में होगा। जैसे—

(१) भारतमन्त्री=सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया।

(२) प्रधानमन्त्री=प्राइम मिनिस्टर।

(३) व्यवस्थापिकापरिषद्=लेजिस्लेटिव काउन्सिल।

(४) सभा=असेंबली।

(५) विषयनिर्धारिणी सभा=सब्जेक्टिव कमेटी।

(६) कार्यकारिणी सभा=एग्जिक्यूटिव कमेटी।

(७) मण्डलम्=जिला।

(८) प्रदेशः=प्राविंस।

(९) वाष्पयानम्=रेलगाड़ी।

(१०) जलयानम्=जहाज।

(११) वायुयानम्=हवाई जहाज।

(१२) निरीक्षकः=इन्स्पेक्टर।

(१३) विद्यालयः=कालिज।

(१४) विश्वविद्यालयः=यूनिवर्सिटी।

(१५) द्विचक्रिका=वाइसिकल।

(१६) जलान्तरितयानम्=सबमैरीन (पनडुब्बी)।

परन्तु मोटर के लिए "मोटरयानम्" कोट के लिए "कोटनामकं वस्त्रम्" ही लिखना ठीक है।

(३) भाववाचक संज्ञाएं वे हैं जिनसे किसी जाति आदि संज्ञाओं के भाव का बोध हो। जैसे—मनुष्यत्व, ज्ञान, मान, मृदुता, मधुरता, आलाप, चतुरता इत्यादि।

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन=विद्वत्त्व और राजत्व हरगिज बराबर नहीं। तस्य ज्ञानमेवैतावत् आसीत्=उसका ज्ञान ही इतना था।

असहयोगान्दोलनस्य कार्यक्रमे बहवः प्रस्तावा आसन्=तानकोआपरेशन मूवमेन्ट के प्रोग्राम में बहुत से रेजोल्यूशन थे।

कुछ अन्य भाववाचक संज्ञाओं के उदाहरण—

(१) नूनं छनच्छनिति वाष्पकणाः पतन्ति=निःसन्देह 'छनछन' शब्द करके आसुओं की बूंदें गिर रही हैं।

(२) स्थाने स्थाने मुखरककुभो ज्ञांकृतैर्निर्जराणाम्=स्थान-स्थान पर झरनों के ज्ञांकृत शब्द से दिशाएं गूँज रही थीं।

(३) ववणत्कनककिङ्किणीझणझणायितस्यन्दनैः=रथ पर टकरा कर सोने की किङ्किण्यां झण झण कर रही थीं ।

(४) धनुष्टङ्कारो दूरतोऽपि श्रयते=धनुष की टंकार दूर से भी सुनाई देती है ।

(५) भूपणानां शिञ्जितमतिमधुरम्=जैवरों का शब्द बहुत ही मनोहर था ।

(६) वव श्रयते पटपदानां झङ्कारः=भीरों का शब्द कहाँ सुनाई देता है ।

(७) गजानां बृंहितेन, सिंहानां नादेन च वनमेवाकम्पत=हाथियों की चिंघाड़ से और सिंहों की गर्जना से जंगल ही कांप उठा ।

(८) चरणसिंहेज्जीव धृष्टता विद्यते=चरणसिंह में बड़ी ढिठाई है ।

(९) समुद्रस्य गाम्भीर्यं ज्ञातुमसुलभम्=समुद्र की गहराई कठिनाता से जानी जाती है ।

(१०) सत्यं वद=सच बोल ।

लिङ्गप्रकरणम्

जिससे पुंस्त्व (पुरुषत्व) स्त्रीत्व और नपुंसकत्व का बोध हो उसे लिङ्ग कहते हैं ।

संस्कृत में लिङ्ग तीन प्रकार का है—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग । संस्कृत शब्दों का लिङ्ग-निर्णय बड़ा कठिन है, क्योंकि संस्कृत में शब्दों का अर्थ देखकर लिङ्ग-निर्णय नहीं होता । यद्यपि दार, भार्या और कलत्र इन तीनों का अर्थ स्त्री है, तथापि दार पुंलिङ्ग, भार्या स्त्रीलिङ्ग और कलत्र नपुंसक लिङ्ग है । कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थभेद से लिङ्गभेद होता है, जैसे मित्र शब्द—यह सखा का बोधक होने से नपुंसकलिङ्ग और सूर्य का बोधक होने से पुंलिङ्ग होता है । इस प्रकार संस्कृत के प्रत्येक शब्द का लिङ्ग निश्चित है । पर हिन्दी में लिङ्ग-निर्णय अधिकतर व्यवहार पर निर्भर रहता है । संस्कृत शब्दों के लिङ्ग-निर्णय के कुछ नियम नीचे लिखे गये हैं—

पुंलिङ्ग

१—घञ् और अप्, घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं, जैसे—पाकः, त्यागः, भावः, करः, गरः, विस्तरः, गोचरः, सञ्चयः, विजयः, विनयः इत्यादि । परन्तु भय, मुख, वर्ष, पद, लिङ्ग आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ।

२—किप्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—विधिः, निधिः, वारिधिः इत्यादि, परन्तु किप्रत्ययान्त इषुधि शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों में होता है ।

३—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—यत्नः, प्रयत्नः, स्वप्नः । परन्तु याचञ् शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है ।

४—ईमन् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—महिमा, गरिमा, लघिमा इत्यादि । परन्तु प्रेमन् शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में होता है ।

५—नकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे, राजन्—राजा, आत्मन्—आत्मा । किन्तु मन् प्रत्ययान्त कर्मन् और चर्मन् आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ।

६—साधारण और विशेष सुर (देवता) और असुर (राक्षस) और इनके

अनुचर वाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—देवः, विष्णुः, शिवः, दानवः, दैत्यः, आदि।

७—दार, अक्षत, लाज, असु (प्राण) शब्द पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होते हैं।

८—करः (किरण) हाथ और बलिः, गण्ड (कपोल) ओष्ठः (ओठ), दोः (बाहु), दन्तः (दांत), कण्ठः, केश, नखः (नाखून) और स्तनः ये सब शब्द और इनके पर्यायवाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। दीधितिः (किरण) शब्द स्त्रीलिङ्ग है, मरीचिः शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों है।

९—स्वर्ग, याग (यज्ञ), अद्रि (पर्वत), मेघ, अब्धि (समुद्र), द्रु (वृक्ष) काल (समय), असि (तलवार), शर (बाण) और शत्रु ये सब शब्द और इनके पर्याय वाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। किन्तु त्रिविष्टपम् (स्वर्ग), अन्न (मेघ) ये शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं। द्यौः और दिव (स्वर्ग) ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। इषु (बाण) शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों है। स्वर (स्वर्ग) अव्यय है।

१०—मास (वंशाख जेठ आदि महीने), ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म आदि), रस (कटु, तिक्त आदि), वर्ण (शुक्ल, कृष्ण आदि रंग), अग्नि, शब्द, वायु (हवा), नर (आदमी), अहि (सांप) ये शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। किन्तु ऋतुवाचक शब्द और वर्षा शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

११—खर्वः, निखर्वः, शङ्खः, पद्मः और सागरः शब्द पुल्लिङ्ग हैं।

१२—समास-युक्त अन्न और अह-भागान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं।

जैसे—पूर्वाह्णः, पराह्णः, मध्याह्णः, एकाहः, द्वयहः, त्रयहः इत्यादि। किन्तु पुण्याह शब्द नपुंसकलिङ्ग है।

१३—समासोत्पन्न रात्रभागान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—सर्वरात्रः, मध्यरात्रः आदि। किन्तु संख्यावाचक शब्द के आगे रात्र शब्द रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रम् पञ्चरात्रम् इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग

१—कित् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—मतिः, गतिः, सम्पत्तिः इत्यादि। परन्तु ज्ञाति शब्द पुल्लिङ्ग होता है।

२—तिथिवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं, जैसे—प्रतिपत्, द्वितीया, चतुर्थी पूर्णिमा आदि।

३—तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं, जैसे—लघुता, सुन्दरता, ब्राह्मणता आदि।

४—ऋकारान्त मातृ (माता) दुहितृ (कन्या) स्वसृ (बहिन) यातृ (पति के भाइयों की स्त्रियाँ) और ननान्दृ (ननंद) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

५—एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—श्रीः, ह्रीः, मूः, भ्रः आदि।

६—ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—नदी, लक्ष्मीः, गौरी, देवी, इत्यादि।

७—विंशति से नवति पर्यन्त संख्यावाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—विंशतिः, त्रिंशत् आदि।

८—ऊङ और आप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—कुलः, विद्या, शोभा इत्यादि।

९—विद्युत् (विजली) निशा (रात) वल्ली (लता) वीणा (वीन) दिक् (दिशा) भू (पृथ्वी) नदी, ह्री (लाज) वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

१०—समाहार द्विगु समासयुक्त अकारान्त शब्द (जिनके आगे ईप् होता है) स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—त्रिलोकी, पञ्चवटी, द्विपुरी आदि। किन्तु पात्र, युग और भुवन शब्द परे रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—पञ्चपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम्।

नपुंसकलिङ्ग

१—भाववाच्य में ल्युट् (अन) प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—गमनं शयनं, भोजनम् इत्यादि।

२—भाव में (क्त) प्रत्यय करने से बने हुए शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—हसितं गीतं, जीवितम् इत्यादि।

३—तद्धित के त्व और ष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शुक्लत्वं, शीतल्यं; सुन्दरत्वं, सौन्दर्यं, राजत्वं, राज्यम्, मधुरत्वं माधुर्यम् इत्यादि।

४—यत्, य, डक्, यक्, अञ् अण् वृञ् छ प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं जैसे—स्तेयं, सख्यं, कापेयम्, आधिपत्यम्, औष्ट्रं, द्वैहायनं, पितापुत्रकं, किराता-जुगीयम् आदि।

५—उसका भाव या कर्म, इस अर्थ में ण् (अ) प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शैशवं, गौरवं, लाघवम् आदि।

६—शत आदि संख्यावाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शतं, सहस्रम् आदि। परे कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। शत, अयुत, प्रयुत, शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। जैसे—अयं शतः, इदं शतम् इत्यादि।

७—भाववाच्य में कृत्य (तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप्) प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—भविष्यं, भवनीयं, भाव्यम् आदि।

८—ड्यट् और तयट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—द्वयं, त्रयं, द्वितयं, त्रितयम् इत्यादि। ये शब्द स्त्रीलिङ्ग भी होते हैं।

९—जिनके अन्त में हो ऐसे शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—छत्रं, पत्रं, चरित्रम् इत्यादि। परन्तु मूत्र, अमित्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र, वृत्र, मेढ और उब्द शब्द पुल्लिङ्ग हैं और पत्र, पात्र, पवित्र, सूत्र और छत्र पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। यात्रा, मात्रा, भस्त्रा और दण्डा ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। मित्र शब्द सूर्य के अर्थ में पुल्लिङ्ग और बन्धु के अर्थ में नपुंसकलिङ्ग है।

१०—क्रियाविशेषण और अव्ययविशेषण नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—साधु वदति—अच्छा कहता है। मनोहरं प्रातः—सुन्दर सवेरा।

११—जो शब्द स्त्रीलिङ्ग या पुल्लिङ्ग नहीं हैं वे भी नपुंसकलिङ्ग होते हैं। वृन्दं (समूह), खं (आकाश) अरण्यं (वन) पर्णं (पत्ता) श्वभ्रं (बिल) हिमं (पाला) उदकं (जल) शीतं (ठण्डा) उष्णं (गर्म) मांसं (मांस) रक्षि (रक्षक)

मुखं (मुंह) अक्षि (आंख) द्रविणं (घन) बलं (बल) हलं (हल) हेम (सोना) शुल्बं (तांबा) लोहं (लोहा) सुखं (सुख) दुःखं (दुःख) शुभं (कुशल) अशुभम् (अमंगल) जलपुष्पं (पानी में उत्पन्न होने वाला फूल) लवणं (नमक) व्यञ्जनं (दूध, दही आदि) अनुलेपनं (चन्दन आदि) ये ऊपर लिखे हुए शब्द तथा इन शब्दों के अर्थ बोध कराने वाले अन्यान्य शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। किन्तु अर्थः और विभक्त्यः (घन) अवश्यायः, नीहोरः और तुषारः (पाला) तथा हृदः (पत्ता) पुल्लिङ्ग हैं। अप् (जल) अटवि (बन) मुद् और प्रीतिः (हर्ष) वपा और शुषिः (बिल), दूश और दृष्टि (आंख) तथा मिहिका (पाला) स्त्रीलिङ्ग हैं। आकाशः और विहायस् (आकाश) तथा क्षेमः, ये पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

१२—समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभावसमासोत्पन्न शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—पाणिपादं, हस्त्यश्वम्, प्रतिदिनम्, और यथाशक्ति आदि।

१३—संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्ती समासोत्पन्न, 'पथ' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—त्रिपथं, चतुष्पथं, विपथम्, कापथम् आदि।

१४—दो स्वर वाले अस्, इस्, उस् और अन् भागान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—अस् भागान्त—यशस्, तेजस् आदि। इस् भागान्त—सर्पिस्, हविस् आदि। उस् भागान्त—वपुस्, धनुस् आदि। अन् भागान्त नामन, चर्मन् इत्यादि। किन्तु अर्चिस् शब्द स्त्रीलिङ्ग और वेधस् शब्द पुल्लिङ्ग है। दो से अधिक स्वर होने के कारण अणिमा, महिमा, चन्द्रमा आदि शब्द पुल्लिङ्ग हैं और अप्सरस्, शब्द स्त्रीलिङ्ग है। ब्रह्मन् शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं।

१५—आदि में यदि संख्यावाचक शब्द हो और अन्त में रात्र शब्द हो तो नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रं, पञ्चरात्रम् इत्यादि।

लेखोपयोगी चिह्न (Punctuation)

संस्कृत भाषा में वाक्य से शब्दों का कोई क्रम निश्चित नहीं है। कर्ता, क्रिया, क्रिया वाक्य के आदि, मध्य और अन्त में भी रखे जा सकते हैं। यही कारण है कि संस्कृत ग्रन्थों में आधुनिक लेखोपयोगी चिह्नों का विशेष महत्त्व नहीं है। तथापि “अत्रतुनोक्तम् तत्रापिनोक्तम्” प्रसिद्ध संस्कृत वाक्य का सीधा अर्थ यही प्रतीत होता है—“इस स्थल पर नहीं कहा गया है (और) उस स्थल पर भी नहीं कहा गया है।” लेखक को यह अर्थ अभिप्रेत नहीं। वह तो चाहता है—“अत्र तुना उक्तम्, तत्र अपिना उक्तम्” अर्थात् “जो बात इस स्थल पर ‘तु’ शब्द से प्रकट की गई है वही बात उस स्थल पर ‘अपि’ शब्द द्वारा व्यक्त की गई है। अतः मानना पड़ेगा कि शोभन शब्द-विन्यास से लेख में अवश्य चारुता आ जाती है और जटिलता भी जाती रहती है। इसी ध्येय को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित लेखोपयोगी चिह्न दिये गये हैं :—

अल्प-विराम-चिह्न

अर्धविराम-चिह्न

पूर्णविराम-चिह्न

(Comma)

(Semi-Colon)

(Full-Stops)

प्रसङ्ग समाप्ति चिह्न	॥	
प्रश्नबोधक चिह्न (काकुचिह्न)	?	(Sign of Interrogation)
विस्मयादिवोधक चिह्न	!	(Sign of admiration,
(सम्बोधनाऽऽश्चर्यखेदचिह्न)	! "	Surprigse etc)
उद्धरणचिह्न	" "	(Inverted Commas)
निर्देशचिह्न	:—	
योजकचिह्न	—	(Hyphen)
कोष्ठक (पाठान्तर चिह्न)	()	(Parenthesis)
सन्धिच्छेद चिह्न	+	
पर्याय-चिह्न	=	
वृटिपूर्ण चिह्न	△	

उदाहरण (हिन्दीभाषा में अनुवाद करो) :—

१—हा ! कथं सीतादेव्या ईदृशं जनापवादं देवस्य कथयिष्यामि ! अथवा
नियोगः खल्वीदृशो मन्दभाग्यस्य । (उत्तररामचरिते)

२—आसीच्च मे मनसि, “शान्तात्मन्यस्मिञ्जने मां निक्षिपता, किमिदमनार्येणा-
सदृशमारब्धं मनसिजेन !” (कादम्बर्याम्)

३—अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् ? (कुमारसम्भवे)

४—तारापीडो देवीमवदत् :—“अफलमिवाखिलं पश्यामि जीवितं राज्यं च ।
अप्रतिविधेये (निष्प्रतीकारे) धातरि किं करोमि ! तन्मुच्यतां देवि ! शोकानुबन्धः ।
आधीयतां धैर्ये च धीः ।” (कादम्बर्याम्)

५—अहो प्रभावो महात्मनाम् ! अत्र शाश्वतं विरोधमपहायोपशान्तान्तरा-
त्मानस्तिर्यञ्चोऽपि तपोवनवसतिमुखमनुभवन्ति । (कादम्बर्याम्)

संस्कृतभाषयाऽनूद्यताम्—

१—हे मित्र ! अब आप आदि से मेरा वृत्तान्त सुनिए । मेरा जन्म पद्मपुर
में हुआ था । मेरे पिता के पांच भाई थे, जो मृत्यु को प्राप्त हुए । आप ही के
देश से आये हुए एक ब्राह्मण से मेरा विवाह हुआ । उनको मेरे आज सात वर्ष हो
गये । मैं अनाथ अब क्या करूं ? मन्दभागिनी मैं कहां जाऊं ? इस अवस्था में
आप ही मेरी शरण हैं । (काशी प्रथमा परीक्षा १९३१)

२—जेठ महीने की पूर्णमासी तिथि को प्रतिव्रता स्त्रियां वट वृक्ष की पूजा
और उपवास करती हैं । इस तिथि को प्राचीनकाल में सत्यवान् की भार्या सावित्री
ने यम से लिये जाते हुए अपने पति सत्यवान् को छुड़ाया था । तभी से इस व्रत
का आरम्भ हुआ है । स्त्रियां यह मानती हैं कि इस व्रत के करने से उनके पति
की आयु दीर्घ होती है । सब सोहागिन स्त्रियां इस व्रत को करती हैं । (काशी
प्रथमा परीक्षा १९३१)

अनुवादार्थसंस्कृतवाक्य

(१) एकस्मिञ्जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य-
कथमपि पितुरहमेवैको विधिवशात्सूनुरभवम् । (कादम्बरी पृ० २५)

(२) देव काचिच्चाण्डालकन्या शुक्रमादाय देवं विज्ञापयति—“सकलभुवनतल-
सर्वरत्नानामुदधिरिवैकभाजनं देवः । विहंगमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभुवनतलरत्न-
मिति कृत्वा देवपादमूलमागताहमिच्छामि देवदर्शनमुखमनुभवितुमिति” । (काद-
म्बरी पृ० ८)

(३) एषा मे मनोरथप्रियतमा सकुसुमास्तरणं शिलापट्टमधिशयाना सखीभ्या-
मन्वास्यते । सागरं वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति । क इदानीं सहकारमन्तरे-
णातिमुक्तलतां पल्लवितां सहते । (शकुन्तला ३)

(४) तं क्रमेण जन्मभूमिं जातिं विद्यां च कलत्रमपत्यानि विभवं वयःप्रमाणं
प्रव्रज्याकारणं स्वयमेव प्रपच्छ चन्द्रापीडः । (कादम्बरी)

(५) तौ कुशलवौ भगवता वाल्मीकिना धात्रीकर्मवस्तुतः परिगृह्य पोषितौ
परिरक्षितौ च वृत्तचडौ च त्रयीवर्जमितरा विद्याः सावधानेन परिपाठितौ । समन्त-
रञ्च गर्भादिकादशे वर्षे धात्रेण कल्पेनोपनीय गुरुणां त्रयीं विद्यामध्यापितौ ।
(उत्तर० २)

(६) अयं शिशून् शक्नोति शिरोधरां धारयितुम् । तदाहि गृहाणेममवतारय
सलिलसमीपमित्यभिधाय तेनपिकुमारेण मां सरस्तीरमनायत् । उपसृत्य च
नलसमीपं स्वयं मामादाय मुक्तप्रयत्नमुत्तानितमुखमंगुल्या कतिचित्सलिलबिन्दून्-
नाययत् । (कादम्बरी ३८)

(७) अयि पञ्चालतनये अलं विषादेन । किं बहुना । यत्करिष्ये, तच्छ-
यताम्—अचिरेणैव कालेन सुयोधनशोणितशोणपाणिस्तव कचान् भीम उत्तंसयि-
ष्यति । (वैष्णोसंहारे १)

(८) प्रवातशयने निषण्णा देवी परिजनहस्तगहीतेन चरणेन परिव्राजिकया
कथामिबिन्दोद्यमाना तिष्ठति । (मालविकाग्निमित्रे ४)

(९) तेषु तेषु रम्यतरेषु स्थानेषु तया सह तानि तान्यपरिसमाप्तान्यपुनरुक्तानि
न केवलं चन्द्रमाः कादम्बर्या सह कादम्बरी महाश्वेतया सह महाश्वेता तु पुण्डरीकेण
सह पुण्डरीकोऽपि चन्द्रमसा सह सर्वे एव सर्वकालं सर्वमुखान्यनुभवन्तः परां कोटि-
मानन्दस्याध्यगच्छन् । (कादम्बर्याम् ३६९)

(१०) मूर्ख नैष तव दोषः । साधोः शिक्षा गुणाय सम्पद्यते, नासाधोः ।
(पञ्चतन्त्रे १—१८)

१—जीर्णकोटर=पुराना कोटर । जाया=स्त्री । २—उदधि=समुद्र ।
विहङ्गम=पक्षी । ३—अन्वास्यते=सेवा की जा रही है । सहकार=आम ।
अनिमुक्तलता=माधवीलता । पल्लव=पत्र । —कलत्र=स्त्री । प्रव्रज्या=संन्यास ।
५—कल्प=प्राथमिक । ६—शिरोधरा=गर्दन । उत्तानित=खुला हुआ । ७—शोणित
=खून । शोणपाणि=रक्तहस्त । कच=वाल । उत्तंस=शोभित करना । ८—
प्रवात=हवा वाला । परिव्राजिका=संन्यासिनी ।

(११) प्रसीद भगवती वसुन्धरे शरीरमसि संसारस्य । तत्किमसौवदानेव
जामात्रे कुप्यमि । (उत्तररामचरिते ७)

(१२) सखि वासन्ति दुःखावेदानीं रामस्य दर्शनं सुहृदाम् । तत्कियच्चिरं
त्वां रोदयिष्यामि । तदनुजानीहि मां गमनाय । (उत्तररामचरिते २)

(१३) तं नृपं वसुरक्षितौ नाम मन्त्रिवृद्ध एकदाऽभाषत । तच्च अत्र भवति
सर्व्वेतिमसम्पदभिज्ञानात्प्रभृत्यनूनैव लक्ष्यते । बुद्धिता निसर्गपट्वी तवेतरेभ्यः
प्रतिविशिष्यते । (दशकु० १८)

(१४) न जानामि केनापि कारणेनापहस्तितसकलसखीजनं त्वयि विश्वसिति
मे हृदयम् । (कादम्बरी २३३)

(१५) धिङ् मां दुष्कृतकारिणी यस्याः कृते तवेयमीदृशी दशा वर्तते ।

(१६) हा दयित माधव परलोकगतोऽपि स्मर्तव्यो युष्माभिरयं जनः । न
खलु स उपरतो यस्य बल्लभो जनः स्मरति ।

(१७) अवान्तरे शक्तिखण्डामषितेन गाण्डीविनैवं भणितम्—“अरे दुर्योधन-
प्रमुखाः कुरुवलसेनाप्रभवः” अरे अविनयनदीकर्णधारकर्ण युष्माभिर्मम परोक्ष
एकाकी पुत्रकोऽभिमन्युव्यापादितः । अहं पुनर्युष्माकं प्रेक्षमाणानामेनं कुमार-
वृषसेनं स्मर्तव्यशर्षं नयामि ।” (वेणी० ४)

(१८) तदेव पञ्चवटीवनम् । सैव प्रियसखी वासन्ती । त एव जात-
निर्विशेषाः पादपाः । मम पुनर्मेन्दभाग्यायाः सर्वमेवैतद् दृश्यमानमपि नास्ति ।
(उ० ३)

(१९) तस्य तरुषण्डस्य मध्ये मणिदर्पणमिव त्रैलोक्यलक्ष्म्याः क्वचित् त्र्यम्बक-
वृषभविषाणकोटिखण्डिततटशिलाखण्डं क्वचिदैरावतदशनमुसलखण्डितकुमुददण्डमच्छेदं
नाम सरो दृष्टवान् । (कादम्बरी १२३)

(२०) अलमनया कथया । संह्रियतामियम् । अहमप्यसमर्थः श्रोतुम् ।
अतिक्रान्तान्यपि संकीर्त्यमानान्यनुभवसमां वेदेनामुपजनयन्ति सुहृज्जनस्य दुःखानि ।
तन्नाहंसि कथं कथमपि विधृतानिमानमुलभानसून पुनः पुनः स्मरणशोकात्लब्धनता-
मुपनेतुम् । (कादम्बरी १६९)

(२१) उपकारिणि विश्रब्धे शुद्धमती यः समानरित पापम् ।

तं जनमसत्यसन्धं भगवति वसुधे कथं वहसि ॥

(२२) कन्या वरयते वित्तं माता रूपं पिता सुखम् ।

वान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्तमितरे जनाः ॥

(२३) सकृदुक्तं च गृह्णाति न च विस्मरति श्रुतम् ।

धीधारणावती यस्य मेधावी स ईहोच्यते ॥

११—असंविदान=अभिज्ञ । १४—अपहस्तित=दूर करके । १७—गाण्डीविन=अर्जुन । अमषित=कुद । १८—पादप=वृक्ष । १९—तरुषण्ड=वृक्षवन । त्र्यम्बक=शिवजी का बाल । विषाण=सींग । ऐरावत=इन्द्र का हाथी । २०—वेदन=दुःख । अमु=प्राण । अनल=आग । इन्धन=लकड़ी । २१—असत्यसन्ध=झूट बोलने वाला ।

- (२४) रसवन्मानसग्राहि गुणालङ्कारसंयुतम् ।
कवीनां यशसे काव्यं हास्यायान्यच्च जायते ॥
अग्नीं परीक्ष्यते स्वर्णं काव्यं सदसि तद्विदाम् ।
किं कवेस्तेन काव्येन सद्भिर्यन्तानुगृह्यते ॥
- (२५) गुरोः प्राप्तः परीवादो न श्रोतव्यः कदाचन ।
कर्णो तत्र पिधातव्यौ गन्तव्यं वा ततोऽन्यथा ॥
- (२६) अलं भारतीया मतानां विभेदैरलं देशभेदेन वैरेण चालम् ।
अयं शाश्वतो धर्म एको धरायां न सम्भाव्यते धर्मतत्त्वेषु भेदः ॥
- (२७) लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद्वा हिमवान्वा हिमं त्यजेत् ।
अतीयात्सागरो वेलो न प्रतिशामहं पितुः ॥
- (२८) क्व नु तेऽद्य पिता राजन् ! क्व नु तेऽद्य पितामहाः ।
न त्वं पश्यसि तानद्य न त्वाम्पश्यन्ति तेऽनघ !
- (२९) अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसञ्चयः ।
ऐश्वर्यं प्रियसंवासो मुह्येत्तत्र न पण्डितः ।
- (३०) आदरेण यथा स्तौति धनवन्तं धनेच्छया ।
तथा चेद्विश्वकर्तारं को न मुच्येत बन्धनात् ॥
- (३१) न जातु कामः कामानामुपभोगन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मनो भूय एवाभिवर्धते ॥
- (३२) रघुमेव निवृत्तयौवनं तममन्यन्त नवैश्वरं प्रजाः ।
स हि तस्य न केवलां श्रियं प्रतिपेदे सकलान्गुणानपि ॥
- (३३) सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथाप्रदेशं विनिवेशितेन ।
सा निर्मिता विश्वसृजा प्रयत्नादेकस्थसौन्दर्यदिदृक्षयेव ॥
- (३४) पुराणमित्येव न साधुसर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवन्धम् ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥
- (३५) विश्वासप्रतिपन्नानां वञ्चने का विदग्धता ।
अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किन्नाम पौरुषम् ॥
- (३६) साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
नृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भाषणं परमं पशूनाम् ॥
- (३७) सा सीतामङ्कमारोप्य भर्तृप्रणिहितेक्षणाम् ।
मामेति व्याहरत्येव तस्मिन्पातालमभ्यगात् ॥
- (३८) गुणेषु क्रियतां यत्नः किमाटोपैः प्रयोजनम् ।
विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गविः क्षीरविर्वाजिताः ॥

(२५) —परीवाद = निन्दा । पिधातव्यौ = बन्द करने चाहिए । २६ — शाश्वत = नित्य । ३१ — हविष् = धी । कृष्णवर्त्मनः = अग्नि । ३३ — दिदृक्षा = देखने की च्छा । ३४ — अवन्ध = निन्दनीय । प्रत्यय = विश्वास । ३७ — व्याहृ = बोलना । ३८ — आटोप = कृत्रिम वेप ।

(३९) लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागमः कुतः ।

(४०) केतकीगन्धमाघ्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः ।

मुहावरेदारप्रयोग

- (१) इयं कथा मामेव लक्षीकरोति—(इस कथा का संकेत-विषय मैं ही हूँ ।)
- (२) न ते वचोऽभिनन्दामि—(मैं तेरे वचन का समर्थन नहीं करता ।)
- (३) कर्तव्यं हि सतां वचः—(सज्जन पुरुषों की बात माननी चाहिए ।)
- (४) द्वितीयगामी नहि शब्द एष नः—(यह हमारा उपाधिसूचक पद दूसरे किसी के नाम के साथ नहीं जा सकता ।)
- (५) मृग मृगः सङ्गमनव्रजन्ति—(मृग मृग का साथ है, अर्थात्—अच्छे अच्छों या बुरे बुरों का साथ होता है ।)
- (६) लोकापवादी बलवान्मतो मे—(मेरा विचार है कि लोकनिन्दा बड़ी बलवाली है ।)
- (७) सकलवचनानामविषयम्—वर्णनविषयातिक्रान्तम् तत्स्थानम्—(उस स्थान का वर्णन ही नहीं हो सकता ।)
- (८) किं मिष्टमन्नं खरसूकराणाम्—(भैंस के आगे वीन बजाना ।)
- (९) स्वभावो दुरतिक्रमः—(स्वभाव नहीं बदल सकता ।)
- (१०) अतिभूमिं गतो रणरणकोऽस्याः—(इसकी चिन्ता की कोई हद नहीं ।)
- (११) अग्निं सात्कुह—(आग में फेंक दो ।)
- (१२) अपि रक्ष्यते रहस्यनिक्षेपः—(क्या तूने गुप्त बात की रक्षा की ?)
- (१३) सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति—(सब उनकी हंसी करते हैं ।)
- (१४) सा पुषोष लावण्यमयान् विशेषान्—(उस [उमा] के अङ्ग अङ्ग में सौन्दर्य भर गया ।)
- (१५) नाहमात्मविनाशाय बेतालोत्थापनं करिष्यामि—(मैं अपने नाश के लिए शैतान को नहीं उठाऊंगा ।)
- (१६) वसुधां तस्य हस्तगाभिनीमकरोत्—(उसने भूमि उसे दे दी ।)
- (१७) अतिभूमिं गतोऽस्या अनुरागः—(इसके प्रेम की सीमा न रही ।)
- (१८) मनो मे संशयमेव गाहते—(मेरे चित्त में संदेह ही है ।)
- (१९) मम द्रव्यस्य कथं त्वया विनियोगः कृतः—(तुमने मेरे द्रव्य को किस प्रकार खर्च किया ?)
- (२०) अपि कुशलं (शिवं) भवतः—(आप अच्छे तो हैं ?)
- (२१) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—(चक्र की नेमि के समान मुख और दुःख घूमते रहते हैं ।)
- (२२) शिखी केकाभिस्तिर्ययति मे वचनम्—(मयूर अपनी आवाज से मेरे वचन को छिपाता है ।)
- (२३) न परिहसामि, नायं परिहासस्य समयः—(मैं सत्य कहता हूँ, यह हंसी करने योग्य बात नहीं है ।)

- (२४) शृणु मे सावशेषं वचः—मेरी पूरी बात तो सुनो ।
- (२५) अर्जुनं भोजनं विषम्—(अपच में भोजन करना विष के तुल्य है ।)
- (२६) कुतूहलेन तस्य चेतसि पदं कृतम्—(उसके चित्त में बड़ा आश्चर्य है ।)
- (२७) अतिदानाद्बलिवर्द्धः—(अति बुरो है ।)
- (२८) अलमतिविस्तरेण—(अति विस्तार की आवश्यकता नहीं ।)
- (२९) अपुत्रस्य गृहं शून्यम्—(निपूते का घर मसान ।)
- (३०) आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया—(बड़ों की आज्ञा सिर माथे ।)
- (३१) स सत्कारो मम मनोरथानामप्यभूमिः—(वह आदर मेरी आशा से भी बाहर था ।)
- इति लोकवादः न विसंवादमासादयति—(इस लोकोक्ति में कोई विवाद नहीं ।)
- (३३) कालस्य कुटिला गतिः—(समय की गति कुटिल है ।)
- (३४) गुणान् भूषयते रूपम्—(रूप और गुण का साथ सोने में सुगन्ध के समान है ।)
- (३५) अनुतिष्ठात्मनो नियोगम्—(अपना कार्य करो ।)
- (३६) अतिपरिचयादवज्ञा—(अधिक परिचय से अपमान होता है ।)
- (३७) को वृत्तान्तस्तत्र भवत्याः—(श्रीमती जी का कैसा हाल है ?)
- (३८) सचेतसः कस्य मनो न दूयते—(किस सहृदय का मन दुःखित न होगा ।)
- (३९) चिन्ताज्वरो मनुष्याणाम्—(चिन्ता बहुत बुरी है ।)
- (४०) मन्मुखासक्तदृष्टिः—(एक टक से मेरी ओर दृष्टि वाला ।)
- (४१) चौराणामनृतं बलम्—(चोर का बल झूठ है ।)
- (४२) यौवनपदवीमारुढः—(वह जवान हो गया ।)
- (४३) तृष्णांका तरुणायते—(तृष्णा कभी कम नहीं होती ।)
- (४४) सर्वनाशो समुत्पन्ने अर्धे त्यजति पण्डितः—(विलकुल न होने से थोड़ा अच्छा है ।)
- (४५) महतां पदमनुविधेयम्—(बड़ों का अनुकरण करो ।)
- (४६) न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित्—(सत्पुरुष अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं ।)
- (४७) नात्र मुनिर्दोषं ग्रहीष्यति—(मुनि इसमें दोष न मानेंगे ।)
- (४८) उमाख्यां सा जगाम—(उसका नाम उमा प्रसिद्ध हुआ ।)
- (४९) ममाशयं सम्यग्गृहीतवानसि—(तू मेरा भाव अच्छी तरह समझ गया है ।)
- (५०) मृत्योर्मुखे वतते, मृत्युगोचरं गतः—(मरने वाला है ।)
- (५१) न हि सर्वविद सर्व—(संसार में कोई भी सर्वज्ञ नहीं ।)
- (५२) नास्ति बन्धुसमं बलम्—(बन्धु सदृश कोई बल नहीं ।)
- (५३) निःस्पृहस्य तृणं जगत्—(यागी को संसार तृणवत है ।)
- (५४) पुत्रः शत्रुरपण्डितः—(मूर्ख पुत्र शत्रु के समान है ।)
- (५५) मानुषीं गिरसुवीरयामास—(मनुष्य की भाषा में कहा ।)
- (५६) अहो वारुणो वृद्धो विपाकः—(ऐ वंदकिस्मत !)

- (५७) भूस्वर्गायमानमेतत्स्थलम्—(यह स्थान पृथिवी पर स्वर्ग है ।)
- (५८) लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्—(लोभी को द्रव्य से वश में करना चाहिए :)
- (५९) किमस्मान् सम्भूतदोषैरधिक्षिपथ—(हमारे ऊपर इतने दोष क्यों फेंकते हो ?)
- (६०) स महति जीवितसंशये अवर्तत—(वह मृत्यु के अत्यन्त खतरे में है ।)
- (६१) इति कर्णपरस्परया श्रुतमस्माभिः—(ऐसा हमने जनोक्ति द्वारा सुना है ।)
- (६२) विना पुरुषकारेण दैवं न सिद्धचति—(ईश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं ।)
- (६३) भिन्नरुचिर्हि लोकः—(अपनी अपनी पसन्द अपना अपना स्वाद ।)
- (६४) इति राज्ञां शिरसि वामपादमाधाय—(इस प्रकार राजाओं को भली भांति नीचा दिखाकर ।)
- (६५) वाच्यतां याति—दोषभाजनं भवति—(दोषी बनता है ।)
- (६६) स्वगृहनिविशेषमत्र वस—(अपने घर की तरह यहाँ ठहरो ।)
- (६७) आकृतिरेवानुमाप्यत्यमानुषताम्—(उसकी शक्ल ही उसकी मनुष्य-भिन्न आकृति को बता रही है ।)
- (६८) रामस्य दैवदुनियोगः कोऽपि—(यह राम का मन्द भाग्य था ।)
- (६९) परिहासविजल्पितं सखे !—(हे मित्र ! हँसी में कहा गया है ।)
- (७०) विषयसुखनिरतो जीवितमत्यवाह्यत्—(विषय सुख में लीन होकर उसने जीवन बिताया ।)
- (७१) न चेदन्यकार्यातिपातः—(यदि और कोई कार्य न रहा ।)
- (७२) अमी विनोदनोपायाः संदीपना एव दुःखस्य—(ये विनोद के साधन दुःख को अधिक बढ़ा रहे हैं ।)
- (७३) ओजस्विता सा न परिहीयते शच्याः—(वह ओजस्विता में इन्द्राणी से कम नहीं ।)
- (७४) एष ते जीवितावधिः प्रवादः—(यह अपवाद जीवन पर्यन्त ठहरेगा ।)
- (७५) तुल्यप्रतिद्वन्द्वि बभूव युद्धम्—(युद्ध बराबर ताकत वाले वीरों में हुआ ।)
- (७६) कतिपयदिवसस्थायिनी यौवनश्रीः—(जवानी की शोभा बहुत थोड़े दिन ठहरती है ।)
- (७७) अनुदिवसं परिहीयसेऽङ्गैः—(दिन प्रतिदिन तू बड़ी कमजोर हो रही है ।)
- (७८) मनुष्याः स्वलनशोलाः—(गलती करना मनुष्य का स्वभाव ही है ।)
- (७९) सुखमुपदिश्यते परस्य—(दूसरे को उपदेश देना सरल है ।)
- (८०) परित्रायस्वैनं मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति—(इसको बचाओ जब तक यह किसी तपस्वी के हाथ में नहीं पड़ी ।)
- (८१) गतोऽसि सबत्स्वायुधविद्यासु परां प्रतिष्ठाम्—(समग्र शस्त्रविद्याओं में तू पारङ्गत हो गया है ।)
- (८२) गात्राणामनीशोऽस्मि संवृतः—(मेरा अपने अंगों पर भी स्वामित्व न रहा ।)

(८३) तस्य दश इयत्ताया परिच्छेतुं तालम्—(उसकी कीर्ति की कोई सीमा नहीं ।)

(८४) स न तस्या रुचये बभूव—(वह उस (स्त्री) की इच्छा के अनुकूल नहीं था ।)

(८५) बंधे मोक्षे चाधुना सा ते प्रभवति—(तुम्हें रोकने या छोड़ने में वही अब समर्थ है ।)

(८६) एको दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति—(अनेक गुणों में एक दोष छिप जाता है ।)

(८७) आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा—(आनन्द पूर्ण नेत्रों से ।)

(८८) मालती मूर्धनि चालयति—(मालती सिर हिलाती है ।)

(८९) न कामचोरी मयि शंकनीयः—(मेरे ऊपर व्यभिचार की शंका न करनी चाहिए ।)

(९०) अलमन्यथा गृहीत्वा—(ऐसा न समझो ।)

(९१) सर्वत्र नो वार्तमवेहि—(“हम सब प्रकार अच्छे हैं” ऐसा समझो ।)

(९२) खलः सर्वपमात्राणि परिच्छेद्वानि पश्यति ।

आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥

(दुष्ट पुरुष दूसरे के छोटे छोटे दोषों को भी देखता है

किन्तु अपने स्पष्ट दिखाई देते हुए दोषों को भी नहीं देखता ।)

(९३) त्वं मम जीवितसर्वस्वीभूतः—(तुम मेरे जीवन के एक मात्र धन हो ।)

(९४) वाच्यस्त्वया मद्रचनात्स राजा—(मेरी ओर से उस राजा को कहना ।)

(९५) अनुरूपभर्तृगामिनी—(अपने अनुकूल पति पाने वाली ।)

(९६) स सुहृद् व्यसने यः स्यात्—(आपत्तिकाल में साथ देने वाला ही मित्र होता है ।)

(९७) लघुसंदेशपदा सरस्वती—(संक्षिप्त पदों वाला संदेश ।)

(९८) कस्मिन्नपि पूजाहं अपराद्धा शकुन्तला—(किसी पूज्य व्यक्ति की शकुन्तला ने अवहेलना की है ।)

(९९) विहगाः समदुःखा इव चुक्रुशः—(मानो सहानुभूति भरे पक्षी चिल्लाने लगे ।)

(१००) तव न कदापि मया विप्रियं कृतम्—(मैंने कभी आपकी बुराई नहीं की ।)

(१०१) धारासारमहती वृष्टिर्बभूव—(मूसलाधार वर्षा हुई ।)

(१०२) तथा हृदयवल्लभाऽभिलिख्य कामदेवव्यपदेशेन सखीपुरतोऽपहृनुतः—

(उसने अपने प्राणप्रिय का चित्र खींचा किन्तु सखियों के आगे कामदेव कह कर छिपा दिया ।)

(१०३) ग्राहकैर्गृह्यते चोरः पदेन—(चोर पैरों के चिह्नों से पकड़ा जाता है ।)

(१०४) अन्तःपुरविरहपर्युत्सुको राजर्षिः—(राजर्षि अपनी स्त्रियों के वियोग से दुःखित है ।)

- (१०५) विललाप विकीर्णमूर्धजाः—(बालों को बिखेर कर उसने विलाप किया ।)
- (१०६) तेनाष्टौ परिगमितः समाः कथंचित्—(उसने किसी प्रकार आठ वर्ष बिताए ।)
- (१०७) उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः—(उपकार का बदला उपकार से चुकाना चाहिए ।)
- (१०८) हृदयंगमः परिहासः—(मनोहर हास्य ।)
- (१०९) मित्राणां तत्त्वनिक्षेपग्रीवा विपत्—(मित्रता को परखने में विपत्ति कसौटी है ।)
- (११०) यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्—(अंग अंग में जवानी भर गई है ।)
- (१११) अपत्यमन्योन्यसंश्लेषणं पित्रोः—(सन्तान माता पिता के बन्धन की गांठ है ।)
- (११२) दासी देवीभावं गमिता—(दासी रानी के पद को प्राप्त हुई ।)
- (११३) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी—(विद्या उसकी जिह्वा पर थी ।)
- (११४) ज्ञायतां कः कः कार्यार्थीति—(मालूम करो कौन कौन प्रार्थी है ।)
- (११५) बधिरात् मन्दकर्णः श्रेयान्—(बहरे से अर्थ बहुरा अच्छा है ।)
- (११६) शनैर्निद्रा निमीलितलोचनं मामकाशीत्—(निद्रा ने धीरे धीरे मेरी आंखें बन्द कर दीं ।)
- (११७) वरं मृत्युर्न पुनरपमानः—(अपमान से मौत अच्छी है ।)
- (११८) प्रस्तूयतां विवाहवस्तु—(विवाह के विषय का प्रारम्भ करो ।)
- (११९) वक्तुं सुकरमिदमध्यवसातुं तु दुष्करम्—(करने से कहना सरल है ।)
- (१२०) तद्वचः मम हृदये शल्यं जातम्—(उसके वचन ने मेरे हृदय पर बाण का काम किया ।)
- (१२१) तदहं विदधे तव स्तवं दमयन्त्याः सविधे—(तो मैं दमयन्ती के आगे तुम्हारी प्रशंसा करूँगा ।)
- (१२२) सकलरिपुजयाशा यत्र बद्धा सुतैस्ते—(जिसके ऊपर तुम्हारे लड़कों ने समग्र शत्रुओं को जीतने की आशा रखी हुई है ।)
- (१२३) इदं प्रायेण तव कर्ण-पथमायातम्—(शायद आपने यह सुन लिया हो ।)
- (१२४) हृदि एनां भारतीमुपधातुमर्हति—(इन शब्दों को भली भाँति याद रखिये ।)
- (१२५) अन्यथा एषा वीप्सा न चरितार्था भविष्यति—(नहीं तो यह पुनरुक्ति सफल न होगी ।)
- (१२६) केन वान्येन साधारणी करोमि दुःखम्—(अन्य किसके साथ मैं अपने दुःख को कम करूँ ।)
- (१२७) अस्मात्स्थानात्पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—(इस स्थान से एक कदम भी मत हिलो ।)
- (१२८) स्नेहस्यैकाग्रनीभूता—(एक मात्र स्नेह की वस्तु ।)

अशुद्धि-संशोधन ।

संस्कृत के अनुवाद करने के समय प्रायः विद्यार्थियों से जो व्याकरण की भूल हो जाती हैं, उनमें से कुछ उदाहरणार्थ शुद्ध और अशुद्ध वाक्यों द्वारा नीचे दिखाई गई हैं ।

लिङ्ग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ—

अशुद्ध वाक्य

- (१) भवान्मम मित्रः अस्ति
- (२) सः देवस्य सह गृहं गतः
- (३) दशरथः प्राणं तत्याज
- (४) श्यामो मम स्नेहपात्रः
- (५) राजन् तं भोजनं देहि
- (६) ते तव दाराः भवन्ति

शुद्ध वाक्य

- भवान् मम मित्रमस्ति ।
- स देवेन सह गृहं गतः ।
- दशरथः प्राणान् तत्याज ।
- श्यामो मम स्नेहपात्रम् ।
- राजन् तस्मै भोजनं देहि ।
- सा तव दाराः भवति ।

शब्दों के लिखने में अशुद्धियाँ—

अशुद्ध वाक्य

- (७) महाराजः आज्ञास्ति
- (८) परमात्मस्य महिमां पश्य
- (९) मम लक्ष्मी नास्ति
- (१०) भवानस्य किं नाम
- (११) मम मने सन्देहः
- (१२) नदीपथा नगरं गच्छ
- (१३) भूपत्यः आज्ञा अस्ति
- (१४) कौऽस्ति राजसखा
- (१५) स चन्द्रमां पश्यति
- (१६) मम सुहृदस्य गृहम्

शुद्ध वाक्य

- महाराजस्य आज्ञा अस्ति ।
- परमात्मनः महिमानं पश्य ।
- मम लक्ष्मीः नास्ति ।
- भवतः किं नाम ।
- मम मनसि सन्देहः ।
- नदीपथेन नगरं गच्छ ।
- भूपतेः आज्ञा अस्ति ।
- कौऽस्ति राजसखः ।
- स चन्द्रमसं पश्यति ।
- मम सुहृदः गृहम् ।

१—मित्रम् नपुंसक है और भवान् के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया लगती है ।

२—सह के साथ तृतीया । सः के आगे व्यञ्जन परे होने से विसर्ग का लोप होता है । ३—प्राण शब्द बहुवचनान्त है । ४—पात्र शब्द नपुंसकलिङ्ग है ।

५—दो धातु के कर्म में चतुर्थी होती है । ६—दार शब्द बहुवचनान्त है ।

७—राजन् शब्द महत् के साथ समस्त होने से अकारान्त हो जाता है । ८—

परमात्मन् की षष्ठी में परमात्मनः और महिमन् शब्द की द्वितीया में महिमानम् होता है । ९—लक्ष्मी शब्द के प्र० के एकवचन में विसर्ग होता है । १०—भवत् शब्द नपुंसकलिङ्ग है । ११—भवत् और मनस् शब्द हलन्त हैं । १२—पथिन् शब्द समास में अकारान्त हो जाता है । १३—पति शब्द समास में हरि के समान होता है । १४—सखि शब्द समास में अकारान्त होता है । १५—चन्द्रमस् शब्द हलन्त है । १६—सुहृद् शब्द भी हलन्त है ।

अशुद्ध

शुद्ध

(१७) भवान् केन पथेन यास्यति

भवान् केन पथा यास्यति ।

(१८) नरः जन्मे भवित् कुर्यात्

नरः जन्मनि भवित् कुर्यात् ।

सन्धि की अशुद्धियाँ—

(१९) अर्जुनोवाच

अर्जुन उवाच ।

(२०) कवामी यातः

कवी इमी यातः ।

(२१) अम्पजा गच्छन्ति

अमी अजा गच्छन्ति ।

(२२) नराक्षाकारय

नरान् आकारय ।

(२३) हे देवागच्छ

हे देव आगच्छ ।

(२४) मित्रं अहं अवदं

मित्रमहमवदम् ।

(२५) सो विप्र आगच्छति

स विप्र आगच्छति ।

(२६) सखि प्रियंवदा

सखी प्रियंवदा ।

(२७) स काश्मीरे अनीवसत्

स काश्मीरे न्यवसत् ।

(२८) भ्रातृ आदेशात्

भ्रातुरादेशात् ।

(२९) शृगालो पञ्चत्वं गतः

शृगालः पञ्चत्वं गतः ।

(३०) वालो सुखेन शेते

वालः सुखेन शेते ।

सर्वनाम तथा विशेष्य विशेषण की अशुद्धियाँ—

(३१) इमं पुस्तकं पश्य

इदं पुस्तकं पश्य ।

(३२) सर्वाः नराः गच्छन्ति

सर्वे नरा गच्छन्ति ।

(३३) स इमं स्त्रीमपश्यत्

स इमां स्त्रीमपश्यत् ।

(३४) किञ्चित् अन्यं वद

किञ्चिद् अन्यद् वद ।

(३५) सर्वाणां प्रियो हरिः

सर्वेषां प्रियो हरिः ।

(३६) त्रयः सुन्दरा बालिकाः

तिस्रः सुन्दर्यः बालिकाः ।

१७—पथिन् शब्द के तृ० के एकवचन में पथा होता है । १८—जन्मन् शब्द हलन्त है । १९—विसर्ग के लोप होने पर सन्धि नहीं होती । २०—ईकारान्त द्विवचन में सन्धि नहीं होती । २१—अदस् शब्द के मकारयुक्त ई में सन्धि नहीं होती । २२—दीर्घ स्वर से न् परे रहने पर द्वित्व नहीं होता । २३—संबोधन के अवर्ण की प्लुत स्वर के साथ सन्धि नहीं होती । २४—स्वर परे तथा पदान्त में 'म्' का अनुस्वार नहीं होता । २५—अकार भिन्न स्वर तथा व्यञ्जन परे होने पर 'स्' के विसर्ग का लोप हो जाता है । २६—२७—२८—एक पद में, धातुपसर्ग में और समास में सन्धि अवश्य होती है २९—३०—क, ख, ग, फ, प, स, श परे रहने पर विसर्ग का ओ नहीं होता । ३१—३२—३३—नासकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग में सर्वनाम शब्दों के लिङ्ग वचन विशेष्य के समान ही होंगे । ३४—नासकलिङ्ग में अन्त्यत् होता है । ३५—सर्वनाम शब्दों के रूप अकारान्त शब्द से भिन्न है । ३६—बालिका शब्द स्त्रीलिङ्ग है, अतः उसके विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग ही होंगे ।

अशुद्ध

- (३७) सुन्दरी अवलागणः याति
(३८) मे भ्राता आगतः
(३९) इमं फलम् अस्ति
(४०) स महति विपदि वर्तते

शुद्ध

- सुन्दरीऽवलागणो याति ।
मम भ्राता आगतः ।
इदं फलमस्ति ।
स महत्यां विपदि वर्तते

वर्ण तथा अव्ययों की अशुद्धियाँ—

- | | |
|---------------------------------|------------------------------|
| (४१) धनमान् बुद्धिवन्तं निन्दति | धनवान् बुद्धिमन्तं निन्दति । |
| (४२) अहं फलं गृहीतुमिच्छामि | अहं फलं ग्रहीतुमिच्छामि । |
| (४३) मार्गं हस्तिः पलायते | मार्गं हस्ती पलायते । |
| (४४) पितॄन् संतर्पय | पितॄन् संतर्पय । |
| (४५) शशी आकासे सुसोभते | शशी आकाशे सुशोभते । |
| (४६) धनुःसु शरान् योजय | धनुःषु शरान् योजय । |
| (४७) स मिथ्यां वदति | स मिथ्या वदति । |
| (४८) देवः च शिवः गच्छतः | देवः शिवश्च गच्छतः । |
| (४९) तु अहं न गमिष्यामि | अहं तु न गमिष्यामि । |
| (५०) प्रतिदिनस्य प्रातरि याति | प्रतिदिनं प्रातः याति |

क्रिया में काल आदि की अशुद्धियाँ—

- | | |
|----------------------------|---------------------------|
| (५१) त्वया गम्यसे | त्वया गम्यते |
| (५२) अहम् अत्र स्थायामि | अहमत्र तिष्ठामि । |
| (५३) स चन्द्रं दृश्यति | स चन्द्रं पश्यति । |
| (५४) तेन नगरे वस्यते | तेन नगरे उष्यते । |
| (५५) राज्ञा प्रजाः पाल्यते | राज्ञा प्रजाः पाल्यन्ते । |
| (५६) स मृगं विध्यति | तेन मृगः विध्यते । |

३७—गण शब्द पुल्लिङ्ग है। अतः उसके विशेषण सुन्दर शब्द भी पुल्लिङ्ग होगा। ३८ युष्मद् और अस्मद् शब्द को पद के आदि में होने पर 'ते, मे' आदेश नहीं होते। ३९...फल प्रथमा विभक्ति में है, इसलिए उसका विशेषण भी प्रथमा में होगा। ४०—विपद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है, इसलिए महत् शब्द की भी स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी विभक्ति ही होगी। ४१—यदि उपधा में अवर्ण हो तो म् का वृद्धो जाता है। ४२—ग्रह होता है। ४३—यह इन् प्रत्ययान्त शब्द है। ४४—पदान्त में न् का ण् नहीं होता। ४५—तालव्य (श) है। ४६—विसर्ग बीच में होने पर भी स् को ष् हो जाता है। ४७ अव्यय में कोई विभक्ति नहीं होती। ४८—च दूसरे शब्द के बाद आता है। ४९—चेत्, तु, च, वा आदि वाक्यारम्भ में नहीं आते। ५०—अकारान्त अव्ययों में तृतीया, पंचमी और सप्तमी के सिवाय अम् होता है। ५१—भाववाच्य में सदा प्र० पु० के एकवचन में क्रिया होती है। ५२—५३—वर्तमानकाल में स्था को तिष्ठ् और दृश् को पश्य् हो जाता है। ५४—वस् का भाव में उष् हो जाता है। ५५—कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है। ५६—दिवादिगणीय धातुओं के कर्तृवाच्य में भी 'य्' लगता है।

अशुद्ध

- (५७) देवः भृत्यं भारं नाययति
(५८) प्रीतः यतिः प्रतस्थौ
(५९) स माम् अवदत् स्म
(६०) तेन वाणीं श्रोतुमिष्यते

शुद्ध

- देवः भृत्येन भारं नाययति ।
प्रीतः यतिः प्रतस्थे ।
स माम् अवदत् ।
तेन वाणीं श्रोतुमिष्यते ।

कृदन्त प्रत्ययों की अशुद्धियाँ—

- | | |
|-------------------------------|------------------------------|
| (६१) त्वाम् अगृह्य न यास्यामि | त्वामगृहीत्वा न यास्यामि । |
| (६२) भिक्षां ददन् बालः हसति | भिक्षां ददत् बालः हसति । |
| (६३) गृहम् आगत्वा पठामि | गृहमागत्य पठामि । |
| (६४) स पुष्पं दृष्ट् | तेन पुष्पं दृष्टम् । |
| (६५) सा बालकं दृष्टवान् | सा बालकं दृष्टवती । |
| (६६) स पाठः पठित्वा भुङ्क्ते | स पाठं पठित्वा भुङ्क्ते । |
| (६७) अहं बालं वक्तुमशृणवम् | अहं बालं ब्रूवन्तमशृणवम् । |
| (६८) त्वया वचांसि श्रोतव्यम् | त्वया वचांसि श्रोतव्यानि । |
| (६९) अहं देवं जिज्ञासितः | मया देवः जिज्ञासितः । |
| (७०) स आगत्य अहं गमिष्यामि | तस्मिन्नागते अहं गमिष्यामि । |
| (७१) देवः गुरुं सेवन् तिष्ठति | देवः गुरुं सेवमानः तिष्ठति । |
| (७२) स पुस्तकं पठनं करोति | स पुस्तकस्य पठनं करोति । |
| (७३) अन्नपाचकः खादति | अन्नस्य पाचकः खादति । |

स्त्रीप्रत्ययान्त तथा समासान्त पदों की अशुद्धियाँ—

- | | |
|-------------------------|----------------------|
| (७४) बालकः हंसां पश्यति | बालकः हंसीं पश्यति । |
| (७५) सा अश्वी गच्छति | सा अश्वा गच्छति । |

५७—नी धातु के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया होती है। ५८—प्र उपसर्ग लगने से स्था उभयपदी है। ५९—भूतकाल की क्रिया के साथ स्म नहीं लगता। ६०—यदि तुम् वाच्य का और क्रिया का एक ही कर्म हो तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। ६१—नञ् समास में ल्यप् नहीं होता। ६२—जुहोत्यादिगणीय धातु के साथ नुम् नहीं होता। ६३—उपसर्ग पूर्व होने से क्त्वा को ल्यप् होता है। ६४—कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है। ६५—कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा और उसी के अनुसार क्रिया के लिङ्ग वचन होते हैं। ६६—क्त्वा, शतृ, शानच् और तुम् के कर्म में द्वितीया होती है। ६७—एक कर्ता में तुमन् होता है, किन्तु दो क्रियाएँ एक समय होने से शतृ या शानच् होते हैं। ६८—कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है। ७०—एक कर्ता न होने से क्त्वा नहीं होता। ऐसी जगहों पर भाव में सप्तमी होती है। ७१—आत्मनेपदी से शानच् और परस्मैपदी से शतृ प्रत्यय होते हैं। ७२—पठन के योग में षष्ठी होती है। ७३—तृच्, अक् के प्रत्ययान्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता। ७४—७५—हंस का स्त्रीलिङ्ग 'हंसी' और अश्व का 'अश्वा' होता है।

अशुद्ध

- (७६) चन्द्रवदनीं वालां पश्य
(७७) नृत्यती वाला आगता
(७८) मया रुदन्ती स्त्री दृष्टा
(७९) महद्राजा अद्यैव गतः ।
(८०) अहोरात्र्यी वर्तते

शुद्ध

- चन्द्रवदनां वालां पश्य ।
नृत्यन्ती वाला आगता ।
मया रुदती स्त्री दृष्टा ।
महाराजः अद्यैव गतः ।
अहोरात्रः (त्रं) वर्तते ।

हिन्दी भाषा बनाओ :-

१—हा कथं महाराजदशरथस्य धर्मदाराः प्रियसखी मे कौशल्या । क एतत्प्रत्येति सैवेयमिति । ... धिक् प्रहसनम् । अयमृष्यशृंगाश्रमाश्चरुवन्तीपुरस्कृतान् महाराजदशरथस्य दारानधिष्ठाय भगवान् वसिष्ठः प्राप्तः । तत्किमेवं प्रलपामि । (उत्तरराम च० ४)

२—चन्द्रापीडस्य सहपांशुकीडिततया सहसंबृद्धतया च सर्वविश्रम्भस्थानं द्वितीय-मिव हृदयं वैशंपायनः परं मित्रमासीत् । (कादम्बरी ७६ पृ०) ।

३—अथ दुर्लङ्घ्यशशासनतया भगवतो मनोभुवो मन्दजननतया च मधुमासस्या-तिरमणीयतया च तस्य प्रदेशस्याविनयबहुलतया चाभिनदयौवनस्य चञ्चलप्रकृतितया चेन्द्रियाणां दुर्निवारतया च विषयाभिलाषाणां तथा भवितव्यतया च तस्य तस्य वस्तुनः तमपि तरलतामनयदनङ्गः । (का० १४३)

४—स्वयमेवात्पद्यन्ते एवंविधाः कुलपांसवो निःस्नेहाः पशवो येषां क्षुद्राणां प्रज्ञा पराभिसन्धानाय न ज्ञानाय, पराक्रमः प्राणिनामुपघाताय नोपकाराय, धनपरित्यागः कामाय न धर्माय, किं बहुना, सर्वमेव येषां दोषाय न गुणाय । (कादम्बरी २८८ पृ०)

५—राजा विस्फारितेन स्निग्धेन चक्षुषो पिवन्निवालपन्निव स्पृशन्निव मनोरथ-सहस्रप्राप्तदर्शनं सस्पृहमीक्षमाणस्तनयाननं मुमुदे कृतकृत्यं चात्मानं मेने । (कादम्बरी ७२)

६—सर्वथा निष्प्रतीकारेयमापदुपस्थिता । किमिदानीं कर्तव्यं कां दिशं गन्तव्यमि-त्येते चान्ये च विषण्णहृदयस्य मे सङ्कल्पाः प्रादुरासन् । (कादम्बरी १५७)

७—राजवाहनो रसालतरुषु कौकिलादीनां पक्षिणामालपाञ्चरात्रं श्रावं विकसि-तानि सरांसि दर्शं दर्शममदलीलया ललनासमीपमवाप । (द० कु० १-५)

७६—दो से अधिक स्वर वाले शब्दों में 'ई' नहीं होता । ७७—नृत् धातु से नुम् होता है । ७८—रुद् से नुम् नहीं होता । ७९—समास में महत् शब्द का महा हो जाता है । ८०—समाहार द्वन्द्व में अन्त वाले शब्द में 'अ' लगकर पुल्लिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग का एक वचन हो जाता है ।

१—दार=स्त्री । २—पांशु=धूलि । विश्रम्भस्थान=विश्वासपात्र । ३—मनोभू या अनङ्ग=कामदेव । मधुमास=वसंत । ४—अभिसन्धान=छल । ५—विस्फारित=खोला हुआ । ईक्षु=देखना । ६—निष्प्रतीकार=इलाज के बिना । विषण्ण=दुःखित । ७—ललना=स्त्री ।

८—अतिप्रबलपिपासावसन्नानि गन्तुमल्पमपि मे नालमङ्गकानि । अलमप्रभुर-
स्म्यात्मनः । सीदति मे हृदयम् । अन्धकारतामुपयाति चक्षुः । अपि नाम खलो
विविरनिच्छतोऽपि मे मरणमद्यैवोपपादयेत् । (का० ६)

९—अथ धर्मानुरोधादितरपक्षावलम्बनद्वारेण मृत्युमङ्गीकारोमि एवमपि प्रथमं
तावत्स्वयमागतस्य तत्रभवतः कपिञ्जलस्य प्रणयप्रसरभङ्गः । पुनरपरं यदि तस्य
जनस्य मत्कृतादाशाभङ्गात्प्राणविपत्तिरुपजायते तदपि मुनिजनवधजनितं महदेनो
भवेत् । (का० १६०)

१०—सखे पुण्डरीक सुविदितमेतन्मम । केवलमिदमेव पृच्छामि यदेतदारब्धं
भवता किमिदं गुह्यमिदंदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमुत मोक्षप्राप्तियुवितरियमाहो-
स्विदन्यो नियमप्रकारः ? (का० १५५)

११—एवं कदलीदलेनानवरतं बीजयतः समुद्रभूम्ने मनसि चिन्ता । नास्ति खल्व-
साध्यं मनोभुवः । वचायं हरिण इव वनवासनिरतः स्वभावमुग्धो जनः, वद च
विविधविलासरसराशिर्गन्धर्वराजपुत्री महाश्वेता ! (का० १५७)

१२—स मद्बचनानन्तरमेव न वेत्ति किमसह्यवृत्तेर्मदनज्वरस्य वेगादुत, सद्योविपा-
कस्यात्मनो दुष्कृतस्य गौरवादाहोस्विन्मद्वचस एव सामर्थ्यादाच्छिन्नमूलस्तरिव
क्षितावपतत । (का०)

१३—तदेवं प्रायेऽतिकुटिलकण्टचेष्टासहस्रदारुणे राज्यतन्त्रेऽस्मिन् महामोहान्ध-
कारकारिणि च यौवने कुमार तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यते जनैर्नोपालभ्यसे सुहृद्भि-
र्नाक्षिप्यसे विषयैर्न विकृष्यसे रागेण नापह्लियसे सुखेन । (का० १०९)

(किरातार्जुनीये)

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किं प्रभुः ।

सदानुकूलेषु हि कुर्वते रति,
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसंपदः ॥ १ ॥

मदसिक्तमुखैर्मृगाधिपः करिभिर्वर्तयते स्वयं हतैः ।

लवयन् खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिमन्यतः ॥ २ ॥

किमपेक्ष्य फलं पयोधरान्ध्वनतः प्रार्थयते मृगाधिपः ।

प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नति यया ॥ ३ ॥

८—अवसन्न=कमजोर । सीद=दुःखित होना । खल=दुष्ट । विधि=
भाग्य । ९—अनुरोध=लिहाज । प्रणय=प्रेम । एनस्=पाप । १०—महास्वित=
अधवा । ११—मदन=काम । विपाक=फल । दुष्कृत=पाप । क्षिति=पृथ्वी । १२—
कदली=केला । अनवरत=निरन्तर । विलास=कौतुक । १३—दारुण=दुःखप्रद ।
उपालभ=ताना मारना ।

१—अमात्य=मन्त्री । २—मृगाधिप=सिंह, करिन्=हाथी, भूति=ऐश्वर्य ।
३—पयोधर=मेघ, प्रकृति=स्वभाव, महीयस्=महापुरुष ।

(शकुन्तलानाटके)

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्ति सपत्नीजने
 भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः ।
 भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोग्येष्वनुत्सेकिनी
 यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ॥ ४ ॥
 पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
 नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
 आद्ये वः कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥ ५ ॥

स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीषु, संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः ।
 प्रागन्तरिक्षगमनात्स्वमपत्यजातमन्येद्विजैः परभूतः खलु पोषयन्ति ॥ ६ ॥
 यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया ।
 अथ तु वेत्सि शुचिन्नतमात्मनः पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम् ॥ ७ ॥
 सा निन्दन्ती स्वानि भाग्यानि बाला बाहूत्क्षेपं रोदितुं च प्रवृत्ता ।
 स्त्रीसंस्थानं चाप्सरस्तीर्थमारादुत्क्षिप्येतां ज्योतिरेकं जगाम ॥ ८ ॥

(कुमारसम्भवे)

क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति ।
 तावत्स वह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार ॥ ९ ॥
 तमवेक्ष्य शरोद सा भृशं स्तनसंवाधमुरो जघान च ।
 स्वजनस्य हि दुःखमप्रतो विवृतद्वारमिवोपजायते ॥ १० ॥
 त्रिधिप्रयुक्तां परिगृह्य सत्क्रियां परिश्रमं नाम विनीय च क्षणम् ।
 उमां स पश्यन्तुर्नैव चक्षुषा प्रचक्रमे वक्तुमनुज्झितक्रमः ॥ ११ ॥
 अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते ।
 अपि स्वशक्त्या तपसे प्रवर्तसे शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ॥ १२ ॥
 किमित्यपास्याभरणानि यौवने धृतं त्वया वार्धक्यशोभि वल्कलम् ।
 वद प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्यरुणाय कल्पते ॥ १३ ॥
 वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु ।
 वरेषु यद्बालमृगाक्षि मृग्यते तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने ॥ १४ ॥
 द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीयतां समागमप्रार्थनया कपालिनः ।
 कला च सा कान्तिमती कलावतस्त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी ॥ १५ ॥

४—प्रतीप=विपरीत । अनुत्सेक=निरभिमान । ६—अन्तरिक्ष=आकाश ।
 द्विज=पक्षी । परभूत=कोयल । ७—क्षितिप=राजा । शुचि=पवित्र । दास्य=
 दासता । ९—मरुत्=देवता, ख=अकाश, वह्नि=आग, भव=शिव । ११—ऋजु
 =सीधा । १३—आभरण=जवर, वल्कल=छाल, विभावरी=रात्रि, प्रदोष=निशा
 ना मुख । १४—वसु=धन, व्यस्त=अलग अलग, त्रिलोचन=शिव । १५—कपालिन्=
 शव, कौमुदी=रोशनी ।

उवाच चैनं परमार्थतो हरं न वेत्ति नूनं यत एवमात्थ माम् ।
अलोकसामान्यमचिन्त्यहेतुकं द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम् ॥ १६ ॥
निवार्यतामालि किमप्ययं बटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः ।
न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक् ॥ १७ ॥
इतो गमिष्याम्यथवेति वादिनी चचाल बाला स्तनभिन्नबल्कला ।
स्वरूपमास्थाय च तां कृतस्मितः समाललम्बे वृषराजकेतनः ॥ १८ ॥

(रघुवंशे)

अलं महीपाल तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् ।
न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मास्तस्य ॥ १९ ॥
एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च ।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् ॥ २० ॥
वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती पतिमप्यपातयत् ।
ननु तैलनिषेकविन्दुना सह दीपाचिरुपेति मेदिनीम् ॥ २१ ॥
विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय धीरताम् ।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥ २२ ॥
स्रगियं यदि जीवितापहा हृदये किं निहिता न हन्ति माम् ।
विषमप्यमृतं ववचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ॥ २३ ॥
कुसुमान्यापि गात्रसङ्गमात्प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।
न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः ॥ २४ ॥
अथवा मम भाग्यविप्लवादशनिः कल्पित एष वेधसा ।
यदनेन तरुर्न पातितः क्षपिता तद्विटपाश्रिता लता ॥ २५ ॥
गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ ।
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वत किञ्च मे हृतम् ॥ २६ ॥

(नेषधे)

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी ।
गतिस्तयोरेष जनस्तमदयन्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि न ॥ २७ ॥
पदे पदे सन्ति भटा रणोद्धृता नतेषु हिसारस एष पूयते ।
धिगीदृशं ते नृपते कुविक्रमं कृपाश्रये यः कृपणे पतत्रिणि ॥ २८ ॥
इत्थममुं विलपन्तममुञ्चद्दीनदयालुतयावनिपालः ।
रूपमदर्शं धृतोऽसि यदर्थं गच्छ यथेच्छमथेत्यभिधाय ॥ २९ ॥

१७—आली=सखी, बटु=गह्वराचारी । १८—वृषराजकेतन=शिव । १९—
अहम्=वेग । २१—मेदिनी=पृथिवी । २२—अयस्=लोहा । २३—स्रक्=माला
२५—अशनि=वज्र । २७—वरटा=हंसी । २८—पतत्रिन्=पक्षी । २९—
अवनिपाल=राजा [नल] ।

लोकोक्ति-संग्रहः Proverbs.

- (१) 'इतो भ्रष्टस्ततो नष्टः' (धोत्री का कुत्ता घर का न घाट का ।)
A man falls between two stools.
- (२) 'कञ्चुकमेव निन्दति पीनस्तनी नारी' (नाच न जाने आंगन टेढ़ा ।)
A bad workman quarrels with his tools.
- (३) 'आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति' (होनहार विरवान के हाँत चौकने पात ।) Coming events cast their shadows before.
- (४) 'निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्' (ऊँची दूकान फीका पकवान ।)
Great cry and little wool.
- (५) 'अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति' (प्राण जाय पर वचन न जाय ।)
The virtuous make good their promise.
- (६) 'नवांगनानां नव एव पन्थाः' (हर एक अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाता है ।) New Lords new laws.
- (७) 'गतस्य शोचनं नास्ति' या 'निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्' अथवा 'काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनासि किम् ?' (अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।) It is no use crying over spilt milk.
- (८) 'छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति' या 'विपद विपदमनुवध्नाति' (गरीबी में आटा गीला, या ताल से गिरा खजूर पे अटका ।) Misfortunes never come alone.
- (९) 'न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे' या 'शिरसि फणी दूरे तत्प्रतीकारः' (जब तक हिमालय से सज्जोवनी आवे बीमार मर जावे ।) While the grass grows the horse starves.
- (१०) 'अतिपरिचयादवज्ञा सन्ततगमनादनादरो भवति' (मान घटे नित के घर जाये ।) A constant guest is never welcome.
- (११) 'याचको याचकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते' (कुत्ता कुत्ते का बंदी होता है ।) Two of the traders seldom agree.
- (१२) 'महाजनों येन गतः स पन्थाः' (बड़ों की राह भली ।) Do what the great men do.
- (१३) 'इवा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्पुपानहम्' या 'सुतप्तमपि पानीयं समयस्थेव पावकम्' (आदत सिर के साथ जाती है) या 'सुतप्तमपि पानीयं समयस्थेव पावकम्' (आदत सिर के साथ जाती है)
- (१४) 'निरस्तपादये देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' या 'यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि' (अन्धों में काना राजा ।) Figure among ciphers.
- (१५) 'अर्थो घटो घोषमुपैति नूनम्' (थोथा चना बाजे घना ।) An empty vessel makes much noise.
- (१६) 'इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैः गुणैः' (अपने मुँह मियां मेट्ट—अपने मुँह अपना बड़ाई शोभा नहीं देती ।) Self praise is no recommendation.

(१७) 'कण्टकेनैव कण्टकम्' या 'पिशाचानां पिशाचभाषयैवोत्तरं देयम्' (कांटे से कांटा निकाला जाता है ।) One nail drives out another.

(१८) 'यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम्' (जैसा करोगे वैसा भरोगे ।) As you sow so shall you reap.

(१९) 'बह्वारम्भे लघुक्रिया' (खोदा पहाड़ निकला चूहा ।) Much ado about nothing.

(२०) 'हिताहितं वीक्ष्य निकाममाचरेत्' (जितनी चादर देखो उतने पर फैलाओ ।) Cut your coat according to your cloth.

(२१) 'सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति' (कोई अपनी लस्सी को खट्टी नहीं कहता ।) Every potter praises his own pot.

(२२) 'न हि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते' (सेवा बिन मेवा नहीं ।) No pains no gains.

(२३) 'महान् महत्येव करोति विक्रमम्' अथवा 'अनुहुंकुस्ते घनध्वनिं नतु गोमायुस्तानि केसरो' (शेर बादल गरजने पर ही गरजता है ।) The great display their power only before the great.

(२४) 'बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः' या 'गुणो गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः' (हीरे की परख जीहरी ही जाने ।) The mighty knows what might is and not the weak.

(२५) 'अपि घन्वन्तस्त्रिद्वेष्टः किं करोति गतायुषि' या 'मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्' (एक दिन सब को मरना है ।) Death is inevitable to every mortal.

(२६) 'या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते' या ।

अथवा 'भूयोऽपि सिक्तः पयसाघृतेन न निम्बवक्षो मधुरत्वमेति' ।

अथवा 'आकण्ठ जलमग्नीऽपि श्वालिहृत्येव जिह्वया' ।

अथवा 'किमदितोऽपि कस्तूर्या लघुतो याति सौरभम् ?

'नहि कस्तूरिकामोदः शपथेन निवार्यते' (आदत सिर के साथ जाती है ।) It is hard to break an old hog of an ill custom.

(२७) 'पाणी पयसा दग्धे तक्रं फूकृत्य पामरः पिबति' (दूध का जला छाल को फूक फूक कर पीता है ।) A burnt child dreads the fire.

(२८) 'निजसदननिविष्टः श्वो न सिहायते किम् ?' (अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।) Every cock fights best on its own dung-hill.

(२९) 'दुर्बलस्य बलं राजा' (निर्बल के बल राम ।) The king is the strength of the weak.

(३०) 'दूरतः पर्वताः रम्याः' (दूर के ढोल सुहावने ।) Distance lends enchantment to the view.

(३१) 'अर्थमनर्थं भावय नित्यम्' (दौलत का नशा बुरा है ।) Wealth is the root of all calamities.

(३२) 'कष्टः खलु पराश्रयः' (पराधीन सपनेहु सुख नहीं ।) Dependence is indeed painful.

(३३) 'कुपुत्रेण कुलं नष्टम्' (डूबा वंस कबीर का उपजे पूत कमाल ।) A bad descendant destroys the life.

(३४) 'को धर्मः कृपया विना' (दया धर्म का मूल) No pity without mercy.

(३५) 'अल्पविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' (बूंद बूंद ते घट भरे) Little drops make the pitcher full.

(३६) 'पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्' (जो तू सोंचे दूध से नीम न पीठो होय ।) Snake's venom increases by drinking milk.

(३७) 'वीरभोग्या वसुधरा' 'बली बलीयान्न तु नीतिमार्गः' (जिसकी लाठी उसकी भैंस) Might is right or The brave rule the earth.

(३८) 'बालानां रोदनं बलम्' (बालक को बल रोदन एका ।) Cry is the only strength of a child.

(३९) 'सत्संगजानि निधनान्यपि तारयन्ति' 'कर्तव्यो महदाश्रयः' 'हरेः पदावतिः श्लाघ्या न श्लाघ्यं खररोहणम्' (बड़ों के सहारे छोटे भी तर जाते हैं ।) It's wise to take refuge under the great.

(४०) 'एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा' (एक पत्थ दो काज ।) To kill two birds with one stone.

(४१) 'काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तं रम्या' अवथा 'पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः' (नीम हकीम खतरा जान ।) Little knowledge is a dangerous thing.

(४२) 'अध्रुवाद ध्रुवं वरम्' 'वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः' (नी नकद, न तेरह उधार ।) A bird in hand is better than two in the bush.

(४३) 'नवा वाणी मुखे मुखे' (पाचों अंगुलियां बारबर नहीं ।) There are men and men.

(४४) 'गतः कालो न चायाति' (गया वक्त फिर हाथ आता नहीं है ।) Time once past cannot be recalled.

(४५) 'अतिदपे हता लङ्का' (गरूर का सिर नीचा ।) Pride goth before a fall.

(४६) 'एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते नैव प्राणिनः' (एक हाथ से ताली नहीं बजती ।) It takes two to make a row.

(४७) 'मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभागभवेत्' 'शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्' (सहज पके सो मीठा होय ।) Slow and steady wins the race.

(४८) 'न मुनिः पुनरायातो न चासौ वर्धते गिरिः' (न नौ मन तेल होना न राधा नाचेगी ।) If the sky falls we shall catch larks.

(४९) 'गतस्य शोचनं नास्ति' (बीती ताहि बिसारि दे ।) Let bygone be bygone.

(५०) 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति' (एक मछली सारे ताल को गन्दा करती है ।) A black sheep infects the whole flock.

(५१) 'वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मनीषिणः' (जैसा देश वैसा भेष ।) When you are at Rome, do as the Romans do.

(५२) 'यथा वृक्षस्तथा फलम्' (जैसा मुंह वैसी चपेट ।) Thank a man according to his rank.

(५३) 'ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा वर्षन्ति नैतादृशाः' (जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।) Barking dogs seldom bite.

(५४) 'दानिद्रघदोषो गुणराशिनाशी' (गरीब की जोरु सब की भात्री ।) A light purse is a heavy curse.

(५५) 'चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च' (चार दिन की चांदनी फिर अन्धेरी रात ।) To every spring there is an autumn.

(५६) 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवेते ।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ॥'

(दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम ।) Between two stools a man falls to the ground.

(५७) 'प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया' (छज्जू जैसा सुख चुबारे न बल्ख न बुखारे) East or West home is the best.

(५८) 'हा हन्त सम्प्रति गतानि दिनानि तानि' (वे दिन गये जब लखीलखां फाखता उड़ाया करते थे) Those palmy days are gone.

(५९) 'विश्वस्तेषु च वञ्चना परिभवश्चौर्यं स शौर्यं हि तत् ।
or (अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ॥')

(विश्वासघात महापाप है ।) It is a great sin to harm a person who comes for shelter.

(६०) 'खलः करोति दुर्वृत्तम् तद्धि फलति साधुषु ।
दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महोदधेः ॥'

(लरें लोह पाहन दोऊ बीच रुई जरि जाय ।) Wicked person commits a fault and a good man suffers for it.

(६१) 'भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः' (जेहि के कारण मुँड मुँडावा, खो दुख मोरे आगे आवा ।) Even in using bitter pills one is not free from disease.

(६२) 'स सुहृद् व्यसने यः स्यात्' (बक्त पड़े पर जानिए को बैरी को पीत ।) A friend in need is a friend indeed.

(६३) 'विषकुम्भं पयोमुखम्' (मुंह में राम राम बगल में छुरी) A wolf in lamb's clothing.

(३२) 'कष्टः खलु पराश्रयः' (पराधीन सपनेहु सुख नहीं ।) Dependence is indeed painful.

(३३) 'कुपुत्रेण कुलं नष्टम्' (डूबा वंस कबीर का उपजे पूत कमाल ।) A bad descendant destroys the life.

(३४) 'को धर्मः कृपया विना' (दया धर्म का मूल) No pity without mercy.

(३५) 'जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' (बूँद बूँद ते घट भरे) Little drops make the pitcher full.

(३६) पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्' (जो तू सोँचे दूध से नीम न मीठो होय ।) Snake's venom increases by drinking milk.

(३७) 'वीरभोग्या वसुन्धरा' 'बली बलीयान्न तु नीतिमार्गः' (जिसकी लाठी उसकी भैंस) Might is right or The brave rule the earth.

(३८) 'बालानां रोदनं बलम्' (बालक को बल रोदन एका ।) Cry is the only strength of a child.

(३९) 'सत्संगजानि निवनान्यपि तारयन्ति' 'कर्तव्यो महदाश्रयः' 'हरेः पदाहतिः श्लाघ्या न श्लाघ्यं खररोहणम्' (बड़ों के सहारे छोटे भी तर जाते हैं ।) It's wise to take refuge under the great.

(४०) 'एका क्रिया द्वयार्थकरी प्रसिद्धा' (एक पत्थ दो काज ।) To kill two birds with one stone.

(४१) 'काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तं रम्या' अवथा 'पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः' (नीम हकीम खतरा जान ।) Little knowledge is a dangerous thing.

(४२) 'अधुनाद् ध्रुवं वरम' 'वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः' (नी नकद, न तेरह उवार ।) A bird in hand is better than two in the bush.

(४३) 'नवा वाणी मुखे मुखे' (पाचों अंगुलियां बारबर नहीं ।) There are men and men.

(४४) 'गतः कालो न चायाति' (गया वक्त फिर हाथ आता नहीं है ।) Time once past cannot be recalled.

(४५) 'अतिदर्यं हता लङ्का' (गरूर का सिर नीचा ।) Pride goth before a fall.

(४६) 'एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते नैव प्राणिनः' (एक हाथ से ताली नहीं बजती ।) It takes two to make a row.

(४७) 'मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभाग्भवेत्' 'शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्' (सहज पके सो मीठा होय ।) Slow and steady wins the race.

(४८) 'न मुनिः पुनरायातो न चासौ वर्धते गिरिः' (न नी मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।) If the sky falls we shall catch larks.

(४९) 'गतस्य शोचनं नास्ति' (बीती ताहि बिसारि दे ।) Let bygone be bygone.

(५०) 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति' (एक मछली सारे ताल को गन्दा करती है ।) A black sheep infects the whole flock.

(५१) 'वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मनीषिणः' (जैसा देश वैसा भेष ।) When you are at Rome, do as the Romans do.

(५२) 'यथा वृक्षस्तथा फलम्' (जैसा मुंह वैसी चपेट ।) Thank a man according to his rank.

(५३) 'ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा वर्षन्ति नैतादृशाः' (जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।) Barking dogs seldom bite.

(५४) 'दानिद्वयदोषो गुणराशिनाशी' (गरीब की जोरू सब की भात्री ।) A light purse is a heavy curse.

(५५) 'चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च' (चार दिन की चांदनी फिर अन्धेरी रात ।) To every spring there is an autumn.

(५६) 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते ।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ॥'

(दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम ।) Between two stools a man falls to the ground.

(५७) 'प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया' (छज्जू जैसा सुख चुबारे न बल्ख न बुखारे) East or West home is the best.

(५८) 'हा हन्त सम्प्रति गतानि दिनानि तानि' (वे दिन गये जब लखीलखां फाखता उड़ाया करते थे) Those palmy days are gone.

(५९) 'विश्वस्तेषु च वञ्चना परिभवश्चर्यं स शौर्यं हि तत् ।
or (अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पीरुषम् ॥')

(विश्वासघात महापाप है ।) It is a great sin to harm a person who comes for shelter.

(६०) 'खलः करोति दुर्वृत्तम् तद्धि फलति साधुषु ।
दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महोदधेः ॥'

(लरें लोह पाहन दोऊ बीच रुई जरि जाय ।) Wicked person commits a fault and a good man suffers for it.

(६१) 'भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः' (जेहि के कारण मुँड मुँडावा मरे दुख मोरे आगे आवा ।) Even in using bitter pills one is not free from disease.

(६२) 'स सुहृद् व्यसने यः स्वात्' (बकत पड़े पर जानिए को बैरी को सीत ।) A friend in need is a friend indeed.

(६३) 'विषकुम्भं पयोमुखम्' (मुंह में राम राम बगल में छूरी) A wolf in lamb's clothing.

(६४) 'कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा' (हर रोज ईद कहां)
Christmas comes but once a year.

(६५) 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्थे त्यजति पण्डितः' (भागते चोर की लंगोटी ही सही ।) Something is better than nothing.

(६६) 'पङ्को हि न भसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि' (आस्मान पर थूका अपन सिर ।) Slander hurts the slanderer.

(६७) 'न विडालो भवेद्यत्र तत्र क्रीडन्ति मूषकाः' (मियां घर नहीं बीबी को डर नहीं ।) When the cat is away the mice will play.

(६८) 'यत्र चोरा न विद्यन्ते तत्र किं स्यान्निरिक्षकैः' (मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजो ।) Where there is peace at home there is no need of a judge.

(६९) 'को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः' (लेने देने से सभी अपने हो जाते हैं ।) Wealth is a great attraction. Friends are plenty when the purse is full.

(७०) 'प्रक्षालनाद्विपङ्क्तस्य दूरादस्पशेनं वरम्' (पंर कीचड़ में डाल कर धोने से कीचड़ में न डालना अच्छा है ।) Prevention is better than cure.

(७१) 'उद्वाणां च विवाहोऽस्ति गर्दभा गीतगायकाः' (जैसा घर वैसा वर, जैसे को तैसा मिले ।) It is only asses that sing at the marriage of camel. or Birds of the same feather flock together.

(७२) 'अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति' (बुरे का साथी कौन है ।) None would like to be the friend of a wicked person.

(७३) 'अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति' (आलस बुरी बला है ।) Idleness is a great disease.

(७४) 'पावका लोहतंगेन मुद्गरैरभिह्वयते' (गेहूं के संग धुन पिसें) One is to suffer when associated with another.

(७५) 'नीचो वदति न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव' अथवा 'ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम्' (सज्जन करते हैं कहते नहीं ।) Good men prove their usefulness by deeds, not by words.

(७६) 'पन्थनम्रष्टो गृहकपोतश्चिरलाया मुखे पतितः' (भाड़ से निकसा आन में पड़ा ।) He has escaped one danger only to fall into another.

(७७) 'रत्नाकरो जलनिधिरित्येते वि धनाशया ।

वनं दूरेऽस्तु वदन्मग्निर क्षारवारिभिः ॥'

(चौबे गये छव्वे बनने दुव्वे बन के आए ।) One trying for better got worst.

(७८) 'आपदामापतन्तीनां हिनोऽप्यायात्यहेतुताम्' (आपत्ति पड़ने पर अपना ही पराया हो जाता है ।) When calamities fall upon one, his own friends become his enemies.

(७९) 'अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः ।
(अगाध (सागर) जल में विचरण करता हुआ भी रोहित (महामत्स्य)
अभिमान नहीं करता ।)

(८०) 'अनुभवति हि मूढनां पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितोषं छायाया संश्रितानाम् ।'
(वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप लेता है, किन्तु अपने आश्रितों का
ताप अपनी छाया से दूर करता है ।)

(८१) 'अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्तं निरोद्धुं क्षमः ।'

(यदि राजा ही अन्याय करता है तो उसे कौन रोक सकता है ।)

(८२) 'अपि मृदमुपयान्तो वाग्विलासैः स्वकीयेः,
परभणितिषु तृप्तिं यान्ति सन्तः कियन्तः ?'

(अपनी रचनाएं तो सभी को अच्छी लगती हैं किन्तु ऐसे सज्जन बहुत कम हैं
जो दूसरों की रचनाओं को सुन कर प्रसन्न होते हैं ।)

(८३) 'अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्त्रियां लभते ।

(अपनी शक्ति का परिचय न देने पर शक्तिशाली व्यक्ति भी तिरस्कृत
होता है ।)

(८४) 'अश्नुते स हि कल्याणं व्यसने यो न मुह्यति ।

(जो मुसीबत में नहीं धवराता वही संसार में सुख भोगता है ।)

(८५) आहारो व्यवहारो च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

(आहार और व्यवहार में संकोच न करने वाला सुखी रहता ।)

(८६) उदिते हि सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ।

(सूर्य के उदय हो जाने पर न जूगुनू और न चन्द्रमाही जचते हैं ।)

(८७) कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने वालका इव ।

(कलियुग में इसी प्रकार वेदान्ती दिखाई देते हैं जैसे फाल्गुन के महीने में बालक ।)

(८८) कल्पवृक्षोऽप्यभव्यानां प्रायो याति पलाशताम् ।

(भाग्यहीनों के लिए कल्पवृक्ष भी ढाक का पेड़ बन जाता है ।)

(८९) कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दाररपि त्यज्यते !

(ओह ! निर्धन पुरुष का भी कोई जीवन है, स्त्री भी साथ छोड़ देती है ।)

(९०) कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेश्यासु सिकतामु च ।

(कौन बुद्धिमान् वेश्याओं और बालू से स्नेह की आशा करेगा ? स्नेह—प्रेम
और तेल ।)

(९१) काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनाऽपि किम् ?

(समय पर थोड़ा भी दिया जाय तो बहुत है, बाद में अधिक दिया हुआ
भी बेकार ।)

(९२) कुदेशेष्वपि जायन्ते क्वचित्केचिन्महाशयाः ।

(कभी-कभी निकुण्ट स्थान में भी बड़े आदमी पैदा हो जाते हैं ।)

(९३) किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता,
तं चेत्सहस्रकिरणो धुरिनाऽकरिष्यत् !

(सूर्य भगवान् यदि पीठ पर न होते तो क्या अरुण (संसार के) धने अन्धकार को मिटा सकता ?)

(९४) को जानाति जनो जनार्दन मनोवृत्तिः कदा कीदृशी !

(कौन जानता है—भगवान् कब क्या करना चाहते हैं ?)

(९५) को वा दुर्जनवाग्रासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान् !

(दुर्जन के फन्दे में पड़कर कौन कुशल पूर्वक बच सकता है ?)

(९६) प्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधौ ।

(भाग्य साथ दे तो पत्थर भी सुखाई छोड़ कर चिकनाई धारण कर लेते हैं ।)

(९७) दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् ।

(जहाँ मेंढक ही बक्ता हों वहाँ चुप रहना ही अच्छा है ।)

(९८) दुग्धघौतोऽपि किं याति वायसः—कल हंसताम् !

(दूध में नहलाने से क्या कौआ हंस बन सकता है ?)

(९९) दैवे दुर्जनतां गते तृणमपि प्रायेण वज्रायते ।

(दैव के उलटे होने पर तिनका भी प्रायः वज्र बन जाता है ।)

(१००) न दरिद्रस्तथा दुःखी लब्धक्षीणधनो यथा ।

(निर्धन आदमी उतना दुःखी नहीं जितना वह जो धनी होने के बाद सब कुछ खो बैठता है ।)

(१०१) न सुवर्णे ध्वनिस्तादृक् यादृक् कांस्ये प्रजायते ।

(सोने में वैसी आवाज नहीं जैसी कांसि में ।)

(१०२) न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि ।

(पंजर मात्र रहजाने पर भी हाथी कभी छिछली तलैयाँ का पानी नहीं छूता ।)

(१०३) नहि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोत्कथा ।

(घास फूस की आग से समुद्र का पानी गरम नहीं किया जा सकता ।)

(१०४) पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते ?

(संसार ऐसा कौनसा काम है जिसे पांच आदमी मिल कर पूरा न कर सकें ।)

(१०५) प्रासाद-शिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते ?

(कौआ यदि महल के शिखर पर बैठ जाय तो क्या वह गरुड़ बन जायगा ?)

(१०६) प्रिया नाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हिमवति ।

(प्रिया के नाश होने पर समस्त संसार जंगल बन जाता है ।)

(१०७) बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते, न पीयते काव्यरसः पिपासुभिः ।

(भूखे व्याकरण नहीं खा लेंगे और व्यासे काव्यरस से सन्तुष्ट न होंगे ।)

(१०८) मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

(अत्यन्त संक्षिप्त तथा साररूप कथन ही वाग्मिता है । इसी को वक्तृत्व कला कहते हैं ।)

(१०९) यदेव राचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।

(जिनके मन में जो बस गया वही उसके लिए सुन्दर है ।)

(११०) मोघा नाम जायेत महत्सूपकृति—कुतः ?

(महान् पुरुषों के प्रति किया हुआ उपकार कभी निष्फल नहीं होता ।)

शरीर—सम्बन्धी व्यावहारिक शब्द

हिन्दी संस्कृत

सिर—शिरः (न०) शीर्षम् (न०)

माथा—ललाटम् (न०)

भौं—भ्रूः (स्त्री०)

आंख—नेत्रम्, नयनम्, चक्षुः (न०)

पलक—नेत्रलोम (न०)

कान—कर्णः (पुं०)

नाक—नासिका (स्त्री०)

मुंह—मुखम्, आननम् (न०)

लार—लाला (स्त्री०)

दांत—दन्तः, दशनः (पुं०)

होंठ—ओष्ठः (पुं०)

मसूड़े—दन्तमांसम् (न०)

जीभ—जिह्वा, रसना (स्त्री०)

गर्दन—ग्रीवा, (स्त्री०) गलः (पुं०)

कंधा—स्कन्धः (पुं०)

गला—कण्ठः, गलः (पुं०)

ठुड्डी—चिबुकम् (न०) हनुः (पुं०)

छाती—उरः, वक्षः (न०)

चूची—चूचुकम् (न०)

स्तन—कुचः, स्तनः (पुं०)

शरीर—शरीरम् (न०) कायः, देहः (पुं०)

नाभि—नाभिः उदरावर्तः (पुं०)

गन—चित्तम्, हृदयम्, मनः (न०)

बुद्धि—बुद्धिः, मनीषा, धीः, प्रज्ञा (स्त्री०)

पेट—उदरम् (न०)

आंत—अन्त्रम् (न०)

पीठ—पृष्ठम् (न०)

कमर—कटिः, क्षोणिः (स्त्री०)

फेफड़ा—फुफुसम् (न०)

तोंद—तुन्दम् (न०)

कलेजा—वृक्कम्, हृद् (न०)

हिन्दी संस्कृत

खून—रक्तम्, रुधिरम् (न०)

चरबी—मेदः (न०) वपा, वसा, (स्त्री०)

हड्डी के भीतर की चरबी—मज्जा (स्त्री०)

हाथ—करः हस्तः, पाणिः (पुं०)

बांह—बाहुः भुजः (पुं०)

हथेली—करतलः-लम् (अस्त्री०)

ताली—करतलध्वनिः (पुं०)

नाड़ी—स्नायुः (पुं०) शिरा (स्त्री०)

नाखून—नखः, नखम् (अस्त्री०) कररुहः-

(पुं०)

हड्डी—अस्थि, कीकसम् (न०)

मांस—मांसम्, पिशितम् कव्यम् न०

उंगली—अंगुलिः स्त्री०)

अंगूठा—अङ्गुष्ठः (पुं०)

चारों उंगलियाँ—तर्जनी, मध्यमा, अना-

मिका, कनिष्ठा (स्त्री०)

मुठ्ठी—मुष्टिका (स्त्री०)

चूतड़—नितम्बः (पुं०)

जांघ—जङ्घा (स्त्री०) उरु (न०)

गुदा—अपानम्, मलद्वारम् (न०)

लिङ्ग—लिङ्गम् (न०) शिश्नः, मेढः (पुं०)

योनी—योनिः (पुं०, स्त्री०) भग-

(पुं०)

अंडकोश—वृषणम् (न०)

मूत—मूत्रम् (न०) प्रस्रावः (पुं०)

मल—विष्टा (स्त्री०) मलम्,

पुरीषम् (न०)

गोबर—गोमयः (पुं०) शकृद् (स्त्री०)

स्त्री का वीर्य—रजः पुष्पम्,

आर्तवेम् (न०)

पुरुषका वीर्य—शुक्रम्, वीर्यम् (न०)

हिंदी संस्कृत

टेढ़ना—जानु (न०)

पांव—पदः, अङ्घ्रिः, (पु०)

हिन्दी संस्कृत

चरणः (अस्त्री०)

खाल-चर्म (न०) त्वक् (स्त्री०)

संस्कृत बनाओ :—

१—उस के व्याख्यान के अन्त में सब लोगों ने ताली बजाई । २—उस बनिये की तोंद बड़ी है । ३—हम जीभ से स्वाद लेते हैं । ४—अच्छे लक्षणों वाली स्त्री की कमर पतली होती है । ५—चुटकी सत बजाओ । ६—योगी आंतों को धोते हैं । ७—कान का मल निकालना चाहिए । ८—उसके शरीर में खून सूख गया । ९—वच्चे के पैदा होने से पहले मां के स्तन में दूध आ जाता है । १०—उसकी जांघें केले के खम्भे की तरह और बांह हाथी की सूड़ की तरह हैं । —उसके शरीर में खून का विकार है । ११—गोबर से लिपी हुई जमीन पवित्र होती है ।

पाठशाला-सम्बन्धी शब्द

स्कूल—पाठशाला (स्त्री०)

पढ़ाने वाला—अध्यापकः

शिक्षकः पाठकः (पु०)

जमात—श्रेणी, कक्षा (स्त्री०)

पुस्तक-पुस्तकम् (न०) ग्रन्थः (पु०)

स्याही—मसी (स्त्री०)

दवात—मसीपात्रम् (न०)

कलम—लेखनी (स्त्री०)

पक्षा, कागज—पत्रम् (न०)

सफा, पेज—पृष्ठम् (न०)

पढ़ना—पठनम् (न०)

पढ़ाना—पाठनम् (न०)

लिखना—लेखनम् (न०)

याद करना—स्मरणम् (न०)

अच्छा लेख—सुलेखः (पु०)

सवाल—प्रश्नः (पु०)

उत्तर देना—उत्तरम् (न०)

सलाह—परामर्शः (पु०)

इम्तिहान—परीक्षा (स्त्री०)

खेल—क्रीडा (स्त्री०)...

खेलाड़ी—क्रीडकः (पु०)

खेल का मैदान-क्रीडा क्षेत्रम् (न०)

कालिज—विद्यालयः, (पु०)

विद्यार्थी—छात्रः, शिष्यः, विद्यार्थी,

अध्येता, अधीती (पु०)

मैनेजर—प्रबन्धकर्ता (पु०)

हाजिर—उपस्थितः (पु०)

गैर हाजिर—अनुपस्थितः (पु०)

होशियार—प्राज्ञः, बुद्धिमान् (पु०)

नालायक—मन्दधीः, मूर्खः (पु०)

सजा—दण्डः (पु०)

डिसिप्लिन—अनुशासनम् (न०)

विनयः (पु०)

वर्ताव—व्यवहारः (पु०)

नतीजा—परिणामः (पु०)

वकवक—जल्पनम् (न०)

नंबर—अङ्कः (पु०)

थूकना—फोवनम् (न०)

दास्त—मित्रम् (न०) सुहृद् (पु०)

१२ बजे-द्वादशवादन-समयः (पु०)

झगड़ा—विवादः, कलहः (पु०)

छुट्टी—अवकाशः (पु०)

उपदेश—शिक्षा स्त्री०)

आजकल—अद्यतन, इदानीन्तन

संस्कृत बनाओ—

१—पुरानी और आजकल की पढ़ाई में बड़ा अन्तर है । २—पढ़ता तो आसान है पर नम्रता लाना कठिन है । ३—पिछले इम्तिहान में तुमने कितने नम्बर पाये ? ४—लिखने पढ़ने के अलावा प्रतिदिन खेलना भी चाहिए । ५—अपने सहपाठियों के साथ सदैव मित्रता का व्यवहार करो ६—अपने अध्यापक का कहना मानो और अपना गठ ध्यान पूर्वक पढ़ो । ७—आपस में कभी मत झगड़ो और एक दूसरे को गाली मत दो । ८—रोज साफ कपड़े पहन कर स्कूल जाओ । ९—जो प्रश्न पूछा जाय उसी का उत्तर दो । १०—बिना कारण स्कूल में अनुपस्थित मत रहो । ११—चतुर विद्यार्थी को सभी अच्छा मानते हैं और नालायक को सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं । १२—स्कूल के अवकाश के दिनों में भी कुछ न कुछ अवश्य पढ़ना चाहिए ।

भोजन सम्बन्धी व्यावहारिक शब्द

कच्चा अन्न—आमान्नम् (न०)
पक्का अन्न—सिद्धान्नम् (न०)
रोटी—रोटिका (स्त्री०)
फुलका—पोलिका (स्त्री०)
भात—ओदनः, भक्तम्, ओदनम् (पुं० न०)
दाल—सूपः (पुं०)
सब्जी—व्यञ्जनम् (न०)
साग—शाकः, शाकम् (पुं० न०)
खीर—पायसम्
पकवान—पक्वान्नम्
मिठाई—मिष्ठान्नम्
लड्डू—मोदकः
पूरी—शष्कुली, पुलिका
पुआ—पूपः (पुं०) पीठिका (स्त्री०)
पूड़े—अपूपः (पुं०)
पापड़—पर्वटा (स्त्री०)
परोठा—पोलिका (स्त्री०)
मालपूआ—मल्लपूपः (पुं०)
खिचड़ी—कृशरः
चना—चणकः
जौ—यवः
धान—धान्यम् (न०) शालिः पुं०)
कचौरी—मापगर्भा (स्त्री०)

रायता—दाधेयम् (न०)
अरहर—आढ़की (स्त्री०)
मसूरः (पुं०)
उड़द—माषः
हलुआ—लपटिका (स्त्री०)
लपसी—यवागूः
भरता—भत्ता
शक्कर—शर्करा
चीनी—सिता
लाजा खील—लाजाः (पुं० बहु०)
सत्तु—सक्तुः (पुं०)
कढ़ी—तेमनम् (न०)
दूध—दुग्धम्, पयः (न०)
मलाई—कूचिका (स्त्री०)
मावा (खोया)—किलाटिका
मवखन—नवनीतम् दधिजम्
घी—घृतम्
दही—दधि (न०)
छाछ—तक्रम्, कालशेखरम्
तेल—तैलम्
भांग—मातुलानी, भंगा
सेवई—सूत्रिका
कसैला—कषायम्

तेज—तिक्तम्
गर्भ—उष्णम्
ठंडा—शीतलम्
खट्टा—अम्लम्
कडुआ—कटु
चिकना—चिककणम्
गोल-मोल—वर्तुलम्

टेढा—वक्रम्
नमक—लवणम्
मूंग—मुद्गकः
मटर—वर्तुलः, कलायः (पुं०)
कोदो—कोद्रावः (पुं०)
कौनी—कंगुः (पुं०)
सरसों—सर्वपः, तन्तुकः

संस्कृत बनाग्रोः—

१—पंजाब के लोग प्रायः रोटी खाते हैं और बंगाल के लोग प्रायः भात खाते हैं । २—भात से रोटी अधिक बलदायक है । ३—दालभात के साथ साग और पापड़ अधिक स्वाद देते हैं । ४—जाड़े की रातों में पूरी का भोजन बलदायक है । ५—खिचड़ी का खाना भी जाड़ों में हितकर है । ६—गरीब सत्तू खाकर दिन बिताते हैं । ७—खत्री लोग रात को अक्सर परौठा खाते हैं । ८—भोजन के अन्त में चीनी भिली हुई दही खाई जाती है । ९—बीमार को मूंग की दाल देते हैं । १०—तिलों से तेल निकलता है । ११—दूध पीने से बच्चे तंदुरुस्त रहते हैं । १२—गर्मियों में मछली पीने से तंदुरुस्ती बढ़ती है ।

खाद्य पदार्थ

चावल—अक्षतानि, तण्डुलः
मकई—शस्यम्
गेहूं का आटा—गोधूमचूर्णः
बाजरा—प्रियङ्गुः
सिम—कडुगुः
खजुली—खाजा (स्त्री०)
आचार—सन्धितम्, संधानम्
मुरब्बा—रागखाण्डवम्
साठी—पष्ठिका (स्त्री०)
ककड़ी—कर्कटिका
फूट, खीरा—चर्भटिः (स्त्री०)
हीरा—होलकरः (पुं०)
गरम मसाला—सौरभम्
शकरपारा—शर्करापालः-पालिका
चटनी—अवलेहः (पुं०)
पोदीना—अजगन्धः
राई—राजिका
इमली—तिन्तडीफलम्
करौंदा—करमर्दकम्

ओल—सूरणकम्
इलायची—एला
अदरक—आर्द्रकम्
कत्था—खदिरम्
वेर—वदरम्, कोलः
बरफी—चक्रिका (स्त्री०)
जलेबी—कुण्डलिका, कुण्डलिनी (स्त्री०)
इमरती—
वालूशाही—मिष्टमण्डः (पुं०)
फेनी—फेनिका (स्त्री०)
आलू—आलूका
ककोड़ा—कर्कोटकम्
कद्दू—तुम्बी (पुं०)
पालकी—पालक्या (स्त्री०)
कुलफा—मेघनादः
परवर—पटोलकम्
प्याज—पलाण्डुः
लहसुन—लशूनम्

गाजर—गृञ्जनम्
बैंगन—वृन्ताकम्, वर्तकः
मूली—मूलिका
कधुआ—वस्तुकम्
कचनार—काञ्चनारः

करेला—कारवेल्लम्
तरोई—कोशातकी
भिण्डी—रामकोशानकी
गोभी—गोजिह्वा

संस्कृत वनाश्रोः—

१—कुल्फा और पालक का शाक गर्मियों में अधिक पसंद किया जाता है । २—परवर की तरकारी बीमारी में भी हानिकारक नहीं । ३—गोभी और आलू की तरकारी अच्छी होती है । ४—मटर और आलू की तरकारी बड़ी बलदायक होती है । ५—हिन्दू शास्त्रों में प्याज को निषिद्ध बताया गया है । ६—इमली की चटनी पोदीन के साथ बड़ी स्वादिष्ट होती है । ७—करेले की तरकारी बड़ी गुणकारक है । ८—कच्ची मूली बड़ी गुणकारक है । ९—फेनियाँ दूध में मिलाकर खाई जाती हैं । १०—भिण्डियाँ में कागजी नींबू का रस पड़ने से बड़ी स्वादिष्ट हो जाती हैं । ११—तरोई वर्षा ऋतु में अधिक पैदा होती है । १२—बालूशाही, जलेबी, लड्डू आदि मिठाइयाँ स्वास्थ्य को लाभदायक नहीं ।

फलों के नाम

आम—आम्रः, रसालः (पुं०)
अनार—दाडिमफलम्
अंगूर—मृदिका, द्राक्षफलम्
अमरूद—आम्रलम्
अखरोट—अक्षोटफलम्
केला—कदलीफलम्
कसेरू—कसेरुः (पुं०)
ककड़ी—कर्कटिका
कटहर—पनसः (पुं०)
कमरख—कर्मरक्षः
करौंच—करमर्दकम्
कदम—कदम्बः, नीपफलम्
नींबू—जम्बीरीफलम्
कागजीनींबू—निम्बूकम्
कैत (कट्या)—कपिलम्
बिजोरा नींबू—बीजपुरः (पुं०)
खीरनी—क्षीरिकाफलम्
खरबूजा—दशाङ्गुलम्

खजूर—खजूरफलम्
खीरा—त्रपुषम, चर्मटी
तरबूजा—तारबूजम्, कलिङ्गम्
वेर—बदरीफलम्, कर्कन्धुः
नारियल—नारिलफलम्
नारंगी—नारङ्गफलम्
सेब—सेवफलम्
बेल—विल्वफलम्
बादाम—बादामः, वातादफलम्
पीलू—पीलूफलम्
सुपारी—पूगः, पूगीफलम्
जामुन—जम्बूफलम्
नामपाती—अमृतफलम्
फालसा—परूषः (पुं०)
तूत—तूतम्
सरीफा—शिशवृक्षफलम्
पिस्ता—अङ्कूटफलम्

संस्कृत वनाग्री ।

१—आम सब फलों में उत्तम है । २—प्रयाग के अमरुद संसार भर में प्रसिद्ध है । ३—लखनऊ के खरबूजों का स्वाद अमृत के समान है । ४—चुनार के पास अच्छे स्वाद वाले सरीफे होते हैं । ५—कटहर की तरकारी अच्छी होती है । ६—गर्मियों में तरबूज खाने से ठंडक होती है । ७—अंगूर खाने से बल बढ़ता है । ८—नारंगी का रस बड़ा स्वादिष्ट और मधुर होता है । ९—जामुन का सुरब्बा पाचक होता है । १०—गर्मियों में कसेरू भी ठंडा होता है । ११—कैत के फल की चटनी स्वादिष्ट होती है । १२—बिजौरा नींबू का अचार अच्छा होता है । १३—रोगियों को प्रायः अनार खाने के लिए दिया जाता है । १४—बेर सब फलों में निकृष्ट फल है । १५—खट्टी चीजों में कागजी नींबू का अधिक सेवन करना चाहिए ।

संबन्धवाचक शब्द

पिता—पिता, जनकः
माता—माता, जननी
दादा—पितामहः
दादी—पितामही
परदादा—प्रपितामह
परदादी—प्रपितामही
नाना—नानी—मातामहः, मातामही
परनाना—प्रपातामहः
परनानी—प्रमातामही
वृद्धप्रनाना—वृद्धप्रमातामहः
चाचा, चाची—पितृव्यः, पितृव्यपत्नी
चचेरा भाई—पितृव्यपुत्रः
भाई—भ्राता
सगाभाई—सहोदरः
भौजाई—(भाबी)—भ्रातृजाया
भतीजा—भ्रातृपुत्रः भ्रात्रीयः
भनीजी,—भ्रातृसुता
मामा, मामी—मातुलः, मातुली
मामा का लड़का—मातुलपुत्रः
पुत्र, पुत्री—पुत्रः, पुत्री
पोता, पोती—पौत्रः, पौत्री
परोतरा-तरी—प्रपौत्रः, प्रपौत्री
दामाद, जमाई—जामाता
बहिन—भगिनी

बहनोई—भगिनीपतिः
भानजा—भगिनेयः
औरत—स्त्री, योषित्, नारी
यार—जारः, उपपतिः
फूफी—पितृष्वसा
फूफड़—पितृष्वसृपतिः
फूफेरा भाई—पैतृष्वस्त्रीयः
मासी—मातृष्वसा
मासड़—मातृष्वसृपतिः
मसेरा भाई—मातृष्वसृस्त्रीयः
पति, स्त्री—पतिः, पत्नी
ससुर—श्वशुरः
सास—श्वश्रुः
साबा—श्यालः
देवर—देवरः
देवरानी—याता
ननद—नदान्दा
पतोहू—पुत्रबधूः
नौकर—भृत्यः
नौकरानी—परिचारिका
मालिक—स्वामी
मित्र—मित्रम्, वयस्यः
दुश्मन—शत्रुः, अरिः, रिपुः
गाभिन—गभिणी

दूती—दूती, सञ्चारिका
सखी—आलि: वयस्या
वेश्या—वारसत्री, गणिका, वेश्या

रण्डा—विधवा, विश्वस्ता, रण्डा
सोहागिनी—सौभाग्यवती, पतिव्रती
पतिव्रता—साध्वी, पतिव्रता

संस्कृत बनाओ ।

१—ब्रज्जाल में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा है । २—दूती अपनी सखी के संदेश को उसके पति के पास पहुंचाती है । ३—अपने बड़े भाई की स्त्री माता के तुल्य होती है । ४—चंचल स्त्री का विश्वास न करना चाहिए । ५—सास को माता कहकर पुकारना चाहिए । ६—विधवा का यही शृङ्गार है कि वह ईश्वर की आराधना करे । ७—रामचन्द्र जी ने कहा था कि संसार में सहोदर भाई नहीं मिल सकता । ८—दक्षिण में मामा की लड़की से विवाह निषिद्ध नहीं । ९—वेश्या की संगति स्त्री को पतित कर देती है । १०—घर में पतोहू की पूरी इज्जत होनी चाहिए ।

जातीवाचक शब्द

सुनार—स्वर्णकार:
लोहार—लौहकार: अयस्कार:
चमार—चर्मकार:
कुम्हार—कुम्हकार:, कुलाल:
माली—मलाकार:
मल्लाह—कर्णधार: नाविक:
चप्पू—अरित्रम्
चित्र बनाने वाला—चित्रकार:
तेली—तैलकार: तैलिक:
जुआरी—द्यूतकार:
मेहतर—श्वपच:, मार्जक:, महतर:
शाङ्ग—सम्मार्जनी
चाक—चक्रम्
कारिगर—शिल्पी, कारु:
धोबी
जुलाहा—तन्तुवाय:
मदारी—ऐन्द्रजालिक:, आहितुण्डिक:
फावड़ा—खनित्रम्
मजदूर—भारवाह:
दर्जी—सौचिक:, सूचक:
नाई—नापित:, क्षौरिक:
रंगरेज—रञ्जक, वस्त्ररागकृत्
बढ़ई—तक्षक:, सूत्रधार:
शिकारी—ग्याध:

दरवान—प्रतिहार:
बौना—वामन:
पेटू—तुन्दिल:
भूनेने वाला—भर्जक:
भार—भूर्जनयन्त्रम्
लेप लगाने वाला—लेपक:, सुधाजीवी
ठग—वञ्चक:
चूड़ीहार—काँचकङ्कणविक्रेता (पुं०)
सितारिया—वैणिज:, वीणावादक:
खटिक—शाकविक्रेता
शाण वाला—शस्त्रमार्जक:, असि-
जीवी (पुं०)
कंधा वाला—कङ्कतकृत्
चारण—कुशीलव:
कान का मैल निकालने वाला—(कन-
मैलिया) कर्ण मलनिस्सारक:
बैहगी—जलानयनयन्त्रम्
कहार—जलवाह:, कहार:
कसाई—~~गणिक~~, नासिकक्रेता
कलाल—शीण्डिक:, सुराजीवी
शराब—मद्य, सुरा मदिरा
बाराबघर—शुण्डापानं, मद्यस्थानम्
खेत—वप्र: केदार: क्षेत्रम्
रेत—सिक्ता

संस्कृत बनाओ ।

१—आम सब फलों में उत्तम है । २—प्रयाग के अमरुद संसार भर में प्रसिद्ध हैं । ३—लखनऊ के खरबूजों का स्वाद अमृत के समान है । ४—चुनार के पास अच्छे स्वाद वाले सरीफे होते हैं । ५—कटहर की तरकारी अच्छी होती है । ६—गर्मियों में तरबूज खाने से ठंडक होती है । ७—अंगूर खाने से बल बढ़ता है । ८—नारंगी का रस बड़ा स्वादिष्ट और मधुर होता है । ९—जामुन का मुरब्बा पाचक होता है । १०—गर्मियों में कसेरू भी ठंडा होता है । ११—कंत के फल की चटनी स्वादिष्ट होती है । १२—बिजौरा नींबू का अचार अच्छा होता है । १३—रोगियों को प्रायः अनार खाने के लिए दिया जाता है । १४—बेर सब फलों में निकृष्ट फल है । १५—खट्टी चीजों में कागजी नींबू का अधिक सेवन करना चाहिए ।

संबन्धवाचक शब्द

पिता—पिता, जनकः
माता—माता, जननी
दादा—पितामहः
दादी—पितामही
परदा—प्रपितामह
परदादी—प्रपितामही
नाना—नानी—मातामहः, मातामही
परनाना—प्रपातामहः
परनानी—प्रमातामही
वृद्धप्रनाना—वृद्धप्रमातामहः
चाचा, चाची—पितृव्यः, पितृव्यपत्नी
चचेरा भाई—पितृव्यपुत्रः
भाई—भ्राता
सगाभाई—सहोदरः
भौजाई—(भावी)—भ्रातृजाया
भतीजा—भ्रातृपुत्रः भ्रात्रीयः
भतीजी, —भ्रातृसुता
मामा, मामी—मातुलः, मातुली
मामा का लड़का—मातुलपुत्रः
पुत्र, पुत्री—पुत्रः, पुत्री
पोता, पोती—पौत्रः, पौत्री
परोतरा-तरी—प्रपौत्रः, प्रपौत्री
दामाद, जमाई—जामाता
बहिन—भगिनी

बहनोई—भगिनीपतिः
भानजा—भगिनेयः
औरत—स्त्री, योषित्, नारी
यार—जारः, उपपतिः
फूफी—पितृष्वसा
फूफड़—पितृष्वसृपतिः
फूफेरा भाई—पैतृष्वस्त्रीयः
मासी—मातृष्वसा
मासड़—मातृष्वसृपतिः
मसेरा भाई—मातृष्वसृस्त्रीयः
पति, स्त्री—पतिः, पत्नी
ससुर—श्वशुरः
सास—श्वश्रुः
साबा—श्यालः
देवर—देवरः
देवरानी—याता
ननद—नदान्दा
पतोह—पुत्रवधूः
नौकर—भृत्यः
नौकरानी—परिचारिका
मालिक—स्वामी
मित्र—मित्रम्, वयस्यः
दुश्मन—शत्रुः, अरिः, रिपुः
गाभिन—गभिणी

दूती—दूती, सञ्चारिका
सखी—आलि: वयस्या
वेश्या—वारसत्री, गणिका, वेश्या

रण्डा—विधवा, विश्वस्ता, रण्डा
सोहागिनी—सौभाग्यवती, पतिव्रती
पतिव्रता—साध्वी, पतिव्रता

संस्कृत बनाओ ।

१—बङ्गाल में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा है । २—दूती अपनी सखी के संदेश को उसके पति के पास पहुंचाती है । ३—अपने बड़े भाई की स्त्री माता के तुल्य होती है । ४—चंचल स्त्री का विश्वास न करना चाहिए । ५—सास को माता कहकर पुकारना चाहिए । ६—विधवा का यही शृङ्गार है कि वह ईश्वर की आराधना करे । ७—रामचन्द्र जी ने कहा था कि संसार में सहोदर भाई नहीं मिल सकता । ८—दक्षिण में मामा की लड़की से विवाह निषिद्ध नहीं । ९—वेश्या की संगति स्त्री को पतित कर देती है । १०—घर में पतोहू की पूरी इज्जत होनी चाहिए ।

जातीवाचक शब्द

सुनार—स्वर्णकार:
लोहार—लौहकार: अयस्कार:
चमार—चर्मकार:
कुम्हार—कुम्हार:, कुलाल:
माली—मलकार:
मल्लाह—कर्णधार: नाविक:
चप्पू—अरित्रम्
चित्र बनाने वाला—चित्रकार:
तेली—तैलकार: तैलिक:
जुआरी—द्यूतकार:
मेहतर—श्वपच:, मार्जक:, महतर:
झाड़ू—सम्मार्जनी
चाक—चक्रम्
कारिगर—शिल्पी, कारु:
धोबी
जुलाहा—तन्तुवाय:
मदारी—एन्द्रजालिक:, आहितुण्डिक:
फावड़ा—खनित्रम्
मजदूर—भारवाह:
दर्जी—सौचिक:, सूचक:
नाई—नापित:, क्षौरिक:
रंगरेज—रञ्जक, वस्त्ररागकृत्
बढ़ई—तक्षक:, सूत्रधार:
शिकारी—ग्याध:

दरवान—प्रतिहार:
बौना—वामन:
पेटू—तुन्दिल:
भूने वाला—भर्जक:
भार—भूर्जनयन्त्रम्
लेप लगाने वाला—लेपक:, सुधाजीवी
ठग—वञ्चक:
चूड़ीहार—काँचकङ्कणविक्रेता (पुं०)
सितारिया—वैणिज:, वीणावादक:
खटिक—शाकविक्रेता
शाण वाला—शस्त्रमार्जक:, असि-
जीवी (पुं०)
कंधा वाला—कङ्कतकृत्
चारण—कुशीलव:
कान का मैल निकालने वाला—(कन-
मैलिया) कर्ण मलनिस्सारक:
वेंहगी—जलानयनयन्त्रम्
कहार—जलवाह:, कहार:
कसाई—मांसिक, मांसिकक्रेता
कलाल—शार्ण्डिक:, सुराजीवी
शराब—मद्यं, सुरा मदिरा
शराबघर—शुण्डापानं, मद्यस्थानम्
खेत—वप्र: केदार: क्षेत्रम्
रेत—सिक्ता

टोकरा—कण्डोलः
पेटी—पेटिका
प्याला—चषकः, पानपात्रम्
बाँसुरी—वंशी, वेणुः
मूदङ्ग—मृदङ्ग, मुरजः
मोम—द्रावकः
आवा—आपाकः
बाजा—वादनम्, वाद्यम्
डोल—आनकः पटहः
चक्की (घराट)—घरट्टः
नगारा—कुन्दुभिः

डिङ्गोरा पीटने का बाजा—डिण्डिमा
कैची—कर्तरी, छेदनी (स्त्री०)
पनशाला—प्रपा, पानीयशालिका
आरा—क्रकचः (क्रकचिकः)
चाकू—छुरी छुरिका, असिपुत्री, कर्तरिका
सूई—सूचिः, सेवनी (स्त्री०)
सूई का काम—सूचिकर्म, सूत्रकर्म (न०)
दरांती—दात्रम्
तागा—सूत्रम्
छाज—शूर्पम् (त०)

संस्कृत बनाओ—

१—सुनार देखते हुए चोराता है, अतएव 'पश्यतोहर' कहलाता है। २—कुम्हार आवा में मिट्टी के बरतन पकाता है। ३—लोहार चाकू, कैची सूई बनाता है। ४—चमार जूता सीता है (सीध्यति)। ५—कुम्हार डंडे से चाक घुमा रहा है। ६—भूनने वाला रेत के साथ चना भून रहा है। ७—लेप लगाने वाले ने पैर में लेप लगाया। ८—खटिक सुबह और शाम तरकारियाँ बेचता है। ९—कल सरकार ने डिङ्गोरा पीटवाया कि कोई आठ बजे के बाद न घूमे। १०—कसाई बूढ़ी गौवाँ को खरीदते हैं। ११—इस पनशाला में ठंडा पानी मिलता है। १२—विवाह आदि उत्सवों में कहार बहंगियों से पानी लाते हैं।

वस्त्रों के नाम

रई (कपास)—कार्पासः, तूलः
कपड़ा—वस्त्रं, वसनं, चीरम्
पगड़ी—उष्णीषं, शिरस्त्रम्
मुरेठा (टोपी)—शिरस्कं, शिरस्त्राणम्
कुरता मिजई कोट—कञ्चुकः, निचोलः
दुपट्टा—उत्तरीयः
अंगरखा—अङ्गरक्षणी-रक्षिका
जाधिया—जङ्घावस्त्रम्
धोती—अधोवस्त्रम्
गलेबन्द—गलबन्धनांशुकम्
रुमाल—करवस्त्रम्
कंबल—कम्बलः
रोई—रहलकः
रजाई—तूलिका, नीशारः
गाड़ी—शाटिया

रेशमी—कौशिकं, क्षौमं दुकूलम्
परदा—जवनिका, तिरस्करिणी
कनात—काण्डपटः, अपटी
पाजाम—जङ्घात्राणम्
पतलून—जङ्घावस्त्रम्
मोजा—पादत्राणम्
तकिया—उपधानी
चादर (बिछाने की)—शय्याच्छादनं प्रच्छदः
बिछौना—शय्या
कमरबंद—रशवा, परिकरः, कटिसूत्रम्
पर्दा—अवगुण्ठनम्
जूता—उपानत् (स्त्री०)
जाकट—अङ्गरक्षकः
अंगोछा—गात्रमार्जनी
ओढ़ने की चादर—उत्तरीयाञ्चलः

श्रृङ्गारिक वस्तुओं के नाम

सिन्दूर—सिन्दूरम्
बिन्दी—बिन्दुः (पुं०)
साबुन—फेनिलः
काजल—अञ्जनम्, कज्जलम्
इत्र—गन्धतैलम्

आयना—दर्पणः, मुकुरः, आदर्शः
ब्रुश—लोममयी मार्जनी
कच्ची—कङ्कृतिका, प्रसाधनी
दांत कुरेदने की सुई—दन्तशोधनी, सुची
मंगल टीका—ललाटिका

गहनों के नाम

गहना—अलङ्कारः, आभरणम्
कण्ठा—कण्ठिका, कण्ठाभरणम्
अँगूठी—अंगुलीयकम्, ऊर्भिका
माला—ललन्तिका, लेम्बनम्
चूड़ी—काचवलयः-यम्
बाजूबन्द—केयूरम्, अङ्गदम्
कनफूल—कर्णपूरः, कर्णिका
पहुँची—आवापकः, कटकः
बुलाक—नासाभरणम्

करधनी—मेखला, काञ्चिः
हसुली—ग्रैवेयकम्
टिकुली—ललाटालङ्कारः
कँगना—कङ्कणः, कङ्कणम्
नथ—नासाभरणम्
पोजेव (झांझ)—नूपुरः
वाली—कुण्डलम्
बेणी—स्त्रीमस्तकाभरणम्

संस्कृत बनाओ :—

१—आजकल इत्र, तेल, साबुन के बिना पूरा श्रृङ्गार नहीं होता । २—साबुन से कपड़े साफ करो । ३—शहर की औरतें नथ और बुलाक से बड़ी नफरत करती हैं । ४—चूड़ी पहनने का रिवाज शहर और गांव सभी जगह है । ५—विवाह में कङ्कण पहनाया जाता है । ६—कच्ची से बाल साफ रखो । ७—ओढ़ने बिछाने की चादरें बिलकुल साफ होनी चाहिए । ८—सिन्दूर सोहाग की खास निशानी है । ९—रूमाल से हाथमुंह साफ रखने चाहिए । १०—कुरता, कोट, पतलून पुराने जमाने के कपड़े नहीं हैं ।

पशुओं के नाम

शेर—सिंहः, सिंही
वाघ—व्याघ्रः, व्याघ्री
भालू—ऋक्षः, भल्लूकः
गेंडा—गण्डकः
सुअर—शूकरः
भेड़िया—वृकः
गोदड़—श्रृगालः
खरगोश—शशकः
बंदर—वापरः, कपिः

घोड़ा—अश्वः
ऊँट—उष्ट्रः
गधा—गर्दभः
भैंस—महिषः, मज्जिणी
कुत्ता—कुम्भुरः, श्व
कुत्ती—शुनी
बिल्ली—मार्जारः, मार्जारी
वकरा—अजः
बकरी—अजा

हरिण—मृगः
नेवलः—नकुलः
गाय—गौः
बैल—वलदः, वृषभः

भेंड़—एडका
चूहा, चूही—मूषिकः, मूषिका
गोह—गोधा

पक्षियों के नाम

कोयल—कोकिलः
भोर—मयूरः
हंस—हंसः
तोता—शुकः
मैना—सारिका
पपीहा—चातकः
चकवा—चक्रवाकः
तीतर—तित्तिरिः
बटेरा—लावः
चकोर—चकोरः
ममोला—खञ्जनः

कबूतर—कपोतः
वतक—वर्तकः, वतिका
टिटीहर—टिट्टिभः, टिट्टिभी
चील—चिल्लः
कौवा—काकः
मुर्गा—कुक्कुटः, कुक्कुटी
चिड़िया—चटकः, चटका
गीघ—गृध्रः
बगला—बकः
उल्लू—उल्लूकः
बाज—श्येनः

संस्कृत बनाओ :—

१—शेर और हाथी का स्वभाविक बैर है। २—लोग तोता और मैना को बड़े चाव से पालते हैं। ३—कौवा एक ऐसा पक्षी है जिसके लिए किसी के दिल में स्थान नहीं। ४—बंदर और भालू का नाच बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। ५—चूहा और किल्लो का सहज बैर है। ६—जानवरों में शृगाल और पक्षियों में कौवा बड़ा चतुर होता है। ७—कहते हैं चकोर चन्द्र की किरणों का पान करता है। ८—जिन्हें घोड़े की सवारी नहीं आती वे गधे पर चढ़ते हैं। ९—बाज बड़ा शिकारी पक्षी है। १०—रेगिस्तान में ऊट का बड़ा महत्व है। ११—गंडे की मारना अत्यन्त कठिन है।

कुछ क्रियात्मक शब्द

(नपुंसकलिङ्ग)

उठना—उत्थानम्
बैठना—उपवेशनम्
सोना—शयनम्
जागना—जागरणम्
हसना—हसनम्
रोना—रोदनम्
खाना—खादनम्
पाना—पानम्
भाषना—भाषणम्

छूना—स्पर्शनम्
जानना—ज्ञानम्
लेना—आदानम्
देना—दानम्
घुमना—परिभ्रमणम्
ढूँढना—अन्वेषणम्
निगलना—निगरणम्
चबाना—चर्वणम्
चढ़ना—आरोहणम्

उतरना—अवरोहणम्
डुबकी लगाना—निमज्जनम्
पानी से बाहर आना—उत्थमज्जनम्
धोना—प्रक्षालनम्
निचोड़ना—निष्पीडनम्
पीसना—पेषणम्
घिसना—घर्षणम्
लीपना—लेपनम्
ढाँपना—आवरणम्
ठगना—वञ्चनम्
पोंछना—प्रोञ्छनम्
सूँघना—गन्धनम्
चाटना—लेहनम्
नाचना—नर्तनम्
गाना—गानम्
बजाना—वादनम्
तोलना—तोलनम्
मापना—मानम्
इकट्ठा करना—संग्रहणम्
बिखेरना—विक्षेपणम्
बाँधना—बन्धनम्
छोड़ना—मोचनम्, विसर्जनम्

खोलना—उद्घाटनम्
रँगना—रञ्जनम्
चुनना—चयनम्
फँकना—प्रक्षेपणम्
ऊपर फँकना—उत्क्षेपणम्
नीचे फँकना—अपक्षेपणम्
भूल जाना—विस्मरणम्
ढाँकना—पिधानम्
फैलाना—प्रसारणम्
भूतना—भर्जनम्
तोड़ना—त्रोटनम्
जोड़ना—संयोजनम्
खरीदना—क्रयणम्
बेचना—विक्रयणम्
घेरना—वेष्टनम्
भेजना—प्रेषणम्
गाढ़ना—निखननम्
निकालना—निष्कासनम्
भागना—पलायनम्
बोना—बपनम्
दुनना—वयनम्
लेजाना—हरणम्

संस्कृत वनाश्रो :—

१—भोजन को ढाँप कर रखना चाहिए। २—घन-संग्रह करना चाहिए पर उसको ठीक तरह से खर्च भी करना चाहिए। ३—सिपाहियों को देखकर चोरोँ ने भागना शुरू किया। ४—अच्छे गृहस्थ अपने घरों को लीप-पीत कर रखते हैं। ५—पहाड़ का चढ़ना उतरना अच्छा व्यायाम है। ६—छात्रों को नाचने गाने में समय बरबाद न करना चाहिए। ७—वस्त्र निचोड़ने से जल्दी सूख जाता है। ८—दवाई घिसकर बीमार को पिला दो। ९—किसी चीज को निगलना न चाहिए उसे चबाना चाहिए। १०—हंसना, रोना मनुष्य-जीवन के साधारण धर्म हैं।

कुछ व्यावहारिक शब्द

अदल-बदल—विनियमः
द्वेष में आय हुआ—अयातः
देश से गया हुआ—निर्घातः
ऐनक—उपनेत्रम्
आँधी—वात्या

कढ़ाई—कटाहः
कण्डा (पाथी)—करीषम्
कसरत—व्यायामः
कानून—राजनियमः
कैद—कारावासः

खिड़की—गवाक्षः
 अपराधी—प्रतिवादी
 घूस—उत्कोचः
 छौक—क्षवयुः, छिन्का
 जामिन—प्रतिभू
 जुगनू—खद्योतः
 जुर्माना—अर्थदण्डः
 झरना—निर्झरः
 मुकद्दमा—अभियोगः
 वकील—व्यवहाराजीवः
 वसीयतनामा—चरमपत्रम्
 व्याज—कुसीदः वृद्धिजीविका
 पैसा—पणः (पु०)
 अठन्नी—रूपकाद्वयम्
 चवन्नी—चतुराणकः
 दुवन्नी—आणकद्वयम्
 आना—आणकम्
 रुपया-रौप्यकं रूपकं रजतमुद्रा
 अशर्फी—स्वर्णमुद्रा, दीनारः
 उधार—ऋणम्
 साहूकार—उत्तमर्णः
 कर्जदार—अधमर्णः
 धरोहर—न्यासः, उपनिधिः
 डाकिया—पत्रवाहकः
 डाट—छिद्ररोधकः

ढक्कन—आच्छादनम्
 तख्ता—काष्ठफलम्
 दखल—अधिकारः
 दाढ़ी—कूर्चकम् (न०)
 बोरा—शणपुटः
 दूकान—आपणः, विपणिः
 नकशा—मानचित्रम्
 नियुक्तिपत्र—नियोगपत्रम्
 जज—विचारकः, न्यायाधीशः
 पसीना—स्वेदः
 पहरदार—यामिकः
 होड—प्रतिद्वन्द्विता
 प्रतिज्ञा—प्रतिश्रुतिः
 मखौल—परिहासः
 मस्तूल—कुपकः
 शोर—कोलाहलः
 हद्द—सीमा
 हँजा—विसूचिका
 डेरा—निवेशः, वासस्थानम्
 हाथी का झूल—कूधम्
 चिघाड़—चीत्कारः
 कोड़ा—कशा
 लगाम—खलीनः नमः, रश्मिः
 पैदल—पतिः, पदातिः पदगः ।
 छावनी—शिविरम्

संस्कृत वनाञ्जोः—

१—शोर गुल न करो यहाँ पर लड़के पड़ रहे हैं । २—छावनी असंख्य पैदल सिपाही हैं । ३—इस संगीन मुकदमे के लिए अच्छे वकील की जरूरत है । ४—उस अपराधी को ५०० रु० जुर्माना हुआ । ५—उसने मरते वक्त एक वसीयतनामा लिखा ६—कर्जदार अपने साहूकार से हर वक्त डरता है । ७—कानून के खिलाफ कभी काम न करना चाहिये । ८—उस चोर को दो साल की कैद की सजा हुई । ९—वह चिट्ठी लाया ११—उसने कोड़ों से उस घोड़े को इतना पीटा कि वह गिर पड़ा । १२—इतनी आँवी आई कि पेड़ तक उखड़ गये । १३—इस जिले में एक नया जज आया है । १४—घूस लेना बड़ा भारी अपराध है ।

अनुवादार्थ श्लोक

*निम्न लिखित श्लोकों का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद करो :—

- १—तुल्यान्वयेत्यनुगुणेति गुणोन्नतेति दुःखे सुखे च मुचिरं सहवासिनीति ।
जानामि केवलमहं जनवादभीत्या, सीते, त्यजामि भवतीं न तु भावदोषात् ॥
- २—घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चान् गन्धं,
छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम् ।
ददग्धं दुग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णं,
प्राणान्तेऽपि प्रकृतिविकृतिर्जायते नोत्तमानाम् ॥
- ३—यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरजं यावज्जरा दूरतो,
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः ।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषां कार्यः प्रयत्नो महान्
संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्यृद्धमः कीदृशः ॥
- ४—सारङ्गाः सुहृदो गृहं गिरिगृहा शान्तिः प्रिया गहिनी,
वृत्तिर्वन्यलताफलैर्निवसनं श्रेष्ठं तरूणां त्वचः ।
तद्व्यानामृतपूरमग्नमनसां येषामियं निर्वृति—
स्तेषामिन्दुकलाऽवतंसयमिनां मोक्षेऽपि नो न स्पृहा ॥
- ५—सत्यं न मे विभवनाशकृतास्ति चिन्ता भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति ।
एतत्तुमां दहति नष्टधनाश्रयस्य यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति ॥
- ६—लक्ष्मि । क्षमस्व वचनीयमिदं दुरुक्तमन्वीभवन्ति पुरुषास्त्वदुपासनेन ।
नोचेत् कथं कमलपत्रविशालनेत्रो नारायणः स्वपिति पन्नगभोगतल्पे ॥
- ७—कस्यादेशात् क्षपयति तमः सप्तसप्तिः प्रजानां—
छायाहेतोः पथि विटपिनामञ्जलिः केन बद्धः ।
अभ्यर्थ्यन्ते जललवमुचः केन वा वृष्टिहेतोः
जात्यैवैते परहितविधौ साधवो बद्धकक्ष्याः ॥
- ८—वयमिह परितुष्टा बलकलैस्त्वं च लक्ष्म्या
सम इह परितोषो निर्विशेषावशेषः ।
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि च परितुष्टे को र्थवान् को दरिद्रः ॥
- ९—स हि गगनविहारी कलमषध्वंसकारी दशशतकरधारी ज्योतिषां मध्यचारी ।
विधुरपि विधियोगाद् ग्रस्यते राहुणासौ लिखितमपि ललाटेप्रोज्झितं कः समर्थः ॥
- १०—उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्देवेन देयमिति का प्रकृतिः सति ।
देवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मन्येव न कृतं यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः ॥
- ११—को वीरस्य मनस्विनः स्वाविषयः को वा विदेशस्तथा
यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम् ।

*ये श्लोक सुपाठ्य तो हैं ही किन्तु ये यू० पी० हाईस्कूल की संस्कृत परीक्षा में पिछले वर्षों में पूछे गये हैं । अतः इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है ।

यद्दंष्ट्रानखलांगुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते

तस्मिन्नेव हृतद्विपेन्द्ररुधिरस्तृष्णां छिनत्त्यात्मनः ।

१२-कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते,

धुर्या लक्ष्मीमथ मयि भृशं वेहि देव प्रसीद ।

यद्यत्पापं प्रतिजहि जगन्नाथ तन्नस्य तन्मे,

भद्रं भद्रं वितर भगवन्भूयसे मङ्गलाय ॥

१३-तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम सा बुद्धिरप्रहिता वचनं तदेव ।

अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव अन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥

१४-गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यातोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥

१५-धर्मार्तं न तथा सुशीतलजलैः स्नानं न मुक्तावली

न श्रीखण्डविलेपनं सुखयति प्रत्यङ्गमप्यपितम् ।

प्रीत्या सज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः

सद्युक्त्या च पुरस्कृतं सुकृतिनामाकृष्टिमन्त्रोपमम् ॥

निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी भाषा में व्याख्या कीजिए :—

१६-नीतो न केनापि न दृष्टपूर्वो न श्रूयते हेममयः कुरङ्गः ।

तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ॥

१७-दुष्प्राप्याणि च वस्तूनि लभ्यन्ते वाञ्छितानि च ।

पुरुषैः संशयारूढैरलसैर्न कदाचन ॥

१८-आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।

दिनस्य पूर्वार्धपरार्धं भिन्ना छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम् ॥

१९-स्त्रीणां हि साहचर्याद् भवन्ति चैतांसि भर्तृसदृशानि ।

मधुराणि हि मूर्च्छयन्ते विप्रविटप-समाश्रिता वल्ली ॥

२०-पशवोऽपि हि जीवन्ति केवलं त्वोदम्भराः ।

तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं यः परार्थे हि जीवति ॥

२१-मृषा वदति लोकोऽयं ताम्बूलं मुखभूषणम् ।

मुखस्य भूषणं पुंसः स्यादेकैव सरस्वती ॥

२२-सहकारे चिरं स्थित्वा सलीलं बालकोकिल ।

त्वं हित्वाऽद्यान्यवृक्षेषु विचरन् विलज्जसे ॥

२३-अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा ।

यत्रास्ते विषसंसर्गोऽमृतं तदपि मृत्यवे ॥

२४-अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम् ।

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्द्रोः किरणेष्विवाङ्कः ॥

२५-कान्पृच्छामः सुराः स्वर्गे निवसामो वयं भुवि ।

किंवा काव्यरसः स्वादुः किंवा स्वादीयसी सुधा ॥

२६-विधौ विरुद्धे न पयः पयोविधौ सुधौ घसिन्धौ न सुधा सुधाकरे ।

न वाञ्छितं सिद्ध्यति कल्पपादपे न हेम हेमप्रभवे गिरावपि ॥

- २७—असंभवं हेम मृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
 प्रायः समापन्नं विपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ॥
 २८—जनग्रति हृदि खेदं मङ्गलं न प्रसूते, परिहरति यशांसि ग्लानिमाविष्करोति ।
 उपकृतिरहितानां सर्वभोगच्युतानां कृपणकरगतानां संपदां दुर्विपाकः ॥
 २९—पात्रं पवित्रयति नैव गुणान् क्षिणोति, स्नेहं न संहरति नापि मलं प्रसूते ।
 दोषावसानरुचिरश्चलतां न वत्ते, सत्सङ्गमः सुकृतसद्मनि कोऽपि दीपः
 ३०—चित्रं चित्रं वत वत महच्चित्रमेतद्विचित्रम्,
 जातो देवादुचितरचना संविधाता विधाता ।
 यन्निम्बानां परिणतफलस्फीतिरास्वादनीया,
 यच्चैतस्याः कवलनकलाकोविदः काकलोकः ॥

अनुवादार्थगद्यसंग्रह

१—पहला पाठ

१—नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य श्रेष्ठ धर्म है । २—किसी वन में चार दांतों वाला हाथी रहता था । ३—पूर्व पुरुषों से आये हुए घर को छोड़ना आसान नहीं है । ४—अब वर्षा बंद हो गई है, हम लोग टहलने चलें । ५—क्या आप वहां जावेंगे, नहीं, वह स्थान मुझे अच्छा नहीं लगता । ६—रमेश की लड़की उसके बनारस जाने पर इलाहाबाद जावेगी । ७—लड़का सो गया है, उसको जगाना उचित नहीं । ८—मुझे देखकर वह अपने स्थान पर खड़ा हो गया । ९—आज आप कहां चलेंगे ? आज क्या है ? १०—मेरे लिए रोटी बनाकर रख दो । ११—आज दो दिन से मदन और मोहन में बोल चाल नहीं है । १२—अनाथों का रक्षक दीनानाथ के सिवाय कौन है ? १३—हाय ! पुत्र, तुने यह क्या दुष्कृत किया । १४—यह सोचते हुए वह रात्रि गजर गई ! १५—महारज चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र (पटना) में निवास करते थे ।

२—दूसरा पाठ

१—राजा भगीरथ की प्रार्थना से गंगा स्वर्ग से नीचे आई । २—यदि तुम ऐसा करोगे तो अपने देश के शत्रु समझे जाओगे । ३—यदि हम सूर्य की ओर देर तक देखें तो अन्धवत् हो जायेंगे । ४—वह एक दुष्ट बालक है, क्योंकि वह सदा स्कूल से अनुपस्थित रहता है । ५—अपने बड़े भाई की आज्ञा से लक्ष्मण ने सीता को वन में छोड़ दिया । ६—पुष्पपुर नाम का एक सुरम्य नगर है उसमें नन्द नामक एक राजा रहता था । ७—राजा अपने राज्य में पूजा जाता है पर विद्वान् सब जगह पूजा जाता है । ८—महाराज दशरथ ने बचन-बद्ध होकर राम को वन में भेज दिया । ९—झूठ मत बोलो, झूठ बोलने वाले को धिक्कार है । १०—बालक चन्द्रमा को देखकर खुश होते हैं और नाचते हैं । ११—आपका मेरे साथ यह समयोचित व्यवहार करूंगा । १२—आह ! धन से रहित मुझे धिक्कार है, समर्थता के बिना व्यवहार करूंगा । १३—झूठ बोलने वाले का कोई निवास नहीं करता । १४—जब तक आप शासन करते रहे हमारी हार न हुई ।

१ हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद के लिए “आदर्श वाक्य” आगे पटना मैट्रिक्यूलेशन के परीक्षा-पत्रों के साथ देखिए ।

३—तीसरा पाठ

१—एकता का यही गुण है कि उससे असाध्य काम भी सिद्ध हो जाते हैं । २—गोविन्द ने बारह वर्ष में व्याकरण सीख लिया । ३—कोशलाधीश राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या थी । ४—दशरथ जी के राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चार लड़के थे । ५—सारे राजपाठ को जुए में हारकर राजा नल वन को चले गये । ६—धन, जन, और यौक्त का गर्व मत करो । ७—उसके सामने पगली की तरह न जाने मैंने क्या क्या कहा । ८—गोदावरी के किनारे पर एक बड़ा भारी चाल्मली का वृक्ष था । ९—दक्षिण देश में महिलारोप्य नामक एक नगर था । १०—सञ्जय धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र का सब वृत्तान्त सुना रहे थे । ११—प्रातःकाल और सायंकाल का भ्रमण स्वास्थ्यवर्धक है । १२—महाकवि श्रीकालिदास को आधुनिक योरोपियन् विद्वान् भारत का शेक्सपियर कहते हैं । १३—चूहा-बिल्ली, साँप-न्यौला और सिंह-बकरी का स्वाभाविक बैर है । १४—संसार में वही मनुष्य जीवित है जो दूसरों के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करता है ।

४—चौथा पाठ

१—क्षण क्षण के बाद जिसमें नूतनता पाई जावे, उसी को सौन्दर्य कहते हैं । २—अहिल्याबाई का राज्यप्रबन्ध वस्तुतः प्रशंसनीय था । ३—वीर अभिमन्यु ने निडर होकर कहा—मैं चक्रव्यूह में लड़ुंगा । ४—पक्षिकुल के कलरव से वह स्थान मानो बोल रहा था । ५—भारतवर्ष में श्रीशंकराचार्य जी ने वैदिक धर्म का झण्डा गाड़ दिया । ६—दीवानचन्द्र के सुरिले स्वर पर लोग मानो दीवाने हो गये । ७—प्राचीन समय में भारत एक सोने की चिड़िया कही जाती थी । ८—ऐसे क्षुद्र मनुष्य का जीना या मरना एक ही समान है । ९—बहुत बकवाद न कर, मैं तेरा भण्डा फोड़ दूंगा । १०—वीर हकीकत, हकीकत में धर्मवीर था । ११—तू तो कानों का बहिरा और आँखों का अन्धा है । १२—सनियम विद्याभ्यास करना लोहे के चने चवाना है । १३—इस कार्य को वही कर सकता है जो तलवार की नंगी धार पर खड़ा हो सके । १४—आप जो हातमताई की कबर पर लात मारते हैं ।

५—पाँचवाँ पाठ

१—उस सरोवर के पास पहुँच कर वानर ने राजा से कहा—“जो लोग आधा सूर्य निकलने पर इस सरोवर में स्नान करते हैं उन्हीं को सिद्धि प्राप्त होती है ।” २—ऐसा सोचकर बंग देश के राजा ने दिन के तिसरे पहर में अपने मित्र रत्न-सेन को बुलाने के लिए अंगरक्षक को भेजा । ३—जुलाहे ने कहा—“यदि ऐसा ही है तो मैं अपने घर जाकर अपनी स्त्री से पूछकर आता हूँ, तब तुम वरदान देना ।” ४—महापि श्रीचाल्मीकि जी ने रामायण में वर्णन किया है कि रावण को मारकर श्रीरामन्द्र जी अपने प्रियजनों के सहित पुष्पक विमान में बैठकर लंका से अयोध्या को आये । ५—इस समय ऐसी ऐसी पनडुब्बी नौकाएँ बनी हुई हैं कि जो पानी के भीतर ही भीतर चलती हैं, और पानी के नीचे जाकर दुश्मनों के जहाजों को समुद्र में डुबो देती हैं, और उनमें चढ़े हुए सब मनुष्य डूब जाते हैं ।

६—शरीर तथा गुणों में जमीन और आसमान का फर्क है, क्योंकि शरीर क्षण भर में नाश हो जाता है, किन्तु गुण अनेकों कल्पों तक स्थिर रहते हैं।

७—दशरथ जी के वचनों का पालन करते हुए श्रीरामजन्द्र जी ने राज्य को छोड़ कर सीता और लक्ष्मण के साथ विन्ध्याचल पर्वत में सुख से निवास किया।

८—पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि से कहा—‘हे मित्र ! तू बुढ़ापे में अपने किस काम को याद करेगा, दूसरे देश को न देख कर बालकों से क्या नवीन बात कहेगा ?’

९—ऐसा सुनकर वे राजपुरुष विस्मययुक्त होकर धर्मबुद्धि के धन चुराने के दण्ड को शास्त्र की नज़र से देखते ही थे कि धर्मबुद्धि ने उस शमी वृक्ष की कोटर में घास फूस लपेट कर आग लगा दी।

१०—हाज़िरजवाबी उस बानर ने कहा—‘अगर ऐसा ही है, तो तूने मुझे वही क्यों नहीं कहा कि अपने हृदय को दे दे, मैं उसी जामुन के वृक्ष की कोटर से तुझे अपने हृदय को निकाल कर अपनी भावी के लिए दे देता, मेरा हमेशा अपना हृदय उसी पेड़ की कोटर में छिपाया रहता है। हृदय से रहित मुझे तू यहाँ क्यों ले आया ह ?’ यह सुनकर मकर ने खुश होकर कहा—‘मित्र अगर यही बात है तो मुझे अपने उस हृदय को जल्दी ला दे, जिसको खाकर वह दुष्ट स्त्री मरने से बचे जाय, मैं तुझे उसी जामुन के पेड़ के पास ले जाता हूँ।

६—छठा पाठ

(क) एक समय एक भेड़िये ने एक बकरे को मारकर खाया, एक हड्डी का टुकड़ा उसके गले में फंस गया। वह व्याकुल होकर चिल्लाने लगा—‘ऐ वनवासियो ! जो मेरे गले से इस हड्डी के टुकड़े को निकाल देगा मैं उसे बड़ा इनाम दूंगा’ इनाम के लालच से एक बगुले ने अपनी लम्बी गरदन से हड्डी निकाल दी और इनाम माँगने लगा। भेड़िये ने उत्तर दिया—‘रे मूर्ख ! मैंने अपने मुँह में आई हुई तेरी गर्दन को न चबाकर तुझे जीवन दान दिया, इससे अधिक क्या इनाम हो सकता है?’ दुष्टों का यही स्वभाव होता है।

(ख) एक पुरुष की दो स्त्रियाँ थीं—एक बूढ़ी और एक जवान ! वह आप भी बूढ़ होने पर था। शिर के बाल कुछ सफेद और कुछ काले थे। एक दिन तेल लगाते समय जवान स्त्री ने सोचा कि मैं जवान हूँ मेरा पति भी जवान होना चाहिए। उसने सफेद बाल उखाड़ डाले। बूढ़ी स्त्री ने भी तेल लगाते समय सोचा कि मैं बूढ़ी हूँ मेरा पति भी बूढ़ा होना चाहिए। उसने भी काले बाल उखाड़ डाले। कुछ दिन बाद वह मनुष्य सर्वथा केश रहित हो गया। सच है दो स्त्रियों वालों की यही दशा होती है।

(ग) एक जंगल में कोई गीदड़ भूख से मारा मारा फिर रहा था। एक जग उसने सुन्दर सुन्दर मीठे अंगूरों से भरी हुई एक लता देखी। लता बूढ़ी थी, बार बार कूदने पर भी गीदड़ के हाथ कुछ न आया। वह आग जाने लगा और कहने लगा—‘इस लता के अंगूर मीठे तो खट्टे हैं।’ चालाक अपनी चालाकी से वहाँ नहीं आता।

(घ) दो मुसाफिर कहीं जा रहे थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मुसीबत में एक दूसरे का साथ देगा। वे एक घने जंगल में जाते ही थे कि एक रीछ सामने आया।

एक आदमी पेड़ पर चढ़ गया और दूसरा निर्बल होने से प्राणायाम बढ़ाकर वहीं लेट गया। रीछ ने उसे मृतक समझ कर छोड़ दिया। रीछ के चले जाने पर पेड़ वाला मनुष्य नीचे उतरा और दूसरे से पूछने लगा कि रीछ तुम्हारे कानों में क्या कहा था। उसने उत्तर दिया कि रीछ कहता था—‘दगाबाजों का कभी विश्वास मत करो।’

(ड) एक लड़का छोटी अवस्था में चीजें चुराकर अपनी माता को देता था। माता खुश होती थी। इस तरह लड़का पक्का चोर हो गया। एक समय किसी बड़ी चोरी के कारण उसे फांसी की सजा मिल गई। सब लोग उसे देखने आये। उसकी माता भी वहाँ पर थी। उसने माता का कान काट दिया। लोगों ने उसे धिक्कारते हुए कारण पूछा। उस चोर ने उत्तर दिया—‘सारा कसूर तो इसी का है अगर यह बचपन में ही मुझे चोरी करने से रोक देती तो मुझे आज फांसी न मिलती।’

७—सातवां पाठ

(क) किसी तलाब के किनारे पर एक बालक खेल रहा था। बालक के बहु-मूल्य वस्त्रों तथा जेवरों को देखकर एक ठग उसके पास आया। बालक ने उसे ठग समझ कर रोना शुरू किया। बालक को रोते देख, ठग ने रोने का कारण पूछा। बालक ने कहा—‘मेरी एक सोने की अंगूठी इस तालाब में गिर गई।’ ठग ने कपड़े उतारे और पानी में घुस गया। बालक ठग के कपड़े उठाकर चल दिया। शरारती के साथ शरारत करना ही ठीक है।

(ख) दो तपस्वी शिव के किसी मन्दिर में तपस्या करने लगे, आकाशवाणी हुई—‘मैं तुम पर प्रसन्न हूँ वर मांगों। जो पहिले मांगेगा, उससे दूसरे को दुनी चीज मिलेगी।’ उनमें एक लालची था। यह सोचकर कि मुझे दुनी चीज खुद बखुद मिलेगी चुप हो गया। दूसरे ने लालची को चुप होते देखकर मांगा—‘हे प्रभो मेरी एक आंख कानी हो जाय।’ लालची सहसा दोनों आंखों से अन्धा हो गया। इस लिए सच है कि लालच बुरी बला है।

(ग) कहते हैं श्रीरामचन्द्र जी जब बालक थे, माता की गोद में बैठे हुए पूर्ण-चन्द्र जी रोने लगे। माता ने बहुत समझाया मगर बालक ने एक न मानी। सब कहा—‘राम, ठहरो मैं अभी चन्द्रमा को पकड़ कर लाता हूँ।’ तुरन्त वह एक बड़ा शीशा लाया और उसमें चन्द्र दिखा दिया। रामचन्द्र जी मुस्कराते हुए बहुत खुश हुए।

(घ) किसी जङ्गल में एक पेड़ के नीचे शेर सोता था। उसकी गर्दन के बालों पर एक चूहा कूदने लगा। सिंह जाग उठा और चूहे को मारना ही चाहता था कि चूह ने प्रार्थना की—‘आप मृगराज हैं मुझ दीन पर दया कीजिए।’ सिंह ने उसे छोड़ दिया। एक समय वही शेर किसी जाल में फँसा। चूहे ने अपने उपकार का बदला चुकाने के लिए जाल को काट दिया। सिंह चूहे की तारीफ करता हुआ चला। सच है किसी के साथ की हुई भलाई निरर्थक नहीं जाती।

(ड) एक समय वही चूहा फिर उस शेर को मिला। शेर ने कहा हे मूषक ! मैं तुझ पर बहुत प्रसन्न हूँ और तेरे इस उपकार का बदला चुकाना चाहता हूँ, कुछ माँग। चूहा फूल गया और सोचने लगा कि मैं सिंह से किस बात में कम हूँ—शेर भी मेरा कृतज्ञ है। उसने कहा कि अपनी लड़की की शादी मुझ से कर दो। सिंह ने ज्योंही यौवन से मस्त अपनी लड़की बुलवाई चूहा उसके पैर के नीचे आकर मर गया। छोटी मुँह बड़ी बात हानिकारक है।

८—आठवां पाठ

(क) किसी नदी में मिट्टी और पीतल के दो बरतन बह रहे थे। मिट्टी का बरतन आगे और पीतल का पीछे था। मिट्टी का बरतन घबड़ाने लगा। पीतल के बरतन ने उसे दिलासा देकर कहा कि घबड़ाओ मत, मैं तुम्हें बचाऊँगा। मिट्टी के बरतन ने कहा—भाई दूर से बोलो, कहीं तुम्हारी हमारी टक्कर हो गई तो मैं टूट जाऊँगा। ठीक है बलवान् और कमजोर की लड़ाई में कमजोर का ही नुकसान होता है।

(ख) एक गड़रिये ने अपनी भेड़ों की रक्षा के लिये एक कुत्ता पाला हुआ था। वह उसे कचौड़ी हलवा आदि अच्छी अच्छी चीजें खिलाया करता था। कुत्ता भी स्वामी की गैरहाजरी में एक न एक भेड़ को खा ही लेता था। जब स्वामी को उसका भेद मालूम हो गया तो वह तलवार लेकर उसे मारने लगा। कुत्ते ने कहा—मैंने तो आपके थोड़े से ही भेड़ खाये हैं जो भेड़िया रोज कई भेड़ खा जाता है तू उसे क्यों नहीं मारता।' गड़रिये ने जवाब दिया कि तू ने मेरा नमक खाकर नमक-हरामी की है इसलिए तू मारा जायगा।

(ग) किसी नदी के किनारे पर एक भेड़िया और एक भेड़ का बच्चा पानी पी रहे थे। भेड़िया ऊपर की ओर, और भेड़ का बच्चा नीचे की ओर था। भेड़िये ने भेड़ के बच्चे से कहा—'ओ बेवकूफ पानी को क्यों जूठा कर रहा है, देखता नहीं मैं पानी पी रहा हूँ।' भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—'भगवन् ! मैं आप से नीचे की ओर हूँ, पानी तो ऊपर से मेरी ओर आ रहा है फिर जूठा कैसे हो सकता है।' भेड़िये ने कहा—'ठीक है परके साल तूने मुझे गाली दी थी।' भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—'महाराज ! मैं सिर्फ नौ महीने का हूँ परके साल तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था।' भेड़िये ने कहा—'तो फिर तेरा बाप रहा होगा।' भेड़ के बच्चे ने कहा—'मेरा बाप तो एक वर्ष पूर्व ही मर चुका है।' भेड़िये ने यह कह कर कि तो तेरी जाति का और कोई रहा होगा, भेड़ के बच्चे को पकड़ कर मार डाला। दुष्ट अपनी दुष्टता के लिए कोई न कोई बहाना बना ही लेता है।

(घ) एक उस्ताद कुछ शागिर्दों को पढ़ाया करते थे। उस्ताद साहब के लिए अपने अपने घर में कोई न कोई चीज लाते थे। रहीम नाम वाला एक शागिर्द उस्ताद के लिए कभी कुछ नहीं लाता था। इस लिए उस्ताद साहब उस पर प्रायः नाराज रहा करते थे। एक दिन रहीम एक बड़े मिट्टी के कटोरे को भरकर उस्ताद साहब के लिए दूध लाया। उस्ताद साहब ने कटोरे को जल्दी से मुँह में लगाया और दूध पीने लगा। मगर कटोरा बहुत बड़ा था उस्ताद

साहब से सारा पिया नहीं जाता था, इस लिए दूध पीते पीते रहीम से बातें करने लगे । उस्ताद साहबने कहा—‘सुन तो रहीम, आज क्या बात है, सूरज पच्छिम से कैसे आया है ? रहीम ने कहा—उस्ताद साहब, आज मेरी माँ ने ज्योंही दूध दुह कर नीचे रखवा कि एक कुत्ता आया और दूध को पीने लगा । इस लिए माँ ने सोचा कि जूठा दूध फेंकना क्यों है उस्ताद साहब को पहुँचा दे । उस्ताद ने सुनते ही कटोरा जमीन में पटक दिया और लगे रहीम को गाली देने । रहीम ने जोर जोर से रोते हुए कहा—‘उस्ताद साहब आपने कटोरा फोड़ कर बड़ा नुकसान कर दिया है क्योंकि मेरी माँ तो इसी कटेरी में मेरे छोटे भाई को रात को पेशाब करवाया करती थी ।

९—नौवां पाठ

महाकवि श्रीकालिदास सब कवियों में श्रेष्ठ हो चुके हैं, इसमें कुछ भी विवाद नहीं । इनके काव्य में माधुर्य-प्रसादादि सब गुण हैं जो कि अच्छे काव्यों में होने चाहिए । इसी लिए इस महाकवि का तथा इसके काव्यों का सभ्य समाज में बहुत आदर है ! यह महाकवि कब हुआ ? यह सन्दिग्ध है । कोई कहते हैं कि ८ वीं ईस्वी में हुए हैं, दूसरे कहते हैं, कि ५ वीं ईस्वी में, और तीसरे कहते हैं कि ये विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से एक थे, परन्तु ठीक मत यही है कि यह ईसा से ५७ वर्ष पूर्व हुए हैं ।

यह कवीन्द्र ब्राह्मण थे इस में सब की एक सम्मति है किन्तु यह कहाँ के थे ? यह फिर विवाद-ग्रस्त है । कोई इन्हें काश्मीर का बताते हैं, कोई पञ्जाब का और बाकी इन्हें मालव देश का बताते हैं । इस महाकवि के विषय में परम्परागत जन-श्रुति यह सुनी जाती है कि—यह निरक्षर भट्ट थे, अगरचे जवान और अच्छे रूप वाले थे । भाग्यवश एक राजा की लड़की विद्वत्तमा के साथ इनका विवाह हुआ और एकान्त में वात्सलाप से जब उसे मालूम हुआ कि यह मूर्ख हैं तो घर से इसे बाहर निकाल दिया । उसके अपमान से दुःखित और विद्या सीखने में दत्तचित्त यह सरस्वती की आराधना करके बहुत शीघ्र महाकवि हो गया । जब विद्वत्तमा के पास घर पर आयो तो किवाड़ बंद पाये । जोर से कहने लगा—‘अनावृतकपाटं द्वारं देहि ।’ कालिदास ने संस्कृत-सम्भाषण से उसे खुश किया । उसने ‘अस्ति कश्चित् वाङ्’ उसके कहे हुए तीनों पदों में से एक एक पद को एक एक महाकाव्य के प्रारम्भ में रखकर तीन महाकाव्य बनाये । उन में—‘अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा’ इत्यादि से कुमारसम्भव नामक प्रथम काव्य, कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा’ इत्यादि से मेघदूत नामक द्वितीय काव्य, ‘वाङ्मार्थविव संवृत्तौ’ इत्यादि से रघुवंश नामक तृतीय काव्य बनाया । और भी इन्होंने अभिज्ञानशाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, श्रुतबोध ऋतुसंहार, नलोदय, शृंगारतिलक और ज्योतिर्विदाभरण नामक ग्रन्थ बनाये हैं । इसके बाद राक्षस काव्य आदि ग्रन्थ भी इन्हीं के बनाये हैं जिनके बनाने से यह संसार में विख्यात हो गये हैं । इस प्रकार इस महाकवि ने चिरकाल तक संसार का सुख भोगा और यश के शरीर से वह हमेशा जीवित है ।

धन्य सुरस के रसिक कवि, नित्य सुकृति जग माहि ।
जिनके यश के काय में, जरामरण भय नाहि ॥

१०—दसवां पाठ

(क) एक दिन विद्यासागर किसी मित्र के साथ सड़क पर टहल रहे थे । इतने में सामने से रोता हुआ एक ब्राह्मण आ निकला । विद्यासागर ने उससे रोने का कारण पूछा, किन्तु ब्राह्मण ने उनके वेष को देखकर अपने रोने का कारण बताना व्यर्थ समझ कर कुछ न कहा । पीछे उनके आग्रह करने पर ब्राह्मण न कहा—“महाशय, हम ने एक महाजन से रुपये उधार लेकर कन्या का विवाह किया था, पर ठीक समय पर हम उसको रुपये न दे सके, अब उसने हमारे ऊपर दो हजार चार सौ की नालिश की है जिसकी परसों तारीख है ।” यह सुन विद्यासागर ने ब्राह्मण से उसके घर का पता पूछ लिया और उसे विदा किया । पीछे विद्यासागर ने जाँच की तो ब्राह्मण की बात सत्य निकली । तब उन्होंने दो हजार चार सौ रुपये ब्राह्मण के नाम से अदालत में जमा कर दिये । ब्राह्मण ने कचहरी में जाकर सुना कि किसी ने सारे रुपये जमा कर दिये हैं । इस अद्भुत कौतुक को देखकर उसका चित्त कैसा गद्गद हुआ होगा इसे वह ब्राह्मण ही जानता था । फिर उसने उस महापुरुष का नाम जानना चाहा जिसने रुपये जमा किये थे, परन्तु कुछ पता न लगा । अन्त में वह दीन ब्राह्मण कृतज्ञ हृदय से गद्गद कण्ठ हो अपने गुप्त-दाती को असंख्य आशीर्वाद देता हुआ घर लौट आया । निदान विद्यासागर की दया की सीमा नहीं थी । जिस ग्राम में वे जा पड़ते थे वहीं के लोग उनके दर्शन को आते और भीड़ लग जाती थी ।

(ख) कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने में किसी गुण के न रहने पर गुणवान् बनना चाहते हैं । जैसे यदि कोई पुरुष कविता करना न जानता हो, पर वह अपना ढंग ऐसे बनाये रहे कि जिससे लोग समझें कि यह कविता करना जानता है, तो यह कविता का आडम्बर रखने वाला मनुष्य झूठा है, और फिर यह अपने वेष का निर्वाह पूरी रीति से न कर सकने पर दुःख सहता है और अन्त में भेद खुल जाने पर लोगों की आंखों में झूठा और नीच गिना जाता है । परन्तु जो मनुष्य सत्य बोलता है वह आडम्बर से दूर भागता है और उसे दिखलावा नहीं रुचता । उसे तो इसी में बड़ा सन्तोष और आनन्द होता है कि सत्यता के साथ वह अपना कर्तव्य पालन कर रहा है ।

११—ग्यारहवां पाठ

(क) सम्राट् विक्रमादित्य का स्वभाव था कि वह नगर के बाहर रात्रि के समय अकेला नगर में घुमा करता था । एक दिन का घटना है कि नगर के बाहर राजा को चार मनुष्य दिखाई दिये । सम्राट् ने उन मनुष्यों से पूछा कि तुम कौन हो ? उन्होंने कहा ‘हम चोर हैं ।’ सम्राट् ने कहा—‘मैं भी तुम्हारा साथी हूँ, अच्छा अब तुम अपना अपना कौशल वर्णन करो ।’ यह सुनकर एक चोर ने कहा कि ‘मैं जानवरों की भाषा भली प्रकार जानता हूँ ।’ दूसरा बोला—‘मैं सूँघ कर कोष का स्थान

प्रतीत कर लेता हूँ ।" तीसरे ने कहा—“मैं ताली के बिना ही ताला खोल लेता हूँ ।” चौथा चोर कहने लगा—“मैं अन्धरे में भी मनुष्य को एक बार देखलूँ तो तुरन्त पहचान सकता हूँ । फिर इन चारों चोरों ने सम्राट से पूछा कि भाई तुम में क्या कौशल है ? तुम भी तो बताओ ।” सम्राट ने उत्तर दिया कि मुझ में यह कौशल है कि यदि चोर को फाँसी मिलती हो तो मेरे सिर हिला देने से उनकी जान बच सकती है । चोर यह बात सुनकर हर्षित हुए और कहने लगे कि अब किस बात का डर है ? चलो आज सम्राट ही के महल में चोरी करें ।

(ख) कैदखाने की कोठरी में एक फटी पुरानी चटाई पर वह बहादुर कैदी सो रहा था । उसकी आँख खुली तो क्या देखता है कि दासी सिरहाने खड़ी रो रही है । इन्द्रनाथ ने कहा—हमदर्द और नेकबस्त दासी ! मैं तुम्हारी सहानुभूति का बदला देने के योग्य नहीं । मेरे पास है ही क्या जो दे सकूँ ? परन्तु, इतना कहकर अपने बाहू से सोने का बाजूबन्द उतार कर देने लगा । दासी ने एक ठण्डी आह भर कहा—इन्द्रनाथ ! मैं भिखारिनी तो हूँ परन्तु मैं कुछ माँगने को नहीं आयी । विमला की आवाज सुनकर इन्द्रनाथ चौंक पड़ा, और बोला—“भिखारिनी ! क्या तुम्हीं ने मेरे लिए इस कदर दुःख उठाया है ? तुम ही दासी के वेष में हो ? तुम शत्रुदल में भी आ पहुँचीं ।” विमला ने धैर्यपूर्वक कहा—“संसार में कोई ऐसा स्थान है जहाँ स्त्री अपना वचन निभाने को न पहुँच सके ।”

पंजाब यूनिवर्सिटी की एन्ट्रेंस परीक्षा के प्रश्नपत्र

(१९२६)

(क) १—निषध देश का राजा नल एक बार वन विहार को निकला । नगर से

कुछ दूर निकल जाने पर एक उपवन में उसने एक मनोहर तलाव देखा । उसमें खूब कमल खिले हुए थे; मछलियाँ खेल रही थीं; और अनेक प्रकार के जलपक्षी वहाँ पर उसने एक बहुत ही मनोहर हंस को देखा । राजा को वह ऐसा अच्छा लगा कि उसने उसे सजीव पकड़ना चाहा । इसलिए उसने अपने निपट्टे से एक सम्मोहन शर उस पर चलाने के लिये निकाला । शर को उसने शरासन पर रक्खा ही था कि उसने एक अलक्षित बाणी सुनी । उस बाणी का यह मर्म था कि “हे नरेश, इस पर बाण मत छोड़ । यह तेरा अभीष्ट सिद्ध करेगा । तेरी ही गुणसम्पदा के अनुरूप यह तुझे एक त्रिभुवनमोहिनी राजकन्या प्राप्त करावेगा । उसे तू अपनी सहिषी बनाना ।”

(ख) १—मैं कल ही कलकत्ते से आया हूँ । २—तुम्हारा भाई लकनाम से लौट आया । ३—महात्मा परोपकार के लिए तन मन धन अर्पण कर देते हैं, ४—जैसे पहाड़ पृथ्वी को धारण करते हैं वैसे ही राजा प्रजा का पालन करते हैं । ५—किसी साधु ने कुत्ते से पूछा—‘तू रास्ते में क्यों सोता है ।’ कुत्ता बोला—‘मैं भले बुरे की परीक्षा करता हूँ ।’ ६—जो सब बोलेंगे तो ईश्वर हम से प्रसन्न होगा । ७—

श्याम बड़ा अच्छा लड़का है। वह किसी को नहीं सताता। ८—ईश्वर के दिये देह के किसी अङ्ग की निन्दा नहीं करनी चाहिए। ९—इस विषय में तुम्हें कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिए १०—माता पिता की सेवा करो; फल पाओगे।

(१९२७)

(क) नल की दयालुता पर वह हंस बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपना स्थान छोड़ कर नल के कुछ निकट आया और बोला—“हे निषधनाथ, ईश्वर तेरा कल्याण करें। तूने भूषण पर दया दिखाई है। इसके बदले में मैं भी तेरी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। तू मुझे साधारण पक्षी मत समझ। मैं ब्रह्मा के रथ को खींचता हूँ, इन्द्र के सिंहासन के पास बैठता हूँ। जयन्त इत्यादि देव—बालकों के साथ खेलता हूँ और मन्दाकिनी के किनारे बिहार किया करता हूँ। तूने अपने नृपोचित गुणों से इस भूमण्डल को स्वर्ग से भी अधिक मनोहर बना दिया है। इसलिए कभी-कभी मैं यहाँ भी घूमने आया करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि जैसे देवता मुझे से सख्यभाव रखते हैं वैसे ही तू भी रखें।” नल ने इस बात को प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार किया।

(ख) १—जो गङ्गा में स्नान करता है उसके पाप दूर हो जाते हैं। २. उद्यमी पुरुष सब कुछ कर सकता है। ३. यह मयूर मुझे बहुत अच्छा लगता है। ४. चाणक्य ने नन्द को बृद्धिबल से जीता न कि बाहुबल से। ५. उस भयङ्कर दृश्य को देखकर उस स्त्री के हाथ पाँव कांपने लगे। ६. हरि का पुत्र परशुराम अपने कुल का भूषण और अपनी श्रेणी का रत्न है। ७. अरे अन्धे! इस दीप से तुझे क्या लाभ। ८. सीता को रामचन्द्र जी प्राणों से भी प्यारे थे। ९. इस उद्यान में यह सब से ऊँचा वृक्ष है। १०. यह बातों सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ।

(१९२८)

(क) सन्तान होने पर पुरुषों को इतनी खुशी क्यों होती है। राजा कैदियों को मुक्त कर देते हैं। धनी दरिद्रों को दान देते हैं। सामान्य गृहस्थ भी यथाशक्ति आनन्द प्रगट करने में त्रुटि नहीं करते। सन्तान से उपकार होगा कि अपकार, इसकी कुछ चिन्ता नहीं। उसके द्वारा कुल उज्ज्वल होगा कि कलङ्कित, इसका कुछ निश्चय नहीं। सन्तान बचेगी या मर जावेगी इसका कुछ पता नहीं। फिर भी कितना आह्लाद और आनन्द होता है। माता पिता का निःस्वार्थ प्रेम और स्नेह धन्य है।

(ख) १—यदि मैं झूठ बोलूँ तो आप मुझे दण्ड दें। २. बड़े भाई की आज्ञा पाकर लक्ष्मण सीता को निर्जन वन में छोड़ आया। ३. तुम्हारे पिता का नाम क्या है? ४. अन्धकार में घूमता हुआ मोहन गिर पड़ा और रोने लगा। ५. साधु बहुत प्यासा था, जल पीने के लिए उड़ रहा था। ६. उसने हँसकर कहा—मित्र! चुप रहो, मैंने भय का कारण मालूम कर लिया है। ७. क्या सचमुच मुझे अकेली छोड़कर लक्ष्मण चला गया है? ८. गीदड़ बारम्बार जाल को देखकर सोचने लगा—‘यह बन्ध’ बहुत पक्का है। ९. मैं स्नान के लिए नदी पर जाता हूँ। तू अपने बच्चे को मेरे साथ भेज दे।

(१९२९)

१. माता पिता की सेवा करना सन्तान का धर्म है । २. गङ्गा का जल बहुत पवित्र माना जाता है । ३. पुरुष अपने कर्मों से ही बड़ा अथवा छोटा होता है । ४. मेरे पिता की आयु ८३ वर्ष है । ५. क्या आप लाहौर जावेंगे ? ६. कल वसन्त-पञ्चमी का उत्सव था । ७. जाओ, यह समय काम करने का है, सोने का नहीं । ८. पञ्चवटी जाते हुए राम वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे । ९. तुम्हारे भ्राता ने अपने कुल को कलङ्कित किया है । १०. भीष्म कुरुक्षेत्र में अर्जुन से मारा गया था । ११. इस वृक्ष के फल मीठे हैं । १२. कहा जाता है कि कल हमारे स्कूल में जलसा होगा ।

(१९३०)

१. विद्या की शोभा सेवा में ही है । २. हम पढ़ने के लिए काशी गये । ३. राजा ने ऋषियों को तप करते देखा । ४. ईश्वर तेरी रक्षा करें । ५. यदि तुम मेहनत करोगे तो फल पाओगे । ६. मैं आज तुमसे एक पत्र लिखवाऊंगा । ७. मुझ से उसका दुःख सहा नहीं जाता । ८. इस पुस्तक में १६ अध्याय और ७२५ श्लोक हैं । ९. शत्रु के मरने पर सब प्रसन्न हुए । १०. धन से हीन पुरुष का कौन आदर करता है ।

(१९३१)

१. प्राचीन काल में सब लोग विद्या पढ़ते थे । २. तब कोई भी विद्या रहित नहीं था । ३. राजा, रंक सब एक स्थान में पढ़ें ऐसा नियम था । ४. सब इतिहास ग्रन्थों में ऐसा सुना जाता है । ५. विद्या भी बिना मूल्य दी जाती थी । ६. आजकल इससे उलटा होता है । ७. विद्यार्थी पहिले तपस्वी होते थे । ८. आज शिष्य मास्टरों की गाली देते देखे गये हैं । ९. यह समय का भेद है । १०. देखें, आगे समय क्या करायेगा ।

(१९३२)

१. पहले इस देश का नाम आर्यावर्त था । २. यह देश सारे संसार से उत्तम है । ३. इसमें छःओं ऋतु अपने यौवन में होती हैं । ४. यहाँ अनेक ऋषि मुनि जन्म ले चुके हैं । ५. वे ऋषि सच बोलने वाले और धर्म में स्थिर थे । ६. हमें चाहिये कि हम भी उन्हीं का अनुकरण करें । ७. इसी प्रकार मे हमारा कल्याण होगा और दुःख कटेंगे । ८. उन ऋषियों का कथन है कि प्रत्येक बालक ब्रह्मचारी बने । ९. ब्रह्मचर्य बल और बुद्धि का बढ़ाने वाला है । १०. हे शिष्य ! उठो प्रतःकाल हो गया ।

(१९३३)

१. नम्रता मनुष्य का गुण है । २. फलवान् वृक्ष ही झुकते हैं । ३. श्रीनानक आदि भक्त बड़े नम्र थे । ४. युधिष्ठिर के यज्ञ में भगवान् कृष्ण ने सबकी सेवा की थी । ५. राजा लोग विद्वानों की सेवा करना अपना भाग्य मानते थे । ६. अभिमान से बड़े बड़े राजा नष्ट हुए । ७. विद्यार्थी को अतिनम्र होना चाहिए । ८. कई अमीर लोगों के लड़कों में यह गुण दिखाई नहीं देता । ९. अभिमानी बालक दूसरों

से ज्ञान नहीं ले सकता । १०. शास्त्र में कहा है—अभिमान और सुरापान बराबर हैं ।

(१९३४)

१. मारा हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है । २. अहिंसा नाम का धर्म परम धर्म है । ३. अहिंसक मर कर स्वर्ग को प्राप्त होगा । ४. प्राचीन आर्य हिंसा नहीं करते थे । ५. हिंसक कभी भी विश्वासयोग्य नहीं होते । ६. दूसरे प्राणियों को मारना हिंसा है । ७. शास्त्र सुनने से ऐसी भावना उत्पन्न होगी । ८. अतः शास्त्र का पाठ अवश्य करना चाहिए । ९. ऐ विद्यार्थी जनों ! प्रातः स्नान करके स्वाध्याय करो । १०. स्वाध्याय करने वाला ईश्वर विश्वासी हो जाता है ।

(१९३५)

१. उन मूर्ख पण्डितों के इन वचनों को सुन कर सब लोग जो उस सभा में बैठे थे हँस पड़े । २. यह नदी हमारे देश में सब से छोटी नदी है । ३. तुमको देख देख कर मेरा मन क्यों इतना प्रसन्न होता है । ४. यह पुस्तक पढ़ने योग्य है, अवश्य खरीद लो । ५. उससे पूछ कि पढ़ने के लिए कब गुरु जी के पास जायेगा । ६. पिता जी, मैं भी आपके साथ घूमने के लिए जाना चाहता हूँ । ७. कृपा करके मुझे अपना घर दिखा दें । ८. यहीं ठहर, मैं अभी नदी से जल पीकर आता हूँ । ९. गुरुजी, मेरी चार बहीन और तीन भाई हैं, मैं इनमें बड़ा हूँ । १०. बहुत दान देने से भी धन नष्ट नहीं होता, जैसे, सारे ग्राम से ले जाने पर भी किसी बड़े कुएं का जल ।

(१९३६)

१. धन के लिए मनुष्य घर के सुख को छोड़ कर कहाँ २ फिरता है । २. चिन्ता करने से क्या मिलेगा । अब क्या करना चाहिए ? यह आप कहें । ३. इन चारों चोरों को नगर से बाहर ले जाकर मार दो । ४. ऊपर से गिरते हुए बालक को पिता ने दोनों हाथों से पकड़ लिया । ५. आज ज्वर के कारण गुरु जी ने हमें पाठ नहीं पढ़ाया । ६. वह मेरा सब से बड़ा भाई है और यह सब से छोटा । ७. यहाँ बैठ जा और ध्यान देकर सुन, गुरु जी क्या कहते हैं । ८. यह काम कर जिससे दुनियां में तेरी शोभा हो । ९. देख, कोई स्त्री बाहर आई है जा उससे उसका नाम पूछ । १०. मैं इस घोड़ी को बेचकर नई घोड़ी मोल लेना चाहता हूँ—माता जी आपकी क्या इच्छा है ?

(१९३७)

१. मैं हर दिन स्नान करके, पाठशाला को जाता हूँ—पाठशाला में मेरे साथ भोजन खाता हूँ । २. हमारे गुरु जी के चार पक्ष हैं—जिन ग्रामों से मेरे साथ आये हैं, चौथा वहीं ग्राम में है—तुम्हारे छोटे भाई के लिए क्या क्या नहीं किया परन्तु वह मेरे किये को नहीं जानता । ४. जो सुनने योग्य था सुन लिया है अब यहाँ ठहर कर क्या करूँगा । ५. देख, देख-देख कर चल, नहीं तो तू जमीन पर गिर पड़ेगा । ६. पापी चोरों ने शाम के समय कन्या को मार कर नदी में डाल दिया । ७. यह दो विद्यार्थी सारा दिन खेलते हैं, न पढ़ते हैं न पढ़ेंगे । ८. प्या

भाई जल्दी जा, और यह पत्र पिता जी को दे दे। ९. माता ने कहा 'बोल' तू क्या चाहता है। १०. मनुष्य संसार में रोने के लिए आया है या हँसने के लिए ?

(१९३८)

१. तू भी तो वहाँ ही था—मुझे सुना, वहाँ क्या क्या हुआ ? २. तुम दोनों चलो, हम दोनों भी अपनी माता जी के साथ तुम्हारे पीछे आते हैं। ३. पूछो, जो पूछना है—जल्दी कर मुझे जाना भी है। ४. इन फलों को लेकर दोनों हाथों से अपने, गुरु जी के आगे रख दे। ५. विद्या के बिना मनुष्य कुछ नहीं—पशु के समान ही होता है। ६. दूसरे दिन वह स्त्री रोती हुई फिर हमारे घर रात के समय आ गई। ७. जो सोता है वह रोता है यह किसी महात्मा ने ठीक कहा है। ८. तुम्हारे माता पिता किस दिन यहाँ से अपने ग्राम को जायेंगे ! ९. तू कौन है ? कहाँ से आया है ? कब, और किस लिए। १०. दूध पीकर पानी कभी नहीं पीना चाहिए—तू सुन याद रख।

(१९३९)

१. दूसरे ने कहा—तुम कैसे मूर्ख हो, मैं तुम्हारे वचन नहीं सुनूँगा। २. उसने कहा—मैं उस नरश्रेष्ठ की राजलक्ष्मी हूँ। मुझे अब उसे त्यागना पड़ेगा। अतएव अब मैं दुखी हूँ। ३. सूर्य, चन्द्रमा और तारे सब ईश्वरीय नियम के आधीन हैं। ४. मेरे ऊपर क्रोध मत करो। मैं जो कहता हूँ वह सत्य है। यद्यपि वह कटु है। ५. इस मास में सूर्य बड़ी जल्दी उदय हो जाता है और रात से दिन अधिक लम्बा होता है। ६. राम ! जाओ, पचपन आम खरीद कर शीघ्र लौट आओ। ७. परमेश्वर के बिना आपद् में हमारा कौन बन्धु है ? ८. शीघ्र ही उसे मार दिया गया। ९. माता तथा मातृ-भूमि स्वर्ग से भी बड़कर है। १०. आप जाएँ, फिर दर्शन दीजिएगा। ११. किसी साधु ने एक कुत्ते से पूछा—तू मार्ग में क्यों सोता है ? कुत्ते ने कहा—मैं भले बुरे की परीक्षा करता हूँ। १२. वाल्मीकि ने रामायण में वर्णन किया है कि रावण को मारकर श्रीराम अपने प्रिय-जनों के साथ पुष्पक विमान में चढ़कर लंका से अयोध्या को आये।

पञ्जाब यूनिवर्सिटी की प्राज्ञ परीक्षा के प्रश्नपत्र
हिन्दी अनुवाद परीक्षा पत्र (छठा)

(१९२९)

(क) मीरा एक राठोर-सामन्त की कन्या थी। दो बातों के लिए तो वह वचपन से ही विख्यात हो गई थी। एक तो अलौकिक रूपसौन्दर्य के लिए और मधुर वाणी के लिए। उसके यह दोनों गुण देश-विदेश सब जगह फैल गये। यहाँ तक कि उसकी सुन्दरता को देखने और उसके सुरीले गान को सुनने के लिए दूर-दूर से लोग उसके पिता के यहाँ आया करते थे। मीरा अपने रूप-लावण्य और

संगीत माधुर्य के द्वारा सब को मुग्ध कर देती थी। मीरा देवी बचपन से ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहती थी। उसके जी में संसारिक भोग-विलास की लालसा थी ही नहीं। अपने पिता के घर मीरा सारे दिन सब को साथ लेकर भगवान् के नामों और गुणों का गान किया करती थी। संसारी प्रलोभनों से वह सदा दूर रहती थी।

(ख) पञ्चवटी की शोभा को देखकर रामचन्द्र जी बहुत प्रसन्न हुए, वास्तव में पञ्चवटी स्थान ही ऐसा था। वाल्मीकि जी ने पञ्चवटी का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। उन्हीं के वर्णन का कुछ सारांश हम यहाँ लिखते हैं।

(ग) सुनिए, मेरे चार भाई हैं और सात बहिनें।

(१९२७)

(क) बेटा दुर्योधन ! काम और क्रोध के वश होने से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। इसी से तुम गुरुजनों का कल्याणकारी उपदेश नहीं सुनते। किन्तु हे पुत्र ! जब तुम अपनी अधर्म-बुद्धि को नहीं जीत सकते तब राज्य जीतने या राज्य की रक्षा करने की तुम किस तरह आशा करते हो ? बेटा ! तुमने आज तक पाण्डवों के साथ जो बुरा व्यवहार किया है, उनको जो तुमने नाना प्रकार की पीड़ा पहुंचाई है—उसका प्रायश्चित्त उन्हें उनका राज्य देकर कर डालो। तुम समझते हो कि युद्ध होने पर भीष्म द्रोण आदि सब तरह तुम्हारी ही तरफ रहेंगे। यह बात कभी नहीं हो सकती। पाण्डवों का राज्य में हक है; और धर्मात्मा होने के कारण सब लोग उन्हें अधिक चाहते हैं, जो लोग तुम्हारे अन्न से पले हैं वे युद्ध में तुम्हारे लिए प्राण दे सकते हैं। परन्तु पाण्डवों के खिलाफ कभी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते। इसलिए हे पुत्र ! सन्धि स्थापन करके सब की रक्षा करो और पाण्डवों के साथ मेल करके सुख पूर्वक रहो।

(ख) अपनी विधवा पुत्री को अपने पास रखकर भास्कराचार्य उसको ज्योति-विद्या पढ़ाने लगे। कहा जाता है कि लीलावती विद्या में इतनी प्रवीण थी कि वह वक्ष के पत्तों की ठीक संख्या बता देती थी। लीला ने अपना सारा जीवन विद्या-शिक्षा के काम में ही व्यतीत किया।

(ग) मैं तो अपने सब से छोटे भाई के साथ पच्चीस दिन के बाद फिर यहाँ आ जाऊंगा, परन्तु मेरी चार बहिनें वहाँ पर ही रहेंगी।

(१९२८)

(क) हरिद्वार हिन्दुओं का परम पवित्र तीर्थ है। ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों में इसकी महिमा बहुत गाई गई है। वेद मन्त्रों में भी इसकी चर्चा पाई जाती है। जो लोग मानते हैं कि यदि तुम अपने दुर्योधन के लिए गङ्गा में जाने की कोई पुनः असत्य भाषण से बचो तो तुम्हारे बुद्धि के लिए गङ्गा में जाने की कोई आवश्यकता नहीं।

जो लोग शास्त्रोक्त विधि के अनुसार श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उक्त तीर्थ का सेवन करते हैं वही यथा योग्य फल को प्राप्त कर सकते हैं, अन्य नहीं, प्रत्युत तीर्थ पर निषिद्ध आचरण करने वालों को भयङ्कर नारकी गति मिलती है।

(ख) विचारशील मनुष्यों से ऐसा सुना जाता है कि कविता और मानव जाति का अनादि सम्बन्ध चला आता है। मनुष्य के बिना अन्य कोई प्राणी कविता के रचने या समझने में समर्थ नहीं। मनुष्यों में भी सहृदय पुरुष ही उसके रस भावादि मर्म को जान सकता है। कविता के आस्वादन से रहित मनुष्य पशुवत् होते हैं। संसार में ऐसी कोई भाषा नहीं जिसमें कुछ न कुछ कविता न पाई जाय। सङ्गीत भी कविता की शाखा है। सङ्गीत कविता-प्रेम का बड़ा भारी सहायक है और प्रेम ही सृष्टि का मूल मन्त्र है। आजकल के नवशिक्षित युवकों में से कई एक निजमातृ-भाषा की कविता से घृणा करते हैं। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि वे कविता के मर्मज्ञ तथा मातृभाषा के स्नेही नहीं।

(ग) भद्रसेन ने कहा—उठो भाई ! रात्रि के चार बज चुके हैं। ब्राह्म मूर्त हो गया है, सब से प्रथम भगवत् चिन्तन कर आवश्यक शौचादि से निवृत्त हो स्नान सन्ध्या करके अपने स्वाध्याय का आरम्भ करो। यह सुनकर सब ब्रह्मचारी अपने अपने विस्तरों को छोड़ कर यथावत् नित्यविधि समाप्त करने में तत्पर हुए, उसी समय उनके गुरु आ रहे हैं।

आते ही गुरुजी ने कहा कि सब छात्र मेरी बात सुनें। आज नौ बजे के लग-भग दरभङ्गा नरेश पाठशाला का निरीक्षण करेंगे। उनके साथ अनेक शास्त्रों के विद्वान् भी आ रहे हैं। वे योग्यतानुसार परीक्षा लेंगे—ऐसा सुना जाता है। किन्तु यह निश्चित बात है कि उनकी आज्ञा के अनुसार उनके प्रधान मंत्री प्रत्येक छात्र के प्रति पांच पांच मुद्रा, एक एक धौतवस्त्र और एक एक अंगोछ देंगे। सब को एक स्वर से वेदपाठ सुनाना होगा।

(१९२९)

पाप छिपाये कदापि नहीं छिपता। पाप का फल अवश्य भोगना पड़ता है। खाँसी की तरह पाप अवश्य प्रकट हो ही जाता है। किसी एक कमरे में तीसरी श्रेणी के दो विद्यार्थी रहते थे। एक दिन का वृत्तान्त है कि हैं। दो बड़े बड़े पलंग सफेद विस्तरों से कसे हैं। पृथक् पृथक् मेज कुर्सियाँ लगी लेट कर स्वाध्याय में नितान्त मग्न हो रहे हैं। प्रायः दोनों की आयु समान थी। दोनों बहुत सुन्दर नवतरुण तथा मेधावी थे। एक का नाम 'चन्द्रशेखर' दूसरे का नाम 'निरञ्जन' था। चन्द्रशेखर शान्त तथा गम्भीर प्रकृति का था। 'निरञ्जन' का स्वभाव कुछ तर्कवितर्क करने का था। पढ़ते पढ़ते अचानक निरञ्जन ने चन्द्रशेखर की ओर देखकर कहा—भाई ! पाप क्या वस्तु है ? चन्द्रशेखर बोला—आश्चर्य, तुमको आज तक यही ज्ञात न हुआ कि पाप किसको कहते हैं ? निरञ्जन—क्या हुआ आप ही बता दें पाप किसे कहते हैं। चन्द्रशेखर—बुरे कार्य का करना पाप है। निरञ्जन—यह ठीक नहीं, कभी कभी बुरा काम भी किया जाता है पर वह पाप नहीं होता। क्या झूठ बोलकर गौ की जान बचा लेना पाप है ? नहीं, कदापि नहीं। यह सुनकर चन्द्रशेखर ने कहा—तुम्हें तर्कवितर्क करने की बहुत बान (आदत) है कभी धोखा खाओगे, चुप रहो अपना काम करो। निरञ्जन—अस्तु, मैं चुप

रहता हूँ तथापि यह अवश्य कहूंगा कि जिससे अपने या दूसरे को हानि पहुँचे वही पाप है ।

कुछ समय बीत गया । दोनों विद्यार्थी अपने अपने काम में लगे रहे । परन्तु निरञ्जन ने अपने स्वभाव के अनुसार पड़ोस में रहने वाली एक कुलीन स्त्री को जो बहुत सुन्दरी थी चोरी चोरी देखना प्रारम्भ कर दिया । निरञ्जन जानता था कि मेरे देखने से इस स्त्री को कोई हानि नहीं पहुँचती, किसी को मालूम तो है ही नहीं । एक दिन कामाग्ध होकर उसने उस स्त्री पर कङ्कड़ फेंका । स्त्री ने अपने पति को उसकी दुष्टता का वृत्तान्त सुना दिया । स्त्री के पति ने प्रिन्सिपल के आगे उसकी शिकायत की । प्रिन्सिपल ने भले प्रकार तहकीकात करके निरञ्जन को कालेज से बाहर निकाल दिया । तब उसको कई एक दुर्व्यसनों ने घेर लिया, अन्ततः राजयक्ष्मा रोग से क्षीण होकर सदा के लिए संसार से विदा हो गया । सच है पाप छिपाये नहीं छिपता ।

(१९३०)

एक नगर में कोई साहूकार रहता था । उसके पाँच पुत्र थे । समय पाकर साहूकार बूढ़ा हो गया । उसके सब धन को पुत्रों ने ले लिया, और पिता के प्रति नम्र-भाव से निवेदन किया कि—अब आप कोई काम न करें, आनन्दपूर्वक डेवढ़ी में आसन जमा लें, यथेष्ट भोजनादि सेवा हो जायगी । पर ध्यान रहे कि कोई अपरिचित आदमी अन्दर न आ सके । पिता ने अपने पुत्रों की बात को मान लिया । कुछ दिवस बीतने पर उसके पुत्रों की स्त्रियों ने अपने पतियों से कहा—तुम्हारा पिता बहुत थूकता है, सब स्थान को भ्रष्ट कर देता है, यह मालूम नहीं कि—कब मरेगा । इसको ऊपर के चुबारा में ले जाओ, वहाँ इनके पास एक घण्टी रख दें, जब इनको भूख प्यास लगे—अथवा और आवश्यकता हो तो घण्टी बजा दिया करें, हम इनकी इच्छानुसार सेवा कर दिया करेंगी, पुत्रों ने ऐसा ही किया, पिता ने यह भी मान लिया । एक दिन का वृत्तान्त है कि उस बूढ़े का पोता अपने दादा के पास चुबारा में चला गया और दादा के साथ खेलने लगा । दादा भी उसके साथ प्यार करके बहुत प्रसन्न हुआ ।

अन्ततः वह बालक अपने दादा की घण्टी लेकर नीचे चला आया, पर किसी का इस बात पर ध्यान न पड़ा । जब बूढ़े को भूख प्यास सताने लगी तो इधर उधर हाथ मारा, घण्टी न मिली, उसकी कोई आवाज सुन न सका, क्योंकि चिल्लाहट लगाने का उसमें बल था ही नहीं । एवं भूख प्यास से तड़फ तड़फ कर यम-लोक को सिधार गया । जब उसके पुत्र घर आये तो उन्होंने स्त्रियों ने पूछा—दादा जी भोजन कर चुके हैं क्या ? स्त्रियाँ बोलीं, आज ऊपर गये, देखा तो पिता जी यदि लगती तो घण्टी बजाते । पुत्र ऊपर गये, देखा तो पिता जी सदा के लिए गये हैं ।

संसार में प्रायः निर्धन बूढ़ों की यही दशा होती है ।

(१९३१)

(क) सुनो, इस बात पर मैं बालू के पुल का वृत्तान्त आप लोगों को सुनाता हूँ—

प्रतिष्ठान नगर में तपोदत्त नाम का एक ब्राह्मण था। उसने बाल्यावस्था में पिता के बहुत समझाने और ताड़ना करने पर भी विद्या नहीं पढ़ी। जब अवस्था अधिक हुई तब सब लोगों से अपनी निन्दा सुनकर पश्चात्ताप करने लगा और विद्या की प्राप्ति के लिए गंगा तट पर जाकर तपस्या करने लगा। चिरकाल के अनन्तर उसे उग्र तप करता देखकर इन्द्र ब्राह्मण का रूप धारण करके उसके निकट आये और उसी के आगे गंगा किनारे की बालू ले ले कर जलप्रवाह में फेंकने लगे। यह देखकर वह तपोदत्त मौन को त्याग कर बोला—‘हे ब्राह्मण! यह तुम क्या कर रहे हो।’ उसके बार-बार पूछने पर इन्द्र ने कहा—‘लोगों के पार जाने के लिए मैं गंगा में पुल बना रहा हूँ, जब यह पुल बन जायगा, सब लोग अनायास यह बालू तो जल में बही जा रही है, भला इससे कभी गंगाजी में पुल बन सकता है? कदापि नहीं, यह तेरा प्रयत्न सर्वथा निष्फल है।’ तब इन्द्र ने हंसकर व्रत उपवासादि करके विद्या के उपार्जन करने का क्यों उद्योग कर रहे हो? और बिना भित्ति के चित्र के समान है, तब तुम्हारा भी यह यत्न मेरी ही तरह निष्फल है, तब इन्द्र के यह वचन सुनकर वह तपोदत्त उन वचनों को यथार्थ भ्यास और अध्ययन में कठिन परिश्रम करके थोड़े ही काल में अच्छा विद्वान् हो गया। सारांश यह कि विद्या अभ्यास के बिना नहीं प्राप्त होती।

(ख) एक पहाड़ के नीचे एक नदी बहती थी। नदी के किनारे किनारे

पहाड़ से मिला हुआ एक तंग रास्ता दूर तक चला गया था। संयोगवश दो बकरे एक ही समय उस राह से आ निकले, एक इधर से और दूसरा उधर से। जब बराबर सामने आये तो बड़ी कठिनाई में पड़ गये। न कोई मुड़कर लौट सकता था और न दूसरे के पास से आगे निकल सकता था। एक ओर ऊँचा पहाड़ रोकता था देखो, उनके मेल-जोल ने कैसा काम किया, जिस विपत्ति में वे फँसे थे उससे कैसे धीरे धीरे उस पर पांव रख कर इधर उतर आया। अब जो लेटा हुआ था उसके लिए आगे का रास्ता साफ हो गया। जहाँ जाना था उठ कर चल दिया। मेल से दोनों ने अपनी जान बचा ली।

सारांश यह कि एक दूसरे की सहायता करो और एक दूसरे के लिये कष्ट सहना सीखो, इसमें दोनों की भलाई चिन्तित होती है।

(१९३२)

(क) कितने ही आत्मीय घड़ी-यन्त्र को देखकर विस्मित हो जाते हैं। पर इस हमारे शरीर का यन्त्र इससे भी अद्भुत है। इसमें कुछ तो कर्म या ज्ञान इन्द्रियाँ हैं, जैसे—हाथ, कान, नाक, मुँह आदि और जिन से सारे शरीर की पृष्टि

होती है और कर्मेन्द्रियां अपने अपने कामों में प्रवृत्त होती हैं उन्हें अङ्ग कहते हैं। कर्मेन्द्रियों को रोगों से बचाने के ये उपाय हैं कि उनसे उतना ही काम लेना चाहिए जितनी उनमें सामर्थ्य है। जब किसी इन्द्रिय में दुःख या थकान का अनुभव होने लगे तो तुरन्त उससे काम लेना बन्द कर दिया जाय। पर यह भी न भूलना चाहिए कि ये इन्द्रियां और शरीर काम करने ही के लिए बने हैं, काम न लेने से ये निकम्मे हो जाते हैं।

साधारण काम काज के सिवाय शरीर से परिश्रम के काम नियमानुसार लेने से बल बढ़ता है और भोजन पचता है। इस नियमानुसार परिश्रम को ही व्यायाम कहते हैं। व्यायाम दो प्रकार का होता है—एक साधारण दूसरा विशेष। साधारण व्यायाम वह है जिससे सारा शरीर हिलता है, जैसे—घोड़े की सवारी करना, कुश्ती लड़ना, तैरना, दौड़ना, गेंदबल्ला खेलना आदि। विशेष व्यायाम वह है जिससे विशेष-विशेष अंगों को बल प्राप्त हो, जैसे—मुद्गर हिलाना, जोर जोर से चिल्लाना इत्यादि।

सब तरह के व्यायामों में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने बल के अनुसार ही व्यायाम हो, नहीं तो बड़ी हानि होती है। व्यायाम के पीछे विश्राम करना भी अति आवश्यक है। इसके सिवाय स्वच्छ भोजन, पानी, हवा और स्वच्छ-वस्त्र भी शरीर की स्थिति के लिए परम आवश्यक हैं।

(ख) एक बार एक भेड़िये के गले में एक हड्डी अटक गई। उसने बहुतेरा यत्न किया पर हड्डी न निकली। अन्त में उसने सारस के पास जाकर कहा—भाई! हम तुम एक ही जंगल के रहने वाले हैं। इस समय पड़ोसी का धर्म निबाहो। मेरे गले में हड्डी अटक गई है प्राण जाते हैं, तुम अपनी लम्बी चोंच से इसको निकाल दो जो कुछ माँगोगे वही दूंगा। सारस ने यह बात मान ली और भेड़िये (भगियाड़) के गले में अपनी लम्बी चोंच डाल कर हड्डी खींच ली।

कुछ दिन के बाद भेड़िया एक हरिण मार लाया और नदी के किनारे बैठकर खाने लगा। इतने में सारस उसके पास गया और अपने पहले उपकार की याद दिला कर कहने लगा—भाई आज मैं बहुत भूखा हूँ इसमें से मुझे भी एक टुकड़ा दो।

भेड़िया हंस कर बोला—ऐ मूर्ख! यह उपकार क्या थोड़ा है कि तूने मेरे गले में अपनी गर्दन डाली और मैंने बिना चवाए छोड़ दी और तुम्हें प्राण-दान दिया।

(१९३३)

तब युधिष्ठिर जी बोले—“हे प्रिये! क्रोध से भला भी हो सकता है और न भला भी। इसलिए देश, काल का विचार करके क्रोध करना चाहिए। क्रोध करने से क्रोध को रोक नहीं सकता उसका विनाश हुए समय और जिस जगह क्रोध करने से क्रोध को रोक नहीं सकता उसका विनाश हुए आवश्यकता पड़े पर क्रोध को रोक नहीं सकता। आप दुःखी होने पर दूसरे भी दुःखी हो गए हैं। प्रहार करना, मारने पर मारना बहुत बुरी बात और वेग से बह रही है। पार जाना ऐसा ही करते तो सम्पूर्ण पृथ्वी आज तक विन की शिक्षा याद आई, और सूखे वा

सनातन धर्म है। इसलिये हमने दुर्योधन आदि से क्षमा का व्यवहार किया है। द्रौपदी ने कहा—‘राजन्! राज्य की रक्षा करना आप का परम कर्तव्य था। जिस सनातन धर्म ने मोह उत्पन्न करके उस कर्तव्य से आप की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया उसको नमस्कार है। आप अपना कर्तव्य छोड़कर अब वन में बैठे कौनसा धर्म कमा रहे हैं। सो भी तो मैं नहीं देखती। हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना ही आप को पसन्द है। आर्य लोग कह गये हैं कि जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म भी करता है, पर कहिए आपके धर्म ने आपको रक्षा कहाँ की? और अधर्म की विजय कैसे हुई? कारण इसका यह है कि वह बलवान् है। बलवान् से धर्म भी डरता है। इसलिए हे महाराज! बल ही मुख्य है। दुर्बल मनुष्य ही पराधीन होते हैं और उनकी ही दशा सदा शोचनीय होती है।’ युधिष्ठिरजी फिर कहने लगे—
द्रौपदी! तुम्हारी बात ऊपर से अवश्य ही बहुत भली जान पड़ती है किन्तु, मालूम होता है कि तुम उसका पूरा तत्त्व नहीं समझतीं। हे सुन्दरी! तुम्हें अपनी फल लाभ की ओर सदा दृष्टि रखने से कभी कभी अंतिम फल शुभ नहीं मिलता। हम आगामी नित्य सुख की ओर दृष्टि रखकर वर्तमान समय के शीघ्र ही नाश हो जाने वाले दुःखों के सहन करने की पूर्ण शक्ति रखते हैं और इसी का नाम बल है। जिसे तुम बल कहती हो वही दुर्बलता है।

(१९३४)

(क) राज-कुल के पुरोहित यह वन्धुविरोध न देख सके। ब्राह्मण के उदार हृदय पर बड़ा आघात हुआ। शत्रित्व को ऐसे दूषित होते देख कर वे दुःखसागर में निमग्न हो गये! इस राज्य की वे सदैव उन्नति चाहते थे। राज-कुमारों की श्री-वृद्धि और सुख ही उनकी तपस्या का परम लक्ष्य था। एक साधारण कारण से राजकुमारों को कोधान्वित देखकर शान्ति-प्रिय ब्राह्मण ने प्रताप और शक्ति को बड़ी नम्रता से कहा—‘सिसोदिया वंश के गौरव को नष्ट मत करो। मैं आपका पूज्य कुल पुरोहित हूँ। हमारे वचनों की रक्षा आपके पूर्वजों ने सदा की है। अतः मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस वैरभाव को छोड़ कर परस्पर प्रेम से रहो।’

(ख) महाराज उदयन वासवदत्ता के प्रेम में आसक्त हो, राज काज का भार मन्त्रियों पर डालकर लावण्य में सुख भोगने लगे। उधर शत्रुओं ने उन पर आक्रमण कर दिया। मन्त्रियों ने सोचा कि मगधदेश का राजा उनकी सहायता कर सकता है। अतः उसकी बहिन पद्मावती से महाराज उदयन के विवाह के लिए उन्होंने एक पत्र लिखा। एक दिन महाराज आखेट को गये हुए थे। मन्त्रियों ने ग्राम में आग लगा दी और मगध राजा को लिखा कि वासवदत्ता ग्राम-दाह में जल गई और उनकी रक्षा के लिए योगन्धरायण भी आग में कूद कर मरण हो गये। राजा को इससे अत्यन्त दुःख हुआ। उधर योगन्धरायण ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और वासवदत्ता को अपनी रक्षा कर लेने का प्रस्ताव रखा। राजा ने सोचा कि वह ब्रह्मण्य है। वहाने से मगधराजपुत्री पद्मावती

हर्ष, अहंकार, क्रोध और सुख ये सब धन से पैदा होते हैं। (३) ब्राह्मण सब वर्णों से विद्या में उत्कृष्ट है। (४) भले लोगों की संगत सुख देने वाली होती है। (५) चूहा प्रतिदिन उस बिल में सोया करता था। (६) हम अपने आप को बड़ा समझते हैं।

(१९३५)

(क) महाराज दशरथ एक दिन वन में शिकार खेलते खेलते तमसा नदी के किनारे पर जा पहुँचे। उस समय श्रवण नामक एक ऋषिकुमार नदी में से जल भर रहा था। जल भरने से गड़-गड़ का शब्द हो रहा था। महाराज दशरथ ने समझा कि कोई जङ्गली हाथी नदी में जलपात कर रहा है। उन्होंने शब्द-वेधी बाण छोड़ा। बाण लगते ही श्रवण चिल्लाया। इतने में महाराज दशरथ भी वहाँ पहुँच गये और उस भयानक दृश्य को देखकर काँप उठे। ऋषि-कुमार के कहने पर वे उठे उसके अंधे माता-पिता के पास ले गये। महाराज ने अपना परिचय देकर सब हाल कह सुनाया। यह सुनते ही दोनों का हृदय शोक से विदीर्ण हो गया और मरते मरते महाराज दशरथ को यह शाप दे गये कि जैसे वृद्धावस्था में पुत्र-वियोग से पीड़ित हो हम मरते हैं यही दशा तुम्हारी भी होगी।

(ख) किसी गाँव में एक धोबी रहता था। उसके पास एक कमजोर सा गधा था। उसे एक दिन एक मरा हुआ व्याघ्र मिला। उसने सोचा "यदि शेर की खाल पहना कर अपने गधे को खेत में छोड़ दूँ तो उसे निकालने का किसी को साहस न होगा।" उसने ऐसा ही किया। शाम को शेर की खाल पहनाकर उसे खेत में छोड़ जाता और सबेरे ही अपने घर ले जाता। ऐसे कुछ दिनों में ही गधा खूब मोटा-ताजा हो गया। एक दिन उसने दूर से गधे के शब्द को सुना। उसे सुनते ही मद-मस्त हो चिल्लाने लगा। अब खेतवालों को मालूम हुआ कि यह शेर की खाल में छिपा गधा है। सो उन्होंने उसे डंडों से पीटकर मार डाला।

(ग) (१) हरि ने या तुमने इस लड़की को मारा है। (२) मैं, तुम दोनों और राम के तीनों भाई कल अयोध्या जायेंगे। (३) पञ्जाब और संयुक्त-प्रान्त के बीच में यमुना नदी बहती है। (४) कुक्षेत्र में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को आत्म-तत्त्व का उपदेश दिया। (५) गुरु अपने शिष्यों को वेद पढ़ाता है और धर्म का मार्ग दिखाता है। (६) गोपाल न सो रुपये में दस पुस्तकें खरीदीं और उन्हें सिर पर उठाकर घर ले गया। (७) गंगा नदी यमुना से ज्यादा लम्बी है और सब नदियों से ज्यादा पवित्र है। (८) ब्रह्मचारी को दिन में दो बार भोजन करना चाहिए। (९) ज्योंही मैं घर पहुँचा त्योंही मूसलाधार वर्षा होने लगी। (१०) यदि अच्छी वर्षा हो जाती तो दुर्भिक्ष न होता।

(१९३६)

(क) अब श्रीरामजी की पत्नी और लक्ष्मण सहित भारद्वाज मुनि को प्रणाम कर उनके बगल हुए रास्ते से चित्रकूट पर्वत की ओर चल दिये। भारद्वाज भी उन्हें आशीर्वाद देकर अपने आश्रम में बैठ गये। दोनों भाई जानकीजी को आगे किए हुए यमुना के तीर पर पहुँचे। देखा कि यमुना बड़ी गहराई और वेग से बह रही है। पार जान चाहते हैं पर कोई नाव नहीं। तब उन्हें मुनि की शिक्षा याद आई, और सूखे वाँ

इकट्ठे करके एक घरनाई बनाई। फिर वृक्षों की सूखी लकड़ियों और घास से उसके छिद्र भरे और नरम नरम टहनियों से सीताजी के लिए बैठक बनाई। तब सीता को उस पर बैठा कर दोनों भाइयों ने नाव चलाई और दूसरे किनारे जा उतरे।

(ख) दूरदर्शिता के समान संसार में मनुष्य का हित करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं है। जहाँ तक देखते हैं यह कभी मनुष्य को दुःख में पड़ने नहीं देता, वरन् आने वाली विपत्तियों से उसकी रक्षा करती है। यही मनुष्य को आगा-पीछा सुझाती है और समय के अनुसार उचित शिक्षा भी देती है। जो मनुष्य दूरदर्शिता से काम करता है वह कभी कोई दुःख नहीं देखता। क्योंकि यह मनुष्य को सन्मार्ग दिखलाती है और सब उत्तम गुणों का स्थान है। वृद्धि इसकी बड़ी बहिन है। इसी से इन दोनों का ऐसा परस्पर प्रेम और सम्बन्ध है कि जहाँ एक रहती है वहाँ दूसरी अवश्य आ मौजूद होती है।

(ग) (१) हरि और तुम या राम और मैं इस कठिन कार्य को कर सकते थे।

(२) बोबी मँले कपड़ों को गाड़ी में नदी पर ले जायगा। (३) माता पुत्र को प्रेम से लड्डू खिलाती है और दूध पिलाती है। (४) बारह वर्ष में चारों वेद छैं अंगों सहित पढ़े जाते हैं। (५) उसने मेरे सी रुपये देने हैं इसलिये वह मुझ से द्रोह करता है। (६) ब्रह्मचारी भोग-विलास से सदा डरे और पाप से बचे। (७) मेरे किये हुए उपकारों को याद करके आप मुझ पर अवश्य दया कीजिए। (८) उस पुरुष को हूँ, अब मैं कहाँ जाऊंगा और कैसे अपनी रक्षा करूंगा? (९) मैं बड़े संकट में पड़ गया करते तो परीक्षा में जबर पास हो जाते। (१०) यदि तुम खूब मेहनत

(१९३७)

(क) एक साधु का कथन है कि “सांसारिक कार्य साधन कर जो परमार्थ लाभ करता है वह मनुष्य सचमुच ही प्रशंसनीय है” यह उक्ति हमारे परम पूज्य वैदिक धर्मतत्त्वों के अनुसार ही है। वैदिक धर्म ने जो वर्णश्रम-व्यवस्था बतलाई है उसके अनुसार चलते हुए अनेक सत् पुरुष सब कार्य करके अन्त में जीवन्मुक्त हो चुके हैं। कि वैदिक धर्म पर आसाधारण श्रद्धा रखकर उसके अनुसार आचरण रखना चाहिए।

(ख) वाल्मीकिजी ने रामजी से कहा कि “मैं प्रथम व्याध का काम करता था। अनेक जीवों को मारकर उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुम्ब का पालन करता था। एक दिन सन्ध्या वहाँ आगये। मैं उनको भी मारने लगा। तब वे बोले जिन्होंने तुझे वाता मुनकर कुटुम्ब के लोगों से पूछने गया। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पाप में साक्षी नहीं हैं। यह सुनकर मैं बड़ा दुःखी हुआ। ऋषियों के पास गया। उन्होंने मुझे शिक्षा दी।”

(ग) (१) नम्रता मनुष्य का अत्युत्तम गुण है। (२) अभिमान से मनुष्य नष्ट हो जाता है। (३) तू क्या चाहता है स्पष्ट क्यों नहीं कहता? (४) राम ने बानरों की सहायता से लंका को जीता। (५) खेलने के समय खेलता और पढ़ने के समय

पढ़ना चाहिए। (६) अभिमानी बालक विद्या नहीं प्राप्त कर सकता। (७) प्राचीन काल में राजा लोग विद्वानों की सेवा करना अपना भाग्य समझते थे।

(१९३८)

(क) इतने में गुरु गोविन्द सिंह आ पहुँचे। कौन कह सकता है कि उनके मन में मातृ-भूमि का हित न रहा था! मनुष्य को बचपन में पिता से प्यार होता है, बूढ़ापे में सन्तान से। इनके लिए वह बड़े से बड़ा पाप करने को भी उद्यत हो जाता है। परन्तु गुरु गोविन्दसिंह ने देश और धर्म पर दोनों को न्योछावर कर दिया। प्रतीत होता है कि वे पञ्जाब के वीरों से निराश हो गये थे और देख रहे थे कि आशा की किरण कहीं और भी दिखाई देती है, या नहीं? इसी धुन ने उन्हें पञ्जाब से दक्षिण में खींच लिया। यहां आये, तो वैरागी की कीर्ति सुनी। उनका हृदय-कमल खिल उठा; सोचने लगे; क्या मेरी मानोवाञ्छा सिद्ध होगी?

(ख) हिन्दू-समाज में रामायण का जो स्थान है, जैसा उसका मान है, दूसरे किसी ग्रन्थ का नहीं। राजा से लेकर रंक तक, पण्डित से लेकर सामान्य अक्षराभ्यासी तक, सब रामायण को अपनी रुचि के अनुसार पढ़कर आनन्द प्राप्त करते हैं। हर जगह पण्डितों के द्वारा उसकी कथा कहलाते हैं।

(ग) देखो, इस संसार में जितने बड़े बड़े लोग हो गये हैं, जिन्होंने संसार का उपकार किया है और उसके लिए आदर और सत्कार पाया है उन सभी ने अपने कर्तव्य को श्रेष्ठ माना है। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है, वे ही संसार में उन्नति करती हैं और उनका नाम आदर से लिया जाता है।

(घ) (१) सन् उन्नीस सौ पैंतीस ईस्वी में इस घर में एक पुरुष, दो स्त्रियों, तीन बालक और चार कन्याएं रहती थीं। (२) धन से सब कार्य और मनोरथ सिद्ध होते हैं। (३) क्या आप से बैठाना नहीं जाता? (४) माता पिता की आज्ञा पालना बालकों का पहला कर्तव्य होना चाहिए।

(१९३९)

(अ) शूर्पणखा ने देखा कि यह तो बड़ी दुर्घटना हुई। अब क्या करूँ और इनसे कैसे बदला लूँ। यह राम तो बड़ा बलवान् है। सेना कटी और दोनों भाई मारे गये। अब यह समाचार रावण को देना चाहिए। वह चाहे तो बदला ले सकता है। यह सोचकर वह लङ्का में पहुँची और रावण से उसके दरबार में बोली कि मेरी दशा पर रोओ। तुम्हारे जीते जी मेरी यह दुर्दशा! तुम तो यहीं पड़े-पड़े सुख से दिन बिता रहे हो और राज्य में क्या हो रहा है इसका तुम्हें कुछ भी पता नहीं। ऐसे ही राजाओं का राज्य नष्ट होता है। तुम्हारी पञ्चमरी के रत्नवाली सेना मारी गई। खर और दूषण भी मारे गये।

(इ) महर्षि कण्व ने राजा के निमन्त्रण की चिरकाल तक प्रतीक्षा की। उसकी उपेक्षा का कारण अज्ञात था। उन्होंने यह सोचकर कि विवाहिता लड़की को बहुत दिन पिता के घर रहना उचित नहीं, उसे बिना बुलाये ही भेज देने का निश्चय कर लिया। दो ब्रह्मचारियों और दाया गौतमी के साथ शकुन्तला को राजा के पास भेज दिया। यह दृश्य अतीव हृदय-विदारक था। यद्यपि कण्व बड़े सिद्ध थे तथापि वियोग

के समय वह साधारण संसारियों की भाँति विलख विलख कर रोये । सखियों की दशा विचित्र थी । बेचारी शकुन्तला के हृदय को कौन कहे ।

(उ) (१) उस सेठ के पास दो करोड़, पैंतीस लाख, सत्तर हजार, तीस, सात रुपये थे । (२) जो उसने सुना मुझे सब ही सुना दिया । (३) आओ, यहाँ बैठें और ईश्वर के गुण गावें । (४) संसार में पिता और पुत्र में भी धन के लिए झगड़ा हो जाता है ।

PATNA UNIVERSITY QUESTIONS

संस्कृत अनुवाद के लिए आदर्श वाक्य—

1928 (Additional)

(१) एक स्त्री जल के घड़े को लेकर पानी लाने को जाती है । (२) सूर्य की प्रखर किरणों से वृक्ष लता सब सूख जाते हैं । (३) हम घर जाकर अपने मित्रों से पूछ कर आवेंगे । (४) माता और गुरुजनों का सम्मान करना उचित है । (५) देशाटन करने से शरीर बलवान् हो जाता है ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) एका स्त्री जलकुम्भमादाय जलमानेतुं गच्छति । (२) सूर्यस्य तीक्ष्णकिरणैः वृक्षलताः शुष्काः भवन्ति । (३) अहं गृहं गत्वा मित्राणि पृष्ट्वा आगमिष्यामि । (४) मातापितरौ गुरुजनाश्च सम्माननीयाः । (५) देशपर्यटनेन शरीरं बलवद् भवति ।

1928 S.

(१) राम ने वन में लाखों राक्षसों को मारा । (२) वह वानर वृक्ष से उतर कर नीचे बैठा है । (३) विद्याहीन मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं है । (४) एक पागल लड़का इधर दौड़ता हुआ आया । (५) ईश्वर की कृपा से उसका शरीर आरोग्य हो गया ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) रामः वने लक्षशः राक्षसान् जघान । (२) स वानरः वृक्षात् अवतीर्य नीचैः उपविशति । (३) विद्याहीनस्य नरस्य पशूनाञ्च कोऽपि भेदो नास्ति । (४) कश्चिन् (एको) मत्तो बालक इतो धावन्नागतः । (५) ईश्वरस्य कृपया तस्य शरीरं नीरोगमभवत् ।

1929 S.

(१) मैंने आज पढ़ा नहीं, इसलिए मेरे पिता मुझ पर नाराज थे । (२) और मैं खेलकर समय नष्ट नहीं करूँगा । (३) तुम घर जाओ । तुम्हारे साथ मैं नहीं खेलूँगा । (४) देवदत्त आज मेरे घर आवेगा । (५) इस वर्ष परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ इस कारण वह परिश्रम से पढ़ता है ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) अहमद्य नापठम् अतः मम पिता मयि अप्रसन्न आसीत् । (२) अहञ्च क्रीडित्वा समयं न नक्ष्यामि । (३) त्वं गृहं गच्छ । त्वया सह अहं न क्रीडिष्यामि ।

(४) देवदत्तः अद्य मम गृहमागमिष्यति । (५) अस्मिन्वर्षे स परीक्षायामुत्तीर्णो नाभवत् अतः परिश्रमेण पठति ।

पुराणों में कथा है कि एक बार धर्म और सत्य में परस्पर विवाद हुआ । धर्म ने कहा "मैं बड़ा" सत्य ने कहा "मैं" । अन्त में फैसला कराने के लिए वे दोनों शेषजी के पास गये । उन्होंने कहा कि "जो पृथ्वी धारण करे वही बड़ा" । इस प्रतिज्ञा पर धर्म को पृथ्वी दी, तो वे व्याकुल हो गये, फिर सत्य को दी, उन्होंने कई युग तक पृथ्वी को उठा रखा ।

एतस्य प्रघट्टकस्य संस्कृतानुवादः

पुराणेषु कथास्ति यत् एकदा धर्मसत्ययोः परस्परं विवादोऽभवत् । धर्मोऽब्रवीत् "अहं बलवान्" "सत्योऽवददहम्" अन्ते निर्णायितुं तौ सर्पराजस्य समीपे गतौ । तेनोक्तं यत् "यः पृथ्वी धारयेत् स एव बलवान् भवेदिति ।" अस्यां प्रतिज्ञायां धर्माय पृथ्वीं ददौ । स हि धर्मो व्याकुलोऽभवत् । पुनः सत्याय ददौ । स कतिपय-युगानि यावत् पृथ्वीमुत्थापयत् ।

(१) सवेरे उठकर पढ़ने बैठ जाओ । (२) परीक्षा के बाद छुट्टियों में दूसरी जगह जाना अच्छा है । (३) अच्छी तरह पास करोगे तो एक किताब मिलेगी । (४) हस्तलिपि को साफ शुद्ध बनाओ (५) पढ़ने के समय दूसरी ओर ध्यान मत दो ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) प्रातःकृत्याय अध्येतुमुपाविश । (२) परीक्षानन्तरम् अवकाशेषु अन्यत्र गमनं वरम् । (३) सम्यगुत्तीर्णो भवेत्सर्हि पुस्तकमेकं लभेथाः ! (४) हस्तलिपेः स्पष्टं कुरु । (५) अध्ययनसमये अन्यत्र सा ध्यानं देहि ।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

एक घूर्त सियार था । उसके चार मित्र थे । उन में से एक बाघ था, एक मूसा, एक भेंड़िया और एक नेवला था । पांचो मित्र बड़े आत्मीय थे और जंगल में रहते थे, और जिन पशुओं को वे मार सकते उन्हीं को खाकर जीते थे । एक ही तरह का शिकार प्रतिदिन नहीं मिल सकता है । किसी दिन उनको एक छोटा पशु मिलता था और किसी दिन एक बड़ा । एक दिन कहीं से एक बहुत बड़ा हरिन वहां आया । पांचो मित्र उस हरिन को देख कर बहुत प्रसन्न हुए । उन सबों ने कहा आज हम लोग इस हरिन को मारेंगे और उसको अपना भोजन बनावेंगे । इसके बाद उसी क्षण बाघ दौड़ा, भेंड़िया दौड़ा, नेवला दौड़ा । हरिन भी अपने प्राण की रक्षा के लिए भागा । खूब तेजी से उस हरिन को पीछा करने के कारण पांचो मित्रों ने जमीन पर उनके मुख से बाहर निकल पड़ीं ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

एकः घूर्तः सियार आसीत् । तस्य चत्वारि मित्राणि आसन् । तेष्वेकः व्याघ्रः, एको मूषकः, एको वृकः, एकश्च नकुल आसीत् । पञ्च मित्राणि अत्यात्मीयानि आसन् वने च वसन्ति स्म । यान् पशून् च हन्युः तानेव भक्षयित्वा जीवन्ति स्म । सदा समानमृगया न लभ्यते कदाचित् तैः कश्चित् लघुपशुः कदाचिच्च महान् पशुः अलभ्यत । एकदा कुतश्चित् कश्चित् महान् मृगः तत्रागतः । पञ्च मित्राणि तं मृगं

दृष्ट्वा अतिप्रसन्नानि बभूवुः । ते सर्वे ऊचुः अद्य इमं हनिष्यामस्तञ्च भक्षयिष्यामः ।
अथ तस्मिन्नेव क्षणे वृकव्याघ्रमूषिकनकुला अधावन् । हरिणोऽपि प्राणान् रक्षितुं
पलायितवान् । अतिवेगेन तमनुसरतां पञ्चमित्राणां दीर्घजिह्वाः तेषां मुखेभ्यो
बहिरागताः ।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

तब सियार बोला, “बाघ मामा, यह जानवर बड़ा बली है । तुम इसे आसानी
से हरा नहीं सकते । आओ, हम लोग झाड़ी में चुपचाप छिप रहें । तब हरिन के
सो जाने पर मित्र चूहा उसकी टांगों की रगें काट देगा और वह दौड़ न सकेगा ।
हम लोग उसे मारकर उसका मांस मनमाना खायेंगे” । बाघ बोला—खूब कहा
भांजे, ऐसा ही हो । भेड़िया बाघ नेवला और चूहा एक स्वर से बोले—“हां हां ऐसा ही
हो” ! तब चूहे ने हरिन की टांगें काट दीं । और बाघ ने उसकी गर्दन तोड़ दी ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

तदा शृगाल उवाच—मातुल व्याघ्र, अयं पशुर्मुहाबलवान् अस्ति, त्वमिमं लील-
यैव जेतुं न शक्यसि । आगच्छ वयं गुल्मे तूष्णीं प्रच्छन्ना भवेम । ततो हरिणो सुप्ते
मित्रं मूषिकः तस्य पदानां शिराः छेत्स्यति स च धावितुं न शक्यति । वयं तं हत्वा
तस्य मांसं स्वेच्छ्या भक्षयिष्यामः । व्याघ्र उवाच—साधूक्तं भागिनेय, एवमेवास्तु ।
वृकव्याघ्रमूषिकनकुलाः एकस्वरेणोचुः—आम् आम् (वाढम् वाढम्) एवमेवास्तु ।
ततो मूषिकः हरिणस्य पदानां शिराः चिच्छेद । व्याघ्रश्च तदैव तस्य ग्रीवां बभञ्ज ।

१९२५

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) जिसने हमको और संसार की सब वस्तुओं को बनाया है और जो
सर्वव्यापक तथा निराकार है उसी का नाम ईश्वर है । (ख) भूखे को भोजन देना,
प्यासे को पानी पिलाना, और वस्त्रहीन को वस्त्र देना, उपकार कहलाता है । (ग)
जिस प्रकार अपवित्र स्थान में पड़े हुए सोने को कोई नहीं छोड़ता उसी प्रकार अपने
से नीचे के पास भी विद्या हो तो उसे अवश्य सीख लेना चाहिए । (घ) प्रातःकाल
अतिरमणीय समय है । इस समय सूर्य की किरणों से सारी पृथ्वी प्रकाशित हो
जाती है और मनुष्यगण शय्या त्याग करके अपने कार्यों में लग जाते हैं ।

(१) राम के साथ रावण का भीषण युद्ध हुआ था । इस युद्ध में रावण का विख्यात
वीरपुत्र इन्द्रजित आदि महावीर लोग विनष्ट हुए थे । (२) रामचन्द्रजी ने द्वितीय
वार विवाह न करके सीता जी की सुवर्णमयी मूर्ति निर्माण करके यज्ञ आरम्भ किया ।
(३) एक चक्षु अन्ध होने से दूसरे चक्षु की और समस्त शरीर का भार होता है ।
(४) बाघ, सिंह, सियार प्रभृति मांसाक्षी पशु वन में वास करते हैं । (५) पिता
माता और गुरुजनों की भक्ति करनी चाहिए ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

(क) योऽस्मान् संसारस्य सर्ववस्तुनि च निर्ममो यश्च सर्वव्यापको निराकार-
श्चास्ति, तस्यैव नाम ईश्वर इति । (ख) बभुक्षिताय भोजनदानं पिपासिताय जल-
दानं वस्त्रविहीनाय च वस्त्रदानम् उपकार इति उच्यते । (ग) यथा—अपवित्रस्थान-

पतितं सुवर्णं कोऽपि न परित्यजति तथैव स्वस्मान्नीचादपि विद्याऽवश्यं शिक्षितव्या ।
(घ) प्रभातमतिरम्यकालोऽस्ति । अधुना सर्वा पृथिवी सूर्यकिरणैः प्रकाशिता जाता ।
मनुष्यगणाः शय्यां विहाय स्वेषु स्वेषु कर्मसु प्रवर्तन्ते ।

(१) रामेण सह रावणस्य भीषणयुद्धं बभूव । अस्मिन् युद्धे रावणस्य विख्याता
इन्द्रजित्प्रभृतयः पुत्रा महावीरा विलुप्ताः बभूवुः । (२) रामचन्द्रो द्वितीयं बारं
परिणयमकृत्वा सीतायाः सुवर्णमयीं मूर्तिं विधाय यज्ञमारेभे । (३) एकस्मिन्नेत्रेऽन्वे
जाते द्वितीयचक्षुः प्रति सर्वदेहस्य भारो भवति । (४) शृगालव्याघ्रसिंहप्रभृतयो
मांसाशिनः पशवो वने वसन्ति । (५) पितरौ गुरुजनांश्च प्रति भक्तिः कार्या ।

—:०:—

अधोलिखितस्य सन्दर्भस्य संस्कृतानुवादः कार्यः

एक समय राजा दिलीप ने अश्वमेध यज्ञ करने के लिए एक घोड़ा छोड़ा ।
उसकी रक्षा का भार रघु पर पड़ा । वह घोड़े के पीछे-पीछे चला । इन्द्र ने इस-
डर से कि 'सौ यज्ञ करके दिलीप मेरा पद ले लेगा' छिपकर उस घोड़े को चुरा
लिया । नन्दिनी की कृपा से रघु को यह बात विदित हुई और पहले उसने साम-
नीति के अनुसार देवेन्द्र से वह घोड़ा मांगा । घोड़ा न मिलने पर रघु ने देवेन्द्र
के साथ युद्ध आरम्भ किया । उनके बीच में युद्ध होने पर रघु ने ही पहले देवेलु
के हृदय पर बाण मारा । प्रहार से क्रुद्ध होकर उसने भी रघु पर बाण मारा ।
दानवों के रक्त को निरन्तर पीते रहने के कारण और मनुष्य के खून का स्वाद
न जानते हुए मानो वह बाण रघु का खून पीने लगा । उसके बाद सुकुमार रघु
ने भी अपने नाम वाले बाण को देवेन्द्र की बांह पर मारा । बाण फँकने के बाद
उसने देवेन्द्र की ध्वजा काट डाली । इस प्रकार उनका घोर युद्ध हुआ । इन्द्र के
पास सिद्धियाँ थीं; रघु के पास जो सैनिक थे वे युद्ध को देखते रहे । इन्द्र के
आकाश में और रघु के भूमि पर होने के कारण उनके बाणों के मुख ऊपर और
नीचे थे । समय पाकर रघु ने देवेन्द्र के धनुष की डोर काट डाली । इससे
अति क्रुद्ध होकर देवेन्द्र ने पहाड़ों के पंखों को काटनेवाले वज्र से सुकुमार रघु के
ऊपर प्रहार किया । उससे चोट खाकर रघु पृथ्वी पर गिर पड़ा । किन्तु क्षण
भर में पीड़ा को भुला कर फिर युद्ध करने के लिए तैयार हो गया । इस प्रकार
रघु की अलौकिक वीरता को देखकर देवेन्द्र बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने युद्ध
बन्द कर दिया ।

अस्य सन्दर्भस्य संस्कृतानुवादः

एकदा राजा दिलीपः अश्वमेधं कर्तुमश्वमेधं मुमोच । तस्य रक्षितृत्वेन नियुक्तो
रघुः स्वमनुययी । "दिलीपः शतं यज्ञान् विधाय पदवीं मे गृहीष्यति" इति भयेन
प्रच्छन्नरूपो देवेन्द्रस्तं वाजिनमपजहार । नन्दिनी प्रसादाद् विदितवृत्तो रघुः प्रथमं
साम्नादेवेन्द्रमश्वं ययाच । अनुपलब्धेऽश्वे तेन सह योद्धुं प्रववृत्ते । तयोर्मिथः
युद्धे संप्रवृत्ते रघुरेव पूर्वं देवेन्द्रं बाणेन हृदि विभेद । तत्प्रहारेण संक्रुद्धो देवेन्द्रोऽपि

रघुबाणेन प्रत्यविध्यत् । शायकः खलु यः सततमसुराणां रक्तपानेनाज्ञात नररक्षि-
स्वादः कुतूहलेनैव तच्छोणितं पपी । कुमारी रघुरपि स्वनामाङ्कितं सायकं देवेन्द्रस्य
भुजायां निचखान । इषुणा च तस्य पताको चिच्छेद । तयारेवं तुमुलं युद्धमजनि ।
इन्द्रपार्श्वे सिद्धाद्याः, रघोःसमीपे च तस्यसैनिका युद्धप्रेक्षणका बभूवुः । इन्द्ररघो-
राकाशभूमिस्यायित्वेन तयोः सायकाप्यूर्ध्वमुखा अधोमुखाश्च प्रासरन् । अवसरमुप-
लभ्य रघुदेवेन्द्रस्य धनुर्ज्यामिच्छन्त । तेनातिक्रुद्धो मधवा पवतपक्षच्छेदनाचितं वज्रं
सुकुमारे रघौ प्राहिणोत् । तेन ताडितो रघुभूभ्यां पपात । तद्वचथां च क्षणेनैवाव-
धूय सः पुनर्योद्धुं सज्जोऽभवत् । रघोस्तादृशमलौकिकं वीर्यं निरीक्ष्य भृशं तुतोप-
देवेन्द्रो युद्धाद्वचरमेञ्चेति ।

अधोलिखितस्य संदर्भस्य संस्कृतभाषयानुवादो विधेयः

राजा रघु ने विश्वजित् नामक यज्ञ में अपना समस्त खजाना यज्ञ करनेवालों
और भिखमंगों को दान किया और अपना समस्त स्नानादि कार्य मिट्टी के वर्तन
से करने लगा ।

कुछ ही समय के बाद महर्षि वरतन्तु का शिष्य कौत्सऋषि गुरुदक्षिणा
प्राप्त करने के उद्देश्य से रघु के पास आया क्योंकि चौदह विद्याएं सीखकर वह गुरु
को दक्षिणा देना चाहता था । रघु ने अपने घर पर आये हुए अतिथि कौत्स
को अध्यादि से यथाविधि पूजा की । रघु ने कुशल पूछी तो कौत्स ने कहा—
“राजन् आपके समान धर्मता प्रजापालक राजा के होते हुए प्रजा क्यों सुखी न
हो । इस समय मैं आपके पास स्वार्थवश आया हूँ । किन्तु आपकी वर्तमान स्थिति
ही आ गया होता । इसलिए अब मैं गुरु-दक्षिणा को प्राप्त करने के लिए किसी
और राजा के पास जाऊंगा ।” यह कहकर कौत्स जाना ही चाहता था कि रघु ने
उसे रोक कर कहा—“विद्वन्, आपको कितने धन की आवश्यकता है ?” तब कौत्स
देने के लिए मुझे चौदह करोड़ गुरु-दक्षिणा की आवश्यकता है । यह सुनकर
रघु ने कहा—“आज तक कभी भी कोई अतिथि रघु के पास से विफल मनोरथ
नहीं गया । अतः आप दो तीन दिन मेरे अग्नि-गृह में निवास करके प्रतीक्षा करें,
मैं प्रयत्न करता हूँ ।” कौत्स ने रघु की बात मान ली ।

तब रघु ने कुबेर पर चढ़ाई करने का निश्चय किया । सुबह वह रथ पर
चढ़ कर जाना ही चाहता था कि भण्डारियों ने आकर निवेदन किया—“राजन्,
रात को खजाने में सोने की वर्षा हुई । रघु ने जाकर उसे देखा । उसने उस
मुमेरु पहाड़ के समान सुवर्ण के ढेर को विद्वान् कौत्स को दान दे दिया । कौत्स
भी उसे पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर गुरु के आश्रम की ओर चल दिया ।
कुछ समय के बाद रघु की रानी को एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ जिसका नाम
“अज” पड़ा ।

इस प्रकार रानैः रानैः उचित समय पर शिक्षा आवि प्राप्त करके अज जवान
हुआ । पिता की आज्ञा से उसने इन्द्रमती के स्वयंवर की ओर प्रस्थान किया ।

मार्ग में उसने हाथी के रूप धारण किये हुए प्रियम्बद नामक गंधर्व को मारकर योनि-मुक्त किया जिसको मातङ्ग महर्षि का शाप था। उसने प्रसन्न होकर अज को सम्मोहन नामक अस्त्र दिया। इस प्रकार वह विदर्भ के राजा भोज की नगरी में पहुँचा। भोजने उसका स्वागत किया और खूब सजाये हुए अपने महल में उसे ठहराया। अज ने समस्त स्नानादि क्रियाएं समाप्त की और वहाँ विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल वर के योग्य वेशभूषा बनाकर स्वयंवर की ओर चला जहाँ राजा लोग एकत्र थे।

उपरिलिखितस्य संदर्भस्य संस्कृतभाषयाऽनुवादः कार्यः

विश्वजिन्नामि यज्ञे सर्वं स्वकीयं कोषजातमृत्विग्भ्यो याचकेभ्यश्च दत्त्वा मृण्मय-पात्रेणैव रघुः सर्वमात्मीयं स्नानादिकं देहकृत्यमकार्षीत् ।

ततः कियत्समयानन्तरं महर्षेर्वरततोः शिष्यः कौत्सनामा ऋषिश्चतुर्दश विद्या अधिगम्य स्वगुरवे दक्षिणां दातुकामः रघोः समीपमाययौ । रघुः स्वगृहमागतमतिथिं कौत्सं विलोक्य यथाविध्यर्घ्यादिभिस्तमपूजयत् । - कुशलप्रश्नानन्तरं कौत्सस्तमभाषत् “राजन् ! भवाद्दशे धर्मात्मनि प्रजापालके भूपती सति कथं न प्रजाः सुखिताः स्युः । साम्प्रतमहं तु भवत्सन्निधौ स्वार्थं साधयितुमेवायातोऽस्मि, परं भावत्कीं वर्तमानस्थिति-मवलोक्य मया कल्प्यते यद्भवत्सन्निधौ ममागमनमतः प्रागेव समुचितमभवदिति । अतः सम्प्रत्यहं गुरुदक्षिणार्थमन्यस्यैव कस्यचिन्नरपतेः सविधेःयामि । इत्युक्त्वा यावत्कौत्सोऽन्यत्र गन्तुमैच्छत् तावद्भूस्तं प्रत्यावर्त्यापिच्छत्—“विद्वन् ! कियद्वनम-पेक्ष्यते भवता ?” ततः कौत्सो गुरुणा सह कृतां सर्वां स्वां वार्तामुक्त्वा रघुं विज्ञा-पितवान्—“यदहं चतुर्दश कौटिपरिमितं द्रव्यं वाञ्छामीति ।” तदाकर्ण्य रघुरपि “मत्सकाशान्नाद्यावधि कश्चिदतिथिर्विफलोभूतमनोरथोऽन्यत्र गतः, इत्यतो भवान् मदीय आवासे द्वित्राणि दिनान्यतिवाहयन् प्रतीक्षतामहंतवद्भवदर्थं साधनाय प्रयते” इत्यवदत् । कौत्सोऽपि तदङ्गीचकार ।

रघुरपि प्रातः कुबेरं प्रत्यभिधातुं निश्चिकाय । ततो यावत् प्रातरेव रथमारु-रुधुः स उदतिष्ठत् तावदेव भाण्डागारिकैरागत्य विनयावनतैः निवेदितम्— यन्महाराज ! रात्रौ कोषागारे हेमवृष्टिरभवदिति । ततो रघुरपि तामद्राक्षीत् । ततश्च सुमेरुपर्वतभागमिव स्थितं समस्त धनराशिं कौत्साय ददात् । कौत्सोऽपि सुतप्राप्त्याशिषं तस्मै दत्त्वा गुरोराश्रममाजंगाम ततोऽचिरादेव रघोर्महिष्याः सुतरत्नमेकमजायत यः खलु “अज” इति नान्ता प्रसिद्धिमागात् ।

एवं क्रमेण यथाकालं शिष्यादिकं प्राप्य किशोरावस्थामत्यवाहयन् गजत्वं पितुराज्ञयेन्दुमत्याः स्वयंवरे प्रस्थापयामास । मार्गे च मातङ्गमहर्षिणा विज्ञातं गजत्वं प्राप्तं प्रियम्बदं वाणेनाहत्य गजयोनिस्तमपूजयत् । प्रसन्ना भूत्वा स च तस्मै सम्मोहनं नामकं अस्त्रं दत्तवान् । स चैवं विदर्भराजभोजस्य नगरीं प्रापत् । भोजोऽपि तस्य स्वागतं विधायकस्मिन् सर्वालङ्कारभूषितं वाधने राजप्रासादे तं न्यवासयत् । ततोऽजः सकलाः स्नानादिकाः क्रियाः समाप्य विश्राममलभत अन्येषुः प्रातरेव वरोचितं वेशभूषां विधाय राजाधिष्ठितं स्वयंवरं प्रतिजनाम् ।

अनुवाद के लिए अभ्यास १

नीचे लिखे वाक्यों की संस्कृत बनाओ :—

(१) एक हंसिनी अपने बच्चे के साथ किसी खेत में रहा करती थी। उस खेत का अनाज पक जाने पर हंसिनी ने सोचा— कि अब किसान लोग अनाज काटना शुरू करेंगे। इसलिए प्रतिदिन भोजन ढूँढ़ने के लिए बाहर जाते समय वह अपने बच्चों से कह जाती थी कि मेरे लौट आने के पहले, जो कुछ तुम लोग सुनो वह सब मेरे लौटते ही मुझ से कह देना।

(२) कृपा कर आप अपने पुत्र को अपने साथ मेरे पास लाइये। मैंने सोनपुर के मेले में सौ रुपये का घोड़ा बेचा। वे लोग आप से कुछ पूछने आये हैं। क्या तुम मेरी बातें पसन्द हैं? वे दोनों भाई इसी स्कूल में पढ़कर पास हुए हैं। तुम लोगों ने मेरी बातें ध्यान देकर न सुनीं।

(३) मुझे इस रसोइये की बनायी रसोई नहीं रुचती। बाजार चलो वहाँ पर पर दूकानों में मैं तुम्हें मिठाई खिलाऊँगा। मैं आपकी फुलवारी से बहुत से सुगन्ध वाले फूल लाना चाहता हूँ। आजकल लड़के पढ़ने में रात-दिन व्यस्त देख पड़ते हैं। परीक्षा हो जाने पर वे घर जाकर आराम करेंगे। उनका इतना परिश्रम करना उचित ही है।

(४) हम लोग कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते हैं। हम लोग यहाँ और नहीं रह सकेंगे। कृष्ण के बिना और कोई यह कार्य नहीं कर सकेगा। बड़े लोगों की आज्ञा के अनुसार हम लोगों को काम करना चाहिए। शिक्षक को पिता के समान पूजना चाहिए।

(५) हनुमान् को देखकर मैनाक ऊपर उठा। उन्होंने छाती का धक्का लगाया, जिससे पर्वत समुद्र में दब गया। देवताओं ने नागमाता सुरसा को भेजा। वृद्ध लोगों तथा रावण की भार्या मन्दोदरी ने सीता को वापस देने को कहा पर रावण उनकी बातों को न माना। शूर्पणखा की शिकायत पर उसने कहा कि उसके पति को युद्ध में मारूँगा। दुर्वासा के आने पर शकुन्तला की सखियों ने क्षमा मांग कर शिष्य छुड़ाने की प्रार्थना की।

(६) कण्व—बेटी मेरे मन में बड़ी चिन्ता रहती थी कि तुझे अच्छा पति मिले। सो तूने अपने सुकृतों से योग्यपति पाया। अब मैं तेरी लता का भी विवाह इस आम से जो उसके निटकवर्ती हो रहा है, कर दूँगा। तुम अब देर मत करो। विदा होओ। शकुन्तला—हे सखि ! प्यारी माधवी को तुझे सौपती हूँ इसकी देख भाल तू करना।

(७) अपने विवाह से पहले मेरा भाई मथुरा में रहता था। मोहन, तुमने इस छोटे लड़के को कैं बार (कतिकृत्वः) पीटा। महाशय ! मैं रोज तीन बार आपके पास आता हूँ पर आपके दर्शन नहीं कर सका। तुम लोगों में कौन बड़ा धर्मिमा है, उसका नाम बताओ। कल दोपहर के बाद यहां बहुत लोग आवेंगे उनकी शुश्रूषा करनी चाहिए।

अनुवाद के लिए अभ्यास २

(१) मेरा मन यहां नहीं लगता है। मुझे यहां आये हुए बहुत दिन बीत गये। अब जल्दी से मैं प्रयाग को प्रस्थान करूंगा। यहां कोई दार्शनिक नहीं है—जिससे मैं पढ़ूं। केवल दिन में चार या पांच बार इधर उधर घूमता हूं। यही तो मेरा दैनिक कर्तव्य है। अधिक सोचना व्यर्थ है, अब मैं चला।

(२) दो मित्र एक साथ जंगल में घूम रहे थे। दैवयोग से एक भालू उसी समय वहां पहुंच गया। मित्रों में से एक भालू को देख कर बहुत डर गया और निकटवर्ती वृक्ष पर चढ़ गया। दूसरा आदमी और कोई उपाय न देखकर मृतक के समान जमीन पर लेट गया। क्योंकि उसने पहले सुना था कि भालू मरे मनुष्य को नहीं छूता है।

(३) विश्वामित्र नामक एक बड़े ज्ञानी मुनि बक्सर के नजदीक जंगल में रहा करते थे। वह एक बार राजा दशरथ की सभा में गये तो उन्हें देख राजा आसन से उठ गये और प्रणाम करके उन का उचित सत्कार किया।

तुम लोग आकर उन गरीब लड़कियों को भोजन वस्त्र और कपड़े दो। यदि तुम संस्कृत के विद्वान् होना चाहते हो तो पहले सिद्धान्तकौमुदी को काशी में जाकर पढ़ो, पीछे इङ्ग्लैण्ड जाकर डाक्टर इत्यादि उपाधि लेना सुगम है। नहीं तो बिना पाणिनीय व्याकरण पढ़े इङ्ग्लैण्ड जाकर संस्कृत पढ़ने से कोरे रह जावोगे। मुनि लोग वन में रह कर वृक्ष से फल को तोड़ कर खाकर तपस्या करते थे न कि चावलों से भात पका कर।

(४) मोक्ष चाहने वाले रोते पुत्र और कलत्र को छोड़ कर संन्यासी हो जाते हैं। सुख और शान्ति पाने के लिए ज्ञान और कर्म सच्ची राह है जिसके बिना कुछ नहीं होता। चन्द्रगुप्त ने अपने राज्य की सीमा सिन्धुनदी तक की थी। एक दिन जब पांचों पाण्डव वन में घूम रहे थे तब युधिष्ठिर को प्यास लगी, उन्होंने नजदीक वाले किसी सरोवर से जल लाने को सहदेव को भेजा।

(५) सीता राजा जनक की अपनी पुत्री नहीं थी। जिस समय जनकजी यज्ञ के लिए मिट्टी खोद रहे थे उसी समय पृथ्वी के भीतर से सीता निकली और राजर्षि जनक उसी क्षण उनको गोद में उठा कर घर ले आये। यह कथा रामायण में लिखी हुई है। इसी लिए बहुत से लोग सीता को पृथ्वी की कन्या कहते हैं।

(६) गुरुजी ने शिष्यों से कहा कि मेरे चारों ओर बैठ जाओ। उनके बैठने पर वे बोले—सुनो जहां कोई राजा या विद्वान् न रहता हो वहां कभी नहीं जायेंगे। चारों दिशाओं में जाने से चार फल मिलते हैं। उन्हें जा अपने परिश्रम से पा लेगा उसी का जन्म सफल होगा।

(७) इक्ष्वाकुवंश में सगर नाम के राजा हुए। राजा बड़े पराक्रमी शूरवीर थे। उन्होंने अनेक बार अश्वमेध यज्ञ किये अन्त में फिर अश्वमेध यज्ञ करने की तैयारियां कीं। यज्ञ के लिए घोड़ा छोड़ा गया। उस घोड़े को इन्द्र ने बांध रक्खा। घोड़ा दूढ़ने के लिए राजा के लड़के और बहुत सी सेना गई। परन्तु घोड़े का

कहीं पता न मिला, सध लोग निराश होकर लौट आये । अन्त में पाताल लोक में जाकर उन लोगों ने देखा कि कपिल मुनि यहां तपस्या कर रहे हैं, घोड़ा वहीं उनके समीप बंधा हुआ है ।

PATNA UNIVERSITY. Matriculation Examination 1924

- (क) कछुवा स्वभाव से बहुत धीरे धीरे चलता है । इसलिए एक खरहा किसी कछुवे की हंसी उड़ाने लगा । कछुवा कुछ हंस कर बोला ! भाई बोल चाल का काम नहीं, दिन ठीक करो उसी दिन हम दोनों एक समय चलना आरम्भ करें । देखा जायगा कि कौन पहले नियत स्थान पर पहुंचता है । खरहा बोला और दिन का क्या काम है आओ आज ही देखा जाय, अभी जाना जायगा कि कौन कितना चल सकता है ।

1926 (Additional)

- (ख) (१) आपाढ़ और श्रावण इन दोनों महीनों को वर्षा ऋतु कहते हैं । इन महीनों में वर्षा न होने दूभिक्ष होता है । (२) आदमी लोग धन के वास्ते धर्म अधर्म नहीं समझते हैं । (३) स्वास्थ्य से और अच्छा पदार्थ कुछ नहीं है । स्वास्थ्य रहने से मनुष्य विद्या और धन का लाभ कर सकता है । (४) बुद्धदेव ने राजगृह में वास कर बहुत दिन तपस्या की थी । (५) रामचन्द्रजी विश्वामित्र के साथ गङ्गा नदी पार होकर जनकपुरी में पहुंचे ।

1926 (Supplementary)

- (१) गाय, भेड़, बकरी और भैंस आदि जन्तुओं से मनुष्य का बहुत कार्य सिद्ध होता है । (२) इस ग्राम में पांच सौ आदमी वास करते हैं । वे लोग बड़े गरीब हैं । (३) हिमालय ऐसा ऊंचा पर्वत संसार में अन्यत्र नहीं है । (४) नदी के किनारे वास करके और नदी का पानी पीकर आदमी स्वस्थ रहता है । (५) लड़के लोग वसन्त काल में फूलों के बगीचे में टहल कर गीत गाते हैं ।

एक किसान को एक घोड़ा था । वह एक दिन अपने पुत्र को साथ लेकर इस घोड़े को बेचने चला । उस समय इनके रास्ते में कितने लड़के हंसी खेल करते चले जाते थे । उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, क्या तुमने इस किसान और इसके बेटे के समान कोई गवार देखा है ? ये बिना क्लेश के घोड़ा चढ़ सकते थे । किन्तु ये घोड़े के साथ पैदल दौड़ रहे हैं !

1925

जब शिकारी दौड़ रहे थे, एक हरिण मारे जाने के डर से भाग कर अंगूरवन में छिप गया और वह यह समझ कर कि शिकारी मुझे ढूँढ़ नहीं सकेंगे स्वच्छन्द मन से अंगूर-लता को खाने लगा । शिकारी हरिण के विषय में निराश होकर अंगूरवन के किनारे से जाने लगे । उन्होंने लता भक्षण का शब्द सुन कर धन की ओर मुड़

फेरा और यह अनुमान करके कि हरिण यहीं है तीर चलाया। तीर के आघात से हरिण मर गया।

1927

एक सिंह एक गदहा और एक सियार ये तीनों मिलकर शिकार करने को गये। शिकार शेष होने पर उन्होंने भाग कर खाने की इच्छा की। सिंह ने गदहा को भाग करने की आज्ञा दी। तब गदहा तीन समान भाग करके साथियों को एक एक भाग लेने को बोला। सिंह ने बहुत क्रोधित होकर नखों से गदहा को शीघ्र ही टुक टुक कर डाला। तब सियार ने भाग करने को आरम्भ किया।

1929

(१) रामचन्द्र सादयालु और युधिष्ठिर सा धार्मिक संसार में दूसरा नहीं। (२) उसने उसका नाम और निवास-स्थान पूछा था। (३) इस प्रकार का फल दूसरी जगह कहीं नहीं मिलता। (४) राजा उदयकेतु ने ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। (५) तुमने देर क्यों की? कहाँ गये थे?

1926

(१) लड़के लोग वहाँ पर खेलते थे और नाचते थे। (२) कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने कौरवों को पराजित किया। (३) सीताजी ने मृग को देख कर रामचन्द्रजी से उसको लाने को कहा। (४) हम चार महीने से ज्वर से पीड़ित हैं। (५) एक अन्धा भिक्षुक भिक्षा मांगने को आया था।

1927

एक जगह पर कई मोर के पर पड़े थे। उन्हें देख कर एक काग ने अपने मन ही मन सोचा कि यदि मैं इन परों को अपने पंखमें लगा लूँ तो मैं भी मोर सा ही सुन्दर हो जाऊंगा। यही सोच कर वह काग अपने पंखों में उन पंखों को लगा कर दूसरे कागों के निकट जाकर कहने लगा कि तुम सब बड़े नीच हो, बड़ ही बदसूरत हो। आज मैं तुम लोगों के साथ नहीं रहूंगा। यही कह कर उन कागों को गालियाँ दे वह मोरों के दल में मिलने गया।

1929 A.

(१) मैं आज अपने पुत्र के साथ प्रयाग जाऊंगा। (२) मैंने तुम्हरी बहन को एक किताब दी। (३) मुरारि इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ। (४) हरि बहुत अच्छा लड़का है, वह रोज रोज मन लगा कर पढ़ता है। (५) समय गोलमाल मत करो।

1930 A.

(१) रामचन्द्र आदि चारों भाई क्रमशः बहाने लगे। (२) अयोध्या के लोग के तीनों आँखों के तारे थे। (३) सभी लोग उनको देखकर अपनी आँखों की सफलता समझते थे। (४) राजा दशरथ ने उनकी शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया। (५) थोड़े दिनों में चारों भाई दस्यु विद्या और कलाओं में प्रवीण हो गये।

1930 S.

(१) वह मुझे छोटे भाई के समान मानता है। (२) तुमने व्यापार के लिए मुझसे एक हजार रुपये कर्ज लिये (३) मैंने उनसे चार प्रश्न पूछे पर उन्होंने किसी का उत्तर नहीं दिया। (४) रोज सबेरे हाथ मुंह अच्छी तरह धोकर ध्यान से पढ़ने बैठो। (५) जो लड़का परिश्रम से पढ़ेगा व जरूर इनाम पावेगा।

1931

(१) बुरे कामों से बहुत तरह की बदनामी होती है। (२) कालिदास के समान कवि संसार में न होगा। (३) वेद पढ़ना हो तो ब्रह्मचारी होना चाहिए। (४) यदि बचपन में जी लगाकर विद्या पढ़ते तो सब जगह आदर होता। (५) गुरु के उपदेश और आज्ञा को पालन करना उचित है।

Additional Sanskrit 1931

(१) राजा ने अपने भूत्यों को बुलाकर कोलाहल के कारण को निर्णय करने को आदेश दिया। (२) संन्यासी का वेष धर कर राक्षसराज रावण ने सीता के निकट उपस्थित होकर भिक्षा मांगी। (३) वन के मध्य में जाते जाते पथिक ने देखा कि एक मरा हुआ मनुष्य जमीन पर पड़ा है। (४) जब मृत्यु निश्चित है तो बुद्धिमान् को परोपकार के लिये जीवन त्याग करना उचित है। (५) दया करने वाली बालिका ने भिक्षुओं को भोजन कराया और उनको कुछ वस्त्र दिया।

1932 (S.)

(१) प्रातःकाल गौएं दुही जाती हैं। (२) बिना आज्ञा यहां तुम्हारे आने का प्रयोजन नहीं। (३) क्योंकि तुम अस्वस्थ हो, मैं तुम्हें धूप में नहीं दौड़ने दूंगा। (४) बेटा! दुःखी मत हो। एक न एक दिन सब मरेंगे। (५) मेरे लड़के! तुम मत डरो। यह पशु शान्त है। यह तुमको नहीं काटेगा।

1931

(१) क्या इसी आश्रम में भगवान् महर्षि वाल्मीकी रहते हैं। (२) पुत्र के विद्वान् होने पर पिता बड़ा प्रसन्न होता है। (३) बचपन चरित्र-गठन और गुरुजनों के उपदेश ग्रहण करने का समय है। (४) जो लड़के बचपन में मन लगाकर पढ़ते हैं, वे ही बड़े होकर विद्वान् बनते हैं। (५) इस किताब का मूल्य सवा रुपया है।

Addl. 1931.

(१) बालिका हाथ में एक किताब लेकर घर जाती थी। (२) उसके बाद मुनि ने देखा कि एक बिलाई चूहे को खाने के लिये उसके पीछे पीछे दौड़ रही है। (३) उस स्थान को छोड़ कर राजपुत्र दिनरात चल कर क्रम से मन्दिर में उपस्थित हुआ। (४) अनुग्रह करके कल आप अपने छोटे भाई को लेकर हम लोगों के घर आइयें। (५) मैंने एक दिन प्रातःकाल एक मनुष्य को देखा जिसका दाहिना पैर भग्न था। आज सिद्धार्थ अपनी ही इच्छा से भिखारी बने हुए हैं। जिसके पास हजारों पस मौजूद थे, आज उनके पास बात पूछने वाला भी कोई नहीं रह गया। जो लंग पर सोता था, उसके पास एक बिस्तर भी नहीं है। जिसके भोजन के लिए

उत्तमोत्तम पदार्थ सदा तैयार रहते थे, उसके खाने का कोई ठौर ठिकाना नहीं है। जो सोने चांदी के बर्तनों में खाता था, वह पत्तों पर खा रहा है।

(१) कुसुमपुर में नन्द नामक एक राजा था। उसका शकटार नामक एक कायस्थ मन्त्री था। दोनों ही बड़े बुद्धिमान् और राजनीति जाननेवाले थे। (२) मनुष्य को उद्यम करना चाहिए। उद्यम के बिना किसी कामका निर्वाह नहीं हो सकता। जो आलसी है और परिश्रम नहीं करना चाहता है वही सब से बड़ा पापी है। (३) त्याग से समाज की शक्ति बढ़ती है। पूर्वकाल में भारतवर्ष में बड़े बड़े त्यागी पुरुष हुए। राजर्षि दशोच्चि ने देवताओं को अपनी हड्डी दे दी। (४) यह तालाब बहुत गहरा है। इसमें जल भरा हुआ है और बहुत से कमल भी हैं। मैं कमल से भगवान् की आराधना करता हूँ। (५) जो समाज-सेवा और लोक-सेवा में नियत हैं वे धन्य हैं। समाज ही भगवान् का प्रत्यक्षरूप है। (६) कुमार्ग में जाने से दुःख होता है और सुमार्ग में जाने से सुख और यश मिलता है। जो अच्छा लगे उसी मार्ग से जाओ। (७) सुख और दुःख कोई दूसरा नहीं देता। ये अपनी करनी से उत्पन्न होते हैं। जो यह समझते हैं कि दूसरा दुःख देता है, उसकी कुबुद्धि है।

1932 A—S(c).

(१) सूर्य, चन्द्र और तारे ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। (२) सूर्य डूब गया। चिड़ियाँ अपने अपने घोंसलों को लौट रही हैं। (३) वह जंगल में रहता है, वह वृक्ष से फल इकट्ठा करता है और चावल से भात पकाता है। (४) जब गाय दूही जा रही थी मैं गया और जगत्पति-कृष्ण को देखा। (५) राजा धनपाल हाथी पर चढ़ कर कई एक जंगलों के बीच भ्रमण करते हुए अपने देश को वापस आये।

1932 A—S(a).

(१) मत डरो, सुबह होते ही मैं तुम को घर ले जाऊँगा। (२) विद्वान् होने की इच्छा से उसने पाँच वर्ष बनारस में पढ़ा। (३) प्रातःकाल जब वह बगीचे में टहल रहा था तब उसने एक लड़की को फूल इकट्ठा करते हुए देखा। (४) हम लोग ईश्वर को नहीं देख सकते, परन्तु वह, हम लोग जो कुछ करते हैं, सब देखता है। (५) हर घास मेरा विछोना है। चिड़ियाँ मेरे खेल के साथी हैं।

1933.

(१) विष्णु ने क्षीरसागर से अमृत मथा। (२) सृष्टिकर्ता की महिमा का सब जगह देखा जाता है। (३) हरिण वन में दोपहर के समय गाने गाते हैं। (४) उसने शत्रु से एक सौ गायें जीत लीं। (५) गुरु छात्रों से दुर्गुणों को छुड़ाता है।

1935 A—S(c).

(१) तुम कहीं रहते हो, यह मैं जानना चाहता हूँ। (२) मैं कुम्हारता छोड़ लेकर नहीं जाऊँगा। (३) जुलाहे ने राह में कपड़ा फैलाया था। (४) उसने वन में जाते जाते मुझे एक घाघ दिखाया। (५) किसी को चलते हुए नहीं खाना चाहिए।

A—S(a).

(१) रति अपने पति के मृत शरीर को देखकर और उसके अनेक गुणों को स्मरण करती हुई बहुत समय तक विलाप करती रही। (२) ब्राह्मण ने दुष्ट के वचनों को सुनकर खसी (बकरा) को पृथ्वी पर रख दिया और बारबार उसकी ओर देखा। फिर वह उसको अपने कन्धे पर रख घर की ओर उस दुष्ट की बातों को सोचता हुआ चला। (३) अपने माता पिता की आज्ञा मानों, विद्वान् का सत्कार करो। दूसरों के प्रति निन्दा का एक शब्द भी न कहो और अपनी अवस्था पर सतुष्ट रहो। (४) अभ्युदय के समय सैकड़ों मनुष्य उसका घेरे रहते हैं, परंतु दुःख के समय वे उसको छोड़ देते हैं। (५) मित्र, मेरे लिए इतना करो मैं स्त्री के वस्त्र पहिन कर तुम्हारी कन्या बनूंगा तब तुम राजा के पास ले जाकर उनसे ऐसा कहना।

1933 (Compulsory)

(१) अज्ञानी लोग अपने नाश के लिए ही दुष्ट कर्म करते हैं। (२) उसने व्याकरण पढ़ कर शास्त्र पढ़ा। (३) मोक्ष विद्वानों को ईप्सित होना चाहिए। (४) गङ्गा अपने निर्मल जल से मनुष्यों को पवित्र करती है। (५) मन की शान्ति के लिए लोभ छोड़ देना चाहिए।

1933 (Additional)

(क) एक आदमी नदी के किनारे एक पेड़ को काट रहा था, दुर्भाग्य से उसने अपनी कुल्हाड़ी पानी में गिरा दी। (ख) कार्तवीर्य ने अपने शत्रुओं को परास्त किया और सम्पूर्ण देशों को विजय किया। उसकी कथा पुराणों तथा दूसरी पुस्तकों में लिखी है। (ग) आकाश के मेघ, पृथ्वी का पंक और जल का गंदलापन ये सब शरद् ने दूर कर दिये। (घ) उस दिन से लेकर उसने विश्वास किया कि ज्ञान का मार्ग भक्ति के मार्ग से अच्छा है। (ङ) एक दिन वह बाहर गया और भोजन करने के लिए नहीं लौटा। यह न जान कर, कि वह कहाँ गया, सभी शङ्कित थे।

1934 (Compulsory)

१. मनुष्यों को किसी के साथ शत्रुता न बढ़ानी चाहिए। २. आचार्यों से धर्म का उपदेश दिया जाता है। ३. कवियों से विद्वानों की प्रशंसा होनी चाहिए। ४. बालिकाएँ पेड़ को सींच कर बैठ गईं। ५. मैंने दूध पीते हुए बालक को देखा।

1934 (Additional)

(१) जब साँप ने मुझे श्राप दिया तो मैं जङ्गल के पूरव की तरफ भ्रमण करने लगा और थक गया; तब एक दयालु पुरुष ने मुझे एक ऋषि के आश्रम पर पहुँचा दिया। (२) कुछ गाँव के रहनेवालों ने किसी किसान की एक भैंस को पकड़ा और बटवृक्ष के नीचे देवी के सामने उसे मारा और बांट कर भोजन किया। भैंस वाले ने राजा के पास नालिश कर दी। (३) उसने ब्राह्मण को बुलाया और कहा कि सन्ध्या हो गई, सामने बहुत बड़ा जङ्गल है और वह घोर हिसक जन्तुओं से भरा है, इसलिए रात्रि को घर में बिताना उचित है। (४) कलिङ्ग देश में शोभावती नामक नगरी है। यहाँ यशस्कर नामक एक ज्ञानी और धनी ब्राह्मण रहता था। जिसकी प्रसिद्धि धर्मप्राप्तता के लिए थी। (५) जब वह उपवास कर रहा था, देवी ने स्वप्न में उससे

कहा, मेरे बालक, उठो और काशी जाओ। वहाँ एक वटवृक्ष है उसके तले से तुझे धन मिलेगा।

1935 (Compulsory)

(१) विष्णु ने क्षीर समुद्र से अमृत मथा। (२) सृष्टिकर्ता की महिमा का फल सब जगह देखा जाता है। (३) हरिण वन में दोपहर के समय पानी पीने की इच्छा करते हैं। (४) उसने शत्रु से एक सौ गावें जीत लीं। (५) गुरु छात्रों के दुर्गुणों को छुड़ाता है।

1935 (Additional)

(१) तब राजा ने मुँह खोले आतें हुए एक भयंकर राक्षस को देखा। राक्षस घोर गर्जन करके नीचे उतरा और बालिका को मुख में लेकर निगल गया। (२) संन्यासी न कहा—“आप मेरे आश्रम पर भूखे आये हैं इस लिए स्नान कीजिये और मेरे भिक्षाप्राप्त अन्न में से कुछ ग्रहण कीजिए।” (३) जब वे वहाँ निवास करते थे, उस समय वहाँ एक भयानक दुर्भिक्ष पड़ गया, और उस ब्राह्मण ने अपनी स्त्री से कहा, “यह देश दुर्भिक्ष में नष्ट हो गया है और मैं अपने सम्बन्धियों की विपत्तियों को नहीं देख सकता हूँ।” (४) तब आँखवाले मनुष्य ने जन्मान्ध मनुष्य से कहा, “ठीक ही यहाँ महावीर आगये हैं। मनुष्य उसकी पूजा और दण्डवत् करने जा रहे हैं।” (५) तब नापित राजा के निकट आया और हाथ जोड़कर बोला—“महाराज कृपाकर बतलाइये मुझे क्या करना है।”

1936 (Compulsory)

(१) अहा! यह मेरी अँगूठी है। आठ दिनों से मैं इसकी खोज कर रहा था, तुम्हें यह कहाँ मिली? (२) मैं यह कहता हूँ क्योंकि कहना जरूरी है। हमारा ऐसा भाग्य नहीं है। कृपया अर्जुन से मेरी बात कहें। (३) कल गोपाल राम सभी गायों को बाजार ले गया और कम मूल्य पर उन्हें बेच डाला। (४) यह मार्ग सीधे नदी को जाता है। दूसरा मार्ग जरा टेढ़ा है। जिसे चाहो, अपनाओ। (५) जेठे बेटे को अपने परिवार की रक्षा का भार सौंप कर वह बूढ़ा पवित्रस्थल जगन्नाथ के दर्शनार्थ चल पड़ा।

1936 (Additional)

(१) नदी के किनारे बहुत प्रकार के वृक्ष थे, जिनकी डालियों पर चिड़ियाँ बहरी थीं। (२) पिता के मरने पर मैं बनारस पहुँचा और वहाँ जाकर विद्याप्राप्ति के लिए एक शिक्षक के पास गया। (३) अनन्तर वे दोनों ब्राह्मण वहाँ से चले और कुछ दिन बीतने पर राजा के पास पहुँचकर अपना वृत्तान्त उनसे ठीक ठीक कह सुनाया। (४) बहुत पहले उज्जैन में पुण्यसेन नाम के एक राजा थे। एक बार उनके राज्य पर किसी पराक्रमी शत्रु ने आकर आक्रमण किया। (५) दूसरे दिन मुनि शिष्य के साथ योगी के आश्रम पर गये और वहाँ वृक्ष के नीचे ध्यान लगाकर बैठ गये।

1937 (Compulsory)

(१) राजा इन्द्रद्युम्न अपने हाथी पर चढ़ा और कई एक देशों में भ्रमण करता हुआ अन्त में जगन्नाथ वाम पहुँचा । (२) मगध में बहुत दिन पूर्व जरासन्ध नाम का राजा रहता था और एक समय कृष्ण के साथ भीमसेन वहाँ आये और उसकी मार दिया । (३) उसके दूसरे दिन गुरु अपने शिष्यों के साथ योगी के आश्रम में गये और वहाँ गोदावरी नदी के किनारे ध्यान में बैठ गये । (४) जो धर्म के अनुकूल काम करते और दूसरों की भलाई करने में लगे रहते हैं केवल वे ही ईश्वर के कृपापात्र होते हैं । (५) उसकी सेना के शत्रु से पूरी तरह हराये जाने पर कुछ सिपाही पहाड़ों पर चढ़ गये, कुछ समुद्रों से उतर गये और दूसरे एकान्त कन्दराओं में घुस गये ।

1937 (Additional)

(१) सब प्रजाओं को खबर दो कि अब चन्द्रगुप्त अपने ही राजकार्यों को देखेंगे । (२) अपने माँ बाप की आज्ञा मानो; विद्वानों का आदर करो; दूसरों की निन्दा का एक शब्द भी कभी मत बोलो; और अपनी अवस्था से सन्तुष्ट रहो । (३) व्याध को अपनी ओर आते देख सब जानवर डर कर भिन्न भिन्न दिशाओं में भाग गये । (४) मुझे आशा है कि आपको उस आदमी का स्मरण होगा जिसके बारे में एक महीना पहले आप से मैंने कहा था । (५) पुराने समय में असित नाम का एक मुनी था जिसने अपने धर्माचरण के लिए देवों के देव से देवल की पदवी प्राप्त की ।

1938 (Compulsory)

(१) वन से अच्छे और बुरे दोनों काम होते हैं । इसका जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही फल मिलेगा । (२) तुमको उत्तम पुरुष होना चाहिए । इसके लिए सबों की भलाई करो । (३) अपने बड़े भाई रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मण ने सीता को वन में ले जाकर अकेली छोड़ दिया । (३) जब कोई तुम्हारे घर पर आ जाय तो उसका आदर करो, उसे बैठने के लिए आसन और पैर धोने के लिए जल दो । (५) धर्म को छोड़ कर सुख पाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है । इस लिए अच्छे लोग धर्म के लिए प्राण तक भी दे देते हैं ।

1938 (Additional)

(१) मन में अत्यन्त उद्विग्न होकर युवा संन्यासी नदी के किनारे टहलने के लिए निकला । (२) रात बहुत अँधेरी थी; मधुमक्खियाँ ही गूँज रही थीं; सब विश्राम कर रहे थे । (३) जो हो युवा संन्यासी को विश्राम न था । उसने मानसिक शान्ति खो दी थी । (४) राजा अपनी प्रजाओं को पालता है । यदि कोई कुरास्ते जाय तो राजा को चाहिए कि उसे दण्ड दे । (५) यदि बदमाशों को दण्ड नहीं दिया जाय तो सम्पूर्ण समाज विश्रुद्ध हो जायगा ।

1947 (Annual)

(१) मनुष्य किसी के साथ शत्रुता न करे। (२) आचार्य लोग धर्म का उपदेश देते हैं। (३) कवि सज्जनों की प्रशंसा करता है। (४) बालिका वृक्ष को देखकर बैठ गयी। (५) मैंने अतिदुर्बल बालक को देखा। (६) मैंने गोदोहनकाल में कृष्ण को देखा।

1947 (Supplementary)

- विष्णु ने क्षीर समुद्र को मथा।
- ईश्वर की कृपा का फल सर्वत्र देखा जाता है।
- हरिण वन में पानी पीने की इच्छा करता है।
- उसने शत्रु से एक सौ गायें जीत लीं।
- गुरु छात्रों को पढ़ाते हैं।
- तुम कहां रहते हो, यह मैं जानना चाहता हूँ।

1948 (Annual)

- पिता की आज्ञा से रामचन्द्र वन गये।
- कृपया मुझे फल दीजिए।
- परमपिता परमेश्वर सर्वत्र हैं।
- श्याम पुत्र के लिए पुस्तक लाता है।
- तुम्हारा भाई कहां पढ़ता है?
- कब काशी जाओगे?

1948 (Supplementary)

- कृपया ग्राम में चलिए।
- तुम्हारा घर कहां है?
- पिता आज आवेंगे।
- कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे।
- रामचन्द्र ने रावण को मारा।
- मैं स्वयं कार्य करूंगा।

काशी प्रथमा परीक्षा के प्रश्न-पत्र

१९३३

१—अधःस्थितसन्दर्भस्य सरललिङ्गीभाषायामनुवादः कार्यः—

पिङ्गलक आह—मद्रः यदि एवम्, तद्गच्छ। शिवास्ते पन्थानः सन्तु” इति।
दमनकोऽपि तं प्रणम्य सञ्जीवकशब्दानुसारी प्रतस्थे। अथ दमनके गते भयव्याकुलितमनाः
पिङ्गलकः चिन्तयामास—“अहो न शोभनं कृतं मया यत्तस्य विश्वासं गत्वा आत्माभि-
प्रायो निवेदितः। कदाचिद् दमनकोऽयम् उभयवेतनो भूत्वा ममोपरि दुष्टबुद्धिः स्याद्

भ्रष्टाधिकारत्वात् । तत् तावदस्य चिकीर्षितं वेत्तुमन्यत्स्थानान्तरं गत्वा प्रति-
पालयामि । कदाचिद् दमनकः तमादाय मां व्यापादयितुमिच्छति ।” एवं सम्प्रधार्य
स्थानान्तरं गत्वा दमनकमार्गमवलोकयन् तस्थौ ।

२—संस्कृतभाषायामनुवादः कार्यः—

चित्रग्रीव विल पर आकर उच्च स्वर से बोला—“अरे मित्र हिरण्यक ! जल्दी
आ । मैं बड़ी आपत्ति में हूँ ।” यह सुनकर हिरण्यक भी विल के अन्दर से बोला—
“आप कौन हैं ? क्यों आए हैं ? क्या कारण है ? तुम किस आपत्ति में हो ? सो
कहो ।” यह सुनकर चित्रग्रीव बोला—“मैं चित्रग्रीव नाम वाला कबूतरों का राजा
तेरा मित्र हूँ ! सो जल्दी से आ । बड़ा भारी काम है ।” यह सुनकर प्रसन्नता से
रोमाञ्चित शरीर होकर जल्दी से हिरण्यक बाहर निकल आया ।

१९३४

१—अधःस्थितसन्दर्भस्य सरलहिन्दीभाषायामनुवादः कार्यः—

कस्मिंश्चिज्जलाशयेऽनागतविधाता, प्रत्युपन्नमतिः, यद्भविष्यश्चेति त्रयो मत्स्याः
सन्ति । अथ कदाचित् जलाशयं दृष्ट्वा गच्छद्भिर्मत्स्यजीविभिरुक्तम्—“यदहो
बहुमत्स्योऽयं ह्रदः, कदाचिदपि तास्माभिरन्वेषितः । अद्य तावदस्माकमाहारवृत्ति
सञ्जाता, सन्ध्यासमयश्च संवृत्तः । तस्मात्प्रभातेऽत्रागन्तव्यमिति निश्चयः ।” तेषां
वज्रपातसदृशं वचनमाकर्ण्य अनागतविधाता उक्तवान्—“अहो ! श्रुतं भवद्भिर्यदेतैर्मत्स्य-
जीविभिरुक्तम् । तच्छीघ्रमेव किञ्चिन्निकटं सरो गम्यताम् ।”

२—संस्कृतभाषायामनुवादः कार्यः—

एक दिन एक कछुआ कहीं जा रहा था । रास्ते में एक खरगोश मिला ! कछुआ
बोला—“भाई ! मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा ।” खरगोश ने हंसकर उत्तर दिया—
“तू तो धीरे धीरे चलता है । मैं बहुत शीघ्र दौड़कर चलता हूँ । मेरा और तेरा कैसे
साथ हो सकता है ।” कछुए ने कहा—“मैं तुम से चलने में कम नहीं हूँ । बड़ी दूर
तक एक गति से चल सकता हूँ ।” खरगोश ने कहा—“आओ दौड़ो, देखें कौन
आगे जाता है ।”

सन् १९३६

एक ग्राम में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था । उसको कोई सन्तान नहीं थी । उसने
एक नेउला पाल रखा था । थोड़े दिनों बाद उसकी स्त्री के एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।
ब्राह्मणी एक दिन पुत्र को खाट पर सुलाकर किसी काम से बाहर चली गई । ब्राह्मण
भी अपने काम में लग गया । इसी बीच में एक सांप विल से निकला और बच्चे की
ओर चला । नेउले ने सांप को देख लिया । उसने सांप के टुकड़े टुकड़े कर दिये । थोड़ी
दूर में ब्राह्मणी लौटी । उसने आते ही द्वार पर नेउले को देखा । उसके मुँह पर खून लगा
हुआ था, वह समझी की नेउले ने बच्चे को मार डाला है । क्रोध में आकर उसने वहीं नेउले
के ऊपर एक पत्थर फेंक कर मारा । नेउला मर गया । जब ब्राह्मणी घर के अन्दर
गई तब उसने देखा कि लड़का खाट पर सो रहा है और पास में एक सांप मरा पड़ा
है । यह देखकर वह अपनी भूल पर पछताई और बाड़ मार कर रोने लगी ।

सन् १९३७

(क) एक दिन एक कछुआ कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक शशक मिला। कछुआ बोला—“भाई! मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।” शशक ने हँसकर उत्तर दिया—“तू तो धीरे-धीरे चलता है। मैं शीघ्रता से दौड़कर चलता हूँ। मेरा और तेरा कैसे साथ हो सकता है?” कछुए ने कहा—“मैं तुम से चलने में न्यून नहीं हूँ। मैं बड़ी दूर तक एक चाल से जा सकता हूँ।” शशक ने कहा—“चलो दौड़ो, देखें कौन आगे जाता है।” शशक इतना कहकर छलांग मारता हुआ भागने लगा। कछुआ धीरे धीरे चलने लगा।

(ख) सच बोलना धर्म है और झूठ बोलना पाप। सच बोलने से मन प्रसन्न रहता है। सच बोलने वाले को कोई डर नहीं रहता। झूठ बोलने में सदा भय रहता है कि कहीं झूठ खुल न जाय। झूठे मनुष्य को सब लोग निन्दा करते हैं। कभी कोई उसकी बात पर विश्वास नहीं करता।

सन् १९३८

एक दिन दो मनुष्य किसी जङ्गल में साथ साथ जा रहे थे। रास्ते में सामने से एक रीछ आ रहा था। उसे दूर से ही देखकर दोनों आदमी बड़े घबराये। एक आदमी तो झट दौड़कर पेड़ पर चढ़ गया और पत्तों में छिप गया। दूसरा पेड़ पर चढ़ना न जानता था। इसलिए भूमि पर मृतक की भाँति लेट गया। रीछ ने पास आकर भूमि पर मृतक की भाँति पड़े हुए आदमी के नाक मुँह आदि को सूँघा। रीछ उसको मृतक समझ कर छाड़कर चल दिया। रीछ के चले जाने पर दूसरा आदमी पेड़ पर से मुँह करके तुम से कुछ कह रहा था। बताओ उसने तुमसे क्या कहा?” साथी ने कहा—“रीछ ने कहा कि जो आदमी कष्ट पड़ने पर साथी को छोड़कर चला जावे वह मनुष्य नहीं है, उसने मैत्री न करो।”

अनेक महापुरुषों ने इस देश में जन्म लिया, जिनकी कीर्ति अब तक संसार में जगमगा रही है। यहीं जन्म लेकर भगवान् रामचन्द्र ने मर्यादापुरुषोत्तम का आदर्श संसार में खड़ा किया। यहीं जन्म लेकर भगवान् कृष्णचन्द्र ने कर्मयोग का महान् सन्देश सुनाया। दया की पावन धारा से समस्त संसार को आप्लावित करने वाले महात्मा बुद्ध ने भी यहीं जन्म धारण किया था।

१९३९

प्रथमापरीक्षा का प्रश्न-पत्र ।
अनुवादे प्रश्नी ।

१—अथानिदिष्टः संस्कृतसन्दर्भो विश्वहिन्दीभाषयाऽनूयताम् :-

रामो मारीचं राक्षसं हत्वा स्वाधमं प्रतिनिवृत्तः । स दूरादेवायान्तं सुमित्रा
नन्दनं निरीक्ष्य विन्तामापेदे । सीमित्रिः कथं सीतां त्यक्त्वा मदन्तिकमायाति
निश्चित्यैव लक्ष्मणमब्रवीत् । भ्रातः! कथमेकाकिनीं भ्रातृजायां विहायेहागतोऽसि

लक्ष्मणो रुदनं प्राञ्जलिस्वाच । आर्य्य ! सीता देवी यत् दुर्वचो व्याहरत् तन्नाहं
वक्तुं शक्नोमि । हा लक्ष्मण ! इति भवद्वचनं श्रुत्वा सा मां भवत्साहाय्यार्थं
प्राहिणोत् । रामो द्रुतं पर्णशालां प्रविश्य परितः पत्नीमन्विष्यालब्ध्वा विललाप ।
विलपन्तं तं रुधिराप्लुतशरीर आश्रमसमीपस्थ एकः खग उवाच । सीतां रावणो
जहार । स एव मामिमां दशां निनाय । रामः पक्षिराजं जटायुमङ्गं निधाय धूलि-
धूसरं तदीयमङ्गं जटाभिरमार्जयत् । रामगात्रस्पर्शसुखमनुभूय जटायुस्त्रिदिवं
जगाम । रामो लक्ष्मणेन चितां विरचय्य तस्यान्त्येष्टिसंस्कारं चकार । तस्मै
तिलोदकं दत्त्वेव स शान्तिमाप । २०

२—विशदस्वच्छसंस्कृतभाषयानूद्यतामधस्तनो हिन्दीसन्दर्भः :—

मैं एक रोज पाठशाला जा रहा था। राह में दो छात्र मिले। एक की देह खूब
मजबूत थी। एक का मुंह पीला था। मैंने पहले से पूछा “भाई तुम क्यों ऐसे हृष्ट
पुष्ट हो ?” उसने कहा—“मैं रोज चार बजे उठता हूँ। उठ कर लघुशुद्धा करके हाथ
मुंह धोता हूँ। कुछ स्वाध्याय भी करता हूँ। शौच क्रिया से निपट कर सूर्योदय से
पहले नहा लेता हूँ। बाद सन्ध्या, व्यायाम और सूर्यनमस्कार करता हूँ।” उसने दूसरे
से पूछा—“कहो जी तुम्हारा मुंह पीला क्यों है ?” वह रोने लगा। बहुत आग्रह करने
पर बोला—“मेरी सङ्गति बुरी है। मेरे सोने उठने का कुछ नियम नहीं है।” मैंने डाँट
कर कहा—“देखो कुमित्रों को छोड़ो। नियम से सोओ और नियम से उठो। तुम भी
ऐसा ही करो। एक दिन तुम भी वीर, धीर, विद्वान् और यशस्वी हो जाओगे।

११४४ वर्षे चतुर्थ पत्रम् ।

१—(क) अधस्तनः संस्कृतसंदर्भो हिन्दीभाषयाऽनूद्यताम् :—

पञ्चविंशतिः शतानि, वत्सराणां व्यतीतानि यदा गीतमकुलोत्पन्नः सिद्धार्थ
इमां भारतभुवमलञ्चकार निजजन्मना । भागीरथ्या उत्तारे तीरे कपिलवस्तु
नाम महनीयं नगरमेकमासीत् । शाक्यवंशोत्पन्नः शुद्धोदनस्तत्र नयेन प्रजा
अनुरञ्जयश्चिरं राज्यमकरोत् । तस्य मायादेवी नाम रमणीरत्नमग्रणीः
पतिव्रतानां भार्याऽभवत् । तस्याश्च सिद्धार्थो नाम सूनुर्जन्म लेभे । स शैशवादेव
सुवृत्तो विवेकी चाऽभूत् । मृगयां गतस्य ‘किमर्थमेते मृगा हन्तव्या’ इति भूत-
दययाऽद्रवत्तास्य हृदयम् ।

(ग) निम्नाङ्कितानां हिन्दीवाक्यानां संस्कृतेऽनुवादो विधेयः :—

- (१) बुरों का साथ छोड़ो और भलों की संगति करो । ... ३
- (२) उस डरावने दृश्य को देखकर उसके हाथ पैर कांपने लगे । ... ४
- (३) उस रात को बड़ा घना अंधेरा था और मूसलाधार वर्षा हो रही थी । ४
- (४) तड़के सोकर उठने के बाद हम सब को अपने हाथ मुंह की खूब सफाई करनी चाहिये । ... ४

(५) इसी जंगल में किसी समय रामचन्द्र एक वृक्ष के नीचे कुटिया बनाकर
मुनियों के साथ रहते थे और लक्ष्मण तथा सीता उनकी सेवा किया
करते थे। यहीं पर किसी गुफा में वाली ने दुन्दुभी नाम के राक्षस
को मारा था । ... १५

१९४५ वर्षे षष्ठं पत्रम् ।

१—निम्नाङ्कितो निबन्धो हिन्दीभाषयाऽनुवृत्तात्म् ।
अयं कदाचिद्भोजराजो बहिरुद्यानमध्यं मार्गं प्रत्यागच्छन्तं कमपि विप्रं ददर्श ।
तस्य करे चर्ममयं कमण्डलुं वीक्ष्य तं चातिदरिद्रं ज्ञात्वा मुखश्रिया विराजमानं
चावलोक्य तुरङ्गं तदग्रे निधाय प्राह । विप्र ! चर्मपात्रं किमर्थं पाणी वहसीति ।
स च विप्रो नूनं मुखशोभया मृदुवत्या च भोज इति विचार्यह । देव !
वदान्यशिरोमणौ भोजे पृथ्वीं शासति लोहताम्राभावः समजनि । तेन च चर्ममयं
पात्रं वहामीति । ...२०

२—अधोलिखितस्य हिन्दीभागस्य संस्कृतेऽनुवादो विधेयः ।
अयोध्या नगरी कोसल देश के राजा दशरथ की राजधानी थी । उसके राम,
लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नाम के चार लड़के थे । उनमें राम सबसे बड़े
थे जो कि अत्यन्त धार्मिक, सच बोलने वाले और हिम्मत वाले थे । उनका
विवाह सीता नाम की एक रूपवती राजकुमारी से हुआ था । उन रामचन्द्र को
अयोध्या राज्य का युवराज बनना था । ...४०

१९४६ वर्षे षष्ठं पत्रम् ।

अनुवादे हिन्दीपाठमालायां च प्रश्नाः ।

१—निम्नाङ्कितः, सन्दर्भो हिन्दीभाषयानुवृत्तात्म् :—
पुरा हस्तिनाम्नि नगरे महम्मदनामा यवनेश्वरो बभूव । तस्मिन् आसमुद्रं धरणी-
तलं प्रशासति तदुत्कर्षासहिष्णुः काफरनरपतिस् तमाभयोद्धुं सकलवनसहितस्त-
त्राजगाम । यवनेश्वरस्तमायान्तं दृष्ट्वा ससैन्यः पुराद् बहिर्भूय तेन सम-
युध्यत । तयोर्युद्धे समारब्धे महीयसा काफरसैन्येन हन्यमाना महम्मदयोधाः
पलायिताः । ततः पलायमानं स्वबलं दृष्ट्वा यवनेश्वर उवाच—“रे रे मम
सैन्यसुभटाः । युष्माकं मध्ये कोऽप्येतादृशा नास्ति य इदानीं रिपुभयेन पलाय-
मानाया मे सेनाया गतिं निरुन्ध्यात् ।”

२—अवस्तनस्य हिन्दीनन्दर्भस्य संस्कृतेऽनुवादः कार्यः—

सूर्यवंश में दिलीपनामक एक प्रसिद्ध राजा था । वह प्रजापालन में सदैव रत
रहता था । वह सब शुभ गुणों से अलंकृत था, परन्तु पुत्र के अभाव से सदा
दुःखी रहता था । एक समय वह पत्नीसहित अपने गुरु वसिष्ठ जी के आश्रम
को गया और प्रणाम करके बोला—“हे गुरु ! मुझसे क्या अपराध हुआ कि मैं
पुत्रविहीन हूँ” । वसिष्ठ जी ने विचार कर कहा—“हे पुत्र ! नन्दिनीनामक मेरी
गाय की सेवा कर । उसके प्रसन्न होने पर तुमको पुत्र होगा ।” गुरुजी से यह सुनकर
वह राजा नन्दिनी के आश्रम गया और उसकी सेवा करने लगा ।

U. P. HIGH SCHOOL BOARD

Examination Sanskrit Second Paper.

1916. (a) (i) The less you have such friends, the better will it be for you. (ii) Under these circumstances, there was no other help than retreat. (iii) The king had the palace built by his workmen in forty-two days.

(b) Translate the following piece into Sanskrit, observing the rules of Sandhi—

Three little children went to a large forest one day, in order to seek flowers and birds' nests. Their father had told them not to go too far into the forest. But they did not obey and they lost themselves. When night came they were much frightened, but the eldest of them told his brother and sister that their father would seek them. For two days and two nights the father did seek for the poor children, but in vain. At last a king forester showed him the palace where the children were living exhausted with chid and hunger. The joy of the father knew no bounds when he found that they were not dead.

1918. Translate into Sanskrit using the words enclosed in the brackets:—

1. Kausalya was the eldest (वृद्ध) of the three wives of Dasharatha and Kaikeyi the youngest. 2. The honey in the flowers of the Kunda creepers has been drunk by the bees (मधुलिङ्ग). 3. Parsurama begged (वृ) that his mother might be restored to life again. 4. How many times in the day dost thou milk (दुह्) cows? 5. The friends whom I expected long are come and have just alighted (अवतृ) from their carriages. 6. When he said (वच्) he could be a Sanskrit Pandit in ten days, I smiled.

1919. (a) We have drunk Soma and have become immortal. (b) Prudent people accomplish their own purpose with ease. (c) Rama and Lakshmana lived in the Dandaka forest with Sita and ate roots and fruits. (d) None should rely on the words of the wicked. (e) He who walks by the path of truth attains prosperity. (f) The virtuous are happy and deserve respect.

1920. (a) Indra was the mightiest and most powerful of all the gods, and therefore they crowned him king. (b) Have you smelt the flower? It is very fragrant. (c) The gods went to the sage, bowed to him and praised his might. (d) The king sitting upon the throne is consulting with his minister.

1921. In Varanasi there lived a Brahmana named Bhargava. Though pressed by his father, he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges

to perform penance in order to acquire knowledge. Indra went near him in the disguise of a Brahman and began to throw sand into the river. Bhargava asked him the meaning of what he was doing. Indra replied, 'I am building a bridge' Bhargava said, 'Oh you cannot succeed in your object in this way.' Indra replied, 'If I cannot build a bridge by throwing sand into the river, how can you expect to acquire knowledge by performing penance?' Thus addressed Bhargava ceased from austerities.

1922. (a) He asked him whether he was well. (b) Enough of your boasting. Let us fight so that people may see clearly which is the stronger of us two. (c) He renounced the world the very day on which he felt disgusted with its pleasures. (d) My mind was diverted, so I did not hear what you said. (e) The more you work, the more you acquire glory.

1923. (a) All his efforts bore fruit. (b) You have done well in sending your younger brother to Benares to learn Grammar. (c) I am sorry to find you are reduced these days. (d) Frogs jump in the rainy season. (e) A friend in need is a friend indeed.

1924. (a) His word is not trustworthy and his character is not praiseworthy. (b) There is a man waiting at the door who wants to speak to you on matters of great importance. (c) I have endured all taunts of the people calmly and borne the responsibility of governing uninterruptedly. (d) I am overcome by sleep caused by fatigue. (e) I shall resume my story from this point afterwards.

1925. (a) (1) I am thy pupil, teach me. I have come to thee for shelter. (2) As days went on the boy became clever. (3) In autumn the leaves fall down from trees. (4) I am pleased to hear your words which are as sweet as honey. (5) Animals in the hermitage went to the sage who was the lord of it.

1926. (1) Do you remember our residence in Benares on the banks of the holy Ganges? (2) Stay here for three or four days, I shall meanwhile try to accomplish your object. (3) A scorpion is produced from cowdung. (4) There was a terrible fight between the Pandava and the Kauravas for eighteen days. (5) Happiness comes after misery and misery after happiness in this world of living beings.

1927. (1) My mind was diverted, so I did not hear what you said. (2) Instruction to a fool simply goes to increase his folly. It does not make him wise. (3) Arjuna asked the Gondharva why enmity arose between Virata and Vishvamitra. (4) You are very cruel indeed, you have left me all of a sudden. (5) He who wishes to make a rogue a good man wishes to cross the ocean with his hands.

1928. (1) Stop the chariot till I get down. (2) It is better to resort to a forest than to serve an arrogant person. (3) Gopal, you and I shall read that book, in a garden tomorrow. (4) If we leave

one thing every day, we can learn three hundred and sixty-five things in a year. (5) The strong wind, the like of which was never heard before, has uprooted all the trees in the park.

1929. (1) He was the best of all teachers; his students looked upon him as their father. (2) Whoever is attentive to his duty and works harder and harder every day succeeds in life. (3) Before setting out on a journey, he prostrated himself before the feet of his parents. (4) That there can be friendship between us is as incredible as between grass and fire. (5) Four Vedas, six Vedangas, Mimamsa, and Dharmshastra are the fourteen branches of knowledge.

1930. (1) Having made preparations for his journey, he set out on an auspicious day. (2) The boy became afraid of the tiger, but was saved by his mother. (3) He gave money to the sons of their mother's sister. (4) If the ring had been found at the proper time, Dushyanta would not have cast off Shakuntala. (5) The king saw many ascetics practising penance on the bank of the Sarayu.

1931. (1) Our best friends are those who tell us of our faults and teach us how to correct them. (2) Early to bed, and early to rise, Makes a man healthy, wealthy and wise. (3) Riding slowly, I reached home just as the sun was setting. (4) When the king saw him coming, he said, "Pray who are you, and what do you want?" (5) Bear in mind the advice that your father gave you recently.

1932. (a) Four Brahmanas decided to go to another country for the purpose of acquiring knowledge. (b) So they all went to Kanyakubja and studied there for twelve years. (c) They mastered all the sciences and proposed to return to their homes. (d) They took the permission of their preceptor and started from Kanauj. (e) On the way they met two travellers, one of whom said, "Gentlemen, we are going to Ayodhya. By what way should we go?"

1933. (a) Ravana was the ten-headed demon king of Lanka, and was very wicked by nature. (b) Although a Brahmana by birth and scholar of the Vedas, he used to annoy and torment the sages. (c) Once he, in disguise of an ascetic, approached Sita, when she was alone, and carried her away in his chariot. (d) Sita was kept in Lanka in a place surrounded by beautiful garden. (e) But she was always unhappy and shed tears without knowing when she would see Rama again.

1934. (a) King Shaktideva, was a worshipper of Vishnu, went one day to the garden of gods, and there saw many flowers. (b) By order of his elder brother, Lakshmana, he saw many flowers. (c) By order of his elder brother, Lakshmana, he saw many flowers. (d) By order of his elder brother, Lakshmana, he saw many flowers. (e) By order of his elder brother, Lakshmana, he saw many flowers.

1935. (a) Rama was always obedient and devoted to his father and therefore he renounced the throne of Ayodhya and went to Dandaka forest to live there as an exile for fourteen years. (b) Sita who loved Rama even more than her life did not like to stay in the palace of Ayodhya without her lord and accompanied him to the forest. (c) Once when they were living in exile, Ravana, the demon-king of Lanka came in disguise of a beggar to the forest-abode of Rama. (d) Ravana carried away Sita by force in his Chariot to Lanka and in consequence of his guilt he was killed by Rama. (e) After returning from Lanka Rama became the king of Ayodhya and lived happily with Sita.

1936. (a) On the bank of River Godavari there was a lofty tree on which birds of every quarter used to take rest during the night. (b) One day very early in the morning, a crow named Laghupatanaka, awoke and saw a hunter coming from a distance. (c) The crow thought that it was an unlucky omen that he saw a wicked person on the dawn of that day. (d) Considering this, the crow flew away, and then the hunter scattered grains at the foot of the tree and over them spread his net.

1937. (a) O Sita, my revered father has asked me to go to forest to-day, I shall tell you how this has happened. (b) Long ago, my father Dasharatha, who is true to his promise, gave two great boons to my mother Kaikeyi. (c) To-day she asked the king that I should live fourteen years in the forest and Bharata should be appointed as heir apparent to the throne. (d) Being ready to depart now I have come to see you. When I am gone to the forest, you should be devoted to the practice of your duty.

1938. (a) On the banks of the river were trees of different kinds under whose shade the breeze blew gently and birds were singing on the branches. (b) Rama saw the various rivers, hills and forests, and entered the Dandak along with Sita. Always the people were astonished to see the virtuous princes there. (c) Hanuman, the son of Vayu, addressed the two heroes, Rama and Lakshmana, and duly praised them. (d) At length, when the day dawned and all the people of the house did not see the young princes, they were all very sorry.

1944. 2. Translate into Sanskrit **either** Group A **or** Group B.

Group A.

(a) One day some children were playing near a tank. This tank was the home of some frogs. Some of the children began to throw stones into the tank. They did not know that they were hurting the frogs.

(b) The messenger went to the King, and said, 'O great King the Sultan praises your bravery. He also praises the bravery of your Rajput soldiers. He desires peace'.

(c) Rats do a great deal of damage. They destroy everything they come across. They bite holes in boxes in which they smell food and they even bite through doors, when they cannot get in any other way.

(d) In Kashi there lived a Brahmana named Bhargava. Though pressed by his father, he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges to perform penance in order to acquire knowledge.

Group B

(a) वज्रदेश में एक विख्यात राजा था जो अपनी प्रजा को पुत्रवत् पालता था। एक समय उसके राज्य में अत्यन्त दुर्भिक्ष हुआ जिससे सारी प्रजा अत्यन्त पीड़ित हुई।

(b) जो धर्मात्मा हैं वे शरणागत का त्याग नहीं करते। विपत्ति में भी धर्म में दृढ़ रहते हैं। इसी कारण उनका यश बढ़ता है। बड़ों का निरादर करने से मनुष्य नीच दशा को प्राप्त होता है।

(c) सूर्य की किरणों से व्याकुल होकर दो कृत्ते एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और वार्तालाप करने लगे। एक ने कहा, “भाई ! संसार में मुख लोग व्यर्थ ही लड़ते हैं और दुःखित होते हैं।” दूसरे ने उत्तर दिया, “मित्र ! तुम सत्य कहते हो। कलह करना अनुचित है।”

(d) अपने कर्तव्य को प्रसन्नता से करो। उसके करने में उदास वा निराश मत होओ। अपने कार्य को मनोरञ्जक बनाओ। इस तरह वह कार्य सुख से सिद्ध होगा।

1945. 2. Translate into Sanskrit either Group A or B :—

Group A

(i) Damayanti gave much wealth to the Brahmana and said, ‘I will give you more when Nala comes.’

(ii) Desiring to bathe in the holy water of the Ganges I went to Kashi and lived there for four years.

(iii) While going to his school the boy saw a fruit on the ground. He took it up and gave it to his teacher.

(iv) Prayaga is a beautiful place where blue water of the Yamuna meets with the white water of the Ganges.

Group B

(i) वह योग्य बालक है जो सदा स्कूल में उपस्थित रहता है।

(ii) महाराज दशरथ ने विवश होकर राम को वन में भेज दिया।

(iii) ठीक है, बलवान और निर्बल की लड़ाई में निर्बल की ही हानी होती है।

(iv) एक समय दो मित्रों ने साथ यात्रा की और प्रतिज्ञा की कि विपत्ति में एक दूसरे की सहायता करेंगे।

1946. 2. Translate into Sanskrit *either* Group A *or* B:—

Group A

- (a) You have done well in sending your younger brother to Benares to learn Grammar.
 (b) The gods went to the sage, bowed to him and praised his might.
 (c) Rama and Laksmana lived in the Dandaka forest with Sita and ate roots and fruit.
 (d) In Varanasi (Benares) there lived a Brahmana named Bhargava.

Group B

- (a) नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य श्रेष्ठ धर्म है।
 (b) लड़का सो गया है, उसको जगाना उचित नहीं।
 (c) अनाथों के रक्षक दीनानाथ के सिवाय और कौन है।
 (d) महाराज चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र में निवास करते थे।

1947. 2. Translate into Sanskrit *either* Group A *or* B:—

Group A.

- (a) All those who visit Benares see the temple of Shiva. It is not far from the Ganges.
 (b) Industrious persons obtain in this world whatever they desire.
 (c) Some rich persons give money to the poor boys and encourage them to study.
 (d) I always get up very early in the morning and then go out for a walk.

Group B.

- (a) सच्चा मित्र वही है जो अपने मित्र के दुःख से दुःखी होता है।
 (b) जो संयमी होते हैं वही संसार में उन्नति कर सकते हैं।
 (c) रामने पिता की आज्ञा से जङ्गल में जाना अपना कर्तव्य समझा।
 (d) भारतवर्ष एक बार फिर संसार को शान्ति का मार्ग बतलावेगा।

Admission Examination.

(Benares Hindu University)

(1924)

Translate into Sanskrit.

There are many rivers in India. The greatest and most famous of them all is the Ganges. The Hindus regard this river as sacred. They speak of it with reverence and affection as mother Ganga. Of the cities on its banks Benares is the oldest. To this city come every year thousands of Hindu pilgrims. They bathe in the river; they drink its water; they worship at its temples and they go home with happy hearts.

(1925)

1. Translate the following into Sanskrit.

In Kashi there lived a Brahmana named Bhargava. Though pressed by his father he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges to perform penance in order to acquire knowledge. Indra went near him in the disguise of a Brahmana and began to throw sand into river. Bhargava asked him the meaning of what he was doing. Indra replied, 'I am building a bridge.' Bhargava said, 'Oh, you cannot succeed in your object in this way.' Indra replied, 'If I cannot build a bridge by throwing sand into the river, how can you expect to acquire knowledge by performing penance?' Thus addressed, Bhargava ceased from austerities.

(1926)

Translate the following sentences into Sanskrit:—

- (a) In the fight with Rakshasas, Rama killed many hundreds of his enemies with his sharp weapons. (b) Raghu who took with him his great army going towards the eastern sea appeared like Bhagiratha who led the Ganges fallen from the matted hair of Shiva. (c) He has abandoned all worldly affairs and has now become a recluse. (d) We have drunk Soma and have become immortal. (e) He who walks by the path of truth attains prosperity. (f) The virtuous are always happy and deserve our respect.

(1927)

4. Translate into idiomatic Sanskrit:—

(a) On the bank of the Sarayu river stood the city of Ayodhya, famous in all three worlds, twelve yojanas long and three yojanas broad. (b) What is the use of pouring oil when the lamp has gone out? What is the use of carefulness when the thief has fled. (c) The night will pass, the sun will rise, the lotus will bloom—thus dreamed the bee at night. (d) May your path be pleasant and auspicious. (e) Let all men be happy and free from diseases.

(1928)

Translate into idiomatic Sanskrit:—

(a) As the streams of the river go on, nor ever return so day and night bear ever away the life of mortals. (b) He caused a large pavilion to be erected by his servants for the marriage of his sons. (c) Alas! poverty is the root of all misery in this world. (d) I do not long for wealth but for immortal glory. (e) May you both get sons resembling you in all good qualities.

- (1929) 6. Translate into Sanskrit:—

(a) Try as far as possible, to depend upon your own exertions; for God helps those who help themselves. (b) If you try to get too much at once, you will lose even that which you have. (c) He who wishes

to please a fool, wishes to cross the ocean with his hands. (d) As the father looks to the welfare of his children, so should a king have the good of his subjects at heart.

(1930) Translate into Sanskrit :—

(a) The virtues of wise men are celebrated by poets. (b) Rama cut off the ten heads of Ravana. (c) Kausalya was the eldest of the three wives of Dasharatha and Kaikeyi the youngest. (d) All enemies were killed by the five Pandavas. (e) The master teaches us eight times in a fortnight.

3. Translate the following sentences into Sanskrit :—

(a) Having experienced the sorrows of the world, he became an ascetic. (b) Sita was dearer to Rama than his very life. (c) The virtuous are happy and deserve respect. (d) We have drunk Soma and have become immortal. (e) The wicked deeds of Bajiraja make us blush. (f) He is blind of one eye and lame of one leg.

(1932)

4. Translate the following sentences into Sanskrit :—

(i) The more you think of the miseries of your life the more your life will be full of grief. (ii) I do not consider my enemy worth even a straw. (iii) Milk is itself sweet; much more it is when mixed with sugar. (iv) The father asked his boy:— "When did you return from Madras?" (v) As the sun went down, the girl together with her sisters sat for study. (vi) Bhima was not inferior to Duryodhana in strength. (vii) The mother went to bathe leaving the child behind.

1933 (4) Translate the following into Sanskrit :—

(1) May God protect us all. (2) Man can achieve salvation only through virtue. (3) One's nature can easily be known by one's actions. (4) Truth is greater than thousands of Ashwamedha sacrifices. (5) Who else than the king himself can save one? (6) Sita was by her nature dear to Rama. (7) They dwelt happily on the mountain for seven years. (8) The teacher treats his students as his own sons.

1934 (4) Translate into Sanskrit :—

(i) The boy has finished the whole history within a month. (ii) The Brahmana begged a cow of the king. (iii) What do you know about this thing? (iv) He who desires wealth, will get it in abundance. (v) The servant has gone to the forest to bring fuel. (vi) The young man is well-versed in Shastras.

1935 (4) Translate into Sanskrit :—

(1) Nowhere have I seen such a beautiful garden. (2) Jumping from tree to tree, हनुमान saw the princess of विदेह sitting at the root of the Asoka tree. (3) Within how many days, Sir, shall I finish this book? (4) Tell me not in mournful numbers Life is but an empty dream.

(5) Friend : cut off my bonds at once and save me. (6) Please, take me to her room. I wish to see my old friend as soon as possible.

(1936) 5. Translate the following into Sanskrit :—

- (a) For men may come, and men may go, but I go on for ever.
 (b) Great men remain the same whether in prosperity or in adversity.
 (c) A coward dies many times, but a brave man dies only once.
 (d) Oh: mother, tell me where is the great God Hari that I may go and find Him: (e) 'Child:' the mother answered, 'He is within your own heart.'
 (f) Long long ago, there lived in this land of ours a holy and merciful king by the name of Asoka.

टिप्पणियाँ Glossary

(पाठ १) १-चार दाँतों वाला—चतुर्दन्तः, हाथी—गजः । ३ आसान—सुगमम् ।
 ४ बन्द हो गई है—समाप्तिमगच्छत्, टहलने के लिये—भ्रमणाय । ५ नहीं भाता—न रोचते । १० रोटी—रोटिका । ११ बोलवाल—संलापः । १३ सिवाय—विना ।
 १४ गुजर गई—व्यतीता ।

(पाठ २) १ नीचे आई—तले समागता । २ समझे जाओगे—प्रतीतिपथमवा-
 तरिष्यः । ३ सूर्य की ओर—सूर्य प्रति । ५ छोड़ दिया—तत्याज । ८ भेज दिया—
 प्रेषयति स्म । ११ खुश होते हैं—प्रसन्ना भवन्ति । नाचते हैं—नृत्यन्ति । १५ हार—पराजयः ।

(पाठ ३) १ यही एक गुण है—अयमेवैको गुणः । सिद्ध हो जाते हैं—सिद्धयन्ति ।
 ५ जूए में—शुते । ७ बहुत जगद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् । १५ दूसरों के लिए—
 परार्थम् । न्योछावर करता है—अर्पयति ।

(पाठ ४) क्षणें क्षणे यन्तवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः । ३ निडर होकर—
 निर्भयो भूत्वा, लड़ंगा—योत्स्ये । ५ गाड़ दिया—अस्थापयत् । ६ दीवानें हो रहे थे—
 मुग्धा आसन् । ७ सोने की चिड़िया—सुवर्णपक्षी । ९ नाति प्रलप अन्यथाहं तव रहस्यं
 भैत्स्यामि । १० हकीकत में—वस्तुतः । ११ त्वं खलु कर्णबिरो नेवान्धश्चासि ।
 १२ लोहे के चने चवाने हैं—कठिनतममस्ति १३ स एवेदं कार्यं कर्तुं पारयति यः खलु
 असिधाराव्रतमाचरति । १४ कृपणः खलु भवान् वर्तते ।

(पाठ ५) १ पहुँच कर—प्राप्य, आधा सूर्य निकलने पर—अर्धोदगते रविविम्बे ।
 २ बुलाने के लिए—आह्वातुम् । ३ जलाहा—तन्तुवायः । ४ चढ़ कर—आरुह्य । ५
 जलडुब्बी—जलान्तरितपातः, डुबो देती है—मज्जयन्ति । ६ जमीन और आसमान
 का फर्क है—दूरमन्तरमस्ति वा समुद्रपल्लवलयोरिवान्तरम् । ८ बुढ़ापे में—वृद्धावस्था-
 याम्, याद करेगा—स्मरिष्यसि । ९ नजर से—दृष्ट्या । घासफूस—तृणादीन्,
 लपेट कर—संक्षिप्य । १० हाजिर जबाबी प्रत्युत्पन्नमतिः, निलाक कर—आदाय,
 भाभी—आतृजाया, छिपाया रहता है—मुगुप्तमस्ति, ले आया है—आनीतवानसि ।
 खुश होकर—सहर्षम् । जल्दी दे दे—शीघ्रं प्रयच्छ । मरने से—मरणाय ।

(पाठ ६) (क) भेंड़िया—वृकः, बकरे को—अजम्, हड्डी—अस्थि, गले में—ग्रीवा-याम्, इनाम—परितोषिकम्, टुकड़ा—भागः, मांगने लगा—प्रार्थयते स्म, चबा कर—चर्वणं कृत्वा । (ख) शिर के बाल—केसाः, उखाड़ डाले—उदपाटयत् (ग) गीदड़—शृगालः, मारा २ फिर रहा था—इतस्ततो भ्राम्यति स्म, अंगूरों से—द्राक्षाभिः, कूदने पर भी—उत्कू-र्दनेऽपि, थक कर—परिश्रम्य, खट्टे—अम्लाः, चालाक—धूर्तः, बाज नहीं आता—न विरमति । (घ) मुसाफिर—पान्थी, मुसीबत में—विपदि, साथ देगा—साहाय्यं करिष्यति, घने जंगल में—निविडे वने, रीछ—ऋक्षः, चढ़ गया—आरूरोह, लेंट गया—अशेत, नीचे उतरा—अवातरत्, दगाबाजों का—विश्वासघातकानाम् । (ङ) चीजें—वस्तूनि, फांसी की सजा मिल गई—पाशदण्डेन व्यवस्थापितः, काट दिया—अकर्तयत्, कसूर—अपराधः, रोक देती—अधारयत् !

(पाठ ७) जेवरों को—आभूषणानि, ठग—धूर्तः, रोना शुरू किया—रोदितुमारब्धः, अँगूठी—अंगुलीयकः, गिर गई है—अपतत्, उतारे—उदमुञ्चत्, घुस गया—प्राविशत्, शरारती के साथ—वंचकेन सह । (ख) ठूनी चीज—द्विगुणं वस्तु, लालची—लोलूपः, गर्दनः खुदबखुद—स्वयमेव, चूप हो गया—मौनमतिष्ठत्, लालच बुरी बला है—लोलुपता अनर्थकरी वर्तते । (ग) कहते हैं—अनुश्रूयते, गोद में—अङ्के, हैरान थे—चिन्ताकुला आसन्, अबलमन्द—बुद्धिमान्, शीशा—मुकुरः, दिखा दिया—अदर्शयत्, मुस्कराते हुए—मन्दं हसन् । (घ) गरदन के बालों पर—सटायाम्, फंसा—अपतत्, तारीफ—प्रशंसायाम् । (ङ) चूहा—मूषकः, बदला—प्रत्युकारः, शादी—विवाहः, बुलवाई—आहूता, मर गया—पञ्चत्वं गतः, मृतः वा ।

(पाठ ८) (क) मिट्टी का—मृत्तिकायाः, बरतन—पात्रम्, घबराने लगा—व्याकुलम-भवत्, टक्कर—आघातः, टूट जाऊंगा—तष्टं भविष्यामि कमजोर—निर्बलः, नुकसान—हानिः । (ख) गडरिया—अवीपालः, मेघपालः वा, कचौड़ी हलवा—उत्तमपदार्थान्, गैरहाजिरी में—अनुपस्थितौ, भेड़—मेघः, भेद—रहस्यम्, तलवार—असिम्, नमकहरामी—प्रभुविद्वेषः । (ग) भेड़ का बच्चा—मेघशावकः, बेवकूफ—मूढः, नीचे की ओर—अधोभागे, जूठा—उच्छि-ष्टम्, परके साल—पूर्वस्मिन्वर्षे, गाली—गाली, पैदा भी न हुआ था—उत्पन्नोऽपि ना-भवम्, बहाना—कारणम् । (घ) उस्ताद—अध्यापकः (मौलवीति श्रूयते) शागिर्दों को—छात्रान्, लाते थे—आनयन्, मिट्टी के कटोरे को—मृत्तिकापात्रम्, आज क्या बात है—किञ्चन वर्तते, सूरज.....कथमद्य सूर्योदयः प्रतीचीतः, फेंक दिया—प्राक्षिपत् पेशाब करवाती थी—मूत्रं कारयति स्म ।

(पाठ ९) अगरचे—यद्यपि, किवाड़—कपाटम् ।

(पाठ १०) (क) सड़क में—पथि, दो हजार बार सो की—चतुः शताधिकसह-सद्वयस्य, नालिश—अभियोगः, परखी—परखः, पता—स्थानपरिचयः, जांच—निरी-क्षणम्, अदावात में—न्यायालये, भीड़ लग जाती थी—जनसम्मर्दोऽभवत् । (ख) भेद खुल जाने पर—भेदोद्घाटने, दिखलवा—छद्मवेषः, पालन कर सकता है—पालयितुं शक्तः ।

(पाठ ११) (क) अकेला—एकाकी, सूँघकर—घ्रात्वा, तालीके बिना ही—तालिकां विनापि, फांसी मिलती हो—पाशमध्यारोपितः, शिर हिला देने से—शिरः

परिचालनेन, महल में—प्रासादे । (ख) कैदखाना—कारागारः, कोठरी में—प्रकोष्ठे, सिरहाने—शिरोभागे, हमदर्द—दयालुः, नेकबख्त—सरला, बाजबन्द—केयूरम्, ठंडी आह भर कर—निःश्वस्य, चौक पड़ा—समभ्रमोऽभवत्, निभाने को—पालनार्थम् ।

पंजाब यूनिवर्सिटी की एन्ट्रेंस परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(१९२६) तालाब—तडागः, मछलियां—मत्स्याः, तन—शरीरम् ।

(१९२७) ब्रह्मा के—ब्रह्मणः, पाप दूर हो जाते हैं—पापानि नश्यन्ति, मुझे बहुत अच्छा लगता है—अतीव रोचते मह्यम्, हाथ पैर कांपने लगे—हस्तपदं कम्पितु-मारेभे ।

(१९२८) इतनी खुशी क्यों होती है—कथमेतावान् हर्षो भवति । मुझे दण्ड दे-मयि दण्डं पातयतु, चुप रहो—तूष्णीं भव, अकेली छोड़ कर—एकाकिनीं परित्यज्य, बन्धन पक्का है—बन्धनं दृढमस्ति ।

(१९२९) माता पिता की—पित्रोः, ८३ वर्ष—व्यशीति वर्षाणि, क्या आप-लाहौर जायेंगे—कि भवाँल्लवपुरं गमिष्यसि, कल—ह्यः, जलसा—उत्सवः, कहा-जाता है—कथ्यते ।

(१९३०) लिखवाऊंगा—लेखयिष्यामि ।

(१९३१) एक अस्थान में पढ़ें—एकत्र पठेयुः, सुना जाता है—श्रूयते, विद्या-भी बिना मूल्य दी जाती थी—विद्यापि शूलं विनाऽपाठ्यत, उलटा—विपरीतम्, गली देते—गालीर्ददतः, यह समय का भेद है—एष समयस्य व्यत्ययः, देखें—पश्येम ।

(१९३२) पहले—पूरा, जन्म चुके हैं—उत्पन्ना अभूवन्, अनुकरण करें—अनुकुर्याम, प्रातःकाल हो गया है—प्रातःकालो जातः ।

(१९३३) झुकते हैं—नम्रा भवन्ति, सब की सेवा की थी—सर्वानिसेवत, अभिमान से—दपात्, अमीर लोगों के लड़कों में—धनिकपुत्रेषु, बराबर हैं—समाने स्तः ।

(१९३४-१९३९) मारा हुआ—घातितः, सुनने से—श्रवणात्, हंस पड़े—अहसन्, सबसे छोटी नदी—सर्वासां नदीनां लघुतमा (लघिष्ठा), देख-देखकर—दर्शदर्शम्, खरीद ओ—क्रीणीहि, मैं इनमें बड़ा हूँ—अहं सर्वेषां ज्येष्ठः, ले जाने पर भी—गृहोत्ते सत्यपि, हाथों से पकड़ लिया—हस्ताभ्यामग्रहीत्, सब से छोटा—सर्वेषां कनिष्ठः, स्त्री रोती हुई—रुदती स्त्री, तू सुन याद रख—शृणु स्मर च, अधिक-लंबा—दीर्घतरम् (दिनम्) माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बड़कर हैं—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, परीक्षा करता हूँ—परीक्षे ।

पंजाब यूनिवर्सिटी के प्राज्ञ परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(१९२६-२८) बहिनें—भगिन्यः, आशा करते हो—आशासे, तरफ रहेंगे—पक्षे भविष्यति, हक—अधिकारः, पाले हैं—पुष्टाः सन्ति, खिलाफ—विरुद्धम्, मेल-करके—उन्धि कृत्वा, पढ़ाने लगे—अशिक्षयत, कहा जाता है—कथ्यते, बता देती-थी—दर्शयति स्म, व्यतीत किया—व्यतीयाय २५ दिन के बाद—पञ्चविंशतिदिनान-न्तरम्, चार बहिनें—चतस्री भगिन्यः, बहुत गाई गई है—अतिवर्ण्यते, चार वज चुके हैं—

चतुर्होरापरिमितः कालः, निरीक्षण करेगे—निरीक्षण करिष्यति, अंगोछा—अङ्गप्रक्षालनवस्त्रम् ।

(१९२९) छिपाये—गोपनेन, छिपता—गोप्यते, खाँसी की तरह—कासवत्, होस्टल के—छात्रावासस्थ, विजली के लैंपों से—विद्युद्दीपैः, चकमक हो रही हैं—देदीप्यते, मेज कुर्सियाँ—लेखनाधारा आसनानि च, दो बड़े बड़े पलंग सफेद बिस्तरों से कसे हैं—द्वौ महान्तौ पर्यङ्कौ धवलैः शय्योपकरणैः सज्जितौ, पलङ्ग पर लेट कर—पर्यङ्कमाश्रित्य, कभी धोखा खाओगे—क्वचिद् दुष्परिणाममाप्स्यसि, पड़ोस में रहने वाली—प्रतिवेशिनी, प्रिन्सिपल के आगे—अध्यक्षस्य अग्रे, शिकायत की—कौली-नमकथयत्, तहकीकात करके—निरूपणं कृत्वा, संसार से विदा हो गया—मृतः, सच है पाप छिपाए नहीं छिपता—सत्यं यत्पापं कर्म कृतं गोपितुमशक्यम् ।

(१९३०) डेवढी में—आलिन्दे, आसन जमा लें—आसनमाश्रयतु, थूकता हैं—प्लीवति, ऊपर चुबारा में—उपरि प्राङ्गणे, घंटी बजा दिया—घंटं वादयत्, भूख प्यास सताने लगी—क्षुत्पिपासितः, इधर उधर हाथ मारा—इतस्ततो हस्तचालनमकरोत्, यम-लोक को सिधार गया (सदा के लिए सो गया)—यमसदनमासदा ।

(१९३१—१९३२) बालू के पुल का—बालुकासेतोः, पार जाने के लिए—पारमासादयितुम्, खरगोश के सींग और बिना भित्ति के चित्र के समान है—शशविषाणवत् भित्तिं विना चित्रकर्मरचनावच्च वर्तते । एक इधर से दूसरा उधर से—एक इतः अन्यश्च उतः, बराबर सामने आये—समीभूतौ, मुड़कर—परावृत्य, रोकता था—प्रतिबन्धमकरोत्, पैर फिसला—पादस्खलनम्, मेलेंजोल—संहतिः, लेट गया—निपपात, पाँव रखकर—पादन्यासं कृत्वा, रास्ता साफ हो गया—मार्गः निर्विघ्नो जातः, निकम्मे हो जाते हैं—निष्प्रयोजनानि भवन्ति, घोड़े की सवारी—अश्वारोहणम्, कुश्ती लड़ना—मल्लक्रीडायुद्धम्, गेंद चला—कन्दुकक्रीडा, मुद्गर हिलाना—मुद्गरचालनम्, भेड़िये के गले में—वृकस्य कण्ठे, हड़डी अटक गई—अस्थस्थितिभूतः, पड़ोसी का धर्म निवाहो—प्रतिवेशिनो धर्म निर्वाह्य ।

(१९३३—१९३६) प्रहार के बदले प्रहार करना—प्रहारस्य स्थाने प्रहारः कमा रहे हैं—अर्जयति (भवान्), जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म भी करता है—धर्मो रक्षति रक्षतः, आग लगा दो—दाहार्थमग्निमददात्, मशहूर कर दिया—प्रथितमकरोत्, आग में कूद कर—अग्नौ कृत्वा, सब वर्णों से विद्या में उत्कृष्ट है—सर्वेषां वर्णानां विद्यायामुत्कृष्टतमः, सुख देनेवाली—सुखदायिनी, कांप उठे—अकम्पत, खाल पहना कर—चर्माच्छाद्य, निकालने का—निष्कासनस्य, रूपये में दस पुस्तकें—शतरूपकैः दश पुस्तकानि, ज्यादा—ज्यादा, ज्यादा—ज्यादा, पवित्र है—पवित्रतमा, दिन में दो बार—द्विने द्विवारम्, ज्यों ही मैं घर पहुँचा त्यों ही मूसलाधार वर्षा होने लगी—पावसः गृहमुपागमं तावद् वर्षा अतिमात्रमभूत्, यदि अच्छे वर्षा होनी तो दुमका न हाता—(देखिए पृष्ठ ४०), बताए हुए रास्ते से—प्रदर्शित मार्गेण, गहराई और वेग से—गाम्भीर्येणवेगेन च, सूखा बांस—शुष्कवेणुः, घरचाई—नौका, नरम-नरम टहनियों से—कोमलशाखाभिः वरुणं अपितु, आगा पीछा सुझाते हैं—सुमार्गसादेशयति, मैले कपड़ों को—मलिनवस्त्राणि, लड्डू—मोदकान्, बारह व

में चारों वेद छः अंगों सहित पढ़े जाते हैं—द्वादश वर्षाणि षडङ्गाश्चतुर्वेदाः पठन्ते, सौ रूपये देने हैं—शतं रूपकाणि देयानि, यदि तुम खूब मेहनत करते तो परीक्षा में चर्र पास हो जाते—(देखिए पृष्ठ १६८-१७८) ।

(१९३७-१९३९) द्रव्य हरण करके—द्रव्यमपहृत्य, मारने लगा—हन्तुमुद्यतः, पाप के साक्षी हैं—पापभाजः सन्ति, इतने में—अत्रान्तरे, धुन ने—चित्ततरङ्गेण, राजा से लेकर रंक तक—आराज्ञः रङ्गपर्यन्तम्, सन उन्नीस सौ पैंतीस ईस्वी में इस घर में एक पुरुष दो स्त्रियों तीन बालक और चार कन्याएं रहती थीं—पञ्चत्रिंशदुत्तरैकोनविंशतिशतयां (१९३५) ईस्व्याम् अस्मिन्गृहे एकः पुरुषः द्वे स्त्रियौ त्रयः बालकाः चतस्रः कन्याश्च न्यवसन्, क्या आप से बँठा नहीं जाता—किं भवानुपवेष्टुमशक्तः । कैसे बदला लूँ—कथं प्रतीकारं करवाणि, मेरी दशा पर रोओ—मम दयनीयां दशां पश्य, तुम्हारे जीते जी—त्वयि जीवति, बिना बुलाये ही—अनाकारितापि, दाया—पैंतीस लाख सत्तर हजार नौ सौ रूपये—(देखिए पृष्ठ १७६-१७७) ।

(पृष्ठ १७७-१७८ तक) अनाज पक जाने पर—शस्य लवनसंचयसमये, अनाज काटना शुरू करेंगे—शस्यलवनमारप्स्यते, मेरे लौट आने के पहले—मत्प्रत्यागमनपूर्वकः, रसोइया की बनायी रसोई—सपकारनिमित्तं भोजनम्, छाती का धक्का—वक्षोऽभ्याघातः, शिकायतपर—मिथ्यारोपिते श्रुते, शाप छुड़ाने की—शापविमोचनस्य, देख भाल करना—योगक्षेमं वह, तीन बार—त्रिवारम्, अब मैं चला—अद्यमहं गतः, कोरे—ज्ञानशून्यः, मिट्टी खोद रहे थे—भूमिं खलान्, तैयारियां की—उपकरणद्रव्याणि सज्जीकृतानि ।

पटना यूनिवर्सिटी की मैट्रिक्यूलेशन परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(पृष्ठ १७८-१८६) दिन ठीक करो—मांगलिकं दिनं स्थिरीकुरु, आज ही देखा जाय—अद्यैव पश्याव, पांच सौ आदमी—पंचशती मनुष्याः, हिमालय ऐसा ऊँचा—द हिमालयसदृशः उच्चतमः, टहल कर—विहरणानन्तरम्, अंगूर बन में छिप गया—व्राक्षायनान्तरितोऽभवत्, शिकारी—मृगयुः, सिंह, गवहा, भियार—सिंहः गर्दभः शृगालश्च, शिकार करने को—मृगयार्थम्, भाग करने की—विभागपरिकल्पितस्य, तुमने देर क्यों की—कथं विलम्बमकर्षाः, चार महीनों से—चतुरः मासान्, मोर के पर—बर्हः, अपने पंखों में लगा लूँ—स्वपिच्छेषु निरूपयामि, बंदसुरत—कुलपः, गोलमाल मत करो—नोपेक्षस्व, आंखों के तारे थे—अतीव प्रियः, कर्ज लिये—ऋणमकरोत्, बदनामी—निन्दा, यदि बचपन में जी लगाकर विद्या पढ़ते तो सब जगह आदर होता है—(देखिए ४० पृष्ठ) काटेगा—दक्ष्यति, सवा रुपया—सपादरूपकम्, भिखारी—भिक्षुः, हजारों दास—सहस्रशः दासाः, गहरा—अगाधः, फल इकट्ठा करता है—फलानि समाहरति, पांच वर्ष बनास में पड़ा—पंच वर्षाणि काश्यामपठत्, जुलाहा—तन्तुवायः, कपड़ा फैलाया—वस्त्रं प्रासारयत्, पहिन कर—परिधाय, गदलापन—पंकिलता, थक गया—परिश्रान्तः, मुँह खोलकर—मुखं ध्यादाय, निगल गया—निगर्णमकरोत्, हाथ जोड़कर—कराञ्जालं बध्वा, हराये जाने पर—पराजिते सति, अकेली—एकाकिनीम्, बदमाशों को—धूर्तान् ।

काशी प्रथमा परीक्षा के प्रश्न-पत्र

उभयवेतनः—दो मालिकों का नौकर, चिकीर्षित—ऐसा कार्य जिसे वह करना चाहता है, व्यापादयितुम्—सारने के लिए, सम्प्रधार्य—विचार कर । सो कहो—तत्कथ्यताम्, कबूतरों का राजा—कपोतराजः, बाहर निकल आया—बहिरागतः, मत्स्यजीविभः—मछुवों ने, आहार-वृत्तिः—खाने का गुजारा । आओ दोड़ो—आगच्छ धाव, नेउला—नकुलः, खाट पर मुला कर—खट्वायां शाययित्वा, काम में लग गया—कार्यव्याप्तः सज्जातः, टुकड़े-टुकड़े कर दिये—खण्डशः कृतवान्, खून लगा हुआ—रक्तरंजितः, पछताई—अनुशुशोच, धाड़ मार कर रोने लगी—भृशं हरोद, छलांग मारता हुआ—उत्पतन्, मन प्रसन्न रहता है—चेतः प्रफुल्लितं भवति, खुल न जाय—यदि प्रकटं भवेत्, अब तक जगमगा रही है—अद्यावधि शोभते, निरीक्ष्य—देखकर, आपेदे—प्राप्त हुआ, विहाय—छोड़ कर, व्याहरत्—कहा, प्राहिणोत्—भेजा, जहार—हर ले गया, निधाय—रख कर, त्रिदिवं जगाम—बैकुंठ चला गया । चार बजे—चतुर्वादनसमये, धोता हूँ—प्रक्षालयामि, निपटकरसमाप्य, मेने डांट कर कहा—निर्भर्त्सयन् कथयम् । वत्सराणाम्—वर्षों के । महनीयम्—पवित्र । सुवृत्तः—सच्चरित्र अद्रवत्—पिघला । डरावने—भयावहम् । मुसलाधार वर्षा हो रही थी—धारासारैर्महता वृष्टिरभवत् । सेवा किया करते थे—असेवेताम् । प्रत्यागच्छन्नम्—लौटते हुए । वदान्यशिरोमणौ—विद्वद्वर में । सच बोलने वाले—सत्यवादी । आसमुद्रम्—समुद्रपर्यन्त । मुझसे क्या अपराध हुआ—किमपराद्धं मया । सेवा करने लगा—असेवत् ।

U. P. High School Board Exam. Papers.

(1916) (a) ईदृश्यामवस्थायां प्रत्यागमनं विना नान्य उपायः, (b) to seek—अन्वेषणाय, too far—अतिदूर, did not obey—नापालयन्, lost themselves—पन्थानं विस्मृतवन्तः, much frightened—अतीव भीताः, in vain—निष्फलम्, exhausted with cold and hunger—शीतेन बुभुक्षया च श्रान्ताः ।

(1918) 1. the eldest—वृद्धतमा, 2. by the bees—मधुलिङ्भिः, 3. begged—अवृणीत्, 4. dost thou milk—धोक्षि, 5. have alighted—अवतरन्ति, he said—अवोचत् ।

(1919) (a) immortal—अमराः, (b) prudent people—बुद्धिमज्जानाः, (d) none should rely on—न विश्वसनीयम् ।

(1920) (a) the mightiest—बलिष्ठः, crowned—अभिविक्तवन्तः, (b) smelt—घ्रातम्, very fragrant—अतिमुग्धयुक्तम्, (c) bowed—नमस्कृतवन्तः ।

(1921) pressed—अनुशासितः, to acquire knowledge—ज्ञानार्जनाय, youth—तारुण्ये to perform penance—तपश्चरणाय, in disg-

uise—परिवर्तितवेपे, sand—बालुका, a bridge पुलिनम्,—from aust-
erities—तपसः ।

(1922) (a) boasting—अभिमानम्, (c) renounced अत्यजत्,
disgusted—विरक्तः,—(b) my mind was diverted विचलि-
तमना आसम् ।

(1923) (a) तस्य सर्वे यत्ताः सफलीभूताः (b) reduced—क्षीण-
शरीरम्, (d) frogs jump—मण्डूका प्लवन्ते, (e) स बन्धुर्व्यसने यः स्यात् ।

(1924) (a) trustworthy—विश्वासयोग्यम्, praiseworthy—
प्रशंसायोग्यम्, (b) is waiting—अपेक्षते (c) सर्वेषामुपालम्भवाक्यानि शान्त्या
असहे, शासनस्योत्तरदायित्वं च निर्विघ्नमगृह्णाम् (d) अहं श्रमजनितनिद्रया आक्रान्तः
(e) shall resume पुनर्ग्रहीष्यामि ।

(1925) (2) clever—तटुः, (3) in autumn-शिशिरकाले (4)
words as sweet as honey—मधुवन्मूढानि वाक्यानि, (5) in the her-
mitage—आश्रमे ।

(1926) 1. Residence—वासस्थानम्, 2. meanwhile—अस्मिन्नेव
काले, shall accomplish—साधयिष्यामि, 3. scorpion—वृश्चिकः, from
cowdung—गोमयात्, 5. after misery—दुःखान्तरम् ।

(1927) 2. उपेक्षो हि मुखीणां प्रकोपाय न शान्तते । ३ enmity—
शत्रुता, 4. all of a sudden—सहसा ।

(1928) 1. निवारय स्वयं यावदहमवतरामि । 2. to resort—प्रयाणम्,
arrogant—अहङ्कारी । 5. has uprooted—उन्मूलयति स्म, in the
park—उद्याने ।

(1929) 1. looked upon—सम्मानितवन्तः, 2. attentive to his
duty—कर्तव्यपरायणः, 8. prostrated—दण्डवत्प्राणम्, 4. incredible—
अविश्वासयोग्या, 5. branches of knowledge—ज्ञानस्य-शाखा ।

(1930) 1. on an auspicious day—शुभदिने, 2 afraid of—भीतः
3. ring—अंगुलीकः, 4. ascetics—तपस्विनः, practising—तपश्चरन्तः ।

(1931) 1. faults—दोषान्, how to correct—संशोधनोपायम्,
2. healthy wealthy and wise—स्वास्थ्यवान्, धनवान् बुद्धिमान्श्च, 3.
riding slowly—अनैर्ग्रन्थः सन्, 5. bear in mind—स्मृतौ संस्थापनम् ।

(1932) (c) mastered all the shastras—सर्वशास्त्राणि
पठितानि, proposal—अकामयन्त (d) of preceptor—अध्यापकस्य
(e) two travellers—पथिकौ, by what way—केन पथा ।

(1933) (a) ten-headed—दशाननः wicked by nature—स्वभा-
वेन दुष्टः, (b) used to annoy and torment—नानाविधसन्तापं ददौ,
(c) in disguise of an ascetic—तपस्विवेषेण, approached Sita—
निकवा सीतां, (d) surrounded by a beautiful garden—रम्योद्यानेन
परिवेष्टिते (प्रासादे) ।

(1934) worshipper of Vishnu—विष्णुपासकः, (b) full of wild animals—वन्यजन्तुसङ्कुले (कान्ते), (c) went to heaven after death—मृत्योरनन्तर स्वर्गमवाप, (d) ornament of society—समाजभूषणम्, (e) वने रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह मुनीनां समाजेन्यवसत् (1935) (a) obedient—आज्ञाकारी devoted—भवतः renounced—परित्याज, throne—सिंहासनम्, as an exile—निवासित इव (b) accompanied—अनुयायी, (c) in disguise of a beggar—भिक्षुरूपे, forest abode—वन-वसतिम्, in consequence—परिणामरूपे, (1936) (c) unlucky omen—अपशकुनः on the dawn—प्रातरेव, (d) scattered—किरति स्म, (1937) (a) revered—पूज्यः, (d) two boons—द्वौ, (c) heir apparent—युवराजः, (1938) (a) blew gently—शनैरवहत्, (b) astonished—आश्चर्यचकिताः, virtuous—धर्मपरा । Near a tank—उपसरः । Messenger—दूतः । damage—क्षतिः । bite holes—छिद्राणि कुर्वन्ति । did not acquire knowledge—ज्ञानं नालभत । to perform penance—तपः कर्तुम् । अत्यन्त पीडित हुई—अतीव व्यथामानोत् four years—चत्वारि वर्षाणि । on the ground—भूमौ । blue water—नीलं जलम् Meels—संगच्छते । एक दूसरे की सहायता करेंगे—मित्रः साहाय्यं करिष्यावः । younger brother—लघुभ्रातरम् । ate roots and fruit—मूलानि फलानि चाभक्षन्त । निवास करते थे—न्यवसन्त । industrious persons—परिश्रमिणो जनाः । कर्तव्य समझा—कर्तव्यममन्यत । मार्ग बतलायेगा—मार्गं प्रदर्शयिष्यति ।

Admission Examination

(1924) the greatest—महत्तमा, most famous—प्रसिद्धतमा, regard—मन्यन्ते, with reverence—आदरेण, pilgrims—यात्रिणः । (1929) (a) with his sharp weapons—तीक्ष्णशस्त्रैः, matted hair of Shiva—शिवस्य जटाभ्यः, recluse संन्यासी, (d) immortal—अमर्त्याः, (e) attains prosperity—ऐश्वर्यं लभते । (1927) the lotus will bloom—पद्मं हसिष्यति, auspicious—संगलप्रदः । (1928) pavillion—मण्डपः, poverty दरिद्र्यम्, resembling—सदृशः । (1929) exertions—उद्यमः, subjects—प्रजाः । (1930) celebrated—गीयन्ते, eldest—ज्येष्ठा, in a fortnight—पक्षे । (1931) having experienced—अनुभूय, ascetic—संन्यासी, wicked deeds—दुश्चरितानि, make blush—लज्जामुत्पादयन्ति, straw—तृणम् । (1932) much more—किं पुनः, when did you return—कदा परावर्तस्व, set for—प्रारभत, inferior—अधमः । (1933) only through virtue—धर्मेणैव, greater—महत्तरम्, the teacher treats his students

as his own son--शिष्ये शिक्षकः स्वपुत्रवदाचरति । (1934) within
 a month--मासाभ्यन्तरे, fuel--इन्धनम्, well versed in
 Shastras--सर्वशास्त्रपारंगतः । (1935) nowhere--न क्वापि, jump-
 ing--उत्पतन्, Sir--श्रीमन्, mournful numbers--सखेदम् but an
 empty dream--केवलं निःसारः स्वप्नः, bonds--बन्धनानि । (1936)
 for ever--सततम्, in prosperity or in adversity--सम्पत्तौ अथवा
 विपत्तौ, coward-भीरुः, within your own heart--त्वदीयमानसाभ्यन्तरे
 एव, holy and merciful king--धार्मिकः दयालुश्च राजा ।

रचिता चन्द्रिका ह्येषा श्रीचक्रधरशास्त्रिणा ।

रोचनां सुकुमाराणां या विधास्यत्यसंशयम् ॥

इत्यनुवादचन्द्रिका समाप्ता



